योरोपमें सातमास

(सचित्र)

लेखक—

श्रीधर्मचन्द सरावगी

प्रकाशक—

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी

२०३, हरिसन रोड

कलकत्ता

प्रथमबार] दीपावली—१६६२ [मूल्य २॥) रुपया

दो शब्द
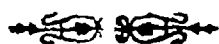
योरोप यात्राके समय भूल कर भी यह न सोचा था कि भारत लौटनेपर यात्राका वर्णन पुस्तकाकार रूपमे लिखूँगा। हां, ये भावनाएं अवश्य हिलोरें मार रही थी कि पत्र-पत्रिकाओंमें लेख देनेके लिये अच्छा मसाला संग्रह हो रहा है। हुआ भी यही। भारत लौटनेपर सम्पादकोंके तकाजे होने लगे और मार-मारकर हकीमकी तरह मुझे भी लेखक-श्रेणीमे अपना नाम लिखाना पड़ा।

इसी बीचमें पण्डित रामनारायणलालजीकी लिखी हुई "योरोप यात्रामें छः मास" नामक पुस्तक प्रकाशित हुई। पण्डितजीने करीब-करीब मेरे साथ ही यात्रा की थी। इसके बाद ही गणेशप्रसादजी सोनी लिखित "मेरी यूरोप यात्रा" देखनेको मिली। सोनीजी मेरे बहुत बाद गये थे। इस प्रकार अपने साथ जानेवाले और अपनेसे पीछे जानेवालोंकी दो-दो पुस्तकोंके पढ़नेसे स्वाभावतः मेरे हृदयमें भी भावना हुई कि मैं भी अपनी यात्राके संस्मरण पुस्तकाकार लिख डालूँ। यह भी मनमे आया कि पुस्तक ऐसी हो जिसमे इन पुस्तकोंका चर्वित चर्वण न हो बल्कि कुछ ऐसी बातें हो जो नवीन होनेके साथ ही लोगोंके लिये उपयोगी और लाभप्रद भी हो सकें।

इस पुस्तकमें यह प्रयत्न किया गया है कि योरोप रवाना होते समयके सामान और पासपोर्टसे लेकर योरोपमें भ्रमण करने तक जिन-जिन बातोंके जाननेकी आवश्यकता होती हैं उन सबोंका यथासाध्य समावेश हो जाय। साथ ही योरोपके दर्शनीय स्थानों, वहाँकी संस्थाओं एव वहाके रीति-रिवाजोंका भी वर्णन आ जाय। इन्हीं थोड़ेसे विचारोंको लेकर यह पुस्तक लिखी गयी है। यात्रियोंके न करने योग्य कार्योंका इसमें विशेष रूपसे वर्णन किया गया है। इसमें कहाँ तक सफलता मिली है इसे तो विज्ञ पाठक ही समझ सकते हैं। यह पुस्तक यदि किसीके कुछ भी काम आ सकी, तो मैं अपने परिश्रमको सफल समझूँगा।
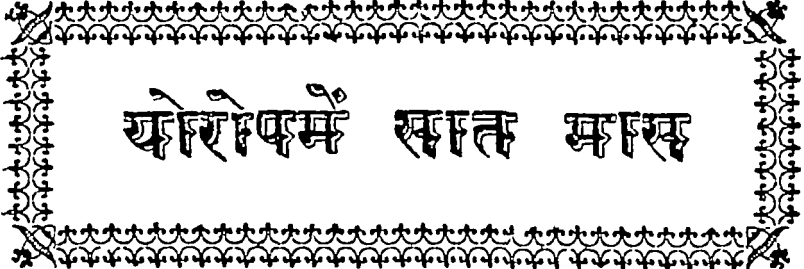
—लेखक

लेखक—

श्री धर्मचन्द सरावगी

योरोपमें सात मास

उपक्रमणिका

भ्रमणकी प्रवृत्ति—

बचपनमें भ्रमण करनेमें मुझे विशेष आनन्दका अनुभव होता था। मुझे बहुमूल्य वस्त्राभूषणोंके प्राप्त करनेकी विशेष लालसा नहीं रहती थी। उनका तो केवल आवश्यकतापूर्तिके लिये योंही उपयोग करना पड़ता था, जिन्हें घरवाले मेरे लिये प्रस्तुत कर दिया करते थे। पर जब कभी छोटी-से-छोटी यात्राका प्रबन्ध होता था, तो मेरा हृदय बांसों उछलने लगता था। बराबर नवीन दृश्यावलियोंके देखनेके लिये आंखें लालायित रहती थीं। मुझे वे यात्राएँ भी याद हैं जब मोटरोंका इतना प्रचार न था। एक स्थानसे दूसरे स्थानतक जानेके लिये बैल-गाड़ीकी शरण लेनी पड़ती थी, जो मन्दगतिसे खड़खड़ाती

और ऊंची-नीची होती हुई दो-दो तीन-तीन दिनोंमें पहुंचा करती थी। बैलगाड़ियोंमें सोनेके प्रबन्धकी बात याद आते ही समयके इस परिवर्तनपर आश्चर्य होता है। आज वही कई दिनोंका सफर बिना कष्टके कुछ घण्टोंमें हो तै हो जाता है।

विद्यार्थी जीवनमें भूगोल और इतिहासके मनोरंजक वर्णनोंने इन भावनाओंको और भी उत्तेजित किया। अब मुझे भ्रमण सम्बन्धी फिल्म देखनेमें जो आनन्द आता था वह अन्य फिल्मों-में नहीं। पुस्तके भी मैं भ्रमण-सम्बन्धी ही पढ़ा करता था। उस समय भ्रमण-सम्बन्धो पुस्तकोंका अभाव-सा ही था। लेखन-प्रणाली मुझे स्वामी सत्यदेवजी परिब्राजककी विशेष रुचिकर जान पड़ती थी। मैंने उनकी लिखी सब पुस्तकें पढ़ डालीं। धीरे-धीरे यूरोप-भ्रमणके विचार दृढ़ होने लगे और मैं इस विचारको सफल बनानेके प्रयत्नमें लगा रहा। उस समय स्वामीजीकी पुस्तकोंके पढ़नेसे यूरोप-भ्रमण एक साधारण बात जान पड़ती थी। मेरी मित्र-मण्डलीमें भी कई आदमी इस सुखद यात्राके लिये तैयार हो गये। कई वार तिथियां निश्चित हुईं; परन्तु कुछ-न-कुछ गड़बड़ी हो ही जाती थी। १९२६ ई० में एक वार फिर तैयारियाँ हुई, इस वार श्रीयुत भागीरथजी कानोडिया, पद्मराजजी जैन, स्वर्गीय पन्नालालजी मुरारका, डिवरूगढ़के एक मित्र और मैं था। सारी तैयारी हुई, कपड़े

तैयार कराये गये। पासपोर्ट आया और जहाजमें बर्थ रिजर्व करा ली गयी, पर जाना तो ईश्वराधीन था। सब कुछ होते हुए भी किसीको विशेष व्यापारिक कार्य आ पड़ा। किसी की स्त्री और भाईने भूख हड़ताल करके उन्हें डरा दिया। रहे-सहे एकाध कलकत्तेके विख्यात सज्जन हिन्दू-मुस्लिम झगड़ेकी समस्या सुलझानेमें लग गये। अपने राम भी इसीसे अटक गये; परन्तु स्वामीजीकी पुस्तकोंके पढ़ने तथा अन्य उपदेशात्मक पुस्तकोंसे विचार इतने दृढ़ हो गये थे कि मैं जानेका संकल्प त्याग न सका। क्योंकि इन पुस्तकोने मुझे घुट्टीकी तरह यह पिला दिया था कि यदि मनुष्य संसारमे कुछ करना चाहे तो उसके लिये कोई काम असम्भव नहीं है। परन्तु उसके लिये उसे उतना ही अधिक त्याग करना होगा। उसके ऊपर उतनी ही अधिक श्रद्धा करनी होगी। असम्भव शब्द केवल मूर्खों और कायरोंके कोषमें हुआ करता है, इत्यादि।

प्रत्येक मनुष्यके जीवनमे उसका एक लक्ष्य होता है यह लक्ष्य उसकी रुचिके अनुसार निश्चित होता है। मनुष्योंकी रुचि भी उसके स्वभावके अनुसार भिन्न-भिन्न होती है। उसीके अनुसार उसका आदर्श होता है। जिसका आदर्श जितना महान् होता है उसका चरित्र भी उतना ही उज्वल और महान् होता है। यही आदर्श उसके जीवनकी चरम साधना है।

इस संसारमें बिना लक्ष्यके मनुष्य एक कदम भी अग्रसर नहीं हो सकता। जिनके जीवनका कोई लक्ष्य नहीं, उनका उत्थान असम्भव है। जो अपने अभ्युदय और उत्थानके अभिलाषी हैं वे अपना एक लक्ष्य अवश्य बनायेंगे। उनके जीवनका विकास इसी नियमपर निर्भर है। जो अपने लक्ष्यको केन्द्र बनाकर एकान्त भावसे अपने कर्त्तव्यका पालन करते हैं, वे अवश्य सफल होते हैं। लक्ष्यके केन्द्रमें एक चुम्बक शक्ति होती है जो एक-न-एक दिन अपनी ओर अवश्य खींच लेती है; केवल चाहिए दृढ़ता और उसके प्रति अविचल विश्वास।

लक्ष्यके मार्गमें रुकावटें पैदा होनेपर भी जो अपने-अपने लक्ष्यके सच्चे हैं वे उन बाधाओंसे विमुख हो लौट नहीं सकते। संसार-की कोई भी शक्ति उनके विरोधमें ठहर नहीं सकती। मनुष्यका लक्ष्य या आदर्श इतना सुगम नहीं है कि वह अनायास ही प्राप्त कर ले। इसके लिये यत्न करना पड़ता है। यत्न करनेपर भी मार्गमें रुकावटें पैदा होती हैं। उन रुकावटोंका सामना करना ही मनुष्यका मनुष्यत्व है। यही उसकी जीवनकी सत्ताका जीवित-जागृत प्रमाण है। उसके जीवनमें रुकावटें आती हैं पर वे ठहर नहीं सकतीं। मानव-जीवनमें जन्मसे लेकर मरण पर्यन्त संग्राम-ही-संग्राम है। आजीवन संग्राम करते हुए मनुष्य एक दिन मृत्युको सहर्ष आलिंगन कर अपनी विजयका सिक्का जमा जब इस

संसारसे कूच कर चला जाता है तब उसकी कीर्ति शेष रह जाती है। मृत्यु भी उसका अस्तित्व नहीं मिटा सकती। संसारमें यही उसकी विजय है।

"यह भी एक निश्चित सिद्धान्त है, मनुष्यका आदर्श जितना बड़ा है उसकी कठिनाइयां भी उतनी ही बड़ी होंगी। यदि उसमें इतना साहस है कि वह अपने आदर्शके लिये उसका मूल्य चुका सकता है, तो वह वाधाओंकी परवा न कर अग्रगामी बने। उसकी सफलताका मूलमंत्र यही है कि वह अपनेको इस योग्य बनाये जिससे उसको कभी विमुख हो विचलित न होना पड़े।"

मनुष्यको पूर्ण अधिकार है कि वह अपने जीवनको जिस सांचेमें चाहे ढाल सकता है। वे व्यक्ति जो अपना आदर्श बनाकर आगे बढ़ते हैं यदि वे अपने जीवनको उसके अनरूप नहीं बना लेते तो वह स्थिति उनके लिये अनुकूल नहीं होती। परन्तु उसी समय यदि दृढ़ता उसके अन्दर पैदा हो जाती है तो वह अविचलित भावसे अपनेको इसके योग्य बना लेता है। मार्गकी कठिनाइयां उसके कष्टका कारण नहीं बनतीं और वह आनन्दके साथ अपने लक्षित आदर्शकी ओर बढ़ता जाता है।*

जब कभी अपने मनमें उचाट होती थी, तब मैं अपनी अस-

* श्रीकाशीनाथजी मालवीयके एक लेखका अवतरण।—लेखक

फलतापर घबरा जाता था। उस समय गोस्वामी तुलसीदासजी-के शब्द याद आ जाते थे। "जाकर जापर सत्य सनेहू, सो तेहि मिलत न कछु संदेहू।" और एक अङ्गरेजी कविकी युक्ति भी बराबर स्मरण रहती थी, "God helps those who helps themselves" और किसी उर्दू कविका एक शेर भी कानों-के परदोंपर आकर बार-बार टकराता था। "सैर कर दुनियां-की गाफिल, जिन्दगानी फिर कहां, जिन्दगी गर कुछ रही तो नौजवानी फिर कहां" इस प्रकार कई लेखकों और कवियोंकी कृतियोंने भ्रमणसे प्रोत्साहन दिया। मैं भी अपनी धुनमें लगा ही रहा।

यह बात ठीक है कि विदेश-भ्रमणके भाव प्रायः सभी नव-युवकोंके हृदयमे उठते हैं, पर उनमेंसे दो-चार प्रतिशत ही उसे पूरा करनेमे सफल होते हैं। सबसे अधिक बाधा तो आर्थिक स्थितिका सामना, दूसरे सामाजिक बन्धन, तीसरे घरवालोंकी ममता इन तीन महासमुद्रोंको पार करते समय सौमेंसे छानवे अट्ठानवे यात्री तो बेचारे एक साथ ही डूब जाते हैं, केवल बाकी जो धुनके पक्के होते हैं वे ही बाजी मारते हैं।

एक दिन एक मित्र द्वारा समाचार मिला कि मेरे बालसखा ताराप्रसाद खेतान बैरिस्ट्री पढ़नेके लिये लण्डन जा रहे हैं। उसी जहाज द्वारा कस्तूरचन्दजी बांठिया भी अपनी पत्नी और बच्चों

सहित जा रहे हैं। इस सुन्दर सुयोगको मैं हाथसे जाने देना नहीं चाहता था, इसलिये घरवालोंसे अनुनय-विनय कर उनके साथ जाना निश्चित कर लिया। सबसे पहले पासपोर्टका प्रश्न सामने आया। पासपोर्टके लिये लालबाजार थानेमें एक अलग आफिस बना है, जहांसे एक रुपया देकर पासपोर्टका फार्म लाना पड़ता है। उसमें कई खाने बने होते है। जिसमें अपना नाम, पिताका नाम, जन्मस्थान, उम्र आदि कई बातें और जानेका उद्देश्य लिखकर रजिस्ट्रारसे सही करानी पड़ती है। रजिस्ट्रार महाशय भी सही करनेके लिये १६) ले लेते हैं। कलकत्तेके बाहरके ग्रामोंमें मजिस्ट्रेटसे सही करानी पड़ती है। वहां सही करनेकी फीस तो नहीं देनी पड़ती, किन्तु वकीलोंकी जेब अवश्य गरम करनी पड़ती है। इसके पश्चात् यह फार्म पासपोर्ट आफिसमें दे दिया जाता है। वहांसे पुलिस द्वारा उक्त बातोंकी सचाई झूठाईका पता लगानेके लिये जांच की जाती है।

जांच-पड़ताल हो जानेके बाद यह फार्म कई सरकारी विभागोंमें होता हुआ एक महीनेमें पासपोर्ट आफिसमें वापस आ जाता है। यदि सरकारको पासपोर्ट देनेमें कोई बाधा नहीं होती तो पासपोर्ट आसानीसे मिल जाता है अन्यथा इन्कारीका उत्तर आ जाता है। पासपोर्ट आफिसके कर्मचारी बड़े लालची होते हैं। अस्तु; यदि वहां सीधे न पहुंचकर चिट्ठियोंसे काम

लिया जाय तो विशेष सुविधा होती है। उपरोक्त फार्म भरनेके समय अपने तीन फोटो भी २॥"×२" के देने पड़ते हैं। यूरोप जानेवाले यात्रीको फोटो उसी वेशभूषामें उतरवाना चाहिये, जिसमें वह यूरोपमें रहना चाहता है, अन्यथा विदेशमें कभी-कभी कष्ट उठाना पड़ता है।

पासपोर्ट पानेके पश्चात् जहाजमें स्थान रिजर्व (सुरक्षित) करानेकी आवश्यकता होती है। इसके लिये जहाज कम्पनियों-से या थामसकुक, अमेरिकन एक्सप्रेस आदि यात्रियोंकी कम्प-नियों द्वारा प्रबन्ध किया जा सकता है।

जहाजमें प्रायः तीन दर्जे हुआ करते हैं, पहला कैबिन डिलुक्स, यह दर्जा सर्वोत्तम और सबसे अधिक खर्चीला होता है। इसमें एक कमरेमें केवल दो यात्री रहते हैं। यात्रियोंके लिये सुन्दर पीतलके पलंग, आलमारी, कुर्सी, मेज और शीशा आदि सभी आरामकी वस्तुएं प्रस्तुत रहती हैं। इसका किराया लगभग १०३४) होता है। इस दरजेमें प्रायः राजा-महाराजा ही घूमा करते हैं। दूसरा फर्स्ट क्लास (पहला दरजा) यह दरजा कैबिन डिलुक्सके दरजेसे कुछ कम सजा हुआ होता है। यात्रीको खेलने-कूदने और खाने-पीनेकी सुविधाएं दोनों दरजों-में एक सी हैं। इसका भाड़ा लगभग ८५८) होता है। तीसरा सेकेण्ड क्लास है। इस दरजेके यात्रियोंका प्रबन्ध बिल्कुल अलग

होता है। रहने, खाने और उठने-बैठनेकी जगहें बिलकुल अलग होती हैं। सेकेण्ड क्लासमें भी तीन श्रेणियां हैं, ए०, बी०, और सी०। दो आदमीके रहनेके कमरेको ए०, तीन आदमियोंके रहनेके कमरे-को बी०, और चार आदमियोंके रहनेके स्थानको सी०, कहते हैं। भाड़ा भी इसी क्रमसे न्यूनाधिक होता है। केवल रहनेकी इस विभिन्नताको छोड़कर अन्य सुविधाओंमें और कोई भेद नहीं होता। खुशमिजाज और मिलनसार आदमियोंके लिए तो सेकेण्ड क्लासका सी०, दरजा ही सबसे अच्छा और सस्ता होता है।

इन दिनोंमें तो कई जहाजी कम्पनियोंने केवल एक ही दरजेके जहाज चलाने आरम्भ कर दिये हैं। जिन्हें वे टूरिस्ट 'थर्ड क्लास कहते हैं। इस जहाजमें केवल एक ही दरजा होता है। इससे यात्रियोंमें किसी प्रकारकी विभिन्नता नहीं रहती। यात्रियोंका समय विना किसी ऊंच नीचके, भेद-भावके बीत जाता है। इनका भाड़ा सबसे कम लगभग ४५५) है। स्टीमरोंके रवानगीकी तारीख अंग्रेजीके पत्रोंमें बराबर प्रकाशित होती है। इसपर भी यात्रियोंको सुविधा देनेवाली थामसकुक कम्पनी अपना 'Travalres Gazette नामक एक मासिकपत्र निकालती है जिसका वार्षिक मूल्य तीन रु० है, परन्तु योरोप भ्रमणका विचार करनेवालोंको एक कार्ड भेज देनेसे

मुफ्तमे भेजा करती है। इसमें यात्रा और जहाज सम्बन्धी सब खबरे प्रकाशित हुआ करती हैं। मैंने भी थामस-कुक कम्पनी द्वारा ही सेकेण्ड क्लासकी एक टिकट ले ली। (भारतमें इस कम्पनीके कई आफिस हैं, देहली, कलकत्ता, करांची. रंगून और बम्बई आदि।) केवल कम्पनीका नाम और स्थान लिख देनेसे पत्र पहुच सकता है। यह कम्पनी यात्रियोंके लिए पण्डेका काम करती है।

योरोपयात्रीको कपड़े ऋतुके अनुसार लेने आवश्यक होते हैं। सर्द ऋतुमें यात्रा करनेवाले यात्रीको सर्दीसे बचनेके लिये पूरा प्रवन्ध यहींसे कर लेना चाहिये, क्योंकि यहां की सर्दी और वहांकी सर्दीमें जमीन आसमानका अन्तर है। यदि यात्री पहलेसे ही तैयार न हो तो बड़ा कष्ट उठाना पड़ता है। जाड़ेके लिए कम-से-कम तीन ऊनी गंजियां, छः कमीजें, दो लाउंज सूट, एक ओवरकोट, एक टोपी, एक ऊनी गाउन और दो ऊनी सोनेकी पोशाकें, एक दर्जन कालर, आधे दर्जन टाई, तीन जोड़ी मोजे और दो ऊनी अण्डरवेयर अवश्य होने चाहिये।

गर्मीमें यात्रा करनेवालोंको उक्त वस्तुएं ऊनी न लेकर रेशमी या सूती लेनी चाहिये, इससे अधिक चीजे साथ ले जानेसे व्यर्थमें बोझ बढ़ता है। योरोपके देशोंमें इच्छा और आवश्यकतानुसार चीजें खरीदी जा सकती हैं। अंग्रेजी रंग-

ढंगसे रहनेवाले यात्रीको कपड़े सिलाते समय, किसी अच्छे कटरसे कपड़े सिलाने चाहिये। योरोपवाले कपड़ेके मूल्यपर उतना ध्यान नहीं देते जितना उसकी सिलाई और काट-छांट पर। कपड़ोंको छोड़कर आवश्यकीय सामानोंमें हजामतका सामान, टिंचर, सिर दर्दकी दवा, जहाजपर पहननेके लिए टेनिश शू ले लेनी चाहिये। यात्रीको साथमे सोने और बिछानेका सामान लेनेकी कोई आवश्यकता नहीं; क्योंकि रास्तेमें तो जहाज कम्पनियां सब कपड़ोंका प्रबन्ध करती हैं। और योरोप पहुचनेपर वहांकी प्रथानुसार सभी होटलो और रेलोंमें ये सामान मिल जाते हैं।

कई बार देखा गया है कि अनजान आदमी अपने साथ विस्तरोंका एक बड़ा बण्डल ले जाते हैं; किन्तु यह उनके सरका भारी बोझ हो जाता है। यात्रीको खानेके सम्बन्धमें भी चिन्ता न करनी चाहिये। जहाज कम्पनी जो किराया लेती है उसमें भोजनका खर्च भी शामिल है। यात्री जिस प्रकारकी वस्तु खाना चाहे उसी वस्तुका प्रबन्ध उसे कर दिया जाता है। यदिकोई यात्री अपने साथ कोई वस्तु ले भी जाय तो समुद्री हवा लगनेके कारण वह अधिक देरतक ठहर नहीं सकती।

जहाजपर डेकचेयरकी बड़ी आवश्यकता पड़ती है। यद्यपि

जहाज कम्पनियों द्वारा डेक-चेयर दी जाती है, तिसपर भी वे संख्यामें पर्याप्त नहीं होतीं। इसलिए अपनी एक चेयर साथ ले जाना अच्छा होता है।

प्रस्थान—

आजका दिन मेरे लिए एक विचित्र दिन था, रह-रहकर हृदयमें एक प्रकारकी गुदगुदी उठती थी। कभी तो अपने उद्देश्यकी सफलताको देखकर प्रसन्नता होती थी और कभी स्वजनोंके विछोहका अनुभव करके दिलमें एक प्रकार की टीस-सी उठती थी। पिछले दिनों कई बार यात्राका पूरा-पूरा प्रबन्ध हो जानेपर भी कई ऐसी असुविधाएं आ पड़ीं कि यात्राको स्थगित कर देना पड़ा। इस बार भी सब तरहके प्रबन्ध हो जानेपर भी हृदयमें जब ऐसे विचार उठते कि कहीं फिर रुकावटे न आ पड़ें, इस बातसे हृदयमें अशान्ति और उद्विग्नताकी लहरें उठने लगतीं। सारा दिन मित्रोंसे मिलने-

जुलनेमें लग गया। नवयुवक मित्र उत्साह और बधाई देते थे; पर कुछ गुरुजनोंसे यात्राको रोकनेका ही परामर्श मिलता था। मैं उन्हें कुछ उत्तर न देकर चुप रह जाता था। क्योंकि मैं जानता था कि यात्रा किसी अवस्थामें भी रोक नहीं सकता; फिर इन्हें इनकी इच्छाके विरुद्ध कुछ कहकर क्यों दुःखित करूं?

गाड़ीका समय होनेपर जब मैं माताजीसे विदाई लेने गया उस समय मेरी और उनकी जो अवस्था थी उसे भुक्तभोगी ही जान सकते हैं, या रामायणके वे पाठक जिन्होंने कभी कौशल्या और रामके विछोहको पढ़ा है। उस समय न उनके मुंहसे एक शब्द निकलता था और न मेरे मुंहसे। दोनों पत्थरका दिल किये विदाईके समयकी प्रतीक्षा कर रहे थे। दोनोंको इस बातका भय था कि कहीं अश्रुपात न हो, नहीं तो अपशकुन होगा। मेरी शुभचिन्तनाकी अभिलाषाने ही बरबस उनके आंसुओंकी धाराको रोक रखा। देखते-देखते माताजीका चेहरा लाल हो गया। वे अपने धैर्यको न रख सकी। आशीर्वाद देते समय उनके श्रीमुखसे जो शब्द निकले वे रुंधे हुए गलेसे निकले। मेरे धैर्यका बांध भी टूट गया। मां और मैं दोनों छोटे बच्चोंकी भांति फूट-फूट कर रोने लगे। मेरे सभी भाव इस अश्रु-प्रवाहमें तिनकेकी तरह बह गये।

"मैंने मन-ही-मनमें मांसे कहा—मां घबराओ नहीं, यदि मैं

जीता रहा तो फिर चरणोंके दर्शन करूंगा" किन्तु उन्हें सुनाकर कुछ प्रार्थना करनेमें मानों मेरे ओठोंपर पहाड़से भारी बोझा लद गया था। बड़ी कठिनाईसे उनसे विदाई मांगनेके लिये मेरे ओंठ हिले। उन्होंने अस्पष्ट शब्दोंमें कहा—जिसे मैंने शब्दों और कानोंकी शक्तिसे नहीं किन्तु हृदयसे सुना,वे शब्द यह थे।"तुम्हारी इच्छा जानेकी है तो जाओ, किन्तु अधिक दिन वहां न रुकना" यद्यपि ये सारी-की-सारी बातें बहुत शीघ्र हो गयीं परन्तु उस समयका एक-एक सेकेण्ड मुझे घण्टोंकी तरह बीतता था। नीचेसे पिताजीने जल्द आनेके लिए आवाज दी। उनकी आवाज सुनते ही मैं अपना हृदय कड़ाकर माताजीको अन्तिम बार प्रणाम कर नीचे चला आया। मोटरपर सब सामान पहले हीसे लदा था। चढ़ते ही मोटर तेजीसे हवड़ेकी ओर चली। हवड़े पहुंचनेपर मैंने रिजर्व कराये हुए डिब्बेके पास कई मित्रोंको अपने आनेकी प्रतीक्षा करते पाया। गाड़ी छूटनेमें अभी देर थी। इससे सब सामान गाड़ीमें रखकर मित्रोंके पास प्लेटफार्मपर उतर आया। धीरे-धीरे मित्रोंकी संख्या बढ़ने लगी। गाड़ी छूटने-तक एक खासी भीड़ हो गयी। प्रचलित प्रथानुसार मित्रोंने मालाएं पहनायीं और कई मित्रोंने गिन्नियां भेंट कीं। उस समय सबसे विचित्र बात यह थी कि जो गुरुजन अबतक जानेका विरोध करते थे वे भी अब मेरे सकुशल लौट आनेकी शुभकामना

कर रहे थे। देखते-ही-देखते गाड़ी छूटनेका समय हो गया। गार्डने सीटी दी और इंजनने भी उसका जवाब दिया। मैं भी उनका साथ देनेके लिए मित्रोंका यथायोग्य अभिवादन कर गाड़ीमें बैठ गया और तबतक मैं गाड़ीसे सिर निकालकर स्टेशनकी ओर देखता रहा जबतक कि मेरी आंखे स्टेशनके किसी चिह्नको देख सकनेमें समर्थ रहीं।

भारतकी सीमापर—

यहां हमलोग अपने पूर्व परिचित श्रीयुत केशवदेवजी नेवटियाकी गद्दी कालवादेवी रोडमें ठहरे। जब मेरे हृदयमें लन्दन जानेकी प्रवृत्ति नहीं उत्पन्न हुई थी, तब मैं भारतका प्रमुख नगर बम्बई देखनेके लिए अधीर था; किन्तु लण्डन यात्राकी उत्कण्ठा और प्रस्थानकी उद्विग्नताने मुझे बम्बईसे बिलकुल उदासीन बना दिया। बम्बई देखनेका पर्याप्त समय रहनेपर भी कही घूमने जानेकी इच्छा ही न हुई। बम्बईमें थामसकुक कम्पनी द्वारा मैंने अपने सामानका बीमा कराया, और उन्हें कुछ नकद रुपये देकर उनके ट्रावलर्स Travelors चेक ले लिये। इन चेकोंमें यह सुविधा होती है कि यदि वे खो जायं तो आप थामसकुक

कम्पनीको सूचित कर दें तो वह चेकोंका रुपया दूसरे किसीको न देगी, और यदि आपको कहीं रुपयोंकी जरूरत होगी तो थामस-कुकके आफिसमें या किसी बड़े फर्मके आफिसमें उसे देकर उसके रुपये ले सकते हैं। रुपये लेते समय आपको उन चेकोंपर सही करनी पड़ेगी। यह चेक अधिकतर पांच-पांच सौ पौण्डके होते हैं। अस्तु; यात्रीके पास अधिक जोखिम नहीं रहती। कम्पनी इस कार्यके लिए कुछ मेहनताना नहीं लेती। वह केवल व्याजके लाभपर ही सन्तोष कर लेती है। यहींपर मैंने थामस-कुक कम्पनीको अपने रिजर्व कराये हुए सीटके पूरे रुपये देकर टिकट ले लिया।

ता० २६ जनवरीको जहाज छूटनेवाला था। इसलिये हमलोग सुबह ही खा-पीकर विलाडपियरकी ओर चल दिये। विलाडपियर बम्बईके उस स्थानका नाम है जहांसे जहाज योरोप-के लिए छूटा करते हैं।

प्रस्थानके पूर्व एक ऐसी विचित्र घटना घटी जिसका उल्लेख कर देना आवश्यक है। जिस समय मैं नेवटियाजीकी गद्दीमें अपनी यात्राका सामान ठीक कर रहा था, उस समय एक सज्जन बिरजिस पहने, साफा बांधे और हाथमें एक घड़ी लिये हुए आये। आते ही उन्होंने पूछा "धर्मचन्द यहां हैं?" अन्य लोगोंने मेरी ओर इशारा कर दिया। मैंने उचित अभि-

लिए थामसकुकके आदमीको अपनी केबिनका नम्बर बताकर उसके हवाले किया। केवल ओवरकोट अपने पास रख लिया। जिस समय मैं बिलाडपियर पहुचा, उस समय विशालकाय जहाज समुद्रकी लहरोंपर एक अबोध बच्चेकी तरह खड़ा था। अबतक यात्रियोंको जहाजपर चढ़नेकी अनुमति नहीं मिली थी। धीरे-धीरे लोगोंकी भीड़ बढ़ने लगी। कुछ समय पहले जिस जगह इने-गिने आदमी थे, वहां एक खासा जमघट लग गया। सबकी निगाह रुक-रुककर उस कमरेकी ओर जाती थी, जिस कमरेसे यात्रियोंको जहाजपर चढ़नेकी अनुमति दी जाती थी। लगभग घण्टेभर तपस्या करनेके पश्चात् दरवाजा खुला। एक सरजेण्ट दरवाजेको आधा खोलकर खड़ा हो गया और एक-एक यात्रीको भीतर जानेकी अनुमति देने लगा।

यद्यपि सभी यात्रियोंको इस बातकी उत्सुकता थी कि पहले हमीं चढ़ जायं, पर सभ्यताके नाते सब अपने-अपने स्थानपर ही खड़े थे। कुछ क्षण बाद मेरा भी नम्बर आया। हृदयमें एक उथलपुथल सी मच गयी। सुबहकी घटना आंखोंके सामने आ गयी ; जिसे मैं अन्तिम बला समझता था। वह अन्तिम बला वह नहीं यह थी। हृदयमें रह-रहकर प्रश्न उठते थे कि आफिसर क्या पूछेगा और मैं क्या उत्तर दूंगा। कहीं ऐसा न हो कि मुझसे ठीक-ठीक उत्तर न देते बने और गलत उत्तरके कारण यात्रा

रुक जाय। कहीं डाक्टर ही मेरे स्वास्थ्यको यात्राके अनुपयुक्त न कह दे। कहीं सबेरेवाला ज्वर फिर न सिरपर सवार हो जाय और आफिसरोंसे कहकर गड़बड़ी न मचा दे, इत्यादि। यह सोचते-सोचते मैं आफिसरके पास पहुँच गया। उसने मेरा पासपोर्ट देखकर उसपर कुछ लिखा। उसके पास ही खड़े दूसरे व्यक्तिने मेरी नाड़ी देखी और एक पुरजा मेरे हाथमें देते हुए जानेका इशारा किया। यह सारी कार्यवाही एक क्षणमें हो गयी।

जहाजपर—

मैं प्रफुल्लित मन जहाजपर आ गया। उस समय मुझे जो प्रसन्नता हो रही थी, वह वर्णनातीत है। मेरे साथ बिलाडपियर तक पहुचानेके लिए कई मित्र आये थे किन्तु जब उन लोगोंको ज्ञात हुआ कि जहाजपर जानेके लिए हर व्यक्तिको तीन रुपयों-की टिकट लेनी पड़ती है तो केवल एक टिकट पिताजीके लिए ही ली गयी। अपनी केबिनमें जाकर वहां सब सामान देखा, वह सुरक्षित पड़ा हुआ था। जहाजपर पहुचनेपर डेक-चेयरकी याद आई। भाग्यवश वहां एक बेचनेवाला भी जेटी (प्लेट फार्म) पर खड़ा था। उसे मुंहमांगे दाम ५) देने पड़े। जो जहाज अभी तक शांत खड़ा था, उसने पहली सीटी दी।
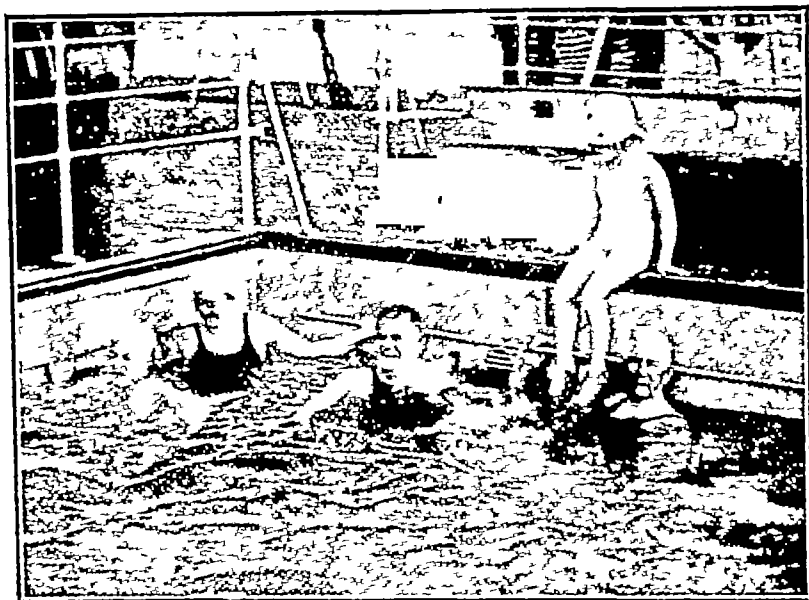
जहाजमें तैरनेका प्रबन्ध [पे० २४]
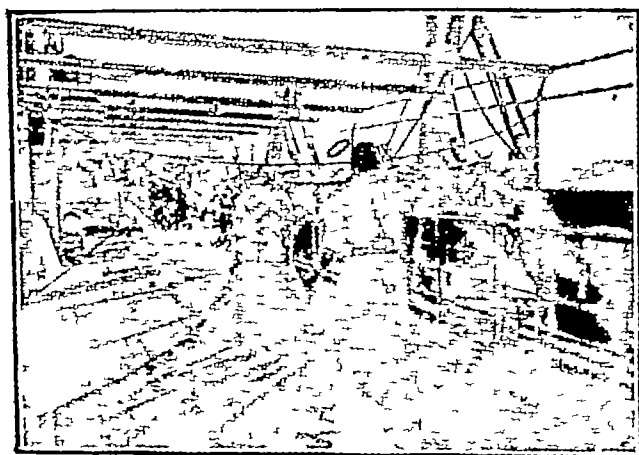
जहाजमे डेक-टेनिसका खेल [पे० २४]
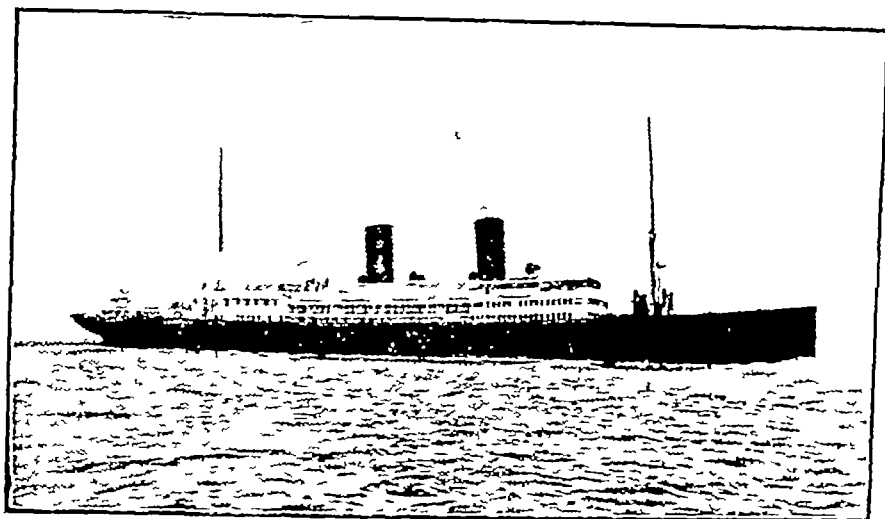
हमारा जहाज "रांची" [पे० २४]
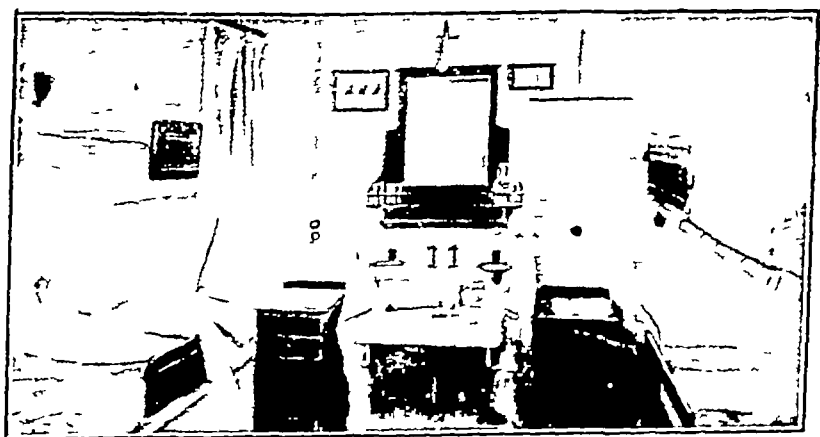
सेकेन्ड क्लासका केबिन [पे० २४]

मैंने पिताजीको मूक भाषामें प्रणाम किया और उनके गलेसे लिपट गया। उन्होंने भी कण्ठावरुद्ध शब्दोंमें आशीर्वाद देते हुए शीघ्र लौट आने और सच्चरित्र रहनेके लिए कहा। पिताजीने वात्सल्यपूर्ण नेत्रोंसे देखते हुए मेरा साथ छोड़ा और जहाजने भी अपने स्थानको छोड़ दिया। जबतक जहाज नहीं छूटा था मुझे एक-एक मिनट घण्टोंकी तरह बीतते थे। मैं समझता था कि जहाजने अंगदके पैरकी तरह आसन जमा लिया है। अब बम्बई-की दृश्यावली दृष्टिशक्तिसे दूर होने लगी और मैंने भी सतृष्ण नेत्रोसे देखते हुए भारतको प्रणाम किया और अपनी केबिनमें लौट आया। उस समय हृदयमें वह उत्साह नही था। बार-बार घरवालोंकी याद और भारत-भूमिकी विदाई बेहद खटकती थी। कभी-कभी तो यह भी सोचता कि मैंने ऐसा विचार ही क्यों किया ? योरोप जानेकी आवश्यकता ही क्या थी ? आज मैं एक निर्वासितकी भांति अपनी जन्मभूमिको त्याग रहा हूं। इस स्वर्णभूमिके फिर दर्शन होंगे या नहीं।

इस अवस्थामे लगभग आधे घण्टे रहनेके बाद मेरी केबिनके दूसरे साथी मिस्टर आर० नटराजनने आकर कहा— “वेल मिस्टर सरावगी, आप यहां क्यों बैठे हैं ? चलिए ऊपर डेकपर चलें, बड़ी सुन्दर हवा आ रही है।” मैंने अपने मनोभावों-को कठिनतासे दबाकर और मनोरञ्जनका दूसरा साधन न

देखकर उनके साथ हो लिया। डेकपर काफी भीड़ थी और उसपर भारतीयोंकी संख्या भी काफी थी। हमलोग १३ भारतीय इस जहाजसे यात्रा कर रहे थे। दूसरे जहाजोंमें तो दो-चार भारतीय यात्रियोंका होना सौभाग्यकी बात समझी जाती है, अतः इस जहाजमें १३ भारतीय यात्रियोंकी संख्या अवश्य पर्याप्त और संतोषजनक कही जा सकती है।

कुछ देरतक आपसमें बातचीत होनेके पश्चात् मित्र तारा-प्रसाद खेतान और मैं जहाजका निरीक्षण करनेके लिए चले। जहाज P & O Steamer Co. के अच्छे जहाजोंमेंसे था और इसका नाम मेरी जन्मभूमिके नामपर 'रांची' था। इसलिए यह मुझे और प्यारा एवं आकर्षक मालूम होता था। इस जहाजमें कोयलोंकी जगह मोटा तेल (Crude oil) जलाया जाता था। इस कारण उसमें सफाई अधिक थी। गुदामोंको छोड़कर उसमें चार मंजिल थे। जिनमें पहला और दूसरा यात्रियोंके केबिन और भोजनालयके लिए था। तीसरेमें पुस्तकालय, स्मोकिंग रूम (बैठनेके कमरे) इत्यादि थे। चौथा मंजिल खेल-कूदके लिए सुरक्षित था। हम लोग अबतक जहाजका निरीक्षण ही कर रहे थे कि एक जहाज-कर्मचारीने एक पुस्तक लाकर दी, जिसमें इस जहाजसे यात्रा करनेवाले सभी यात्रियोंके नाम थे। अंग्रेज और हिन्दु-

स्तानियोंको मिलाकर कुल १७० यात्री इस जहाज में थे। हमें जहाजमे इस लिस्टको देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि इन लोगोंका कैसा अच्छा प्रवन्ध है। साथ ही यह भी प्रश्न उठा कि यदि बम्बईसे छापकर यह लिस्ट लाई जाती तो सम्भव है कोई यात्री टिकट खरीदकर भी रुक जाय, किन्तु यात्रियोंकी संख्या बिलकुल ठीक थी। उस समय मेरे कुतूहलकी सीमा न रही। पीछे यह ज्ञात हुआ कि जहाजपर एक जहाजी प्रेस भी रहता है। उसकी छपाई सफाई इतनी सुन्दर थी कि वह किसी भी भारतीय प्रेससे टक्कर ले सकती थी।

इसके पश्चात सेकेण्डक्लासके सब भारतीयोंकी एक सभा हुई और यह निश्चय हुआ कि कप्तान और हेड स्टुवर (प्रधान कर्मचारी) से कहकर हमलोगोंको निरामिष भोजनका प्रवन्ध कराना चाहिए। तदनुसार कई मित्र उनसे मिलनेके लिए गये। वे वेचारे वहुत भले आदमी थे, अतः हमलोगोंके प्रस्तावको उन लोगोंने मंजूर कर लिया। दूसरे दिन सुवह ही देखता हूं कि मेरे विस्तरके पास टेवुलपर चाय और कुछ फल रखे हुए हैं। चाय पीने-का अभ्यास न होनेपर भी उस दिन तो चाय पी ली, परन्तु जब वांठियाजीसे वात-चीत हुई तो उन्होंने कहा,—"जिस वस्तुकी रुचि हो वही खानी चाहिए। वे खानी ही होगीं यह कोई जरूरी वात नहीं है। इसके पश्चात् मैं तो वरावर दूध और

फल ही मँगाया करता था। दूध वैज्ञानिक उपायों द्वारा सुरक्षित रखा जाता है जिससे बहुत दिनों तक नही बिगड़ता।

ता० २८ जनवरीको मिस्टर दे ने—एक बंगाली विद्यार्थी जो इञ्जीनियरी पढ़नेके लिए लन्डन जा रहे थे,—आकर शर्माते हुए कहा—मिस्टर सरावगी ! मेरी कमीजें और गंजी मैली हो गयी हैं, मैं क्या प्रबन्ध करूं ? समुद्री पानी जो गुसलखानेमें आता है उससे तो वे बिलकुल साफ नहीं होतीं। मैंने झट बटन दबा नौकर बुलाया और उससे उस सम्बन्धमें पूछा। उससे यह मालूम होनेपर बड़ा आश्चर्य हुआ कि यात्रियोंकी सुविधाके लिए जहाजमें एक धोबीखाना भी है। फिर क्या था, धुलाई भी बड़ी अच्छी हुई और चार्ज भी कुछ अधिक नहीं था। जहाजमें एक नोटिस बोर्ड लगा था, जिसपर यात्रियोंके लिए आवश्यक सूचनाएँ और वायरलेस (बेतारके तार) से आये हुए ताजे समाचार टाइप करके चिपका दिये जाते थे।

आज बोर्डपर दो नवीन सूचनाएं थीं; एक तो यह कि ता० ३० को जहाज अदन पहुचेगा। इसलिए जिन यात्रियोंको भारत पत्र भेजने हों, वे लिखकर उन्हें जहाजके पोस्ट बक्समें डाल द। दूसरी यह थी कि यात्रियोंके पास कोई भी बहुमूल्य और जोखिमकी चीज हो तो वह खजाञ्चीके पास जाकर जमा करा दें।

आजका दिन बड़ा सुहावना था। इन दो दिनोंमें लोगोंसे काफी मेल-जोल हो गया था। अपने-अपने विचारानुसार अलग-अलग टोलियां बँध गयी थीं। हम भारतीयोंकी एक अलग टोली तो थी ही, पर खेलाड़ियोंकी एक क्लव और बन गयी; जिसमें कुछ रुपये इकत्रित हुए और यात्राके वाकी दिनोंको विनोद पूर्वक बितानेके लिए ताश, सतरंज, डेगटेनिस, डेग क्वाइट, वकेट क्वाइट, स्वीमिंग, (तैराई) डांसिग (नाचने) आदिकी प्रतियोगिताकी तैयारियां होने लगीं।

जो यात्री बिल्कुल किताबी कीड़े थे, उनके लिए जहाजके पुस्तकालयसे मुफ्तमें पुस्तकें पढ़नेको मिलती थीं।

आज अनन्त जलराशिपर यात्रा करते-करते चार दिन हो गये। भूमिको देखनेके लिए आंखें तरसती थीं। जिस जल-राशिको देखनेके लिए घण्टों मैं समुद्रके किनारे बैठकर उसकी प्रशंसामें भावपूर्ण सुन्दर शब्दोंके पुल बांधा करता था, वही जल-राशि आज कांटेकी तरह हृदयमें चुभ रही थी। जहाज आज अदन पहुंचेगा, इसकी सूचनासे हृदय प्रफुल्लित हो रहा था। सब-के-सब साथी अदन देखनेके लिए उत्सुक थे। मिस्टर ग्रांठियाके बच्चेकी तबीयत कुछ खराब थी इसलिए उन्होंने अदन जानेसे इन्कार कर दिया।

अदनमें—

अदनमें यात्री चढ़ते और उतरते भी हैं, साथ-ही-साथ जहाज आगेकी यात्राके लिए तेल भी लेता है। अदन—मरुभूमिमें होनेके कारण यहां पानीकी वहुत कमी है। परन्तु इस असुविधाको दूर करनेके लिए एक विचित्र तरहका तालाव वनवाया गया है जिसमें वरसाती पानी आकर इकट्ठा होता है और यही साल भर जनताके काम आता है।

अदन व्रिटिशराज (अंग्रेज) के अधीन है, यह एक वड़ा कस्वा भारतीय वस्तियोंकी याद दिलाता है। यहां मुसलमानोंकी संख्या अधिक है। पहनावा भी हिन्दुस्तानके लोगों जैसा मिलता-जुलता है। यहांपर मारवाड़ियोंकी कई दुकाने भी देखनेमें आयीं।

दूकानोंपर सिंदूरसे शुभः लाभः लिखा हुआ था। इनका पह-नावा भी ठीक कलकत्तेके मारवाड़ियोंकासा था। यह देखकर मेरे हृदयमें उनके प्रति श्रद्धा और स्नेह उत्पन्न हुआ, किन्तु कई कारणोंसे मैं उनसे मिल न सका। मुझे यह भी पता लगा कि यहांसे दस मीलकी दूरीपर एक जैन मन्दिर भी है।

यह दो-तीन घण्टेका समय केवल शहरके निरीक्षणमात्र क-रनेमे लग गया। लौटते समय थामसकुक आफिसके सामने कुछ बच्चे मिले जो अदनकी दृश्यावलियोंके चित्र बेच रहे थे और रुप-योंको पौण्डसे बदल रहे थे। जहाजके प्रस्थानका समय हो जाने के कारण हम सबलोग जहाजपर आ गये। जहाजअबतककी अपनी सफलतापर इठलाता हुआ भावी विपत्तियोंका सामना करनेके लिए अनन्त जलराशिको चीरताफाड़ता आगे बढ़ा।

दूसरे दिन, जहाजमें अलग-अलग खेलोंकी मैच प्रारम्भ हुई। संध्या समय बालडांस हुआ, केवल भारतीयोंको छोड़-कर अन्य सभी यात्रियोंने इसमे भाग लिया। ता० १ फरवरीको नोटिस बोर्डपर कैरोकी यात्रा की सूचना लगी हुई थी। जहाज कम्पनीवालोंने थामसकुक कम्पनी द्वारा ऐसा प्रबन्ध भी कर रखा है जिससे जितने समयमें जहाज स्वेज नहर पार करता है उतने ही समयमे यात्री मोटर और रेल द्वारा कैरो जाकर वापस आ सकता है।

कैरो मिस्र देशकी राजधानी है और कैरोमें ही संसारके सप्ताश्चर्योंमेंसे एक पिरामिड भी है। इस यात्राके लिये ७ पौण्ड ७ शिलिङ्ग चार्ज रखा गया था। मैंने इस सुविधासे लाभ उठानेका विचार किया और एक साथी बनानेकी कोशिश करने लगा। श्री कस्तूरचन्दजी बांठियाने मुझे तो जानेकी राय दी किन्तु सपरिवार होनेके कारण उन्होंने स्वयं जानेसे इन्कार कर दिया। सारे दिन प्रयत्न करनेके पश्चात् भारतीय यात्रियों-मेंसे मिस्टर नटराजनने ही मेरे साथ जानेकी स्वीकृति दी।

दूसरे दिन फिर मैचें खेली गयीं। अपने राम भी कई खेलोंमें सेमी फाइनल तक पहुंचे थे, परन्तु प्राइज़ लेना किसी दूसरेके भाग्यमें लिखा था। आज यात्रा करते कई दिन हो गये थे इसलिए घरवालोंको अपना कुशल समाचार वायरलेस टेलीग्राम द्वारा भेजवानेका विचार किया। पहले तो भारतीय टेलीग्रामकी भांति १२ शब्द लिखकर ले गया, किन्तु जब यह ज्ञात हुआ— कि एक-एक शब्दके दो-दो शिलिङ्ग दाम हैं तब उन्हें घटा-कर चार शब्दोंमें ही अपना काम बनाया। उसी दिन नोटिस बोर्डपर अफगानिस्तानमें दंगेका समाचार पढ़ा, और यह भी पढ़ा कि अमानुल्ला (भूतपूर्व सम्राट्) वायुयान द्वारा, अपनी जान बचाकर पेशावर आ गये। जहाजवालोंके बेतारके तारके इस प्रबन्धको देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ।

मरुभूमिका जहाज [पे० ३२

लण्डनकी पुलिस
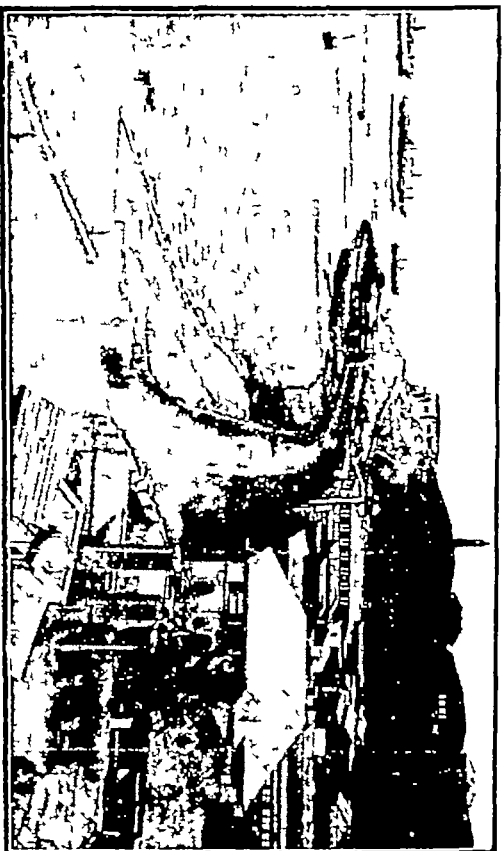
अदन [पे० ३२]

मिश्रके अधिवासी

[पे० ३२]

ता० ३ फरवरीको सुबह साढ़े चार बजे मैं और मेरे साथी नटराजन और कई यूरोपियन साथी एक लंच (मोटर बोट) द्वारा किनारेपर पहुंचा दिये गये। किनारेपर चार मोटरगाड़ियां तैयार थीं। कड़ाकेकी ठण्डक पड़ रही थी। मोटरवालोंने खूब मोटे कम्बलोंका प्रबन्ध कर रखा था, परन्तु कल जो गरमीका अनुभव कर रहे थे और आज अचानक ही इतनी ठण्डक यह हमलोगोंके लिए असह्य मालूम होने लगी।

दस बजे हमलोग कैरो नगरमें पहुंच गये। वहांके सर्वोत्कृष्ट होटल (Savoy) सेवायमें ठहरनेका प्रबन्ध था। कुछ फलाहारके पश्चात् संसार प्रसिद्ध पिरामिड देखनेके लिए गये। जहांतक मोटरें जा सकती थीं, मोटरोंपर गये, उसके पश्चात् मरुभूमिके जहाज ऊंट महाराजकी शरण लेनी पड़ी। वे हमें बेढंगी विशालकाय पीठपर चढ़ाकर पिरामिडके नजदीक तक ले गये। इन पिरामिडोंको देखकर आश्चर्य होता है कि इतने बड़े-बड़े पत्थर किस तरह इस मरुभूमिमें लाये गये और किस तरह एक दूसरेपर चढ़ाये गये।

इसके पश्चात् यहांका अजायबघर, मस्जिदें और शहरके कई प्रसिद्ध स्थानोंको देखा। यहां कई नवीन बातें थीं। ट्रैफिक भारतके ट्रैफिकसे उलटी थी। भारतीय सवारियां प्रायः बायीं ओर चलती हैं और आनेवाली सवारियोंके लिए अपनी

दाहिनी ओर स्थान छोड़ देती हैं। परन्तु यहां इसका ठीक उलटा दाहिनी और बायीं ओरको था। यहांकी पोशाक पुराने जमानेके लोगोंकी तरह एक चोगा, पायजामा और पगड़ी है और नये जमानेके लोग अंग्रेजी पोशाक और तुरकी टोपी व्यवहार करते हैं। स्त्रियां सिरसे पैरतक काले रङ्गका चोगा पहनती हैं। केवल आंखोंके पास वह जरा-सा खुला रहता है। यहां इस मशीनरियोंके युगमे भी गधे और खच्चरोंसे काम लिया जाता है। यहां हमे जो गाइड मिला था,वह बड़ा ही विचित्र जीव था। दिन-भर घुमाते समय उसकी यही प्रवृत्ति थी कि हमलोगोंसे अधिक-से-अधिक पैसे ले सके। जिस दूकानपर जाता, वहींकी वस्तुओंकी तारीफके पुल बांध देता और कुछ-न-कुछ लेनेके लिए बाध्य करता। हम उसकी कैसे सुनते, हमें तो अभी सम्पूर्ण योरोपका भ्रमण करना था, शामको साढ़े पांच बजे कैरो स्टेशनपर पहुंच गये। यहा हमारे लिए पहलेहीसे फर्स्ट क्लासकी सीटें रिजर्व थी। उस ट्रेनसे हमलोग दस बजे इजिप्टके बंदरगाह अलेक्जेंड्रियामें पहुंचा दिये गये। यहां जहाज हमलोगोंकी बाट देख रहा था। जहाज अपने निर्दिष्ट स्थानपर पहुंचनेकी उमङ्गमें इठलाता हुआ आगे बढ़ा, परन्तु 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' के अनुसार समुद्रदेवने उसके अभिमानको तोड़नेके लिए कुछ खेल खेला। दो हाथियोके द्वन्द्वमें एक वृक्षको जिस प्रकार क्षति पहुंचती है उसी प्रकार जहाज और

समुद्रकी भिड़न्तमे हमलोगोकी विचित्र दशा थी। दो दिनोंतक जहाज पानीपर पत्तेकी तरह नाचता रहा। सब यात्री बेचैन थे। उल्टीपर उल्टी हो रही थी। इसीको समुद्री बीमारी कहते है। इसके कष्टोंसे बचनेका सर्वोत्तम उपाय यही है कि कम खाय और बिस्तरपर लेटा रहे। इसके लिए कई औषधियां भी आती हैं जो विशेष लाभप्रद नही होतीं। समुद्रदेवकी विजय हुई। जो जहाज दो दिन पूर्व मानव कोलाहलसे परिपूर्ण था, जिधर नजर जाती थी मित्र-मण्डलीका जमघट लगा रहता था, रात्रिको जिसपर बालडांस हुआ करता था, वही जहाज अब सुनसान दिखाई पड़ता था। केवल चार-पांच खलासियोंको छोड़कर उसपर कोई नहीं रह गया। समुद्र अपनी इस विजय पर प्रसन्नता मनाने लगा और हमारे जहाजने पराजितकी तरह मन्दगतिसे रास्ता नापना आरम्भ किया।

ता० ६ फरवरीको हमलोग माल्टा टापूपर पहुचे। यह टापू अंग्रेजोके अधिकारमें है। यहां इनकी हवाई सेनाका भी काफी प्रबन्ध है। यहांके चतुर नाविकोकी तैराकी देखकर आश्चर्य होता था। ये समुद्रमे फेंके हुए पैसोको डुबकी लगाकर तत्काल निकाल लेते थे। वे इस काममे इतने प्रवीण थे कि दो घंटेतक यात्रियोंके पैसे फेकते रहनेपर भी शायद ही कोई पैसा समुद्र-तहतक पहुंच पाया हो।

यहां भारतवर्षकी तरह फेरीवाले जालीदार रूमाल, टेबिल क्लाथ, अङ्गरेज स्त्रियोंकी पोशाकें आदि बेच रहे थे। इनके बेचनेका ढंग भी निराला था। वे छोटी-छोटी नावोंमें दो-तीन साथियोंके साथ आये थे और जहाजके यात्रियोंको दिखानेके लिये टोकरियोंमें सामान भरकर रस्सीकी सहायतासे जहाजपर पहुंचा देते थे। मोल-तोलमें तो ये लखनऊवालोंको भी मात करते थे। इनमें जो साहसी और बलिष्ठ थे वे मोटी रस्सीके सहारे जहाजपर भी आ गये। हमारे जहाजके कई यात्रियोंने इनसे सामान खरीदा। इन फेरीवालोंमें रुपयों, डालरों और फ्रेंकोंसे पाउण्ड शिलिङ्ग आदि बदलनेवाले भी थे। ऐसे आदमी प्रायः हरएक पोर्टपर मिल जाया करते हैं। ये लोग सिक्कों-की बदलाईकी दरसे अधिक तो लेते ही हैं परन्तु कभी-कभी सुना जाता है कि सीधे-सादे यात्रियोंको जाली सिक्के देकर ठगनेकी भी चेष्टा करते हैं। मेरी रायमें तो यात्रियोंको चाहिये कि इनके चंगुलमें न फँसकर विश्वासी कम्पनियोंसे या जहाज-के (Beauro) आफिससे अपने सिक्के बदलवा लें।

माल्टासे ता० ७ फरवरीको जहाज संध्या समय अपनी बची हुई यात्राको पूर्ण करनेके लिये आगे बढ़ा। आज नोटिस-बोर्ड पर हमारी घड़ियोंको कई घंटे पीछे करनेकी सूचना मिली और साथ ही यह भी सूचना मिली कि कल हमारा जहाज सुबह ही

मार्सेल पहुंच जायगा। सारा दिन हॅसी-खुशीमें बीता। संध्या समय सारा सामान बांध करके सो गये। पर नींद कहां ! हम लोग लगातार १३ दिनतक समुद्रदेवके वक्षःस्थलपर क्रीड़ा करते रहनेके कारण एक प्रकारसे ऊब गये थे और पृथ्वी माताकी गोदमें खेलनेके लिये उतावले-से हो रहे थे। सुबह होते ही देखता क्या हूं कि सूर्य भगवान अपनी हजारों किरणोंसे अपार जल-राशिपर सतरंगी चादर बिछा रहे हैं। हमलोगोंके उत्साह-का क्या पूछना था, सब-के-सब उत्सुकतासे बाहरकी ओर देखने लगे। चिड़ियोंका उड़ना यह सूचित कर रहा था कि अब स्थल बहुत निकट है। जब जहाज जेटी (प्लेटफार्म) पर लगा, उस समय हमें ऐसी खुशी हो रही थी जिस तरह बच्चोंको स्कूलसे छुट्टी होनेपर खुशी होती है। योरोप भरमें कुलियोंको (Porter) पोर्टर कहा जाता है। इसलिए हमने भी पोर्टर-पोर्टरकी आवाज दी, तुरन्त एक पोर्टर आकर सामने खड़ा हो गया। उसके द्वारा सारा सामान उतरवानेका प्रबन्ध किया। उतरनेके पहले पासपोर्ट आफिसरसे पासपोर्टपर सही करानी पड़ी। तत्पश्चात जहाजके नौकरोंको पुरस्कार देकर जहाजसे उतर आये। यहाँ भी अभी एक घाटी और बाकी थी। हमारा सब सामान चुङ्गी घरमें जांचके लिए पड़ा हुआ था। पूछताछ करनेपर मालूम हुआ कि,नम्बरवार जांच होगी। जिसमें लगभग

डेढ़ दो घण्टेतक राह देखनी पड़ेगी। परन्तु एक अनुभवी मित्रने आफिसरोंकी कुछ पूजा कर जल्दी ही पिण्ड छुड़ा दिया। अब-तककी यात्रामें भारतीय और योरोपीय ढंगकी पोशाक पहननेवाले ही दृष्टिगोचर होते थे। परन्तु अब गरीब अमीर सभी एक ही तरहकी पोशाकमें सुसज्जित दिखाई पड़ रहे थे। कस्तूरचन्दजी बांठियाके साथ होनेसे हमलोग उनके एक परिचित होटलमें चले गये। बन्दरगाहपर कई भारतीय भी दिखायी दिये जो आनेवाले भारतीयोंको सहायता देना चाहते थे किन्तु मुझे मालूम हुआ कि उनमेंसे कितने तो भागे हुए बदमाश थे जो नये यात्रियों-को ठगकर भारतीयोंका नाम बदनाम करते हैं।

ता० ८ फरवरीको प्रातः हम यूरोपकी ड्योढ़ी मारसलीजपर पहुच गए। यहांसे क्रमशः फ्रांस, इङ्गलैंड, जर्मनी जेकोस्लोवा-किया, आस्ट्रिया, इटली, स्वीटजरलैण्ड, बेल्जियम, हालैण्ड, पोलैण्ड, रशिया (रूस) फिनलैण्ड, नार्वे, स्वीडन, डेनमार्क, परसीया और इराक आदिकी यात्रा लगभग सात महीनों तक करते रहे। और इस यात्राको सकुशल समाप्त कर फिर लण्डनसे हवाई जहाज द्वारा ता० २६ जूलाईको सानन्द करांची पहुंच गये। हवाई जहाज द्वारा की गयी, यात्राका मनोरञ्जक वर्णन स्वतंत्र अध्यायमें किया गया है।

दिनचर्या—

भारतवर्षमें नित्यकर्मका समय निश्चित रहता है। भारतीयों और अंग्रेजोंमे एक विचित्र बात यह पायी जाती है कि एक दूसरे-को गन्दे और म्लेक्ष कहते हैं। भारतीयोमें ऐसे मनुष्योंकी कमी नहीं हैं जो कड़ाकेके जाड़ेमें भी बिना स्नान किये पानी नहीं पीते और यूरोपमें ऐसे बहुत कम लोग मिलेंगे जो प्रति दिन स्नान करते हों। हमारे भाई स्वच्छताकी चरम सीमा यहींतक समझते हैं कि बिना स्नान किये पानी पीनेमे धर्म चला जाता है। भले ही धोबी और साबुनसे उनसे दुश्मनी हो। लेकिन वे अपनेको गर्व-के साथ पवित्र और उन्हें गन्दा कहनेमें न हिचकिचायेंगे यहां तो नियम है कि प्रातःकाल उठकर शौच जाना, वहांसे

लौटकर लोटे और हाथ-पांवको मिट्टी लगा-लगाकर मलना भले ही नल अथवा स्नानके स्थानपर सेरों मिट्टी और थूक इकट्ठा हो रहा हो। तत्पश्चात स्नान कर भोजन या जल-पान करके अपने कामपर जाना । योरोपमें यह प्रथा नहीं है। स्नान तो वहांके लोग कई-कई दिनों बाद गर्म पानीसे करते हैं। वहां ठण्डक इतनी अधिक पड़ती है कि स्नान करना महा कठिन काम हो जाता है। कितने लोग तो ऐसे भी मिलते हैं जिन्हें महीनों और वर्षों स्नान करना नसीब नहीं होता है।

योरोपमें शौच जानेका कोई नियम और समय नहीं है, यदि यह बात भारतीयोंको बतलायी जाय तो वह उसे घृणासे सुनेंगे और इस सभ्यताका मखौल उड़ाये बिना न रहेंगे। योरोपियन सवेरे उठते ही चाय पीकर या कुछ नास्ता करके अपने काममें लग जायेंगे। जिन्हें जहां जाना होगा जायेंगे। जब जिसे शौच-की आवश्यकता मालूम होगी वह उसी समय जायगा। यही वजह है कि योरोपमें हर स्थानोंमें—नाटक, सिनेमा, आफिस, कारखाने, स्कूल, सड़क, होटल आदिमें शौचघर (पाखाने) बने रहते हैं। वहांके शौचगृह इतने साफ-सुथरे होते हैं कि वह शौचगृह समझ ही नही पड़ते। यहांकी तरह—वहां भी देहातोंमें नल प्रणालीसे सफाई नहीं होती परन्तु यहांकी तरह वहां गन्दगी नहीं रहती।

हमारे देशके लोग खासकर ग्रामीण भाई इस बातको बड़े आश्चर्य और घृणासे सुनेंगे कि वहांके लोग शौच जानेपर पानी-का उपयोग बिलकुल नहीं करते। भारतीय प्यासे रहना तो स्वीकार कर सकते हैं किन्तु शौच जानेपर जलका उपयोग न करें यह उनके लिये एक प्रकारसे असम्भव ही है। वहां जो जल-का प्रयोग नहीं होता इसका एक कारण अधिक ठण्डक है दूसरे पानी इधर-उधर फैलकर फर्शको गन्दा कर देता है। वहां-के शौच-गृहोंमें एक प्रकारके पतले कागज रखे रहते हैं जो वैज्ञा-निक रीतिसे इसी कामके लिये बनाये जाते हैं। उन्हीं कागजके टुकड़ोंसे पानीके स्थानमें सफाईका काम लिया जाता है। उन लोगोंका अभ्यास ऐसा रहता है कि वे उससे जलके अभावका अनुभव ही नहीं करते। परन्तु भारतीयोंके लिये यह काम जरा कठिन है। कागजका व्यवहार करनेपर भी उन्हें पानीकी आव-श्यकता बनी रहती है। और यदि वास्तवमें देखा जाय तो विना पानीके पूर्ण रूपसे शुद्ध होना भी कठिन ही है। योरोपके लोग भारतीयों और खासकर यहांके विद्यार्थियोंकी इसलिये शिका-यत करते हैं कि वे शौचगृहको पानी फैलाकर गन्दा कर देते हैं। जन्मजन्मान्तरकी संस्कृति योरोपके साल दो सालके प्रवासमे कैसे छूट जाय। पूरे अंग्रेज बननेमें भी वही बात रह जाती है। "पतलूनके नीचे धोती है, पाकेटमें पड़ी चुनौटी है।"

एक बात जो वहांकी खास गन्दगीके रूपमें देखी जाती है वह कुल्ला न करना है। खाद्य-सामग्री भी यहां छुरी, कांटे और चम्मचोंके द्वारा उदरपुरीमें पहुचायी जाती है अस्तु; हाथ धोनेकी तो कोई आवश्यकता रहती ही नहीं। होंठोपर यदि भोजनका कुछ अंश लग भी गया है तो रूमाल, तौलियेसे पोछ लेना ही पर्याप्त समझा जाता है। खानेपर पानी पीना भी अनिवार्य थोड़े ही है। प्यास लगी हो तो पानी पी लिया गया। कुल्ला करने और मुंह हाथ धोनेका कोई नियम नहीं है।

एक बातमें हम पाश्चात्य लोगोंकी प्रशंसा अवश्य करेंगे। वे गुण-ग्राहक और अवगुणोंके छोड़नेकी बड़ी क्षमता रखते हैं। हमारी तरह केवल वेश-भूषाकी नकल ही नहीं करेंगे। मुंह-हाथ धोना, दांतोंकी सफाई करना, यह गुण भारतीयोंमें अधिक पाया जाता है। यहांके बुड्ढोंके भी दांत काफी मजबूत होते हैं और वहांके नवयुवकोंको भी कृत्रिम दांतोंकी आवश्यकता पड़ा करती है। अपनी इस त्रुटिका वे अनुभव करने लगे हैं और अब कितने ही लोग दांतोंकी सफाई और कुल्ला करनेके आदी होते जा रहे हैं। स्कूलके लड़कोंको भी दांतोंके साफ रखनेकी क्रियात्मक शिक्षा दी जाती है। वे लोग तो हमारे गुणोंको अपनाते हैं और हम उनके अवगुणोंको। वहांके लोगोंकी वहां और यहां सभी जगह आमदनी अधिक होती है इसीसे वे व्यसन और

विलासिताकी वस्तुएँ अधिक खरीदते हैं, और हमारे भाई जब उनका अनुकरण करने लगते हैं तो अपनेको बुरी तरह अर्थ-संकटमें फँसा लेते हैं। खैर हमारा विषय आलोचनाका नहीं है। अतः हम नित्य-क्रिया ही पर दो-चार बातें और बताकर इस प्रकरणपर ताला लगायेंगे।

बड़े-बड़े शहरोंमें नल-प्रणालीसे साफ होनेवाले शौच-घरकी व्यवस्था रहती है। जंजीर खींचा नहीं कि सब धुलकर साफ हो गया। ऐसे शौच-गृहोंका प्रबन्ध तो अब भारतमें भी हो रहा है और अनेक शहरोंमें है भी, किन्तु उस आदर्शपर पहुंचनेमें बहुत विलम्ब है। आदर्शसे मतलब कागजोंसे मलशुद्धिका नहीं है बल्कि स्वच्छतासे। जल द्वारा जो सफाई हो सकती है वह कागजसे नहीं हो सकती। कुछ लोग तरस्पञ्जका भी प्रयोग करते हैं। देहातोंमें मेहतरों द्वारा सफाई होनेवाले शौच-गृह हैं जिनमें अवश्य गन्दगी रहती है और जिसका रहना स्वाभाविक भी है। यहांके लोगोंमें यह विशेषता पायी जाती है कि वे स्वयं स्वच्छता-प्रिय होते हैं, कानून-रक्षाके लिये ही वहां स्वच्छता नहीं है। यदि कानून-रक्षा हीका ढकोसला होता तो कलकत्तेके पेशाबखानोंका दृश्य वहां भी उपस्थित होता। देहातके लोग भी घरके बाहर इधर-उधर शौच आदिसे गन्दा नहीं करते। पेशाब आदि गड्ढोंमें डालकर उसपर मिट्टी डाल देते

हैं। आप कोसों तालाबों, नदियो और खेतोके आस-पास घूमिये कहीं गन्दगीका नाम नहीं। यहां तो देहातों और छोटे-छोटे शहरोंके पास खेतोंसे होकर निकलना कठिन हो जाता है। वे लोग यदि बाहर भी शौच जायेंगे तो एक गड्ढा खोदकर शौचके बाद उसे मिट्टीसे बन्द कर देंगे। यहां तो मेलोंमें इतना प्रबन्ध होनेपर भी मौका पानेपर शौच, पेशाब इधर-उधर कर ही देते हैं। अपना शरीर शुद्ध हो जाय, इधर-उधरकी गन्दगीसे इन्हें कोई मतलब नहीं रहता?

अस्तु, हम यहांपर इस निर्णयपर आते हैं कि भारतीय आन्तरिक शुद्धता अधिक पसन्द करते हैं और पाश्चात्य देशीय वाह्य शुद्धता। मजाल नहीं कि उनके कपड़ोंपर कहीं एक शिकन पड़ जाय। गरीबसे गरीबके कपड़े साफ-सुथरे होंगे। लेकिन शुद्धता तो दोनों प्रकारकी होनी चाहिए। वाह्य शुद्धतासे भी काम नहीं चल सकता और न केवल आन्तरिक शुद्धतासे ही।

इङ्गलैण्ड

योरोपमें—

पुस्तकोंके पढ़ने और भ्रमण प्रमियोंसे वातचीत करने से योरोपके सम्बन्धमें जो कुछ ज्ञात हुआ था, उससे कहीं अधिक मुझे योरोप दिखायी पड़ा। योरोपके प्रत्येक स्थानोंको देखकर मेरी आंखें चकाचौंध हो गयीं। मैं सोचने लगा जब इतना आकर्षण यहां है तो पुस्तकोंमें इतना क्यों नहीं दरसाया जाता और यात्री लोग क्यों नहीं इतना अच्छा वर्णन कर सकते तो मुझे अनुमान करना पड़ा कि भ्रमण सम्बन्धी पुस्तकोंके लेखकोंमेंसे कोई कवि तो था नहीं जो वास्तविकतामें भी चारचाँद लगा देता और मेरे मिलनेवाले भ्रमण प्रेमी यात्री भी कोरे यात्री थे। इसीलिये जो कुछ मैंने देखा वह सुने और पढ़े हुएसे कहीं अधिक था। जिसका कुछ परिचय आगेकी पंक्तियोंमे देनेकी चेष्टा कर रहा हूं।

लण्डन—

लण्डन बृटिश राज्यका सबसे बड़ा शहर है। यहांकी आबादी लगभग सत्तर लाखकी गिनी जाती है। आबादीके हिसाब से भी यह संसारमें सब शहरोंसे बड़ा है। व्यापारका यह मुख्य केन्द्र है। यहांके व्यापारियोंने अपनी सचाईके कारण एक ऐसी धाक जमा ली है कि अन्य देशके व्यापारियोंको एक देशसे दूसरे देशसे व्यापार करते समय लण्डनवालोंका सहारा लेना ही पड़ता है। यहांतक कि भारतसे जापान माल भेजनेके लिये यदि एक स्टीमर किरायेपर लेना हो तो उसका किराया लण्डन के मारफत करनेपर सुविधा होती है। उसी प्रकार बेलजियमको भारत लोहा भेजते समय लण्डनके मारफत सौदा करनेसे सुविधा होती है।

कुछ लोगोंने तो लण्डनको इतना महत्व दे रखा है कि उसे संसारका केन्द्र कहते भी नहीं हिचकते। यहाँ एक बात और भी विचित्र है कि संसारके हर देशवासी कुछ न कुछ संख्यामें यहां पाये ही जाते हैं। जंगली हबशियोंसे लेकर सभ्यसे सभ्य लोग पाये जाते हैं। इसलिये यदि हम लण्डनको मनुष्योंकी प्रदर्शनी कहें तो अनुपयुक्त नहीं होगा। यहांकी आबादी अधिक होनेके कारण ही यहांकी सड़कोंपर मेलोंकीसी भीड़ लगी रहती है। लोग अपने कामसे चारों तरफ तेजीसे आते-जाते ऐसे जान पड़ते हैं मानो भाग रहे हों। इतनी भीड़ तो कहीं देखनेमें नहीं आयी। मनुष्योंको अपने निर्दिष्ट स्थानपर पहुंचानेके लिये पृथ्वीपर रेल, टैक्सी, लारी, मोटर आदि सवारियोंके होते हुए भी आवश्यकताकी पूर्ति न होते देखकर भूगर्भमें भी रेल चलानेका प्रबन्ध किया गया हैं। अब सुना जाता है कि पाताल पुरीकी रेलें भी शायद आवश्यकताकी भी पूर्ति न कर सकेगी और व्योम मार्गसे भी रेलें चलायी जायंगी। ये रेले बिजलीके सहारे तारसे लटकती हुई चलेगी। विज्ञान बाबा जो न कर दें सो थोड़ा है।

बकिंघम पैलेस—

यह बृटिश राज्य और भारतके सम्राट् जार्ज पंचमका राजमहल है। जब सम्राट् जार्ज महलमें रहते हैं तब दर्शकोंको राज-महल देखनेकी स्वीकृति नहीं मिलती। जब मैं लण्डनमें था उस समय सम्राट् राज-भवनमे थे। इसलिए मुझे राजभवन देखनेकी स्वीकृति नहीं मिल सकी। अस्तु, मैं स्वयं भी राजभवनके ऐश्वर्यको न देख सका और मेरी लालसा भरी आंखें तरसती ही रह गयीं। पाठकोंको भी इसी तरह यहां निराश होना पड़ रहा है। अन्य पुस्तकोंमें तो इसका सविस्तार मनोरञ्जक वर्णन किया गया है, परन्तु मैं बिना आंखों देखे पुस्तकोंके आधारपर इस अभावकी पूर्ति करना उचित नहीं समझता।

सेण्टपालका गिर्जाघर [पे० ४८]
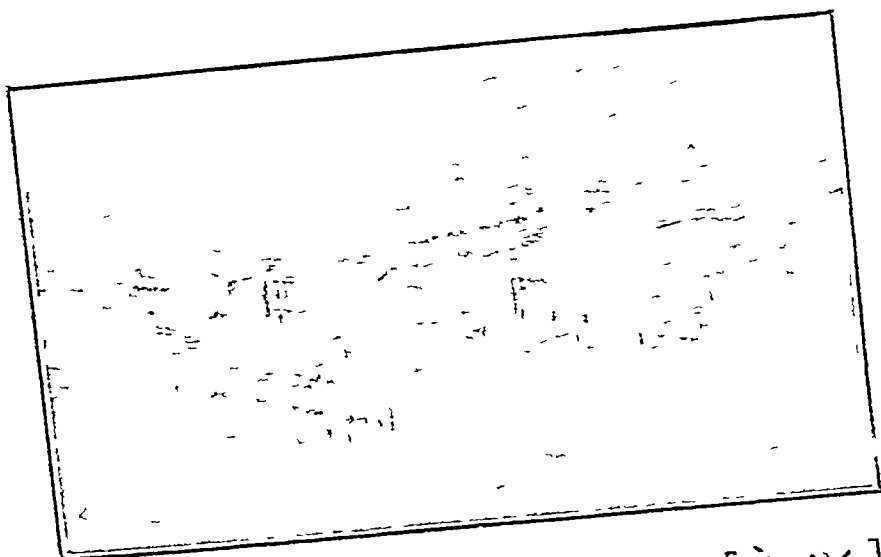
बकिंगम पैलेस [पे० ४८]
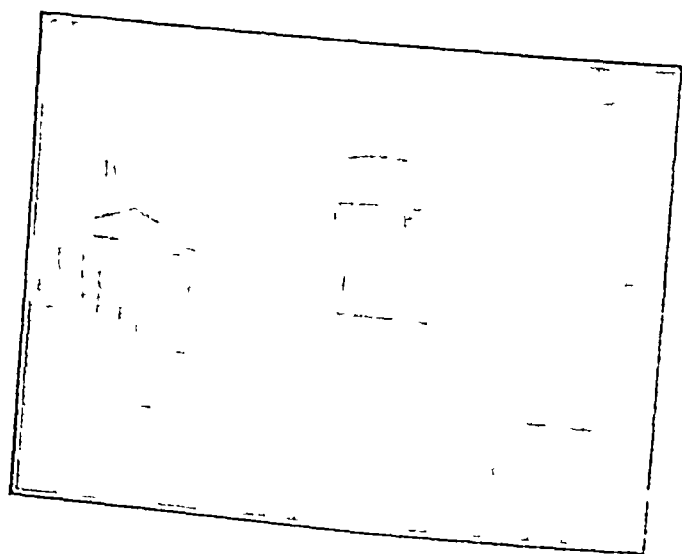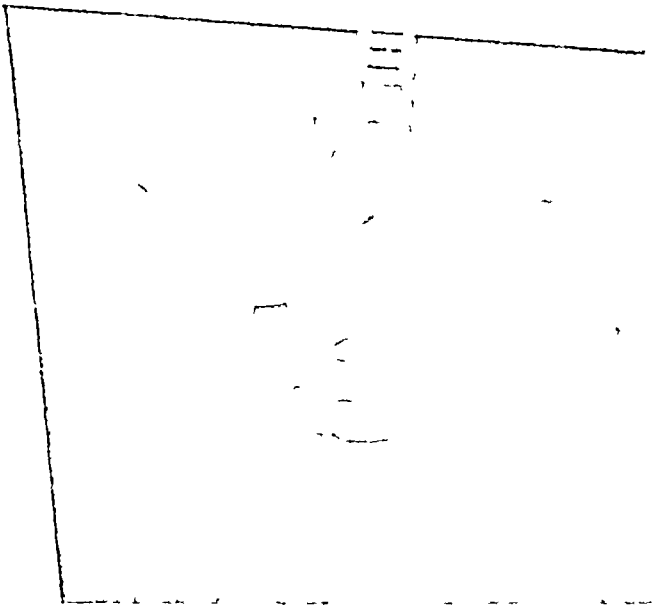
रायल एक्सचेंज

[पे० ४८]

टावर आफ लण्डन—

यह प्राचीन राज-भवन है, इसका कोई उपयोग नहीं किया जाता, केवल ऐतिहासिक स्मृतिको सजीव रखनेके लिए इसकी रक्षा की जाती है। वहांका गाइड (दिखाने वाला) वहांके लोम हर्षण काण्डोंका विवरण सुनाता है तो हमारे यहांके मुगल साम्राज्योंका दृश्य आंखोंके सामने नाचने लगता है। योरोपका इतिहास न जाननेके कारण वहांके राजाओंके प्रति जो हमारी धारणा युधिष्ठिरकी सी है, वह एक बार ही बदल जाती है और यह कहना पड़ता है कि इस अनर्थकारी राजसत्ताके मोहने कितने निर्दोष व्यक्तियोंका खून बहाया।

किस कमरेमें अमुक व्यक्तिकी छातीमे कील ठोकी गयी।

किस कमरेमें लोग हंसकर कालकोठरी (ब्लैक होल) की तरह मृत्युके द्वारपर पहुचाये गये। कहां विष पिलाकर मनुष्योंको संसारसे अलग होनेके लिए विवश किया गया। इन विवरणोंको गाइडसे सुनकर रोमाञ्च हो उठता था। इसीके दूसरे विभागमें बहुमूल्य रत्नाभरण, जो सम्राट और सम्राज्ञी कभी-कभी आवश्यकता पड़नेपर उपयोग करते हैं, सजाकर रखे गये थे। जिनमें रत्नजटित कुर्सियां, सिंहासन, राजमुकुट जिसे दिल्ली दरबारमें सम्राट जार्ज पचमने पहना था। रत्नजटित छड़ियां, मुक्ताहार आदि यथास्थान सुशोभित थे। चारों तरफ सन्तरियोंका पहरा था। इस विभागको देखनेके लिये अलग फीस देनी पड़ती है।

जिस अद्भुत और बहुमूल्य कोहनूर हीरेका हम किस्से सुना करते थे उसके दर्शन भी यहींपर होनेकी आशा थी। लोगोंका कहना है कि यह कोहनूर वही स्यमन्तक मणि है जिसे सत्राजितसे जामवन्तने छीन लिया था और श्रीकृष्णने अपनेको निर्दोष सिद्ध करनेके लिये जामवन्तसे लड़कर छीन लिया था। इसके सम्बन्धमें यह भी कहा जाता है कि जो भारतका सम्राट् होता है यह उसीके पास रहता है। अंग्रेजोंको यह महाराज-रणजीतसिंह द्वारा प्राप्त हुआ। वहा हम जिसे असली कोहनूर समझकर आश्चर्य भरी दृष्टिसे देख रहे थे, वहांकी गाइड (परिचय-पुस्तक) पढ़नेसे मालूम हुआ कि यह असली कोहनूरका माडलमात्र है, असली

कोहनूर कहां रखा है यह हम न जान सके। दिल्ली दरबारके समयका ताज भी निराले ठाटवाटका था। इसमे ६१७० हीरे लगे हुए हैं, इसी प्रकारका एक ताज और भी है जिसे महारानी विक्टोरियाने सन् १८३८ ई० में धारण किया था। इसमे भी लगभग इतने ही हीरे लगे हैं। अस्तु, इसे हम वहुमूल्य वस्तुओं-का भण्डार ही कह सकते हैं। इतनी बड़ी धनराशि एक स्थान-पर बहुत कम दिखाई पड़ती है।

मैडम टूसडकी प्रदर्शनी—

लण्डनमें इसकी इतनी तारीफ सुनी कि मुझे देखनेके लिये विवश होना पड़ा। यह एक स्त्री द्वारा स्थापित की गयी प्रदर्शनी है, इसमें संसारके महापुरुषोंके माडल (मोमके पुतले) रखे हुए हैं। ऐसी प्रदर्शनी संसारमें दूसरी नहीं है। लोगोंने मुझे बतलाया था कि दरवाजेपर भी पुतले ही रखे हुए हैं। जब मैं टिकट लेकर फाटकपर पहुचा तो वहां दो सन्तरी खड़े थे। मैंने उन्हें मोमका पुतला समझ लिया। मैं दरवाजा खोलकर अन्दर जाना चाहता था, परन्तु दरवाजा खुल नहीं रहा था। यह देखकर सन्तरीने जानेका मार्ग बता दिया तब अपनी भूलपर मुझे हँसी आयी। मेरे साथ मि० नटराजन भी थे। वे भी अपनी हँसी न

रोक सके। भीतर जानेपर दूसरे फाटकपर भी दो सन्तरी खड़े थे। मैंने उनसे भी वहांके सम्बन्धमें कुछ पूछा, परन्तु उत्तर कौन दे? जब वे जीवधारी मनुष्य हों तब तो बोलें। यह तो एकमात्र मोमके पुतले थे और ठीक पहले फाटकके सन्तरियोंसे मिलते-जुलते थे। यहांपर भी हमलोग अपनी हँसी न रोक सके। मैं इस कारीगरीपर मन-ही-मन मुग्ध हो रहा था। उसी क्षण मेरे दिलमें यह बात आयी कि, आज हम भारतीय दूसरोंके कला-कौशलपर दाँतोंतले उंगली दबाते हैं और उन्हें आश्चर्य-भरी दृष्टिसे देखते हैं। जब हम स्वतन्त्र थे तो हमारे यहाँ भी ऐसी ही आश्चर्य-जनक कलाओंका दर्शन होता था। मुझे महाभारत-की वह घटना तुरन्त याद आ गयी जब मय दानवकी कारीगरी-से दुर्योधनको स्थलमें जल और जलमे स्थलका भ्रम हुआ था। जिस बातको हम कहानी या इतिहास माना करते थे आज वही आँखोंके सामने प्रत्यक्ष दिखायी दी।

भीतर जानेपर जो पुतले दिखायी पड़े, वे ठीक जीवितसे मालूम पड़ रहे थे। जिस जमानेके जो पुतले थे, ठीक उसी जमानेकी पोशाकें उन्हें पहनायी गयी थीं। जार्ज वाशिङ्गटन सन् १७८० ई०में जो पोशाक पहने हुए थे ठीक वही पोशाक उन्हे पहनायी गयी थी। इसी प्रकार लार्ड रीडिङ्गको सन् १९२० और प्रिन्स आफ वेल्सको सन् १९२१ की पोशाकसे सजाया

गया था। यदि पहलेसे लोगोंको यह न बतला दिया जाय कि यह पुतलोंका घर है तो यह मालूम करना कठिन हो जाय कि इतने मनुष्योंके होते हुए इतना सन्नाटा क्यों है, और ये लोग बोलते क्यों नहीं ?

इस प्रदर्शन-गृहमें भिन्न-भिन्न समयकी घटित घटनाओंके माडल भी थे। इसमें कहीं-कहींपर तो भय और नृशंसताका नग्न चित्र दिखायी पडता और कहींपर करुणाका स्रोत उमड पडता था। एक स्थानपर एक बच्चे राजकुमारकी हत्याका दृश्य दिखाया गया था। वहाकी नृशंसताको देखकर कठोर-से-कठोर व्यक्तिके मुँहसे भी आह निकल सकती है। इसी प्रकार चण्डू-खानेका दृश्य भी ठीक चण्डूखानेसे मिलता-जुलता था। एक छोटीसी बत्ती टिमटिमा रही थी और चण्डूखोर नशेमें मस्त मुँह बाये पडे हैं। ऐसे ही बहुतसे दृश्य हैं, इन दृश्योंको समझानेके लिये एक पुस्तक भी वहा मिलती है। यदि इस एक प्रदर्शनीका ही पूर्ण वर्णन किया जाय तो अलग एक पुस्तक तैयार हो जाय।

इसी प्रदर्शनीका एक विभाग चेम्बर आफ हारर है। जिसे हम भयानक कमरा भी कह सकते हैं। इसे देखनेके लिये अलग फीस देनी पडती है। इस भयानक कमरेको देखनेकी उत्कण्ठा मैं रोक न सका। मेरे साथी नटराजन तो मुझे रोक रहे थे पर मैं तो ऐसी वस्तुओंके देखनेके लिये लालायित रहा ही करता हूं।

जब भयानक कमरेवाले सन्तरीसे उसके सम्बन्धमें पूछा तो उसने कहा "पृथ्वीके भीतर यह कमरा बना हुआ है। बहुत भयानक है, यदि आप जानेकी इच्छा रखते हों तो जा सकते हैं। मैं भीतर चला गया। इस भयानक कमरेमें ऐसे भयानक कांड दिखाये गये हैं जिसे देखकर साधारण आदमी तो वेहोश हो जा सकता है।

यहांपर संसारके महापापियों, उठाईगीरो, डाकुओं, खूनियों और ठगोंके पुतले उन्हे उसी काममें लगे हुए दिखाये गये हैं। कोई नकली सिक्का बना रहा है तो कोई किसीकी हत्या करनेमें लगा है और कहींपर रक्तकी नदियां वहायी जा रही है। ऐसे भयानक कांडोंको देखकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। पुतलोंके सामने उनके कारनामोंका संक्षिप्त इतिहास और अन्तिम परिणाम भी लिख दिया गया है।

एक स्थानपर राविन्सन क्रूसो पुस्तकके प्रख्यात लेखक डेनियलडेफोकी दुर्दशाका दृश्य दिखाया गया था। वह किसी धार्मिक क्रान्तिकारी पुस्तक लिखनेके अपराधमें पिलरी (लकड़ीका सिकञ्जा) मे जकड़ दिया गया था। लकड़ीके सिकञ्जेमें जकड़कर कैदीको कष्ट पहुंचानेकी क्रूरतापूर्ण प्रथा सन् १८३० तक थी। उक्त लेखकको यह दण्ड १७३० ई०मे दिया गया था। दंड भोगकर छूटनेपर उसने (Hymn to the pillory) "पिलरी के भजन" नामक पुस्तक लिखी।

दूसरा दृश्य था जार्ज जोसफ स्मिथका। इसने अपने जीवनमें तीन स्त्रियोंका वध किया। वह दहेजके लोभमें स्त्रियोंसे विवाह करता था और उन्हें स्नान गृहमें डुबा-डुबाकर मार देता था। जिससे दूसरे विवाहमें फिर रुपये मिले। इसे १६१५ में फांसी दी गयी थी।

तीसरा दृश्य था "काउण्टडीलाज" का। इसे किसी अपराधमें ३० वर्षतक अन्धेरी कोठरीमें रखनेका दण्ड मिला था। जब वह १७८६ ई० में सजा भोग चुका और लोग उसे जेलसे मुक्त करने लगे तो उसने आखोंमें आसू भरकर प्रार्थना की कि "मुझे यही पड़े रहने दो। लेकिन कर्मचारियोंने उसे निकाल ही दिया। सूर्यकी रोशनी लगते ही छ सप्ताहमें वह मर गया।

अब हम अपने पाठकोंको इस भयानक कमरेसे निकाल कर अच्छे स्थानमें ले चलना चाहते हैं। क्योंकि कितने ही कोमल स्वभावके पाठकोंको ऐसे भयानक और वीभत्स वर्णनका पढ़ना या देखना असह्य हो जाता है। अच्छा! तो लीजिये! मैं आपको लण्डनके विख्यात हाइड पार्कमें ले चलता हूं। वहांकी सैरसे अवश्य आपका दिल बहल जायगा।

हाइड पार्क—

यह लण्डनका प्रख्यात बगीचा, नगरके मध्यमें लगभग १०६४ बीघेमें बनाया गया है। इसके बीचमे एक सुन्दर झील भी है जिसे सरपेण्टाइन कहते हैं। यहां खासी चहल-पहल रहती है। गर्मीके दिनोमें तो यहांकी भीड़-भाड़के लिये कहना ही क्या है? रविवारके दिन यहां एक मेला-सा लग जाता है और उसी दिन वहां इण्डियन नेशनल कांग्रेसकी लण्डन स्थित शाखाकी तरफसे एक व्याख्यान देनेका प्रबन्ध रहता है। एक अस्थायी प्लेटफार्मपर कांग्रेसका झण्डा लगा रहता है। उसी पर खड़े होकर भारतीय लोग व्याख्यान देते हैं। इस प्लेटफार्म को सभा समाप्त हो जानेपर उठा ले जाते हैं। भारत और

वृटिश राज्यके सम्बन्धमें जिसे जो सूझ पडता है वह वही व्याख्यानमें कह जाता है। कितने भारतसे लौटे हुए गोरे भी व्याख्यानमें भाग लेते हैं। कुछ तो भारतके अनुकूल और कुछ विरुद्धमें व्याख्यान देते हैं। इसी प्रकार और भी कई संस्थाओंकी तरफसे व्याख्यान देनेका प्रबन्ध रहता है। सब प्लेटफार्मसे उनके प्रचारक अपने पक्षके समर्थनमें चिल्लाते रहते हैं और सभी प्लेटफार्मोंके सामने सौ पचास व्यक्ति श्रोताओंके रूपमें खड़े रहते हैं। रविवारको बाजा भी बजता रहता है। जिससे हृदयको एक प्रकारका आनन्द प्राप्त होता है।

सेण्टपालका गिर्जाघर—

यह गिर्जा संसारमें विख्यात है और अपने ढंगका एक ही है। यह सं० ६०७ ई० में बनाया गया था और १०८७ में आग लगनेसे टूट गया था। दूसरी बार १५६१ ई० में बिजली गिरनेसे आग लग गयी और इससे बिल्कुल नष्ट हो गया था। उसी साल इसका पुनर्निमाण हुआ और तबसे यह अभी नया ही देख पड़ता है। एक बार लण्डनमे भयानक अग्निकाण्ड हुआ था और उसमे महीनोंतक लण्डन अनाथ गांवकी तरह जलता रहा। इस अग्निकाण्डसे उक्त गिर्जेका भी कुछ भाग आ गया था। इसकी लम्बाई ५१५ फुट और चौड़ाई २५० फुट है। ऊंचाई ३६५ फुट है। इसके देखनेके लिये फीस नहीं देनी पड़ती, परन्तु

इसके भीतर जो कई विभाग हैं, उनके लिये फीस लगती है। यहांकी विसपरिंग गैलरी भी एक कौतूहल और आश्चर्यकी वस्तु है। विसपरिंगको हिन्दीमें कानाफूसी (कानोंमें लगकर बात करना) कहते हैं। यह एक गोल कमरा है। किसी तरफ भी दीवालमें मुँह लगाकर धीरेसे भी कोई बात कहनेसे वह बात दीवालके किसी भी हिस्सेमें कान लगानेपर सुनाई पड़ती है। लोग यहां इस प्रकार मनोविनोद करते रहते हैं।

यहांपर मुझे एक मनोरंजक बात याद आ गयी। अमेरिकन भी अपने देशको कम समृद्धिशाली नहीं समझते और है भी अमेरिका संसारमें धन और बड़े मकानोंकी दृष्टिसे अद्वितीय। कुछ अमेरिकन लण्डन देखनेके लिये गये हुए थे। गाइड (प्रदर्शक) उन्हें घुमाघुमा कर दिखा रहा था। जब उसने (Marbal Arch) "संगमर्मरकी मेहराब" दिखायी तो उन स्वाभिमानी अमेरिकनोंने नाक-सिकोड़ कर कहा,यह तो हमारे यहांकी एक गेरेज (मोटरखाना) की तरह है और जब यहांका प्रसिद्ध पुल दिखाया तो उन लोगोंने कहा कि"यह तो हमारे यहांके बच्चोंके खेलनेके पुलकी तरह है।

स्वदेशाभिमानी गाइड इन लोगोंकी गर्वोक्तियोंसे नाराज हो रहा था, जब उसने बकिंघम पैलेस (राजभवन) दिखाया तो उन लोगोंने कहा "अजी कोई अच्छी चीज हो तो दिखाओ। ऐसे झोपड़े तो हमारे यहां देहातोंमें बनते हैं।" यह बात सुनकर गाइडके

बदनमें आग सी लग गई, परन्तु वह अपने गुस्सेको मन-ही-मन पी गया और जाकर सेण्टपालका गिर्जा दिखाया। यहांपर गाइडके दिलमें यह बात समायी कि इनसे डींग हांकनेसे ही काम चलेगा। बिना गप्प उड़ाये ये माननेवाले नहीं हैं। उसने कहा "महाशयजी! जिस गिर्जेको आप देख रहे हैं एक सप्ताह पूर्व भी आप यहीं आये होते तब यहां सफाचट मैदान दिखाई पड़ता, परन्तु आज यहां यह विशाल गिर्जा तैयार है। यह बात सुनकर उन लोगोंके आश्चर्यका ठिकाना न रहा। उन लोगोंने आश्चर्य-भरी दृष्टिसे देखते हुए कहा "Is it so?" क्या यह सच है! यदि ऐसी बात है तो यह अवश्य दर्शनीय और उल्लेखनीय है। एक सप्ताहमें इतनी अच्छी इमारतका बन जाना वास्तवमें लण्डन-के लिये गौरवकी बात है।"

गाइडने दर्शकोंको सलाम करते हुए कहा "यहांपर ऐसी कितनी इमारतें हैं जो एक सप्ताहसे भी कम समयमें बन गयीहैं। विज्ञानमें हमारा लण्डन किसी देशसे कम नहीं है। आवश्यकता पड़ने पर एक दिनमें भी ऐसी इमारत बना ली जाय तो कोई आ-श्चर्यकी बात न होगी। इस प्रकार अमेरिकनोंको बेवकूफ बना-कर मान भंग करके वह गाइड खुशीमें फूला न समाया। हमारे देशके गाइड होते तो कहते "हां हुजूर आप जो कहते हैं ठीक है। आपके देशका मुकाबला कहीं यह देश थोड़े ही कर सकता है।"

अब हम लण्डनसे आगे बढ़ना चाहते हैं। कहांतक अपने पाठकोंको इस महानगरीमें घुमावें। सालों घूमते रहिये तब भी कोई-न-कोई वस्तु देखनेके लिए बाकी रही जायगी और लिखने-में महाभारतका पोथा बन जायगा। अस्तु, हम यहां प्रख्यात दर्शनीय स्थानोंके नाम लिख देते हैं।

१ कुईनपार्क, २ ग्रीन पार्क, ३ हमेस्टेड हीथ, ४ हैमण्टन कोर्ट, ५ हाउस आफ पार्लियामेण्ट, ६ इण्डियन म्युजियम, ७ जुला-जिकल म्युजियम, ८ इम्पीरियलवार म्यूजियम, ९ रायलमिण्ट, १० रीजेण्ट पार्क, ११ वेस्ट मिनिस्टर अब्बे, १२ जुलाजिकल गार्डेन आदि।

बरमिंघम—

यह एक औद्योगिक नगर है। आप लोग समझते होंगे कि यहां भी हमें अच्छे-अच्छे दर्शनीय स्थान, बड़े-बड़े पार्क, अजा-यबघर आदि अच्छे दृश्य देखनेको मिलेंगे। सो बात नहीं, यहां तो जहां देखिये वहीं विज्ञान महाराजकाही बोलबाला है। कहीं मोटरें बन रही हैं तो कहीं बाइसिकलें। तो कहीं ब्रशोंके कारखाने खुले हुए हैं। इसलिये हम इसे कारखानोंका नगर कहें तो कोई अत्युक्ति न होगी, जिस समय मैं यहां आया था, उस समय बृटिश औद्योगिक मेला लगा हुआ था। यह वर्षमे एक बार लगता है और देश-विदेशके व्यापारी व्यापारकी वृद्धिके लिये यहां आया करते हैं।

जिस समय मेला लगा हुआ था फड़ाकेकी सर्दी पड रही थी। चारों ओर वर्फके ढेर इस प्रकार दिखाई पड़ते थे जैसे धुनी हुई रुई बिछी हो। किन्तु मेलेके प्रवंधकोंके प्रवन्धको देखकर दांतोंतले अंगुली दबानी पड़ती थी। इतनी विकराल सर्दीपर भी इन लोगोंने अच्छी विजय प्राप्त की थी। बिजलीकी अँगीठियों द्वारा स्थान इतने गर्म रखे गये थे कि कोई अनुमान ही नहीं कर सकता था कि बाहर सख्त सर्दी पड़ रही है। वाहरके व्यापारियोंके लिए विशेष ध्यान दिया जाता था और उनके प्रत्येक प्रश्नका समुचित उत्तर दिया जाता था। वहाके वैभव और प्रवन्धको देखकर ईर्षा होती थी और भारत-के दुर्भाग्यपर दुःख होता था। क्योंकि एक तो यहां ऐसे प्रद-र्शनके मेले होते ही नहीं, यदि कहीं सौभाग्यसे होते भी हैं तो उनमें जूवा, खेल, तमाशा, साधु-संन्यासी गिरहकटोंकी ही भर-मार रहती है। दो-चार सुन्दर वस्तुओंकी दूकान जाती भी हैं तो उनमें भी जर्मनी, इंगलैण्ड और जापानकी बनी चमक-दमककी चीजें, बच्चों और नवयुवकोंका धन पानीकी तरह बहाती हैं।

इसके पश्चात कावली नामक ग्राममें मोरिस मोटर कार कम्पनीका कारखाना देखने गये। यहाँ इन लोगोंने काफी जगह रोक रखी है। और टेस्टिंग ऐसेम्बलीका काम इसी जगह करते

हैं। ये लोग मिस्टर फोर्डके निकाले हुए तरीकेपर काम करते हैं। अर्थात् हरएक व्यक्तिके दायित्वपर एक-एक काम रहता है। इस प्रकार काम भी शीघ्र होता है और भूल भी बहुत कम होती है। एक गाड़ीकी पूरी चेशीश (Chassis) (गाड़ीके नीचे-का पूरा हिस्सा) साढ़े तीन मिनटमें ही रंग डाली जाती हैं। चारों चक्कोंमें हवा भरकर मोटरतक पहुंचानेमें दस सेकण्डसे अधिक समय नहीं लगता। एक गाड़ी आदिसे अंततक सोलह सौ कारीगरोंके हाथोंसे निकलनेके पश्चात सर्वाङ्ग सुन्दर बनती है। हरेक कारीगर लगभग दो मिनटका समय हर गाड़ीके बनानेमें देता है। इस प्रकार कार्य धारावाहिक रूपमें होते रहनेसे हर दो-तीन मिनटपर एक नयी मोटरकार चमचमाती हुई बाहर निकलती है और उसे टेस्टिंग डिपार्टमेण्टवाले ऊंची-नीची सभी जगहोंपर चलाकर देखते हैं और जो कुछ त्रुटियां मालूम होती हैं उसे ठीककर फिर उसे अपने विक्री विभागवालोंके सपुर्द कर देते हैं।

इसी प्रकार वरमिंघमके जिस कोनेमें जाइये, सिवा कल-कारखानोंके और कुछ दिखायी ही न पड़ेगा। विस्तार-भयसे सब कारखानोंका विवरण नहीं किया जा रहा है।

वरमिंघमकी तरह इङ्गलैण्डमें और भी कई गांव हैं जो केवल कारखानोंके गाँव कहे जाते हैं। यदि इन स्थानोंसे कारखाने

जिस समय मेला लगा हुआ था कड़ाकेकी सर्दी पड़ रही थी। चारों ओर वर्फके ढेर इस प्रकार दिखाई पड़ते थे जैसे धुनी हुई रुई बिछी हो। किन्तु मेलेके प्रबंधकोंके प्रबन्धको देखकर दांतोंतले अंगुली दबानी पड़ती थी। इतनी विकराल सर्दीपर भी इन लोगोंने अच्छी विजय प्राप्त की थी। बिजलीकी अँगीठियों द्वारा स्थान इतने गर्म रखे गये थे कि कोई अनुमान ही नहीं कर सकता था कि बाहर सख्त सर्दी पड़ रही है। बाहरके व्यापारियोंके लिए विशेष ध्यान दिया जाता था और उनके प्रत्येक प्रश्नका समुचित उत्तर दिया जाता था। वहांके वैभव और प्रबन्धको देखकर ईर्षा होती थी और भारतके दुर्भाग्यपर दुःख होता था। क्योंकि एक तो यहां ऐसे प्रदर्शनके मेले होते ही नहीं, यदि कहीं सौभाग्यसे होते भी हैं तो उनमें जूआ, खेल, तमाशा, साधु-संन्यासी गिरहकटोंकी ही भरमार रहती है। दो-चार सुन्दर वस्तुओंकी दूकान जाती भी हैं तो उनमें भी जर्मनी, इंगलैण्ड और जापानकी बनी चमकदमककी चीजें, बच्चों और नवयुवकोंका धन पानीकी तरह बहाती हैं।

इसके पश्चात कावली नामक ग्राममें मोरिस मोटर कार कम्पनीका कारखाना देखने गये। यहाँ इन लोगोंने काफी जगह रोक रखी है। और टेस्टिंग ऐसेम्बलीका काम इसी जगह करते

हैं। ये लोग मिस्टर फोर्डके निकाले हुए तरीकेपर काम करते हैं। अर्थात् हरएक व्यक्तिके दायित्वपर एक-एक काम रहता है। इस प्रकार काम भी शीघ्र होता है और भूल भी वहुत कम होती है। एक गाड़ीकी पूरी चेशीश (Chassis) (गाड़ीके नीचे-का पूरा हिस्सा) साढ़े तीन मिनटमें ही रंग डाली जाती है। चारों चक्कोंमें हवा भरकर मोटरतक पहुंचानेमें दस सेकण्डसे अधिक समय नहीं लगता। एक गाड़ी आदिसे अंततक सोलह सौ कारीगरोंके हाथोंसे निकलनेके पश्चात सर्वाङ्ग सुन्दर वनती है। हरेक कारीगर लगभग दो मिनटका समय हर गाड़ीके वनानेमें देता है। इस प्रकार कार्य धारावाहिक रूपमें होते रहनेसे हर दो-तीन मिनटपर एक नयी मोटरकार चमचमाती हुई वाहर निक-लती है और उसे टेस्टिंग डिपार्टमेण्टवाले ऊंची-नीची सभी जगहोंपर चलाकर देखते हैं और जो कुछ त्रुटियां मालूम होती हैं उसे ठीककर फिर उसे अपने विक्री विभागवालोंके सपुर्द कर देते हैं।

इसी प्रकार वरमिंघमके जिस कोनेमें जाइये, सिवा कल-कारखानोंके और कुछ दिखायी ही न पड़ेगा। विस्तार-भयसे सव कारखानोंका विवरण नहीं किया जा रहा है।

वरमिंघमकी तरह इङ्गलैण्डमें और भी कई गांव हैं जो केवल कारखानोंके गाँव कहे जाते हैं। यदि इन स्थानोंसे कारखाने

हटा दिये जायँ तो यहाँ मनुष्य तो क्या भूत भी न रह जायँ। शेफील्ड विसातखानेकी वस्तुओंके बनानेका नगर है। मैंचेस्टर और लंकाशायरमें इतना कपड़ा तैयार होता है कि उससे भारतके गाँवों तकके बाजार पटे रहते हैं। इन स्थानोंपर मशीनोंकी खड़खड़ाहटके अतिरिक्त और कुछ नहीं सुनाई पडता। आप इञ्जीनियर तो हैं नहीं, जो मशीनोंकी खड़खड़ाहटमें शांतिका अनुभव करें। इसलिए हम भी इस खड़खड़ाहट-से अलग होना चाहते हैं और किसी मनोहर स्थानकी ओर बढ़ना अच्छा समझते हैं। यह देखिये, विचार करते देर न हुई कि पृथ्वी माताके ऊपर चलनेवाली रेलने बात-की-बातमें हमें इङ्गलैण्डके किनारे ला पटका। अब यहाँसे इंगलिशचेनल पार करके रेलसे हम जर्मनीमें आ पहुचते हैं। जर्मन महायुद्धने अपने नामसे भारतके बच्चोंतकको भी परिचित करा दिया है अस्तु, जर्मनीके सम्बन्धमे अधिक जाननेके लिये उत्सुक होना स्वाभाविक ही है।

लेप-ज़ीक—

यह जर्मनीका एक प्रख्यात नगर है। इसकी ख्यातिका कारण यहाँका वार्षिक व्यापारिक मेला है। यह मेला विश्व-विख्यात है और सालमें दो वार इसका आयोजन किया जाता है। इस जोड़का सुप्रबन्धित व्यापारिक मेला अन्यत्र कहीं नहीं लगता। जर्मन सरकार इसे सफल और आदर्श बनानेके लिए हरएक देशमें अपने प्रतिनिधि भेजकर इसका खूब प्रचार करवाती है और जानेवाले व्यापारियोंको सुलभ मूल्यमें जहाज, रेल आदिकी टिकटें दिला देती है। और भी आवश्यक बातोंका पता लगानेमे सहायता पहुंचाकर उत्साहित करती है। लण्डनमें ही इस मेलेके सम्बन्धमें काफी विज्ञापन किया जा

रहा था। वहींसे इसकी ख्याति सुनकर मैं भी मेला देखनेके लोभको न रोक सका। लण्डनमें भी मेला-सम्बन्धी सब सुविधाएँ मिल सकती हैं, अस्तु; मैंने भी उनके प्रतिनिधि द्वारा रेलवेकी टिकट कम मूल्यमें खरीद ली और उसीसे रहनेका प्रबन्ध भी कर लिया। क्योंकि उस समय लेपज़ीकमें इतने लोग आते हैं कि बिना पहलेसे रहनेका प्रबन्ध किये होटलोंमें शरण नहीं मिल सकती। लेपज़ीकके रईस भी जिनके पास रहनेका जितना स्थान होता है स्वयं कुछ अपनी आवश्यकताओंको संकुचित कर यात्रियोंको भी अपने यहाँ किरायेपर टिका लेते हैं। इससे वर्षके दो महीनोंमें ही उन्हें काफी आमदनी हो जाती है। ऐसे लोग जो अपने यहाँ यात्रियोंको टिकाना चाहते हैं वे पूरे विवरणके साथ अपना पता मेला कमेटीको भेज देते हैं। उनके पास कितने आदमियोंके रहनेके लिए स्थान है और क्या चार्ज लेते हैं इसका पूरा विवरण मेला कमेटी और उसके प्रतिनिधियोंके पास रहता है। इससे कई लाभ हैं। एक तो यात्रियोंको झंझटसे छुटकारा मिलता है, दूसरे टिकानेवालोंको अलग अपने प्रतिनिधि नहीं रखने पड़ते और टिकानेवालोंसे मेला कमेटीको कमीशन भी मिल जाता है।

इस मेलेका सुप्रबन्ध देखकर दांतों-तले उंगली दबानी

पड़ती है और भारतीय मेलोंकी धांधली पर खेद होने लगता है। भारतीय मेलोंकी धांधलीके कारण प्रबन्धक ही नहीं,बल्कि यात्री भी होते हैं। पेशाबघर बने होनेपर भी धर्मात्मा लोग बाहर ही पेशाब करेंगे। इसी प्रकार हर स्थानोंपर नियम-भंग करना ही यहाँके देहाती यात्रियोंका काम होता है। यह बात वहाँ नहीं है। वहां नियमका पालन उतनी ही सावधानीसे किया जाता है जितनी असावधानी यहां नियम-भंग करनेमें की जाती है। यह मेला कई विभागोंमें बँटा होता है। यदि ऐसा न किया जाय तो इतने बड़े मेलेके लिये इतना बड़ा स्थान कहाँ मिले। यदि किसी-को कपड़ोंकी प्रदर्शनी देखनी है तो वह उसी स्थानपर जा सकता है, अन्यत्र भटकनेकी आवश्यकता नहीं। इसी प्रकार मशीनरीका प्रदर्शन दूसरे स्थानपर और खिलौने आदि अलग स्थानपर। जितनी वस्तुओंका प्रदर्शन होता है सबके अलग-अलग विभाग और प्रबन्ध हैं। इससे व्यापारियोंके समयकी भी काफी बचत होती है और व्यर्थमें भटकनेका कष्ट भी नहीं उठाना पड़ता। जिसे जिस विषयसे प्रेम है वह वहीं जाकर अपनी इच्छा पूरी कर सकता है।

एक दिन बड़ी आश्चर्यजनक घटना घटी। हम एक उद्यान (उपवन) से प्रायः रोज आया-जाया करते थे और इसे अन्य पार्कोंकी तरह ही एक साधारण पार्क समझते थे,परन्तु वास्तव-

में यह बात नहीं थी। उसकी एक सुरंगसे लोग ठीक उसी तरह घुसे जा रहे थे जिस तरह सीताजीकी खोजमें सुग्रीवका दल। जहांसे लोग पृथ्वी माताके पेटमें घुसे जा रहे थे, वहाका साइनबोर्ड जर्मन-भाषामें था। इससे मैं आश्चर्यभरी दृष्टिसे देखता रहा, पर समझमें कुछ न आया। मेरे आश्चर्यमय मुख-मण्डलको देखकर एक भारतीयने जो वहांकी भाषासे परिचित थे मुझे बतलानेकी कृपा की कि इसके नीचे भी प्रदर्शनी लगी हुई है। जब मैं भीतर गया तो मेरे आश्चर्यका ठिकाना न रहा। जिसे हम एक अच्छा बगीचा समझे हुए थे उसकी तहमें एक जगमगाता हुआ मेला छिपा हो, क्या यह कौतुक और आश्चर्यकी बात नहीं है? तब हम क्यों भारतीय कहानियोंको जिसमें पातालपुरीके वैभवका वर्णन रहता है, गपोड़ेबाजी मानते हैं? क्या भारत किसी जमानेमें किसीसे कम था? जब लोग चलना-फिरना भी ठीकसे नहीं जानते थे तब भारत हवाई जहाज उड़ाता था।

भूगर्भका मेला इतना सुन्दर और सुव्यवस्थित था कि उसे ऊपरी मेलोंसे किसी भांति कम नहीं कहा जा सकता। चारों ओर बिजली जगमगा रही थी। सर्दीसे बचानेके लिये बिजलीकी अंगीठियोंका उपयोग किया जा रहा था।

इंगलैण्डसे जर्मनी आते समय रास्तेमें एक नवीन बात यह

देखनेमें आयी थी कि स्टेशनोंपर रकाबियाँ और ग्लास काँच और चीनी मिट्टीकी जगहपर कागजके थे, जो एक ही बार काममें लाये जाते थे। रास्तेभर पृथ्वी बरफसे ढकी हुई थी और वृक्ष सर्दीके कारण पल्लवोंसे रहित थे। दूरकी ऊंची जमीन सफेद हिमसे ढकी हुई राजपूतानेके बालूके टीलों-की याद दिलाती थी। परन्तु यह सौन्दर्य इतना सुखदायी न था; क्योंकि आंखें तो इन दृश्योंको देखकर अवश्य सुखी होती थीं, परन्तु सारा शरीर अप्रसन्न था। रास्तेभर जर्मन भाषाकी अनभिज्ञताके कारण काफी कष्ट होता था। ज्ञातव्य बातोंके साइनबोर्डोंके पढ़नेकी इच्छा होती पर साइनबोर्डपर जर्मन भाषा देखकर अपना-सा मुंह लेकर रह जाना पड़ता था।

लैपजीक स्टेशनपर पहुंचकर मोटरवालेको बुलाया। परन्तु वह मेरी बातोंको कुछ न समझता था। इसलिये उससे अधिक बहस न करके टैक्सीमे आ बैठा। मैंने उसे ठिकानेका कागज दिखाया जिससे वह मुझे निश्चित स्थानपर ले गया। इन झंझटोंसे मैं बहुत घबरा गया था और हृदयमें सोचता था कि ठहरनेके स्थानपर चलकर वहांके आदमियोंसे भरपेट बातें करूंगा, परन्तु जब कमरेकी मालकिनसे बात करने लगा तो पता चला कि वह और उसके तीनों बच्चे कोई भी अङ्गरेजी नहीं समझ सकते हैं। उस समय मेरी सारी उमंगें हृदयमें ही विलीन हो

गयी। किसी प्रकार उंगलियों और मुंहके संकेतों द्वारा अपने सोनेका प्रबन्ध कराया। थोडी देर बाद उनमेंसे एक लड़केने इङ्गलिश-जर्मन भाषाका कोष लाकर रख दिया। उनकी सहायतासे कुछ देरतक हमलोग आपसमें अपने विचारोंका आदान-प्रदान करते रहे। मैं जितने दिनोंतक उनके यहां रहा वे बालक मुझे मिस्ट्रा कहा करते थे। बादको मालूम हुआ कि ये लोग "मिस्टर" का कचूमर निकालकर उसका विकृत रूप मिस्ट्रा कहा करते थे।

यहां पृथ्वी माताके पेटमें विचरण करनेवाली रेलें तो नहीं हैं परन्तु विचित्र प्रकारकी ट्रामें हैं। ये ट्रामें कम ऊंची और साफ-सुथरी हैं। एक-एक ट्राममें तीन-तीन चार-चार डब्बेतक जुड़े रहते हैं। सड़कपर गाड़ी और मोटरोंपर नियन्त्रण करनेके लिये पुलिसके स्थानपर बिजलीकी बत्तियोंसे काम लिया जाता है। बत्तियाँ कभी लाल कभी सफेद और कभी हरी हो जाती हैं और इन्हीं रंगोंके आधारपर सवारियोंका संचालन किया जाता है।

तीसरे दिन सर्दी कुछ कम पड़ी, बरफका गिरना भी बन्द हो गया। शहरमें कुछ अधिक स्फूर्ति-सी मालूम पड़ती थी। हजारों मजूर और मेहतर मकानोंकी छतो,कार्निसों और सडकों-पर पड़ी हुई बरफको हटा रहे थे। छतों और मकानोंकी कार्निसोंपर पड़ी बरफ इतनी कड़ी हो गयी थी कि उन्हे

हथौड़ों और छेनियोंकी सहायतासे तोड़ा जा रहा था। सड़कों-पर गिरी हुई बर्फ पैरसे रौंदे जानेके कारण कीचड़-सी हो गयी थी। इस कारण वहांपर एक प्रकारका मसाला डालनेसे वह पिघल जाती थी और झाड़ुओंकी सहायतासे नलियोंमे डाल दी जाती थी।

बर्लिन—

बर्लिन जर्मन देशकी राजधानी है। यह सन् १८७० से ही अपने इस पदपर ध्रुवकी भांति अटल है। उस समय इसकी आबादी ७७५,०००, थी किन्तु बढ़ते-बढ़ते उसीकी आबादी ४०००००० हो गयी है। आबादीकी दृष्टिसे संसारके समस्त शहरोंमे इसकी गणना तृतीय है।

पोट्सडम—

बर्लिनसे पोट्सडम कुछ मीलोंपर है। यहीं जर्मनके भूतपूर्व सम्राट् कैसरका भवन बना हुआ है। यहाँ जानेके लिये रेल और लारियोंका प्रबन्ध है। पोट्सडम राज-भवन बड़ा ही सुन्दर बना हुआ है। इस समय इस विशाल राज-भवनमें कोई रहता तो नहीं है परन्तु इतिहासकी रक्षाके लिये यह सुरक्षित है। इसके दिखलाने के लिये पैसे तो लिए ही जाते हैं, परन्तु सबसे अच्छा प्रबन्ध तो यह देखनेमें आया है कि वहांकी फर्श और सामानको धूलसे बचानेके लिये दर्शकोंको अपने जूतोंके ऊपर कपड़ोंके जूते पहना दिये जाते हैं। इस भवनमें दो सौ कमरे हैं, जिसमें ५०० व्यक्तियोंके बैठनेके लिये एक छोटासा थियेटर भी है। इसी

भवनमें विभिन्न वस्तुओं और विभिन्न कामके कमरे तो थे ही- इन्हीं कमरोंके साथ एक विचित्र कमरा भी था जिसमें संसार-की समस्त खनिज वस्तुये दीवारमें जड़ी गयी थीं। यह देखनेमें तो उतना सुन्दर नहीं मालूम पड़ता था परन्तु इसके संग्रह करने-और बनानेकी मेहनतपर विचार करनेसे अवश्य आश्चर्य होता था। मुझे उस समय जितने खनिज पदार्थ याद आये उन सब-का दर्शन मैंने उस कमरेमें किया। यहांतक कि कालेदेव कोयला महाशय भी एक स्थानपर अपनी शोभा बढ़ा रहे थे। कालोंको भी यहां स्थान दिया गया है, यह गोरी जातिके लिये आश्चर्य-की बात हो सकती है। मूल्य और खर्चकी दृष्टिसे भी यह कमरा अपने ढंगका एक ही कहा जा सकता है। हीरे, जवाहर भी दीवालोंमें उसी तरह जड़े गये हैं जिस तरह कोयला, अबरक और गधक। इसीसे कोई भी इसके मूल्यका अनुमान नहीं कर सकता है।

शस्त्रागार—

बर्लिनका शस्त्रागार विख्यात है। यहां पूर्वकालसे अव-तकके युद्धमे काम आये हुए शस्त्रास्त्रोंका संग्रह है। यहांके शस्त्रागारमे यह विशेषता थी कि जो शस्त्र देखनेमात्रसे समझ-में नहीं आते थे उनका व्यवहार वतलानेके लिये उन्हींके माडल (मूर्ति) वनाकर रखे हुए थे। सभी शस्त्रोंपर उनका नाम और उपयोग करनेकी तारीख भी लिखी हुई थी। शस्त्रोंका परिचय जर्मन-लिपिमें होनेके कारण हमें एक गाइड (प्रदर्शक) का सहारा लेना पड़ा। पिछले महासमरमें भी काम आये हुए वायुयान और उनपर बलिदान हुए पाइलाटों (वाहको) के नाम सहित सुरक्षित थे। महासमरका दुष्परिणाम दिखानेके

लिए गाँवों, शहरों और कारखानोंके पूर्व अवस्थाके और गोला-बारूद पड़नेके बादकी दशाके माडल (Modle) बनाकर रखे गये थे। यद्यपि युद्धकी इतिश्री हुए इतने दिन व्यतीत हो गये और नष्ट-भ्रष्ट मकानोंकी मरम्मत भी हो चुकी है फिर भी इन माडलोंको देखकर उस समयकी भीषणताकी स्मृति ज्यों-की-त्यों जाग उठती थी। इन दृश्योंको देखकर परदेशियोंको तो केवल भीषणताका परिचय मिलता है परन्तु देश-प्रिय जर्मन जनता-को इस बातका अनुभव होता है कि शत्रुओंने उनपर कितना अत्याचार किया था। जर्मन लोगोंका उन दृश्योंको देखकर क्रोधित होना और आवेशपूर्ण बातें करना स्वाभाविक ही है।

आपेरा हाउस—

यों तो योरोपमे वियनाका आपेरा (थियेटरहाल) सर्व विख्यात है किन्तु यह भी अपने ढङ्गका एक ही है। चारों ओर सीटें लगी हुई इतना बड़ा विशाल हाल मैंने अन्यत्र कही नहीं देखा। सर्दीकी विभीषिकाके कारण उस समय हाल बन्द था। इसलिये किसी खेलका आनन्द न ले सका। इसकी विशालता देखकर अनायास ही हृदयमे ऐसे भाव उत्पन्न हो उठते थे कि जर्मन शासकोंमें कितना कला-प्रेम था। यह आपेरा हाल बहुत पुराना है और इसे जर्मन सम्राट्ने बनवाया था।

मछलीघर—

इसे अंग्रेजीमें (Aqurium) कहते हैं। वर्लिनका मछलीघर दर्शनीय है। जिस प्रकार भारतमे चिड़ियाघर, अजायबघर आदि बने हैं उसी प्रकार यहां मछलियोंका संग्रह किया गया है। लाखों रुपयोंकी लागतका यह संग्रहालय बना हुआ है। इन मछलियोंके देखनेसे एक बार तो आश्चर्यके समुद्रमें डुबकियाँ लगानी ही पडती है। एक-एक प्रकारकी मछलियाँ अलग-अलग स्थानोंपर रखी गयी हैं। मछलियोंके पालने और उन्हें जीवित रखनेके लिये वहाँ कितने ही विशेषज्ञ रखे गये हैं।

मछलियोंके रहनेके लिये काँचके छोटे-छोटे तालाब बनाये गये हैं जिनमें पानी भरा रहता है। तालाब चारों ओरसे ढका

रहता है। मछलियोंको पंप द्वारा वायु पहुचाई जाती पानीमें विजलीकी वत्तियां जला करती हैं जिससे मछलियोंकी शोभा अकथनीय हो जाती है। कहींपर तितलीकी तरहकी मछलियाँ क्रीड़ा कर रही हैं तो कहींपर सुनहरी मछलियाँ किलोल कर रही हैं। सुनहली, रूपहली मछलियोंके देखनेसे ऐसा मालूम पड़ता था जैसे किसी स्वर्णकारने सोने-चाँदीकी मछलियाँ वनाकर उनपर मीनाकारीका काम करके पानीमे छोड़ दिया है। कहींपर रङ्गविरंगी मछलियाँ अपने सौन्दर्यपर फूली न समाती थीं। ऐसी सुन्दर मछलियोंको देखकर आश्चर्य होता था कि किसी कारीगरने अपनी कलाकी इति कर दी है। क्या उसे भी कलाकी प्रतियोगितामें भाग लेना है या उसे भी नोवुलप्राइज पानेकी अभिलाषा है। यदि उसे किसी प्रकारकी अभिलाषा नहीं है तो क्या वह वच्चोंकी तरह विनोदप्रिय है जो इतनी चटकीली और वहुरङ्गी मछलियोंको वनाकर उनके साथ खेला करता है। उसके लिये तो मछलियाँ ही क्या सारा संसार ही उसके हाथका खिलौना है। वह रोज ही कितनी अद्भुत चीज़ें वनाया करता है और उन्हें खेलकर तोड़ डालता है। उसकी चित्तवृत्ति ठीक एक वालककी-सी मालूम पड़ती है जो खिलौना पाते ही खुशीके मारे नाच उठता है परन्तु उसको तोड़-फोड़ डालनेमे भी उसे कुछ दुःख नहीं होता।

विधाताकी चित्रकारी और कारीगरीको देखकर कौन दांतोंतले उंगली दबाये बिना रह सकता है। उसे भी इस खेलवाड़में आनन्द आता है और हमें भी आनन्द होता है। मानव विज्ञान और कलाओंका विकाश स्वतः नहीं है बल्कि मनुष्य जो कुछ बनाता है वह प्रकृति महारानीकी नकलमात्र होती हैं। मनुष्य मिट्टीका संतरा तो बना देगा, लोग उसे देखकर असली संतरेके भ्रममें पड़ जा सकते हैं परन्तु वह रस कहांसे ला सकते हैं; मनुष्य प्राकृतिक दृश्योंके चित्रोंको बनाकर कमरेकी शोभा भले ही बढ़ा ले परन्तु नैसर्गिक सौन्दर्य अणु-मात्र भी उसमें नहीं मिल सकता। जब कि एक प्रकारकी मछलीसे संसारका काम चल सकता था तब क्यों विधाताने इतनी मछलियोंके बनानेमें अपना समय नष्ट किया, बच्चे ऐसा प्रश्न कर सकते हैं परन्तु उसे तो केवल इच्छामात्रकी आव-श्यकता पड़ती है। इच्छा हुई नहीं कि सब वस्तुएं तैयार हो गयी। यदि वह इतने रंग और इतनी अनुपम वस्तुएं न बनाता तो आज हम अपनी कलाओंका विकास ही न कर सकते। हमें यह मानना ही पड़ेगा कि सुन्दरता प्रकृतिको भी पसन्द है तब क्यों न मनुष्यमात्र उसकी ओर आकर्षित रहे ?

इस मत्स्य-संग्रहालयसे लाखों बच्चों और मनुष्योंका मनो-विनोद ही नही होता, बल्कि जीव-विज्ञानके प्रेमी भी यहा आया

करते हैं और अपने ज्ञानकी वृद्धि करते हैं। ऐसे जिज्ञासुओंको यहांके विशेषज्ञ विशेष सुविधायें देते हैं और ज्ञातव्य बातोंसे परिचित करा देते हैं। ऐसी मछलियाँ भी यहाँ देखनेमें आयीं जिन्हें पूर्णतया देखनेके लिए खुर्दबीनकी मदद लेनी पड़ती थी। छोटे-छोटे बच्चे अपने अभिभावकोंके साथ यहाँ आया करते हैं इसलिए यह शिशु-संग्रहालयका रूप भी धारण किये रहता है।

विन्टर गार्डन—

इसका हिन्दी अर्थ तो होता है सर्दीका बगीचा, परन्तु वास्तवमें वह बगीचा नहीं है बल्कि एक विरायटीज़हाल (विनोद गृह) है। यह लम्बा-चौड़ा हाल अण्डाकार बना हुआ है, जिसमें २५०० मनुष्योंके बैठनेकी सुन्दर व्यवथा की गयी है। छत काले रंगकी है। काले रंगकी छतमें बिजलीकी छोटी-छोटी बत्तियां तारोंकी शोभाको मात करती हैं। एक विशेषता यहांकी बत्तियोंके सम्बन्धमें और भी है। वह यह कि जिस प्रकार अन्यत्र बत्तियां तुरन्त बुझ जाती हैं और उसी प्रकार झटसे जल भी उठती हैं, इस प्रकार बत्तियोंके जलने और बुझनेसे दर्शकोंकी आखोंपर इसका बड़ा बुरा प्रभाव पड़ता है। यहांके प्रबन्धकर्ता दर्शकोंसे

पैसा ऐंठनेमे ही अपने उद्देश्यकी सिद्धि नहीं समझते, बल्कि बेचारे दर्शकोंके स्वास्थ्य रक्षाका भी ध्यान रखते है। बत्तियोंके जलाने बुझानेके लिए ऐसे मीटरसे काम लिया जाता है जिससे वे धीरे-धीरे कम होते होते बुझती और जलती हैं। यदि भारतीय सिनेमा थियेटरवाले भी इसका प्रबन्ध करें तो कोई विशेष खर्च नहीं पड़ता, केवल एक मीटर (रेग्यूलेटर) बैठानेकी आवश्यकता रहती है। पर यहां तो अपने पैसोंसे काम है, न कि दर्शकोंके सुभीतेसे। रंगमंच लम्बाईके बीचोबीच बना होनेके कारण दर्शकोंके निकट पड़ता है। यहांकी तरह चौथी श्रेणीवालोंको उचक-उचककर देखनेकी जरूरत नहीं पड़ती।

एक बात यहांके सम्बन्धमें और भी अच्छी है। यहांके गुण्डे लोग पहलेसे टिकट खरीदकर दर्शकोंको अधिक मूल्यमें नहीं बेचा करते। हमारे यहांके प्रबन्धक तो इस बातपर ध्यान ही नहीं देते। खुद तो अपेक्षाकृत अधिक वसूल करते ही हैं साथही गुण्डे बदमाशोंको भी ड्योढ़ा-दूना करनेका अवसर देते हैं और अपने ग्राहकोंकी जेबपर निर्दयतासे कैंची चलवाते हैं। यद्यपि सूचना लगा देते हैं कि बेचनेवाला गिरफ्तार कराया जायगा। परन्तु कौन करता है। यहां पात्रोंपर फोक्स (रंगीन प्रकाश) छोड़नेवाले ऊपर छतपर बैठे रहते हैं, जिनकी संख्या पाँच होती है। इनके फोक्स देनेका ढंग इतना सुन्दर और आकर्षक होता है

कि वह देखते ही बनता है। खेल भी इस उद्देश्यको सामने रखकर खेले जाते हैं कि विदेशी लोग जर्मन भाषा न समझनेपर भी सब खेल समझ सकें। इसीलिये मजाकिया खेल, जादू और सरकसके काम अधिक दिखाते हैं। इन खेलोंको कोई भी समझ सकता है, चाहे भाषा जाने या न जाने।

आबजर्वेटरी—

आबजर्वेटरी उस स्थानको कहते हैं जहां वैज्ञानिक यन्त्रों द्वारा भूकरुर और तारोंकी गतिविधिका अन्वेषण किया जाता है। संस्कृतमें इसे वेधशाला कहते हैं। जर्मनीकी वेधशाला भी संसारकी प्रसिद्ध वेधशालाओंमेंसे है। यहांकी दूरबीन भी संसारकी सबसे बड़ी दूरबीनोंमेंसे है। रातको यह वेधशाला महीनेमें पन्द्रह दिनतक खुली रहती है जबकि आकाशमें चन्द्रमा भलीभांति दिखायी पड़ता रहता है और इसी समय उस विशालकाय दूरबीनका मुँह चन्द्रमाकी ओर करके फोक्स मिलाकर रख दिया जाता है। दर्शकोंसे दक्षिणा लेकर इस दूरबीन द्वारा चन्द्रदेवका दर्शन कराया जाता है। जो चन्द्रदेव बिना दूरबीनकी सहायता-

से सुन्दर थालीके आकारके दिखाई पड़ते हैं वे ही उस दूरबीन द्वारा देखनेसे कुछ दूसरे ही ढंगके दिखाई पड़ते हैं। जिस तरह सूखे आटेकी ढेरपर पानीके छींटे पड़नेसे उसमें गढ़े पड़ जाते हैं ठीक यही दृश्य चन्द्रदेवके यहाँका होना है। कवियोंकी दृष्टिमें शीतलाके दागवाली स्त्रीके मुख-मण्डलका-सा चन्द्र-मण्डल हो जाता है। भारतीय लोग और खासकर पौराणिक संसारवाले चन्द्रमाके काले धब्बोंके लिये तरह-तरहके कल्पनाके घोड़े दौड़ाते हैं। कोई कलंक कोई शशांक और कोई कुछ कहते हैं। पाश्चात्य देशवाले चन्द्रमाको जीव-रहित एक दुनिया मानते हैं और काले धब्बोको नदियां, झील आदि मानते हैं। गड्ढोंमें प्रकाश न पड़ने-से वे काले-काले धब्बोंके रूपमें दिखायी पड़ते हैं। कुछ भी हो, अभीतक तो उनका अनुमान भी कल्पनाका घोड़ा ही कहा जा सकता है, क्योंकि इससे भी बड़ी दूरबीन अभी दूसरी बनी ही नहीं, जिससे नदियाँ आदि स्पष्ट दिखायी पड़ें। हाँ, इस दूरबीन से चन्द्रदेवके कलेवर परिवर्तनसे दर्शकोंको आश्चर्य-निमग्न अवश्य होना पड़ता है।

समुद्री प्रदर्शनी—

जहां हम भारतमें किसी चिड़ियाखाना या अजायबघरको देखकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं और अपने नेत्रोंको धन्य समझने लगते हैं वहां योरोपमें केवल अजायबखाना खोल देनेसे सन्तोष नहीं किया जाता। यहांके अजायबघरोंमें सभी विषयकी सामग्री एक ही स्थानमें भर दी जाती है। कपड़े, अस्त्र-शस्त्र, मूर्त्तियाँ, मृत जानवर और खाने-पीनेकी सभी वस्तुएं एक ही संग्रहालयमें दिखला दी जाती हैं। योरोपमें यह बात नहीं है। वहाँ चित्रोंका, युद्ध सामग्रियोंका, मछलियोंका, प्राकृतिक वस्तुओंका और कलाका प्रदर्शन अलग-अलग किया जाता है। इससे एक लाभ तो यह होता है कि जनता अपनी रुचिके

अनुसार अपने द्रष्टव्य विषयको ही देख सकती है, व्यर्थमें पैरोंको कष्ट नहीं देना पड़ता। दूसरे समयकी भी बचत होती है। तीसरे विषय विशेषके विद्यार्थियोंको भी एक ही स्थानपर एक प्रकारकी सामग्री मिल सकती है। अन्वेषकोंको भी यत्र-तत्र भटकनेकी असुविधा नहीं होती।

उक्त बातोंको ध्यानमें रखकर यहाँ समुद्री बेड़ोंका एक सुन्दर प्रदर्शन किया गया है। समुद्री युद्धमें काम आनेवाले अस्त्र-शस्त्र, तरह-तरहके जलयान और अन्य समुद्री साधनोंका यहाँ सुन्दर प्रदर्शन किया गया है। साथ ही यह भी दिखाया गया है कि जलमें कितने प्रकारके भयानक आक्रमणकारी जीव होते हैं। उनसे नौकाओं और अन्य जलयानोंको कितना और किस प्रकारका खतरा रहता है। उन खतरोंसे किस प्रकार अपनेको बचाया जा सकता है, इसका समाधान यहाँ बड़ी सुन्दरतासे किया जाता है।

इस प्रदर्शनको देखनेसे जर्मन-साम्राज्यकी समृद्धि और कर्तव्यनिष्ठाका भलीभांति भान होने लगता है। एक-से-एक विचित्र जल-जन्तुओंका प्रदर्शन किसी भी दर्शकको आश्चर्य-चकित होनेसे बचा नहीं सकता। बड़े-से-बड़े जहाज किस प्रकारअनन्त जल-राशिमें मग्न कर दिये जा सकते हैं। यह प्रदर्शनी स्पष्ट बतलाती है। समुद्री लड़ाईके हथियारों और

उनकी लागतका अन्दाजा भी आसानीसे नहीं लगाया जा सकता।

विशेष उल्लेखनीय और आश्चर्यमयी वस्तुओंमें उन जहाजोंके माडल (मूर्ति) थे, जो अपने विपक्षियोंके दाँत खट्टे कर चुके थे। पनडुब्बे जहाजके माडलको देखनेसे यह बात बड़ी आसानीसे समझमें आ जाती है कि जलके भीतर जहाज किस प्रकार चलता है और उसमें बैठनेवाले किस प्रकार सांस लेते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ जर्मन युद्धके समय भारतमें हलचल मचा देनेवाले 'एमडन' जहाजका भी माडल था। टारपीडो नामक गोला भी यहां दिखाया गया था। इसकी लम्बाई लगभग दस फीट और मोटाई लगभग १८ इञ्चसे २४ इंचतक होती है। सुना जाता है कि इसके बनानेमें आठ दस हजार रुपये खर्च होते हैं और जब यह तोपसे छूटकर वायुवेगसे आगे बढ़ता है तो अपने लक्ष्यको ध्वंस किये बिना नहीं रहता।

प्लेनीटोरियम—

यह स्थान भी अपनी विचित्रताके लिये प्रख्यात है। यह प्रदर्शन एक बड़े गोल मकानमे किया जाता है। प्लेनीटोरियम उस स्थानको कहते हैं जहां आकाशके ग्रहों, उपग्रहों और नक्षत्रोंका प्रदर्शन किया जाता है। इस स्थानको देखकर मेरी प्रसन्नताका ठिकाना न रहा। यहां मुझे ऐसा आनन्द प्राप्त हुआ जिसका वर्णन नही किया जा सकता। यह प्रदर्शन "कार्लजाइसजेना" कम्पनी द्वारा बनाया गया है और इसी कम्पनीकी मशीनोंसे प्रदर्शन भी किया जाता है। जब हम इस विशाल भवनके भीतर घुसे तो यहाँ एकदम अन्धकारका राज्य था और चारों ओर शांति छाई हुई थी। हम ऐसा अनुभव कर

रहे थे मानो किसी घरमें नहीं बल्कि अँधेरी रातमें किसी खुले मैदानमें तारोंसे भरे जगमगाते आकाशके नीचे बैठे हैं।

जिस कम्पनीने इस कलाका आविष्कार किया है वह काँचकी लेंस बनानेके लिये भी संसारमें प्रख्यात हो चुकी है। यह इसका दूसरा और अनुपम आविष्कार है। जब मशीन चलने लगती है तो उसकी किरणोंके प्रतिबिम्बसे कालो छतपर तारे जगमगाने लगते हैं। यही नहीं, एक विशेषज्ञ उन तारोंका नाम ले-लेकर उनकी चाल इत्यादिके सम्बन्धमें समझाता भी है। तारोंका स्थान और रूप ठीक आकाशी तारोंसे मिलता-जुलता है। जैसे आकाशके सप्तर्षि और ध्रुवका रूप है ठीक उसी तरह यहांके ध्रुव महाराज भी अपने अटल आसनपर विराजमान थे। दुर्भाग्यकी बात यही थी कि समझानेवाला जर्मन भाषामें समझा रहा था जिससे उस विषयमें हमें कुछ भी ज्ञान न प्राप्त हो सका। तारे ठीक आकाशी तारोंकी तरह चलते भी हैं। इससे यहांके ज्योतिषियोंको भी काफी लाभ होता है। बेचारे भारतीय ज्योतिषियोंके सौभाग्यमें ऐसी सहायक वस्तुएं कहां? साधनों और प्रोत्साहनकी कमी तथा अपनी अकर्मण्यताके कारण ही यहांके ज्योतिषियोंपरसे जनताका विश्वास उठता जा रहा है और ये बेचारे कौड़ीके तीन हो रहे हैं। नहीं तो किसी समयमें उनका भी जमाना था। आज-

कल इस मकानकी उपयोगिता जर्मनीमें इतनी समझी जाने लगी है कि प्रायः बड़े-बड़े सभी गांवोंमें एक-एक प्लेनीटोरियम बनाये जा रहे हैं। भारतमें किसी जमानेमें जयपुर महाराजको इस विषयसे अच्छा प्रेम था और उन्होंने इस विद्याके प्रचार और प्रोत्साहनके लिये जयपुर, काशी और दिल्लीमें सुन्दर वेधशालाएं काफी लागत लगाकर बनवायी थीं जो अब केवल देखनेकी वस्तु रह गयी हैं। उनका उपयोग बहुत कम लोग करते हैं।

इस मकानमें घुसनेपर हमें एक नयी बात यह भी ज्ञात होती है कि अन्धकारमें प्रकाशसे २००००० गुणा सचेतन शक्ति आखों-में आ जाती है। पहले तो दस मिनटतक दर्शक पूरे धृतराष्ट्रका पार्ट अदा करते हैं, फिर धीरे-धीरे उन्हें कुछ सुझाई पड़ने लगता है औरइसी क्रमसे यदि मशीने न चलायी जायं तो ७० मिनटमें आंखोंमें प्रकाशकी अपेक्षा २००००० गुणा सचेतना आ जाती है। इससे हमे यह अनुभव होने लगता है कि हम अभ्यास करनेपर अन्धकारमें देखनेकी शक्ति बढ़ा सकते हैं और ताज्जुब क्या कि एक दिन बिल्लियोसे भी अन्धकारमें हम देखनेकी प्रति-योगिता ठान दें।

हमबर्ग—

जो स्थान भारतमें मद्रासका है, वही हमबर्गका जर्मनीमें है। यह जर्मनीकी राजधानी तो नहीं है किन्तु अपने व्यापारकी दृष्टिसे इसका स्थान बहुत ऊंचा है। यहांकी दर्शनीय वस्तुओं-में अलवा नदीकी सुरंग और पशु-संग्रहालय विशेष प्रसिद्ध हैं। यों तो लण्डनमें भी नदीके नीचेसे सुरंगें बनायी गयी हैं किन्तु उन सुरंगों द्वारा केवल भूगर्भकी रेलें ही आ-जा सकती हैं। यहांकी सुरंगोंमें विशेषता यह है कि मनुष्य, पशु और मोटर गाड़ियां भी आती-जाती हैं। सुरंगोंके दोनों फाटकोंपर बिजली-की लिफ्टें लगी हुई हैं जिनसे आदमी, गाड़ी और पशु सुरंग-तक पहुचा दिये जाते हैं। सुरंगकी दीवारें और छतें चमचमाती

रहती हैं, दिन-रात बिजलीकी बत्तियाँ जला करती हैं। पवन-देव भी पम्प द्वारा आया-जाया करते हैं, जिससे किसीको कुछ कष्ट नहीं होता है।

सुरंगमें पहुचानेवाली लिफ्टोंकी बनावट भी कम महत्व नहीं रखती हैं। दोनों फाटकोंपर तीन-तीन लिफ्टें (बिजलीके पिंजडे) बनी हैं। पहली लिफ्टपर १३० दूसरीमें ८० और तीसरीमें २७ आदमी आ सकते हैं। आदमियोंकी भीड़के अनुसार इनका उपयोग किया जाता है। जब हम सुरंगकी सैर कर रहे थे तो हृदयमें यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि यदि कहीं इन लिफ्टोंका कोई पुरजा बिगड़ गया या कनेक्शन (विद्युत-सम्बन्ध) टूट गया तो क्या हमलोगोंकी दशा कलकत्तेके ब्लैकहालमें मरनेवाले व्यक्तियोंकी-सी होगी या यहांसे बाहर भी निकल सकेंगे। यही सोचते-विचारते जब दूसरे दरवाजेपर पहुचे तो देखा कि नीचे-ऊपर सड़कपर आनेके लिये लिफ्टोंके अतिरिक्त लोहेकी चौड़ी और घुमावदार सीढ़ियाँ भी बनी हुई हैं। इस वक्त मेरी समझमें आया कि यहांके लोग इतनी मोटी भूल थोड़े ही कर सकते हैं! उपरोक्त लिफ्टोंपर मनुष्योंके अतिरिक्त पशु, मोटरकार, लारियां और घोड़ा गाड़ियां भी चढ़ाई जाती हैं।

लोगोंका कहना है कि यदि इतना ही बड़ा पुल बनाया जाता तो उसमें इसका कई गुना अधिक खर्च
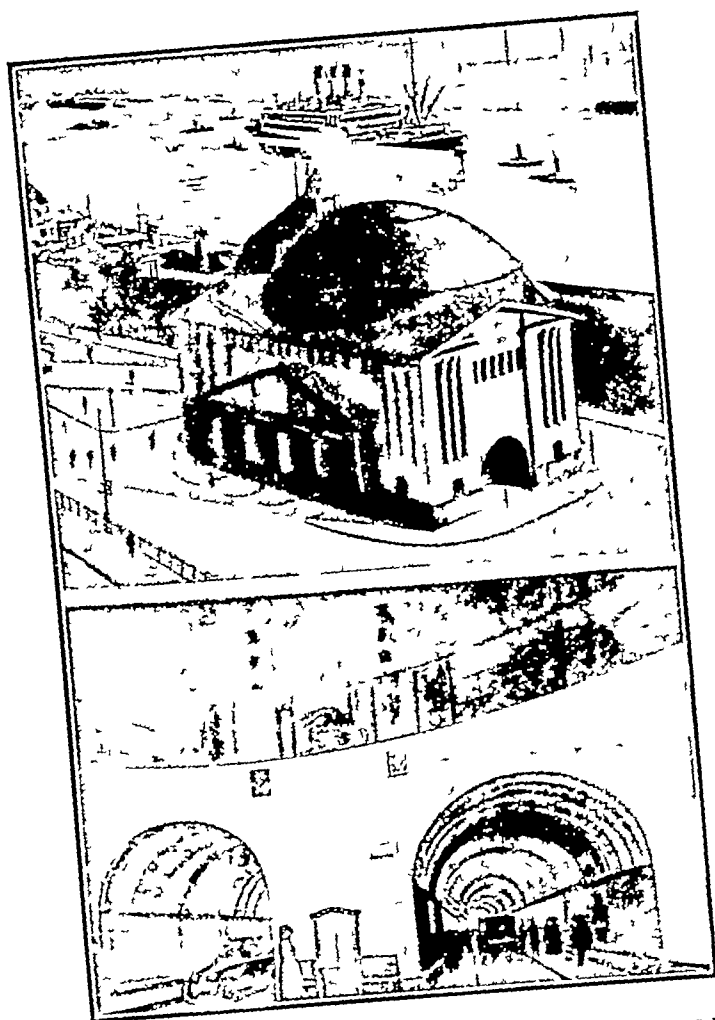
हमबर्गकी अलवा नदी [पे० ६६]

(१) सुरंगतक जानेके लिये लिफ्टघर

(२) जाने और आनेके लिये दो अलग-अलग सुरंगें

पड़ता और जहाजोंके आने-जानेमें भी बड़ी असुविधा पड़ती। हवड़ेके पुलकी तरह जहाजोंके निकालनेके लिये पुल खोलनेकी जरूरत पड़ा करती और इसमें भी काफी खर्च पड़ता। इन्हीं असुविधाओंको ध्यानमें रखकर यह १३५० फुट लम्बी दोहरी सुरंग बनाई गयी है। एकसे लोग आते हैं और दूसरीसे जाते हैं। लिफ्टोंको अपनी सवारी लादकर पातालमें ८० फुट जाना पड़ता है, इसका मतलब यह है कि समुद्रतलसे ८० फुट नीचे सुरंगें बनाई गयी हैं।

पशु-संग्रहालय—

यह संग्रहालय भी योरोपमें अपना एक अलग ही स्थान रखता है। जिस प्रकार कलकत्तेमें मल्लिक गार्डन और संग्रहालय निजी सम्पत्तिसे बनाकर जनताके लाभार्थ खोल दिया गया है उसी प्रकार यह संग्रहालय भी किसी संस्था विशेषकी सम्पत्ति नहीं है। एक धनी महापुरुषने अपार धन व्यय करके इस उद्यानको बनावाकर जनताके लिये खोल दिया है। इस संग्रहालयकी सब-से उत्तम विशेषता यह है कि यहांके पालित जन्तु आजन्म कारावासका दण्ड नहीं भोगते, बरन् वे अपनेको पूर्ण स्वाधीन समझते हैं। जितनी दूरमें वे रहते हैं वहीं उनका संसार होता है। जैसे—जितने प्रकारके सांप और उनके ऐसे सजातीय जो एक

दूसरेसे लड़ते नहीं, एक ऐसे स्थानपर छोड़ दिये गये हैं जो उनके रहनेके लिये पूर्ण अनुकूल होता है। उस स्थानके चारों ओर नहर बनाकर उसमें ऐसा मसाला छोड़ दिया गया है जिससे सांप नहरमें पैठने और पार करनेकी चेष्टा ही नहीं करते हैं।

इसी प्रकार पहाड़ी बकरोंके लिये कृत्रिम पहाड़ भी बना दिये गये हैं। पहाड़ोंपर झाड़ियां लगी हैं, बकरे उन्हें अपना प्राकृतिक स्थान समझते हैं और मौजसे वहां रहते हैं। यहां ऐसे-ऐसे जानवरोंका दर्शन होता हैं जिन्हें देखकर आश्चर्य-चकित हो जाना पड़ता है।

वनराज शेर साहबके रहनेका स्थान भी बड़ा ही सुन्दर और सुदृढ़ है। वे महाशय उस अपने बनावटी स्थानको बाबा आदमका बनाया दुर्गम स्थान समझकर ठाट-बाटसे रहते हैं। पहाड़ी दृश्य, जलाशय और गुफा जो कुछ इनके पसन्द आती हैं सब यहां मौजूद हैं। इनके किलेके चारों ओर गहरी खाई खुदी हुई है। जब राजा लोग अपने किलोंके चारों ओर खाई खुदवा लेते हैं तो वनराजके किलेके चारों ओर खाई क्यों न खोदी जाती? किन्तु इनके किलेकी खाई और मनुष्योंके राजाओंके किलेकी खाईमें अन्तर इतना ही हैं कि राजाकी खाई शत्रुओंके आक्रमणको रोकती है और यह खाई उनके

(वनराजके) आक्रमणसे जनताकी रक्षा करती है और वह खाई शत्रुओंको किलेमें प्रवेश करनेसे रोकती है तो इनकी खाई इन्हें वाहर जानेके कष्टसे सुरक्षित रखती है। जापानके प्राचीन राजाओंकी तरह इन्हें इसी किलेमे ही रहनेके लिये वाध्य करती है। पशुओंका ऐसा सुन्दर और सुव्यवस्थित संग्रहालय और कहीं नहीं देखनेमे आया।

जेकोस्लोवाकिया

१—प्राग

(क) कुश्तीका प्रदर्शन

प्राग—

प्राग ज़ेकोस्लोवाकियाकी राजधानी है ज़ेकोस्लोवाकिया भी संसारमें अपने व्यापारके लिये प्रख्यात है। यदि आप ध्यानसे देखें तो आपकी छातीपर लगी हुई कोट या कमीजकी बटनोंपर इसके नामकी छाप अवश्य लगी हुई मिलेगी। इसके नामकी लिखावट (स्पेलिंग) भी ऐसी विचित्र है (Cyecho Slavakea) जिससे साधारण अंग्रेजी जाननेवाले इसका उच्चारण ही नहीं कर सकते । उपरोक्तप्रागसे मतलब हमारे तीर्थराज प्रयागसे नहीं है। प्रयागका उच्चारण भी कितने ही लोग प्राग किया करते हैं। प्रयाग यदि तीर्थ-राज होनेका दावा करता है तो प्रागका दावा भी संसारके सबसे

बड़े मोचियोंमें अपना नाम लिखानेका दावा करता है। वाटाको मोचियोंका वादशाह कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी। कौन ऐसा शहर होगा जहां इसके जूतोंकी सजी हुई दूकान न हो। थोड़े ही दिनोंमे इसने इतनी उन्नति कर ली कि (इस वाटाने) कितने ही मोचियोंको घाटा पहुचाकर इसने सबसे उच्च स्थान प्राप्त कर लिया।

बाटा किसी समय एक साधारण मोचीका लड़का था। उसकी आर्थिक स्थिति भी बहुत खराब थी, परन्तु अध्यवसायियोंके आगे अर्थ-सङ्कट कितने दिनोंतक रह सकता है? इस समय इसके विशाल कारखानेमे प्रतिदिन लगभग २०००० जोड़ियां तैयार होती हैं। मालकी अधिक मांगको पुरा करनेके लिये इन दिनों उसने अन्य-अन्य देशोंमे भी कारखाने खोल लिये हैं। कर्मचारियोंके भ्रमणमें समयकी बचतके लिये इन्होंने अपने कई हवाई जहाज खरीद रखे हैं जिनमें इनके Sales Manager इङ्गलैण्ड, फ्रान्स और जर्मनो स्थित शाखाओंकी देख-रेख बराबर किया करते हैं।

अजायबघरोंकी कौन कितनी चर्चा करे। यहाँ सभी शहरोंमें बड़े-बड़े सुव्यवस्थित अजायबघर होते हैं और सबमें कोई-न-कोई विशेषता होती ही है। सौभाग्यसे जब मैं यहां पहुंचा तो यहाँ भी एक विशाल व्या-

पारिक मेला लगा हुआ था। व्यापार-प्रियताके कारण इन मेलों-के देखनेके लिए मैं उत्सुक रहा करता था। एक छः मंजिले विशाल भवनमे इस मेलेका विराट आयोजन किया गया था। भीड़की अत्यधिकताके कारण रहनेके लिये स्थान ढूंढ़नेमे बड़ी असु-विधा हुई; परन्तु मेला-कमेटीकी सहायतासे एक बड़े होटलमें अधिक कियायेपर स्थान मिल गया। किराया अधिक होनेपर भी स्थानकी स्वच्छता और सुव्यवस्थाको देखते हुए सन्तोष हुआ। यहांके दूकानदार ग्राहकोंसे इतनी दिलचस्पी लेते थे कि जिसके स्टालमें जरा-सा पैर बढ़ाया कि (Catlogue) सूची-पत्रपर सूचीपत्र मिलने लगते। ग्राहक कुछ ले या न ले वे अपने मालकी प्रशंसाके पुल बांध देगे। यदि आप उनकी भाषा नहीं समझते तो वे दुभाषियेको खोज लावेंगे जिस प्रकार भी हो वे ग्राहकको प्रसन्न करनेका प्रयत्न करते हैं। यह देख हृदयमें यही भाव उठते थे कि जहांके दूकानदार इतने पटु हैं वहांकी उन्नति क्यों न हो ?

कुश्तीका प्रदर्शन—

एकस्थानपर कुश्तीका विज्ञापन पढ़ा, योरोपकी मल्ल युद्ध-प्रणालीके देखनेकी उत्सुकताको एक भारतीय कैसे रोक सकता है! मैंने भी एक अच्छे दरजेकी टिकट खरीद ली। जब मल्लशालामें जाने लगा तो मुझे ऐसा मालूम हुआ कि जैसे कलकत्तेके न्यूमार्केटमें घूम रहा हूं। भीतर तरह-तरहकी दूकानें सजी थीं और बिजलीके प्रकाशसे दिन-रातका भेद जाता रहा था। मुख्य द्वारसे बिजलीकी लिफ्टसे नीचे उतरे तो क्या देखते हैं कि भूगर्भमें सुन्दर मल्लशाला बनी है। मेरी सीट बहुत अच्छी थी इसलिए मैं अखाड़ेके पास ही था। यहां भी पहलवानोंमें तनातनी और मारपीटका बाजार गर्म था किन्तु

प्रबन्धकोंकी सुव्यवस्थासे शान्ति थी। यहांके पहलवान केवल लंगोट चढ़ाकर नहीं लड़ते, बल्कि जूते पहिने हुए और कितने तो चुस्त पैंट भी पहने रहते हैं। आप अखाड़ेमें ऐसे लड़ाकोंकी बात सुनकर अवश्य हँसेंगे पर अपनी-अपनी प्रथा ही तो है। यहाँ मिट्टी खोदकर अखाड़ा नहीं बनाया जाता बल्कि कुछ ऊंचा ऐसा प्लेटफार्म बना था कि किसीको गिरनेपर चोट न लगे। अखाड़ेमें चारों ओर रस्सियां लगी थीं। इस तहखानेवाले अखाड़ेमें चार हजार आदमियोंके बैठनेका स्थान था।

एक भारतीय मित्रकी परिचय पत्रिका और जर्मनी आते समय जो भारतीय इञ्जिनियर मुझे मिल गये थे उनकी सहायतासे यहांके विशाल लैनटर्नके कारखानेको मुझे देखनेका शुभ अवसर प्राप्त हुआ। इस कम्पनीकी लालटेनें "मेवा" नामसे भारतमें आती हैं। जिस लालटेनको हम एक साधारण गृह-वस्तु समझते हैं उसके कारखानेको देखकर दंग रह जाना पड़ता है। एक छोटी-सी लालटेन बनानेके लिए टीनके टुकड़ोंको १८० बार मशीनकी शरण लेनी पड़ती है। इन लालटेनोंके बनानेसे जो टीनके छोटे-छोटे टुकड़े बच जाते हैं उन्हें भी इसी कारखानेमें आश्रय मिलता है और यंत्रों द्वारा गृह-उपयोगकी अनेक सुन्दर वस्तुओंके रूपमें वे बाहर निकलते हैं।

यहांका किला एक हजार वर्षका पुराना है। यह इतना

सुदृढ़ बना हुआ है कि अभीतक कहीं भी इसमें पुरानेपनकी झलक नहीं मिलती। तबसे अबतक यहांके राजा और राज-कुटुम्ब यहीं रहता चला आया है। इस समय तो यहां प्रजातंत्र राज्य है, अस्तु, प्रजातंत्रके सभापति इसमें रहा करते हैं। यहाँ एक चित्रशाला भी है, जिसमे प्राचीन कालसे लेकर अबतकके राजाओंके चित्रोंके अतिरिक्त और भी कितने ऐतिहासिक चित्र रखे गये हैं।

आस्ट्रिया

१—वियना

(क) आपेरा हाउस

वियना—

वियना आस्ट्रियाकी राजधानी है। यहांकी अवस्था महासमरके पहलेतक बड़ी अच्छी थी। यहांकी जन-संख्या २०००००० की थी। यह योरोपके शहरोंमे अच्छा समझा जाता था परन्तु महासमरके समय इसकी हालत बहुत गिर गयी थी। जब लोगोसे वहांका वर्णन सुना जाता था तो आँखोंमे आँसू भर आते थे। उन लोगोंका कहना था कि जब समर छिड़ा हुआ था तब सभी युवक समरभूमिमें अपनी वीरताका परिचय दे रहे थे। केवल बाल-वृद्ध और अब-लाएं जो युद्धमे काम न आ सकती थी वे ही घरोंमें रह गयी थी।

देशमे खाद्य-पदार्थकी कमी होनेके कारण सरकारने खाद्य-

पदार्थों को वेचने या बांटनेका काम अपने हाथोंमें ले रखा था। जो कि लोगोंको हिस्सेके अनुसार दिया जाता था। एक वार तो ऐसी अवस्था पहुच चुकी थी कि सुवहसे दोपहरतक खाद्य-पदार्थ-के डिपोपर खड़े रहनेपर आध पाव मांस और एक रोटीका टुकड़ा दिनभरकी क्षुधाको शान्त करनेके लिये दिया गया था। उस समय घोड़े आदि जानवर दिखायी नहीं पड़ते थे। कुछ तो समरभूमिमें काम आ चुके थे और कुछ पेटकी जठराग्निमें झोंके जाचुके थे।

महासमरके अन्त होनेके वाद यह विपदा कुछ टली, परन्तु सिक्केका दाम इतना गिर गया कि १९२४ तक एक पोण्डमें ३४०००० सिक्के मिलते थे। एक व्यक्तिके एक दिनकी पेट-पूजाके खर्चमें २५००० सिक्के खर्च हो जाते थे। धीरे-धीरे यहांकी अवस्था सुधरने लगी और इस समय ३५ सिक्कों-में एक पौण्ड आता है। यहांकी देखने योग्य वस्तुओंमेंसे आंखका अस्पताल संसारमें प्रसिद्ध है। यहाँ इसके विशेषज्ञ हैं, नवसिखुयोंकी शिक्षाका भी पूरा प्रवन्ध है। कई भारतीय विद्यार्थी यहाँ डाक्टरी सीखनेके लिये आये भी थे। भारतीय राविन्सन क्रूसो स्वामी सत्यदेवजीने यहीं अपनी आँखोंकी चिकित्सा करायी है।

आपेरा हाउस—

यहांका आपेरा योरोपके सर्वश्रेष्ठ आपेरा हाउसोंमेंसे एक है। यहां महासमरके पूर्व स्वर्गका दृश्य दिखायी पड़ता था। यहाँकी नाट्यशालामें योरोपके सुप्रसिद्ध नाट्यकारोंके अभिनय हुआ करते थे, जो एक दो सप्ताह नहीं, एक दो महीने नही, वल्कि सालों उसी उत्साहसे चला करते थे। एक खेलका महीनोंके स्थानपर वरसो चलना वहांके लोगोंकी गुण-ग्राहकता ही कही जा सकती है। जिस समय मैं यहांकी सैर कर रहा था वहां एक खेल चल रहा था। यहां भी भारतीय थियेटर हाउसो-की तरह मुनाफा लेकर टिकट वेचनेवाले वहुत थे। किसी प्रकार एक टिकट काफी मुनाफा देकर खरीदा। जव ऊपर

गया तो हाल ठसाठस भरा था पर कहींसे चूं तककी आवाज नहीं आती थी। मेरी सीट क्या थी; खड़ा रहनेका स्थान था! खेलका प्लाट और सीन-सीनरीके लिए तो कहना ही क्या है! एक तो योरोप, दूसरे वियनाका आपेरा इसपर भी यदि अच्छा खेल न हो तो और कहां हो सकता है? परन्तु भाषाकी अनभिज्ञताके कारण मजा किरकिरा ही रह गया। यहां भी इस परिस्थिति और भीड़को देखते हुए कहना ही पड़ता है कि यहांके लोगोंमें पुरानी गुणग्राहकता और गौरव बना ही है।

वियनाके आसपास पर्वत मालाओंका बड़ा ही सुन्दर दृश्य है, जिनपर प्राय. बर्फ जमी रहती है और देखनेसे ऐसा मालूम होता है मानो पर्वत श्रेणियोंको प्रकृतिने रजत-पत्रसे मढ़ दिया है। सूर्यकी किरणोंके इन पर्वतोंपर पड़नेसे वह रंग विरंगा दृश्य दिखायी पड़ता है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। यहाँका रेक्स (Rax) पहाड़ ६०२७ फीट ऊँचा है और इसपर चलनेके लिये तारपर चलनेवाली रेल चलायी गयी है। आजकलके विज्ञानके लिए दुर्गमको सुगम बना देना बायें हाथका खेल है।

इटली

जिनेवा—

जिनेवा इटलीकी राजधानी है। यदि आप योरोपका मानचित्र देखें तो दक्षिणी भागमें मोजेके आकारका एक देश दिखाई पड़ेगा, इसे ही इटली कहते हैं। और देशोंकी अपेक्षा यह लम्बाई-चौड़ाईमें काफी दुबला-पतला होनेपर भी व्यापारका अच्छा स्थान है। भारतमें संगमरमरकी खानें होनेपर भी यहांके संगमरमरसे भारतके बाजार पटे रहते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ रेशम और ऊनका काम भी खूब होता है। मुसोलिनीने इटलीको ऐसा गौरव दिया कि आज इटली और मुसोलिनीके ऊपर सारे संसारकी दृष्टि लगी हुई है। राजनैतिक दाव-पचमें मुसोलिनी किसी भी राजनीतिज्ञसे कम नहीं है।

यह इटलीका प्रधान वन्दरगाह और व्यापार-प्रधान शहर है। यह शहर समुद्रके किनारे पहाड़ोंको काटकर बनाया गया है। इसीसे इसकी लम्बाई अधिक है। सड़कें एक दूसरेसे बहुत ज्यादा ऊंची-नीची हैं। शहरमें कई गुफाओंको काटकर ट्राम और मोटर इत्यादिके गमनागमनका प्रबन्ध किया गया है। कहीं-कहीं तो एक मुहल्लेसे दूसरे मुहल्लेमें मोटरके बजाय पैदल जानेसे मीलोंका अन्तर पड़ जाता है। जिनेवासे चार-पांच मील-की दूरीपर नरभो नामक समुद्रका किनारा बड़ा ही मनोरम है। समुद्री किनारा इतना टेढ़ा-मेढ़ा है कि उसके किनारोंपर सर-कारकी ओरसे उसी तरहकी टेढ़ी-मेढ़ी पगडण्डियाँ और पुल बना दिये गये हैं। किनारेपर जलवायुकी स्वच्छताके कारण कितने ही लोगोंने अच्छे-अच्छे महल भी बनवा लिये हैं। बाहर से देखनेपर तो कोई भी इन्हें एक मंजिला मकान ही अनुमान कर सकता है परन्तु आसपास जाकर देखनेसे ज्ञात होगा कि ये मकान काशीजीकी गङ्गा किनारेकी विशाल अट्टालिकाओंसे कम नहीं हैं।

सुबह-शाम यहाँकी शोभा अकथनीय हो जाती है। जिधर देखिये, उधर ही एक अपूर्व छटा दिखायी पड़ती है। कहींपर बच्चे बालक्रीड़ाएं करनेमें मस्त हैं। कहींपर स्त्रियां मनो-विनोद कर रही हैं, कहीं कोई किसी विषयके सोचनेमें तल्लीन

है तो कोई अपनी मित्र-मण्डलीमें हंसीके फौव्वारे उड़ा रहा है। कहींपर किसी विषयको लेकर विवाद छिड़ा हुआ है। कहनेका मतलब यह कि जहाँपर दृष्टि डालिये वहीं उसकी ओर आकर्षणकी काफी सामग्री मिल जाती है। यदि पैर चलना चाहते हैं तो आंखें जाने ही नही देतीं और आँखोंके आग्रहको स्वीकार करनेके लिए पैरोंको वाध्य होना पड़ता है। जब यहांकी मनोरम दृश्यावलीसे किसी प्रकार अपनेको अलग कीजिये तो आप कोलम्बस साहबके ऐतिहासिक भवनकी तरफ चलिये।

कोलम्बसका घर—

विश्व-विख्यात कोलम्बस साहबको कौन शिक्षित नहीं जानता ? इस संसार-प्रसिद्ध महान् जहाजीका घर यहींपर है। इसने उस समय अमेरिकाका पता लगाया था जब जहाज माँझियो द्वारा डांड़से चलाये जाते थे। संसारको अमेरिका जैसे महादेशका पता ही नही था। जब संसारके सामने इसका अस्तित्व ही नहीं था तब कोलम्बस जैसे साहसी यात्रीने इसका पता लगाया और इस समय संसारके साथ अमेरिका भी दूध-पानीकी तरह मिला हुआ है और संसारमें अपनेको सबसे अधिक सपत्ति-शाली समझता है।

बीच शहरमें उच्च अट्टालिकाओंके बीचमें एक नन्हेसे मकान-

चित्रके कोनेमें पीसाकी झुकी हुई मीनार [पे० ११४]
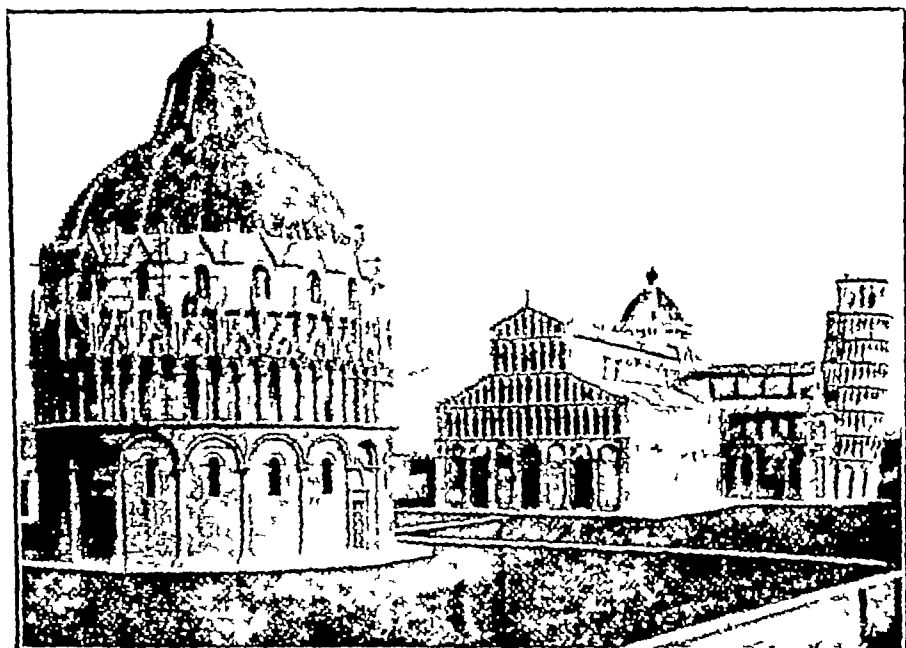
को देखकर कोई भी इस ओर आकर्षित हुए बिना नहीं रह सकता। यह छोटासा मकान उसी साहसी कोलम्बसका है। सरकारने इसे अबतक अक्षुण्ण बना रखा है और ऐतिहासिक इमारतके रूपमे इसकी रक्षा होती है। दरवाजेपर एक साइन-बोर्ड लगा है जिसपर इस मकान और कोलम्बसका संक्षिप्त परिचय है।

रीगी—

यह यहांकी सबसे ऊंची और सुन्दर पहाड़ी है। प्रकृति-देवीने इस नगरके ऊपर महान् कृपा करके इसे पुरस्कार स्वरूप प्रदान किया है और इस पुरस्कारका उपयोग भी यहांके लोगोंने बड़े अच्छे ढङ्गसे किया है। प्राकृतिक सुन्दरतामें कृत्रिम सुन्दरताकी पुट देकर 'सोनेमें सुगन्धवाली' कहावतको चरितार्थ कर दिखाया है। इस पहाड़ीपर चढ़नेके लिए दो मार्ग हैं। एक तो पैदल, दूसरा पहाड़ी रेलसे। पहाड़ी रेलको यहांकी भाषामें "पयूनी कुलार" कहते हैं। यह बिजलीकी शक्तिसे पहाड़ीपर एक जाती है और एक आती है। यहाँके मनोरम दृश्य देखने हीके लिए लोगोंकी भीड़ लगी रहती है और रेलवेको काफी लाभ है।

मनोविनोद और स्वास्थ्य-सुधारके अतिरिक्त दृश्यावलियोंको देखकर नेत्र भी तृप्त हो जाते हैं और गोस्वामीजीके "गिरा अनयन नयन बिनु बानी" के अनुसार उसका वर्णन नहीं कर सकते। इस पहाड़ीपरसे शहर पृथ्वीपर बना हुआ नकशा या माडलके रूपमें दिखायी पड़ता है। दूसरी ओर जहांतक दृष्टि जाती है अनन्त जलराशि ही दिखायी पड़ती है। पहाड़ी स्थान होनेके कारण यहाँ लहरोंकी वह चपलता और उग्रता नहीं रहती जो अन्य स्थानोंमें देखी जाती है। इससे स्वच्छ जलराशि नीले रंगकी बिछी हुई चद्दरका भ्रम कराती है।

वीलाडी नेग्रीओ—

यह शहरके मध्यमें स्थित एक सुन्दर पहाड़ी है। जब शहर बनने लगा तब यदि इस स्थानको योंही छोड़ दिया जाता तो यह दाल-भातमें मूसलचन्दकी तरह बीचमें खड़ा रहता और शहरकी शोभामे चन्द्रमामे कलङ्कका काम करता और समूल उखाड़कर फेक दिया जाता तो अपार धनराशि भी इसी पहाड़के साथ फेंकनी पड़ती। इन बातोंको विचारमे रखकर यहांकी सरकारने इसका बड़ा ही सदुपयोग किया है। इसकी जड़में सुरंगे बनाकर लम्बे-चौड़े मार्ग बना दिये हैं। जिससे पैदल और मोटरों द्वारा लोग आते-जाते हैं और ऊपर इतनी सुन्दर सजावट कर दी गयी है कि चाहे जितना देखिये दिल नहीं भरता

है। यह बीच शहरमें सजे हुए हिन्दू दूल्हेकी तरह गर्वमें फूला रहता है। इसके ऊपर एक झरना है जिसके जलप्रवाहकी ध्वनि सबको अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। दूरसे ही मालूम होता है कि एक बड़ी नदी पहाड़की चोटीसे नीचे गिर रही है। इस अविरल जल-प्रपातको आप नैसर्गिक जल-प्रपात समझते होंगे। पर आप इस धोखेमें न रहियेगा। यह प्राकृतिक झरना नहीं है बल्कि यहाँकी सरकारने जन साधारणके मन बहलावके लिए इस सुन्दर दृश्यका निर्माण किया है और पीनेके पानीको झरनेकी तरह बहाती है। कुछ और ऊपर जानेपर कतारबन्द वृक्षोंसे भूलभुलैया वनायी गयी है। इस भूलभुलैयामें यदि आप विना किसी परिचितके घुस जाइये तो घण्टों मगज मारा कीजिये। आपको आसानीसे रास्ता न मिलेगा, यदि इस मगज-मारीसे आपको रास्ता मिल जायगा तो आप एक विजयी राजा-की भांति खुश होते हुए बाहर निकलेंगे, और किसी दिन अपनी बहादुरी और बुद्धिमानी दिखलानेके लिए दूसरे मित्रको उसमें घुसा देंगे और मार्ग न पानेपर उसे खूब बनायेंगे तथा स्वयं उसके पथ-प्रदर्शक बनेंगे। इस प्रकार पहाड़की चोटीपर और भा कितने ही सुन्दर दृश्य बना दिये गये हैं। कहींपर अच्छी-अच्छी कुञ्जें बना दी गयी हैं जिसमें कुर्सियां और बेंचें पड़ी हुई हैं। लोग इनपर विश्राम करते हैं। कहींपर पुष्पित फूलोंकी क्यारियाँ

अपनी शोभापर इठला रही हैं। संध्याको बिजलीकी जगमगा-हटमें इसकी शोभा और भी बढ़ जाती है। मनुष्योंकी भीड़ भी इसी वक्त खूब होती है। स्वास्थ्यके लिए तो यह बहुत अच्छा स्थान है।

पीसा—

यह भी इटलीका एक छोटा-सा रमणीक नगर है। यह अपनी टेढ़ी मीनारके लिये संसारमें प्रख्यात है। यह मीनार सताश्चर्योंमेंसे एक है। इसीलिये योरोपके यात्री इसे देखनेके लिये आते हैं। इस मीनारमें विचित्रता यह है कि यह पृथ्वीकी ओर इतनी झुकी हुई है कि मालूम होता है अब गिरी, अब गिरी, किन्तु सदियोंसे यह इसी अवस्थामें संसारको चकित कर रही है।

यह एक सतमञ्जली मीनार है, इसके सम्बन्धमें यहां कितनी ही किम्वदन्तियां सुनी जाती हैं। कुछ लोगोंका तो कहना है कि इञ्जिनियरने संसारको चकित करने और अपनी कलाके प्रदर्शनके लिए ही इसे इतनी झुकी हुई बनायी है। कुछ लोगोंका कहना है

कि यह इससे भी ऊँची थी। भूकम्प या और किसी दैवी आक्रमण-से इसके कुछ तल्ले गिर गये। शेष झुकी हुई मीनार अभीतक ज्यों-की-त्यों खड़ी है। कुछ लोग बताते हैं कि जब मीनार बन रही थी तभी इसकी नीव एक ओरको धसक गयी किन्तु चालाक और साहसी इञ्जिनियरने हताश न होकर इस टेढ़ी नींवपर ही इसे टेढ़ा ही बना दिया। कुछ भी हो किंतु यह आश्चर्यपूर्ण अवश्य है। इसलिए संसारके सप्ताश्चर्योंमें इसका नाम आना ही चाहिये। यह बुढ़िया मीनार अपनी झुकी हुई कमरपर कितने तूफानों, अन्धड़ों और बरसातोंको झेल चुकी है और फिर भी ज्यों-की-त्यों खड़ी है। क्या यह आश्चर्यकी बात नहीं है? अगर यह गिरना चाहती तो इसे कौन रोक सकता था? किन्तु यह एक सुकन्याकी तरह अपने पिताकी कीर्ति गवाँना पसन्द नहीं करती।

मीनार भीतरसे इतनी चौड़ी है कि बिजलीकी लिफ्ट लगायी जा सकती थी किन्तु पैदल ही जानेका प्रबन्ध है। और यही अच्छा भी है। पैदल सीढ़ियोंको पार न करनेसे इसका महत्व ही क्या रहता। हर एक तल्लेपर आराम करनेके लिये छज्जे बनाये गये हैं। कहा नही जा सकता कि यह इञ्जिनियरकी करामातसे अपनी एक ही स्थितिपर ध्रुवकी तरह डटी है या वहाँकी पृथ्वीकी दृढ़ताके कारण। इस बातका पता लगाना भूतत्व विशारदोंका काम है, यात्रियोंका नही!

नेपल्स—

नेपल्स इटलीका एक प्रसिद्ध स्थान है और प्रसिद्ध है केवल संसार-प्रसिद्ध ज्वालामुखी-पर्वत वीसूवियसके लिये। किसी जमानेमें प्रकृति देवीकी क्रोधाग्नि यहाँ प्रचण्ड रूपसे भड़क उठी होगी और भगवान शङ्करके तीसरे नेत्रकी तरह चमककर असंख्य प्राणियोंको अपने विकराल गालमें रख लिया होगा। इसकी विशालता और प्रचण्डताका अनुमान भूगर्भसे निकले हुए लावा इत्यादिके ढेरसे ही लग जाता है। इस प्रकृति-प्रकोपने बेचारे पम्पई नगरका तो अस्तित्व ही मिटा दिया। पुरातत्त्व-विशारदोंने पृथ्वीको खोदकर इस विशाल पम्पई नगरको निकाला है। इस विशाल नगरको अग्निदेवने एक ही

रातमें जब लोग गहरी नींद्में सोते थे अपने पेटमें रख लिया।
इस प्रलयकाण्डकी कल्पनामात्रसे ही हृदय द्रवित हो जाता है
और विहारका भूकम्प उसके आगे पासंग बराबर भी नहीं जँचता।
मिट्टीके ढेरसे तो किसी प्रकार प्राण बच भी सकता है किन्तु
आगके ढेरसे कोई कैसे बच जाता और रिलीफ फण्डवाले वेचारे
क्या करते? संसारकी क्षणभंगुरताका पाठ जगत्को जैसा
बीसूवियसने पढ़ाया वैसा और किसीने न पढ़ाया होगा।

इस विदग्ध नगरकी भग्नावस्थाको देखनेसे एक विचित्र
बात यह दिखायी पड़ती है कि यहाँ जानवरोंके अस्थि-पंजर
नहीं दिखायी पड़ते। लोगोंका यह अनुमान है कि प्रकृति-प्रकोप-
को भावी सूचना इन्हें पहले ही से मिल जाती है और खुले हुए
जानवर तथा पक्षी दूर चले जाते हैं। इसके कितने ही उदाहरण
मिलते हैं। विहारके लोगोंने भी इस बातका अनुभव किया है
है कि भूकम्प आनेके पूर्व ही कबूतर, बिल्ली और चूहे आदि घरोंसे
दूर चले जाते हैं। इन मूक पशुओंको अपने विज्ञान और वैज्ञा-
निक यन्त्रोंका गर्व नहीं है। इसीसे प्रकृति इनकी स्वयं रक्षा
करती है।

बीसूवियसमें अब वह प्रचण्डता तो है नहीं, किन्तु यह एक-
दम सुप्तावस्थामे भी नहीं है। इसकी चोटी इंजिनके मुँहकी
तरह है और उससे धुआँ निरन्तर निकला करता है। रातको

तो इसका मुँह लाल अँगारेकी तरह दहकता रहता है और आगकी लपटें भी स्पष्ट दिखायी पड़ती हैं। जिसे देखकर कोई भी प्रकृतिकी विचित्रतापर किंकर्तव्यविमूढ़-सा रह जाता है और विज्ञान भी दाँतों तले उंगली दबाता है।

इस बड़े ज्वालामुखीको देखनेके लिये ही असंख्य यात्री यहाँ आया करते हैं और इसीके लिए नेपल्स भी प्रसिद्ध है। नेपल्सके छः मील दूरपर उक्त ज्वालामुखी स्थित है। पंपई भी लगभग १६ मील दूर है। जब १६ मीलपर यह ज्वालामुखी अपना प्रचण्ड प्रकोप दिखा सकता है तो नेपल्स क्या अपनेको सुरक्षित समझता है? और क्या यह असम्भव है कि अब बीसूवियस फिर न भड़के। और यदि भड़क ही उठा तो फिर नेपल्स बेचारेकी शामत आई हुई समझिये। इतना होनेपर भी इसका यही उत्तर दिया जा सकता है कि "जी जाय, जीविका न जाय।"

पंपई शहरके देखनेसे २००० वर्ष पूर्वकी सभ्यताका भी बहुत कुछ पता चलता है। यहां खोदाईसे निकली हुई गृह-उपयोगकी वस्तुएं बहुत सुडौल और सुन्दर हैं। उस समय नल द्वारा जल भी पहुंचाया जाता था। इस बातका भी पता लगता है। इससे लोगोंकी यह धारणा अपवादका रूप धारण कर लेती है कि प्राचीन कालमें आजकी-सी सभ्यता थी ही नहीं।

वेनिस—

वेनिस अपनी विचित्र सुन्दरताके लिए विश्व-विख्यात है और इसका दूसरा उदाहरण संसारमे मिलता ही नहीं। आपको यह जानकर महान् आश्चर्य होगा कि यहाँपर सड़क और गलियाँ नहीं हैं, परन्तु कुछ ऐसी तंग गलियाँ हैं जिनसे मनुष्य आ-जा सकते हैं अब प्रश्न यह उठता है कि क्या लोग अपने घरोंमें ही पड़े-पड़े सड़ा करते हैं? सो बात नहीं है। यहाँ बड़ी सड़कोंका काम बड़ी नहरों और छोटी सड़कोंका काम छोटी नहरोंसे लिया जाता है। लोग अपने घरसे निकलते ही मोटरबोट या नावोंपर चढ़कर अपने निर्दिष्ट स्थानपर आते-जाते हैं और दैनिक काम संचालन करते हैं। इसीलिए यहाँ मोटरें, मोटर

इटलीका प्रख्यात ज्वालामुखी मेसूमियस

[पे० १२६]
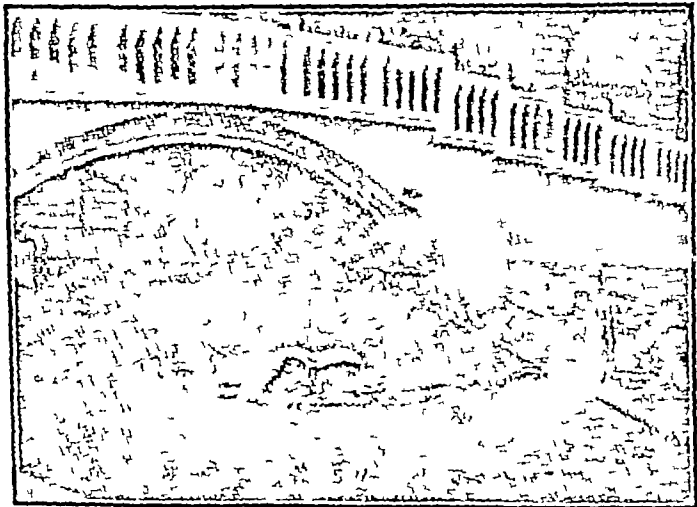
रीयालटो नामक वेनिसका प्रख्यात पुल

[पे० १२६]

क वेनिसमें कबूतरोंके बीच [पे० १२६]
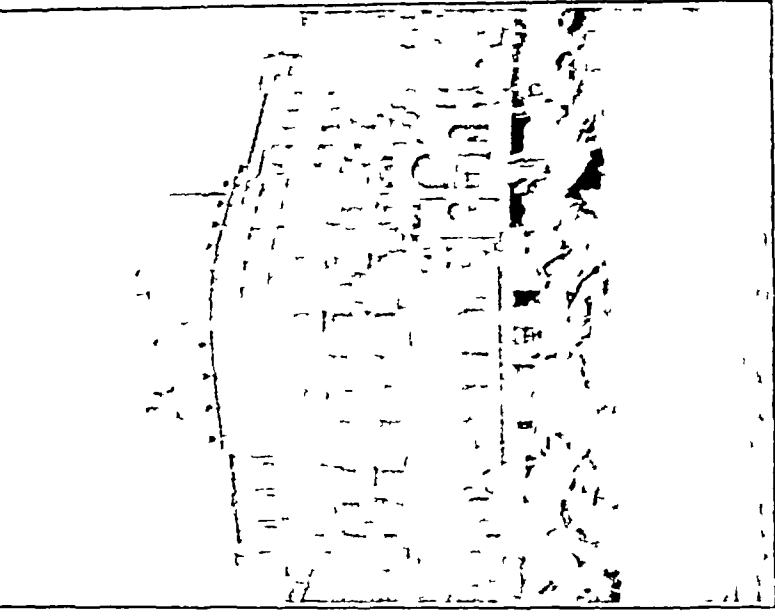
नेपल्सका सुन्दर होटल [पे० १२६]

साइकिलें और अन्य स्थलपरकी सवारियाँ नहीं हैं। थोड़ी दूरकी यात्रा लोग पैदल किया करते हैं। यहाँकी आबादी एक लाख बीस हजार है, जो काशीकी जनसंख्याके बराबर है। शहर भी काशीके बराबर और उससे मिलता-जुलता है। यहाँका जलवायु भी भारतसे मिलता-जुलता है। सब छोटी-बड़ी नहरों-की संख्या लगभग डेढ़ सौके है। पैदल यात्रियोंकी सुविधाके लिए कितने ही पुल भी बने हुए हैं जिनकी संख्या लगभग ४५० के है। सभी नहरोंका एक दूसरीसे सम्बन्ध है।

वेनिस योरोपके अन्य शहरोंकी तरह साफ-सुथरा नहीं है। यहाँकी गलियाँ टेढ़ी-मेढ़ी और इतनी छोटी-छोटी हैं कि जिन्हें देखकर बनारसी गलियोंकी याद आ जाती है। गंदगीमें भी यह बनारससे होड़ ले सकता है। यहाँ भिखमंगोंकी भी संख्या कम नहीं है। सदाव्रत बांटनेवाले दानियोंकी भी संख्या यहाँ बहुत है। कलकत्तेके दानियोंकी तरह यहाँके दानियोंके भी दरवाजोंपर भिखमंगोंकी भीड़ दिखलायी पड़ती थी। मुझे तो यहाँके दृश्य देखकर बराबर भारतकी याद आया करती थी। यहाँ-की अन्य वस्तुएं भी भारतीय वस्तुओंके सदृश्य ही हैं। यहाँके मकान भी भारतीय मकानोंकी तरह छोटे और खपरैलसे छाये हुए हैं। यहांपर कपड़े धोकर बरामदे या खिड़कियोंसे लटकाकर सुखानेकी भी प्रथा है। दूकानदार वस्तुओंके

मोल तोल करनेमें जयपुर, लखनऊ और बनारसी व्यापारियोंसे किसी कदर कम नहीं होते। सेण्टमार्क स्कायर (मैदान) में कबूतरोंका खेलना और जनताका उन्हें मका चुगाना कलकत्तेकी याद कराता था। वेनिसके व्यापारियोंका बहुत कुछ काम घुमकड़ों (यात्रियों) से निकलता है।

यहाँ काँच, चमडा और फीता इत्यादि बनानेके कारखाने हैं। कारखानेवाले यात्रियोंको अपने कारखानोंको बड़ी उत्सुकतासे दिखाते हैं। यात्री लोग कारखाना देखनेके पश्चात् अपनी आवश्यकतानुसार कुछ-न कुछ चीजे खरीद ही लेते हैं। यहाँकी आश्चर्यजनक वस्तुओंमें मुजेइक (मीनाकारीका) का काम होता है। यदि आप चाहें तो यहाँके कारीगर छोटे-छोटे काँचके टुकड़ोंको जोडकर आपका चित्र बना देंगे। जिसमें आप किसी प्रकारकी त्रुटि न निकाल सकेंगे।

कांचके कारखाने—

वेनिस अपनी कांचकी कारीगरीके लिये विख्यात है, भारतमें लाखों रुपयोंके झाड़-फानूस आदि वहांसे प्रतिवर्ष आते हैं। कांचके एक कारखानेमें जब एक कारीगरको झाड़ बनाते देखा तो उसकी उस फुर्तीपर आश्चर्य हुआ। थोड़ी देर पहले जो लाल-लाल अग्निका पिण्ड-सा था वही उस चतुर कारीगरकी कारीगरी द्वारा एक सुन्दर सजाने लायक वस्तु तैयार हो गई थी। अबतक काँचके सम्बन्धमें यही धारणा थी कि यह झुक नहीं सकता और इतना कड़ा होता है कि जहाँ जरा भी खटका लगा कि चटसे टूट गया। किन्तु यहाँके कारीगरोंने कांचको भी इतना लचीला बना दिया है कि उससे बच्चोंकी टोपियोंकी

कलगी बनायी जाती है, जो रेशमी तारोंकी तरह मुलायम और लचीली होती है। इसी प्रकारकी और भी कितनी ही लचीली चीजे दिखायी पडती हैं। इसीसे कांचके टूटनेकी समस्या भी हल हो जाती है।

इसीसे यहाँके कबूतर ढीठ होनेपर भी मनुष्यमात्रसे डरते रहते हैं।

इस मैदानमें लोग कबूतरोंको दाना चुगाया करते हैं और उनके साथ खेला करते हैं। कभी-कभी तो किसी यात्रीको देखकर लड़के उनपर दाने फेंक देते हैं। दाने पड़ते ही कबूतरोंका झुण्ड यात्रीपर चढ़ाई कर देता है और दाने चुगकर उड़ जाता है। यों भी यदि आप अपने हाथमें दाने ले लें तो कबूतर निस्संकोच आपके हाथपर बैठकर दाने चुग लेंगे। इस दृश्यसे यहाँके फोटोग्राफर भी खूब लाभ उठाते हैं। कितने ही लोग अपने हाथोंपर कबूतरोंको बैठाकर फोटो उतरवाते हैं। कितनोंके सिर और भुजाओंपर कबूतर मौज करते रहते हैं और लोग इस रूपमें फोटो उतरवानेमें कुछ भी संकोच नहीं करते।

द्वारा संसारमे वनती या बन सकती हैं वे यहां भी वनती हैं। शायद ही कोई देसी वस्तु होगी जिसके कारखाने यहाँ न हों।

यह फ्रांसकी राजधानी है, पेरिसकी आवादी लगभग तीस लाख वतायी जाती है। पेरिस अपनी सुन्दरता और स्वच्छताके लिये विश्व-विख्यात है। कुछ लोग तो इसे पृथ्वीका स्वर्ग कहते हैं। संसारभरके यात्री यहाँके ऐश्वर्य और सुन्दर आकर्षणको देखकर अपने नेत्रोंको सफल वनानेके लिये यहाँ आया करते हैं। भारतके बड़े-बड़े राजे महाराजे तो यहां अपना अड्डा ही जमाये रहते हैं, यहाँकी स्वच्छताका प्रधान कारण यह है कि नगरके आसपास धुवाँ-धकड़ मचानेवाले कल-कारखाने वहुत कम हैं, दूसरे यहाँके निवासी कोयला न जलाकर प्रायः गैस और विजलीका उपयोग किया करते हैं। अधिकाँश परिवार तो चूल्हे चक्कीका झंझट ही नही रखते. वे होटलोंमे अपनी पेट पूजा कर लिया करते हैं। इन्ही कारणोंसे इसकी स्वच्छता विगड़ने नहीं पाती।

यहाँकी एक विशेषता यह भी है कि यहां सिक्कोंकी दर वहुत सस्ती है जिससे नित्य उपयोगकी वस्तुएं भी वहुत सस्ती हैं। कलकत्तेमें आरामतलवीमे २००) मासिक खर्च करनेवाले व्यक्तिका खर्च यहां ७०),८०) रुपयोंमें मजेमें चल सकता है। यद्यपि लोग लण्डनको सर्व प्रधान नगर होनेका गौरव प्रदान करते हैं, चाहे वह जनसंख्या या व्यापारकी दृष्टिसे हो या यों कहिये

आपेरा (नाचघर)—

यह संसारका सर्वश्रेष्ट और विशाल नाचघर है, शह
वीचमें होनेके कारण इसकी रौनक और भी वढ़ जाती
इसमें दर्शकोंके वैठनेके लिये दस मॅजिला सुसज्जित हाल बन
गया है। इस विशाल थियेटर-हालका निर्माण सन् १८७६
में हुआ था। इसमे सप्ताहमें चार दिन खेल होते हैं। में भी
हालमें दर्शक-रूपमें उपस्थित हुआ था। परदोंकी सीन-सीन
बाजोंकी मधुरध्वनि और पात्रोंकी कलाका कहाँतक वर्णन कि
जाय "गिरा अनयन नयन विनु वानी" वाली वात याद आ पड़
है। ऐसी सुव्यवस्था और नाट्यकला तो मैंने अन्यत्र कही देखी
नहीं। संगीत और नाट्यकलामें यहाँकी अभिरुचि प्रख्यात

आमेरा

[पे० १३६]

एफ़ील टावर जिसकी ऊंचाई ९८४ फ़ीट है

[पे० १३९]

फॉली बर्जियर के बारघर-निर्माण

। पृ० २१६ ।
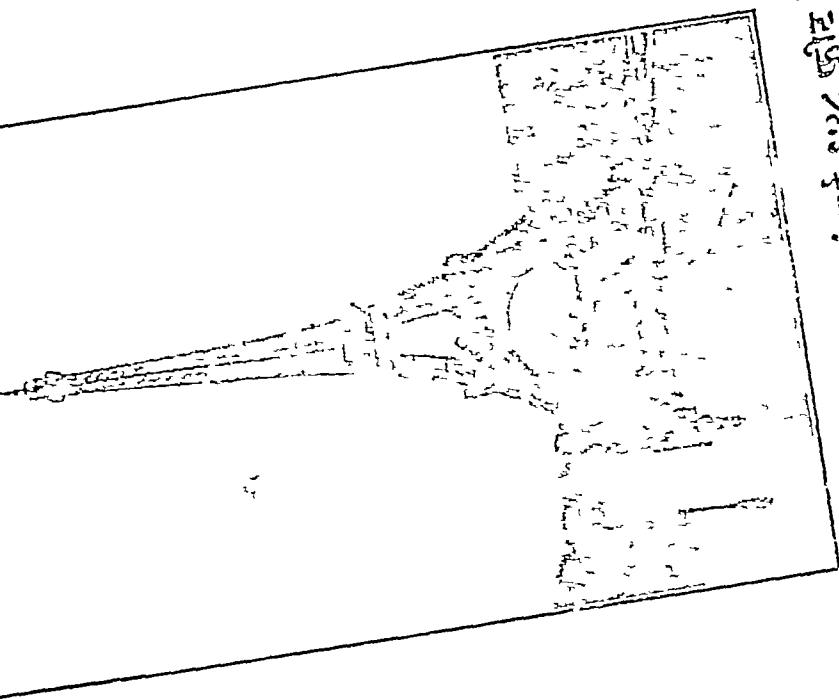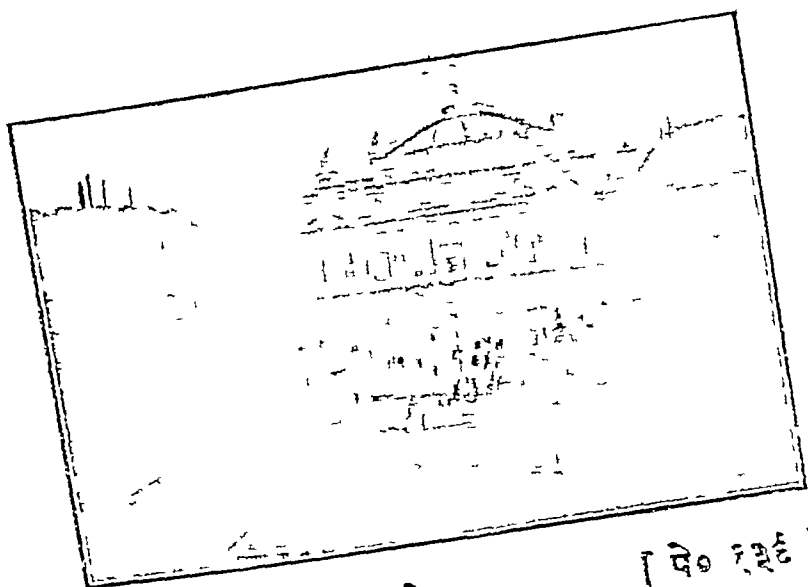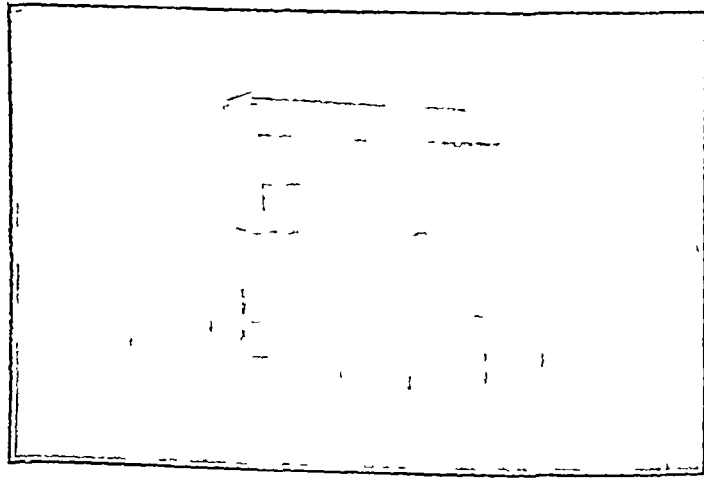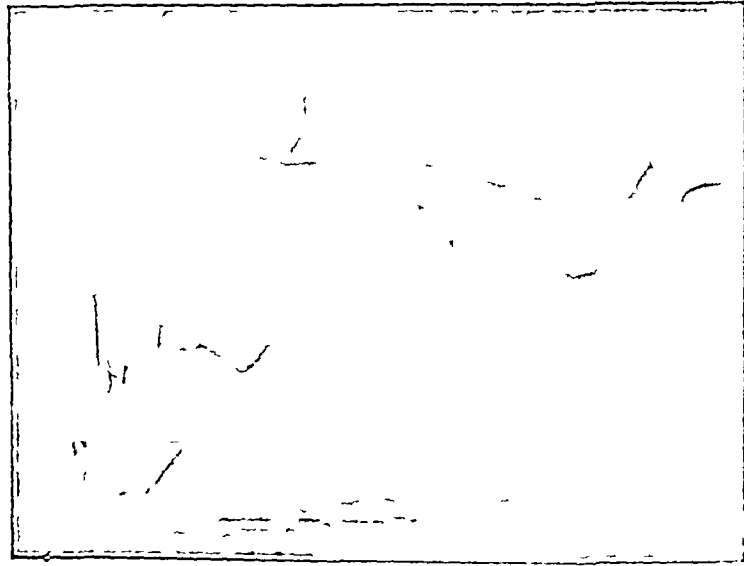
प्रशंसनीय है। भाषाके लिये तो हम कुछ कहनेका अधिकार ही नहीं रखते क्योंकि उसके लिये तो हम अपनेको बिलकुल कोरा समझते हैं। यों तो पेरिस थियेटरों और सिनेमाघरोंका केन्द्र है पर जो गौरव इस विशाल नाचघरको मिला है उसे और कोई नहीं पा सकता। इसमें एक बारके दर्शकोंकी संख्या आठ-दस हजारसे क्या कम होगी! इसीसे इसके व्यय और आमदनीका भी अनुमान किया जा सकता है। खेलके बीचमें आध घण्टेका अवकाश भी होता है। अवकाशके समय लोग एक दूसरे विभागमे पहुँचते हैं। यहाँ कितने ही सुसज्जित कमरे हैं जिसमे लोग खाते-पीते और मौज उड़ाते हैं। शराबका तो वहाँ साम्राज्य ही रहता है जिसे देखकर उर्दूके शायर भी दंग रह जायँ। यदि कहीं स्वर्गीय महाकवि महाशय उमर खैयाम पहुँच जायँ तो फिर पूछना ही क्या है? है भी तो यहाँकी शैम्पेन (अंगूरी शराब) संसारकी समस्त सुरारानियोंकी महारानी। इसके माइकेमे यह मौज न हो तो क्या ठर्रा ढालनेवाले भारतमें मौज उड़े?

एफील टावर—

यह संसारका सबसे ऊँचा स्तम्भ है, इसकी चौड़ाई इतनी काफी है कि ऊपरतक लिफ्ट (बिजलीकी सीढ़ी) जाती है। यह ९८४ फीट ऊँचा है। जब पेरिसमें १८८९ ई०में विश्व-विख्यात प्रदर्शनी हुई थी तब उसीके स्मृति-स्वरूप इसका निर्माण हुआ था। इसमे सात हजार टन लोहा लगा है, इसमें तीन मंजिले हैं। पहली मजिल १५० फीटपर, दूसरी ३७५ फीटपर और तीसरी ९०५ फीटपर है। इसका ढाँचा एकमात्र लोहेका है। लोहेके अतिरिक्त इसमें चूना, सीमेण्ट आदि कोई वस्तु नहीं लगी है। इसकी चोटीपर पहुँचते ही जल-पानके लिये एक सुन्दर दूकान मिलती है। ऊपरी छत—जिसपरसे दर्शक-

अपनी आश्चर्यमयी दृष्टिसे विधाता और उसके प्रतिनिधि विज्ञानियोंकी करतूतोंका निरीक्षण करते हैं—सुन्दर छज्जेदार बनी हुई है। नीचे देखनेपर इस मीनारके निर्माता मानव-समाजके ५-६ फीट लम्बे शरीर इतने छोटे मालूम होते हैं जैसे वे मनुष्याकारमें छोटे-छोटे जीव हों। पेरिस तो पृथ्वीपर बनाया गया माडल (खिलौना-सा) के रूपमें दिखायी पड़ता है। यदि वातावरण शान्त और निर्मल हो तो हमारी आँखे इस ऊँचे स्तम्भसे ८० मील दूरके दृश्योंके देखनेमे समर्थ होती है। इससे हमें इस सिद्धान्तपर आना ही पड़ता है कि मनुष्यकी दृष्टि-शक्ति कम नहीं है। जितना ही अधिक प्रकाश उसे मिलेगा वह उतना ही अधिक देख सकेगी।

सुना जाता है कि जब इसका उद्‌घाटन हुआ तो २०००००० आदमियोंने इसे देखा और अपनी ही बनाई हुई वस्तुसे उन्हे पूर्ण कुतूहल हुआ। बहुत दिनोंतक तो यह केवल स्मृति-स्तम्भके रूपमें सुशोभित था और संसारके यात्रियोंको आश्चर्यचकित किया करता था। परन्तु जब विज्ञानियोने संसारको रेडियो जैसी अमूल्य वस्तु प्रदान की तो यह स्तम्भ उसका केन्द्र बनाया गया। जिस प्रकार यह संसारका सबसे ऊँचा स्तम्भ है उसी प्रकार संसारका सबसे बड़ा रेडियो-केन्द्र भी है। इतना शक्तिशाली रेडियो-केन्द्र संसारमें अन्यत्र कहीं नही

है। और हो भी कैसे सकता है? इतना अधिक ऊँचा होनेके कारण संसारभरके समाचार-शब्दोंकी लहरें जितनी सुगमतासे यहाँ केन्द्रीभूत होती हैं उतनी अन्यत्र नहीं। पेरिसको इस स्तम्भसे कितना लाभ हुआ इसे रेडियोवाले अन्य नगर बता सकते हैं। दूसरा उपयोग इसका विज्ञापनके लिये किया जाता है। अगणित बिजलीकी बत्तियोंके दीर्घाकार अक्षरोंमें विज्ञापन हुआ करता है जो मीलोंसे स्पष्ट पढ़ा जा सकता है।

सांएलीजे—

जिस प्रकार पेरिसको संसारकी सर्वश्रेष्ठ और कितनी ही विभूतियोंके रखनेका गौरव प्राप्त है उसी प्रकार उसकी एक उत्तम विभूति उक्त नामकी सड़क भी है। 'सांएलीज' फ्रेञ्च भाषाका शब्द है जिसका अर्थ होता है स्वर्गकी सड़क। इस सड़ककी सुन्दरताको देखते हुए यह नाम उपयुक्त ही प्रतीत होता है। किसीको भी इसे स्वर्गकी सड़क कहनेमें संकोच न होगा। हमे तो इस सड़कके नामकरणवालेकी तारीफ करनी ही पड़ेगी। यह सवा मील लम्बी तीरकी तरह सीधी है। यह सड़क भी सुन्दरताकी दृष्टिसे संसारमें अपनी शानी नही रखती। इस चौड़ी और शीशेकी तरह चमकनेवाली सड़कके

दोनों पार्श्वमें जब पंक्ति बद्ध विद्युत-प्रकाशकी छटा छा जाती है तब वह देखते ही बनती है। इतनी सीधी सड़क अन्यत्र कहीं नहीं दिखायी पड़ती। इसके दोनों किनारोंपर खुले हुए सुन्दर मैदान भी हैं जिससे स्वच्छ वायुसे यात्रियोंको स्वर्गीय आनन्द प्राप्त होता है। संध्या २ से ६ बजेतक यहाँ जनसमूहका समुद्र उमड़ा रहता है। मोटरोंका भी तांता बड़े जोरोंका रहता है जो देखनेमें बड़ा ही सुहावना लगता है।

लूवरे पैलेस—

इस राज-महलकी नींव १२०४ ई० में दी गयी थी और १८५७ ई० में इसका जीर्णोद्धार किया गया और इसने अपना कलेवर बदल कर नयी आन-बानके साथ चित्र-संग्रहालयका रूप धारण किया। इसे भी संसारका सर्वश्रेष्ठ चित्र-संग्रहालय होनेका गौरव मिल चुका है। यदि इसका पूर्णरूपेण निरीक्षण किया जाय तो कम-से-कम ६ मास तो लग ही जायँगे। फ्रेंच भाषामे लूवरे शिकार खेलनेके मचानको कहते हैं। जन-श्रुति है कि १२०४ के पूर्व यहाँ घना जंगल था और इस स्थानपर शिकारका मचान बनाया गया था। उसी आधारपर इस विशाल महलका निर्माण हुआ हैं। यह ४८ एकड़में बना हुआ है। कलाका

जितना सुन्दर प्रदर्शन यहाँ किया गया है उतना संसारके किसी कोनेमें नहीं दिखायी पड़ता। प्राचीन कालसे अबतकके बने हुए कला-पूर्ण चित्रोंका सुव्यवस्थित रूपसे यहाँ संकलन किया गया है। आप जिस देशके चित्र देखना चाहेंगे वह यहाँ आपको मिनटोंमे दिखाया जा सकता है।

आर्क दी ट्रैम्फ—

फ्रेंच भाषामें आर्क मेहरावको और ट्रैम्फ वीरको कहते हैं। इसका शाब्दिक अर्थ होता है वीरोंकी मेहराब। इसे नेपोलियन प्रथमने १८०६ ई० में उन वीरोंकी स्मृतिमे बनवायी थी जिन्होंने देशपर प्राणोत्सर्ग किये थे। यह १६० फीट ऊंची और दर्शनीय मेहराब है, जिसमें उन स्वर्गीय वीरोंके नाम अंकित हैं। मेहराबके नीचे रात-दिन नियमित रूपसे एक बत्ती गैस द्वारा जला करती है जो उन वीरोंके सम्मानकी द्योतक है। दर्शकोंको यहाँपर अपना टोप उतार देना पड़ता है। इस स्मारकके चारों ओरसे बारह सड़कें बारह स्थानोंसे आकर मिलती हैं, जिससे इसकी शोभा और भी बढ़ जाती है। बारह सड़कोंका

जंकशन कितना सुन्दर होगा यह बतानेकी बात नहीं है। इन सड़कों और मेहराबके दृश्योंको देखकर ऐसा मालूम होता है जैसे मेहराब वीरोंके यशका प्रकाश-पुंज है और सड़कें चारों ओर कीर्ति-कौमुदीके रूपमें बिखर रही हैं।

फौली बर्जियर—

इसे हम विनोद-गृह कह सकते हैं। यह एक ऐसी नृत्य-शाला है जहाँपर संसारके किसी कोनेका भी दर्शक यहाँकी कलाओंको समझ सकता है। समझनेका कारण यह है कि यहाँके खेल ऐसे बनाये जाते हैं जिनमें भावभंगी और दृश्यावलियों-की प्रधानता होती है। यदि कुछ बातें भी होती हैं तो उनके न समझनेसे दर्शकोंको खेलमें किसी प्रकारकी असुविधाका अनुभव नहीं होता। संसारमे इसकी तुलनाका विनोद-गृह केवल न्यूयार्कमें ही है।

इस नाट्यशालामें और यहाँके विश्व-विख्यात आपेरामें कई बातोंका अन्तर है। जिससे इसका महत्व उसके आगे कम नहीं

हो सकता। आपेरा तो अपनी विशालता और सुन्दरताके लिए प्रसिद्ध है, और यह है प्रसिद्ध खेलोंकी सुन्दरता और मनो-रञ्जकताके लिये। लाखों रुपये खर्च करके एक खेल तैयार किया जाता है और उसमें अच्छे से-अच्छे पात्रों और पात्रियोंका चुनाव किया जाता है। उन्हें शिक्षा भी ऐसी दी जाती है कि कभी अणुमात्र भी त्रुटि होने ही नहीं पाती। ऐसे आश्चर्य-जनक दृश्य दिखाये जाते हैं कि वे जन्मभर नहीं भुलाये जा सकते।

इस कौतुक-गृहकी एक विशेषता यह भी है कि जहाँ अन्य स्थानोंपर फिल्म तो एक-दो सप्ताहमे और नाटकोंका प्रोग्राम तो प्रायः नित्य ही बदलना पड़ता है, वहाँ इस विनोद-गृहका एक खेल नियमित रूपसे सालभर चला करता है। पेरिस एक ऐसा आकर्षक नगर है कि यहाँ अन्य देशोंसे नित्य काफी संख्यामें दर्शक आया ही करते हैं, जिससे इसका हाल बराबर दर्शकोंसे भरा रहता है। सालभर नियमित रूपसे एक खेलका चलते रहना यह कम गौरवकी बात नहीं है। इसका कोई ऐसा खेल नहीं होता जो दर्शकोंकी कमीके कारण एक वर्षके भीतर बन्द कर देना पड़े।

यहाँके कई दृश्य अब भी हमारे हृदयपर ज्यों-के-त्यो अङ्कित हैं। उनमेंसे एक दो का संक्षिप्त परिचय पाठकोंको करा देना उचित ही होगा। एक दृश्यमें रङ्गमंच (स्टेज) पर बहती

हुई नदीका दृश्य और सुन्दर किनारा दिखाया गया था। किनारे-के दूसरे छोरपर एक छोटे रेस्टोरेण्टमें कितने ही लोग जलपान कर रहे हैं उनमेंसे दो आदमियोंने बातों और भाव भंगियों-से बड़ी गर्मी लगनेकी बेचैनी दिखलायी और नौकरसे कहा, यहाँ बड़ी गर्मी लग रही है, अस्तु; हमारी कुर्सी-टेबल पानीपर रख दो। नौकरने नदीके पानीपर लकड़ीका एक तख्ता रखकर उसपर कुर्सी टेबल रख दी। उसीपर बैठकर दोनों मित्र नास्ता करने लगे और नौकर ला-लाकर देने लगा। थोड़ी देरमें उन्होंने नौकरसे कहा "यहाँ भी गरमी लग रही है। हमे पानीके भीतर ले चलो। इतना कहना था कि सब सामान सहित दोनों पानीमे पैठ गये। जैसे हनुमानजीने महिरावणकी खोजमें पातालपुरीमें प्रवेश किया था। वहाँसे नौकरको आवाज देकर खानेकी चीजें मंगाते और नौकर पानीमें पैठ-पैठकर चीजें दे आते-इस प्रकार उनकी यह कौतुहलमयी क्रीड़ा ७-८ मिनट तक होती रही। बादको वे लोग भीगे हुए ऊपर आ गये। कौन ऐसा होगा जो इस दृश्यको देखकर आश्चर्यचकित न हो जाय। कोई भी उस दृश्यको देखकर यह अनुमान नहीं कर सकता था कि यह सब रंग-मंचपर हो रहा है, बल्कि सब प्राकृतिक और असली रूपमें दिखायी पड़ते थे। इसी प्रकार मैदानों और खप-रैलोंपर बरफ पड़नेका दृश्य भी अनुपम और अकथनीय था।

स्टेजके भीतर, स्पष्ट रूपसे वर्फका गिरना यह विज्ञान और कलाकी करामात है।

खेलकी समाप्तिपर सिनेमा दिखाया जाता है, सिनेमा क्या है; यह भी एक कौतुक और पेरिसकी अनोखी सूझ है। इसमें यह दिखाया जाता है कि यात्रा-प्रेमियोंके मस्तिष्कमें पेरिसकी सैरका नशा किस प्रकार छाया रहता है और यहाँकी दृश्यावलियाँ किस प्रकार उनके दिमागमें चक्कर लगाया करती हैं। इस दृश्यको देखकर कोई भी यात्री नहीं भूल सकता। इस चित्रपटमें पेरिसके उत्तमोत्तम दृश्य दिखाये जाते हैं।

वहाँकी नर्तकियोंकी नृत्य-कलाका भी दूसरा उदाहरण कहीं नही मिलता। सुन्दर-सुन्दर नर्तकियोंका नाचना साधारण नहीं होता। मालूम होता है पुतलियाँ मशीन द्वारा नृत्य कर रही हैं। पच्चीसों स्त्रियोंका एक साथ नाचना और उनके क्रममें तिल-भरकी त्रुटि न होना यह साधारण बात नहीं। जब आँखे घूमेंगी तो सबकी एक साथ, पैर उठेगा तो बिजलीकी तरह एक साथ। इनकी इस कलाको देखते हुये सरकसकी पात्रियाँ किसी गिनतीमें नहीं जचती।

भारतके विनोद-गृहोंमे तो अवकाश (इन्टरवल) के समय खेल बन्द हो जाता है परन्तु पेरिसकी नाट्यशालाओंमें अवकाशका समय भी व्यर्थ नहीं जाने दिया जाता। आप लोगोंने

देखा होगा कि अवकाशके समय कितने लोग [illegible] जलपानादिके लिए बाहर निकल जाया करते हैं और कितने खेल आरम्भ होनेकी प्रतीक्षामें बैठे ही रह जाते हैं, किन्तु प्रतीक्षा होती है बुरी बला। ईश्वर किसीको किसीकी प्रतीक्षा करनेका दुर्भाग्य न दे तो मानव-मात्रका बड़ा उपकार हो। लेकिन मानव-समाजकी रुचि वैभिन्यतापर भी आश्चर्य होता है। कितने लोगोंको प्रतीक्षा ही मे आनन्द मिलता है। खैर, जो हो, यहां हमे इसकी विवेचना नहीं करनी है। कहनेका मतलब यह कि उन हजरते दागकी तरह पर बैठकबाज दर्शकोंके मनोरञ्जनार्थ पेटका नाच दिखाया जाता है। मनुष्यके सौन्दर्य वीक्षण यन्त्र (नेत्र) ने मिश्रके सौन्दर्यको प्रमाणपत्र दिया है। इसी निश्चयपर रंगमंचपर मिश्रकी कई सुन्दरियाँ आती हैं। उनमेंसे एकके हाथमे मॅजीरा और एकके हाथमें डफ होता है। जिस प्रकार मस्ल्लके खेल दिखानेवाले अपने अङ्ग-प्रत्यंगोंका सुन्दर आलोड़न करते हैं ठीक उसी प्रकार उनके पेटका आलोड़न होता है; किन्तु यह आलोड़न और भी कलापूर्ण होता है। पेटके घुमावके तालपर ही बाजा बजता है। इस पेटके नृत्यको देखकर भले ही किसीका मनोरञ्जन हुआ हो परन्तु अपने राम तो इस दृश्यको देखकर अपने हृदयके उद्वेगको रोक न सके। ऐसी सुन्दर कोमल अल्पवयस्क सुकुमारियाँ अर्द्धनग्नावस्थामें इस प्रकार पेटका नाच करती हैं!! हायरे पेट-

पापी !!! जो न करा दे सो थोड़ा है। हम मानते हैं कि इसमें भी कला है पर भला यह कला विना पेटकी मारके थोड़े ही हो सकती है ! धन्य है टका देव ! तुम जो चाहो कर सकते हो। जब पेरिस जैसे सम्पन्न नगरमें पेटकी बलामें पड़नेसे इन्द्रकी परियोंकी सौतें ऐसा नृत्य दिखा सकती हैं तो हमारे गरीव भारतकी गरीव नारियोंके नाचगानपर क्या कहा जाय ? अच्छा, इस अध्यायको हम एक मजेदार बात बताकर समाप्त करना चाहते हैं।

किसी दृश्यकी उत्तमतापर भारतकी तरह यहाँ भी तालियाँ बजायी जाती हैं परन्तु वहाँकी करतल-ध्वनिमे यहाँसे बहुत अन्तर है। विश्व-विख्यात कलाकार और नृत्य-विद्या-विशारद महाशय उदयशङ्कर उस समय मेरे साथ ही थे। जब मैंने उनसे कहा "यहाँ हथेलियां खूब बजायी जाती हैं तो उन्होंने उसका रहस्य बतलाया।" उनका कहना था कि यहाँ हथेलिया बजानेवाले किरायेके टट्टू होते हैं जिनका काम टिकट चेक करना और जनताको खेलकी ओर आकर्षित करनेके लिये एवं पात्रोंके उत्साहवर्द्धनके विचारसे हथेलियोंका बजाना है। इनके हथेली बजाते ही दर्शक भी हथेली बजा दिया करते हैं और ऐसा करना स्वाभाविक ही है। इस प्रकार वे खेलके महत्वको बढ़ानेका प्रयत्न करते हैं। स्टेज-प्रबन्धकोंके अन्य खर्चोंके साथ इसका भी

बजट रहता है। उदयशंकरजीने मुझसे यह भी कहा कि यदि मेरा भी किसी स्टेजपर नृत्य हो तो मुझे भी इन किरायेके टट्टुओंकी मदद लेनी ही पड़ेगी, बिना इनकी सहायताके यहाँ खेल जम ही नहीं सकता। चालाकी संसारके किस कोनेमे नहीं है!

बसोई महल—

यह लण्डनके वकिंघम महलकी तरह फ्रांसका राज-भवन है। यदि संसार न भी कहे तो भी मैं निस्संकोच रूपसे कह सकता हूँ कि यह संसारका सर्वश्रेष्ठ और सुन्दर महल है। ऐसा सुन्दर राज-महल तो मैंने कहीं देखा ही नही। यह पेरिससे नौ मील दूर है। यह १६८२ ई० मे वनाया गया था। इस महल-में कई मील लम्बा-चौड़ा सुन्दर सजा हुआ वगीचा है जिसकी सुन्दरता देखते ही वनती है। महलके सामने चौथाई मीलका एक भव्य उद्यान है। यहाँकी-सी सुन्दरता और स्वच्छता अन्यत्र देखने ही मे नही आती। इस महलमे एक विशाल चित्र-संग्रहालय भी है। जिसमे ऐतिहासिक चित्रोका वड़ा ही

सुन्दर प्रदर्शन है। नेपोलियन आदिकी रण-यात्राओं और युद्धोंका इन चित्रोंमें अच्छा प्रदर्शन है।

ऐतिहासिक दृष्टिसे भी यह महल कम महत्वका नहीं है। १७८३ ई० में इंगलैण्डने जो यूनाइटेड स्टेटको स्वतंत्रता दी थी उसकी संधि यहीं हुई थी। यहीं दोनों तरफसे संधि-पत्र लिखा गया था। नेपोलियन तृतीयने यहींपर महारानी विक्टोरिया-का स्वागत किया था। गत महासमरकी ऐतिहासिक संधि भी २८ जून सन् १९१९ ई० को यहींपर हुई थी। जिस मेजपर सन्धि-पत्र लिखा गया था वह यहींपर रखी हुई है। उसे लोग बड़ी उत्सुकतासे देखते थे और उसके भाग्यकी सराहना करते थे कि अगणित नरमुण्डोंकी रक्षाका श्रेय इसीको मिला है।

महलके दूसरे भागमें कितने ही सुन्दर कमरे हैं, जिनमे राजा लोग रहा करते थे। लोगोके देखनेके लिये और ऐति-हासिक महत्वके लिए वे कमरे सुन्दरताके साथ सुरक्षित हैं। इनकी सजावटको देखकर आँखें चकाचौंध हो जाती हैं। जिस कमरेमें जिस राजाका निवास था उसका भी परिचय यहाँ दिया गया है। एक कमरा अपनी सुन्दरता और विचित्रताके लिए विशेष प्रसिद्ध है। इसे काँचका कमरा कहते हैं। चारों तरफ शीशोंकी चमकमें ऐसे सुन्दर दृश्य दिखायी पड़ते हैं कि उन्हें देखनेसे आँखें थकती ही नही।

उद्यानोंमें कितने ही सुन्दर फौव्वारे भी हैं जो कभी-कभी खुलते हैं और अपनी अनुपम छटासे दर्शकोंका मनमुग्ध करते हैं। इनमेंसे एक फौव्वारा सबका अफसर मालूम होता है। उसके पानीकी धार ७४ फीट ऊंची उठती है। इतना शक्तिशाली फौव्वारा शायद ही कहीं हो। जिसने पेरिस आकर इस राजमहलको न देखा उसका सब कुछ देखना कुछ न देखनेके बराबर है।

रण-क्षेत्र—

जहाँ-जहाँ हम जाते थे समर-भूमि देखनेकी उत्कण्ठा हृदयमे बनी ही रहती थी। इतना होनेपर भी अभीतक हम अपनी इस अभिलाषाको पूरी न कर पाये थे; क्योंकि सब देशोंके युद्ध-क्षेत्र दूर थे। पेरिस आनेपर हमें ज्ञात हुआ कि यहाँका रण-क्षेत्र लगभग १५-२० मीलकी दूरीपर है। इसलिए हम अपनी उत्सुकताको रोक न सके और रणक्षेत्र देखनेके लिये चल पड़े। हमारी कल्पना थी कि यह स्थान महा भयानक होगा; किन्तु यहाँ पहुँचनेपर मेरी धारणा निर्मूल निकली। हमारी कल्पना सच्ची होती भी कैसे जब कि हम युद्धके दस वर्ष बाद यहाँ पहुँचे थे। यहाँ पहुँचनेपर ऐसा मालूम हुआ जैसे हम किसी

ऊबड़-खाबड़ बेमरम्मत मैदानमें पहुँच गये हों। यदि यहाँके कुछ चिह्न हटा दिये जाते तो हम अनुमान भी न कर सकते कि यहाँ कभी नर-संहारका तुमुल-नाद हुआ था और रण-चण्डीने अपना विकराल रौद्ररूप दिखाया था।

कहीं-कहींपर तोपें पड़ी हुई हैं, कहींपर बन्दूकें विकृतरूपमें देखनेमें आती हैं। इसी प्रकार लोहेके तार और अन्य कितनी वस्तुएं पाई जाती हैं। हमारा पथ-प्रदर्शक बड़ा सभ्य और देश-प्रेमी सज्जन था। उसने सब दृश्योंको दिखाते हुए युद्धका संक्षिप्त इतिहास भी बताया। देश-रक्षाके लिए वीरगतिको प्राप्त हुए वीरोंकी समाधियोंको देखकर हृदयमें अनेक प्रकारकी भावनाएं उठती थीं और उनकी वीरतापर एक बार नतमस्तक होना ही पड़ता था। एक एक सेनाके सब वीर एक ही स्थानपर दफनाये गये हैं और उनके लिए स्मारक-स्वरूप एक क्रास बना दिया गया है। इस प्रकारके हजारों क्रास बने हुये हैं। एक क्राससे हजारों वीरोंकी वीरगतिका परिचय मिलता है।

गाइड (प्रदर्शक) ने हमें बतलाया कि जब अकस्मात् हमारे देशपर जर्मन सिपाहियोंने धावा कर दिया तब उस समय अपने सैनिकोंको शीघ्रतासे युद्ध-स्थलमें पहुँचानेके लिये कोई साधन न दिखलायी पड़ रहा था। तब यहाँकी टेक्सियों (भाड़ेकी मोटर) से सहायता ली गयी। यहाँकी ६०० टेक्सियोंने देश-रक्षामें

आदर्शरूपसे भाग लिया और जितना अधिक वे गाड़ीको चला सकते थे चलाकर सैनिकोंको युद्ध-स्थलपर पहुँचाया। यदि उन लोगोंने देशकी इस प्रकारकी सेवा न की होती तो पेरिसका नक्शा ही बदल जाता और आज पेरिसको आप इस रूपमें न देख सकते। गाइडकी वर्णन-शैली नम्र और उत्साह-पूर्ण थी। वीरोंके स्मारकोंपर सभी दर्शक अपनी मूक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते थे और सम्मान-प्रदर्शनार्थ टोपी उतार लेते थे।

माण्टेकारलो और नीस—

यह स्थान पेरिससे लगभग ६०० मील दूर समुद्रके किनारे-पर बसा है। यहाँ जूआ खेलनेकी एक लिमिटेड कम्पनी है। संसारमें इतना बड़ा जूआ-घर दूसरा नहीं है। जब फ्रांसमें और कितनी ही वस्तुएं संसारके सामने एक ही हैं तो यह जूआ-घर ही संसारके सामने क्यों छोटा रहे? इसने भी इस प्रतियोगिता-में बाजी मार ली। यहाँ उन्हीं लोगोंके निवासस्थानसे एक अच्छी बस्ती बस गयी है जो इस द्यूत-क्रीड़ा-स्थलसे सम्पर्क रखते हैं।

कौरव-पाण्डवोंके द्यूत-गृहने भारतवर्षके इतिहासकी काया पलट दी थी। भारतकी अवनतिका प्रधानतम् कारण यही
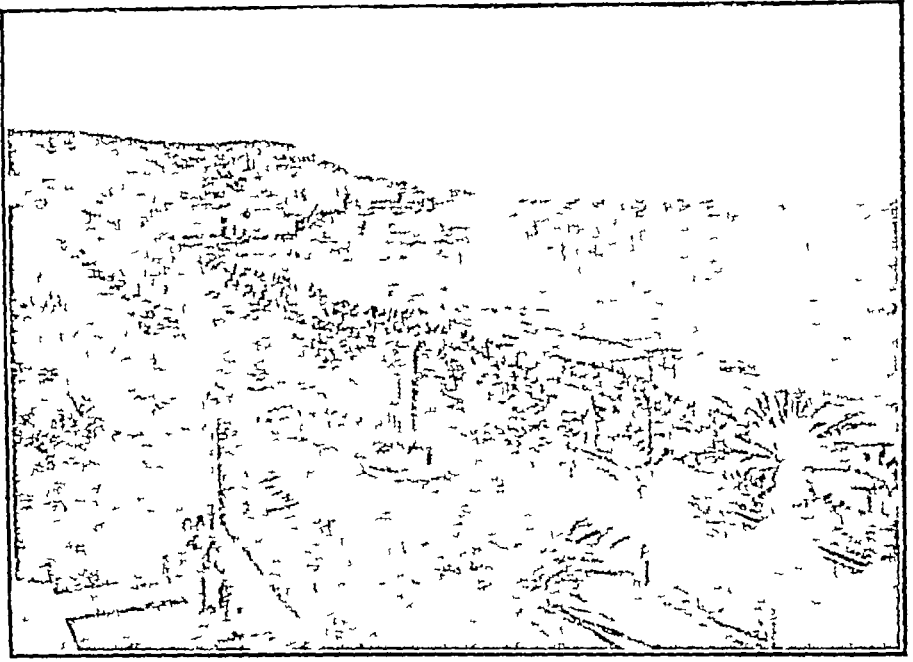
नीसका समुद्री किनारा [पे० १६०
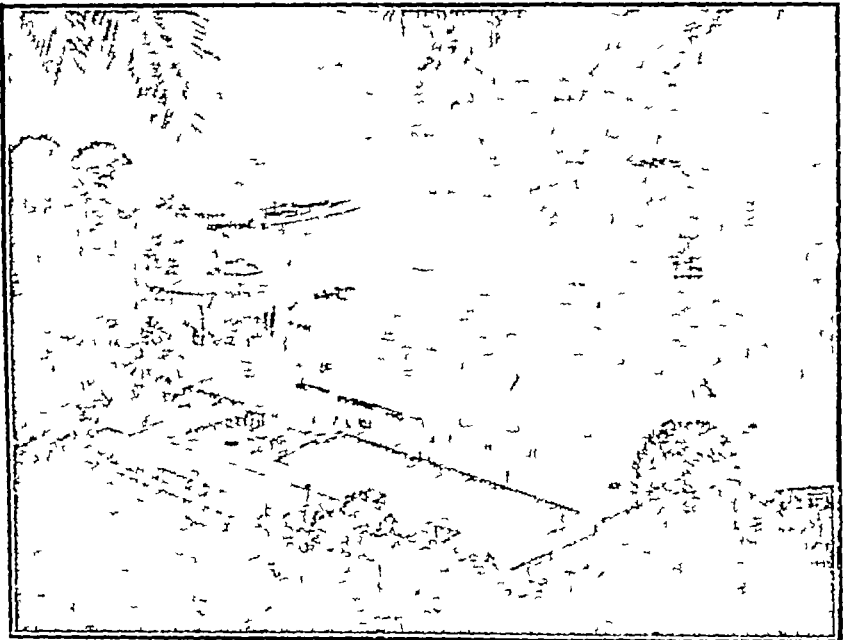
संसारका प्रख्यात जूवाखाना माण्टेकारलो
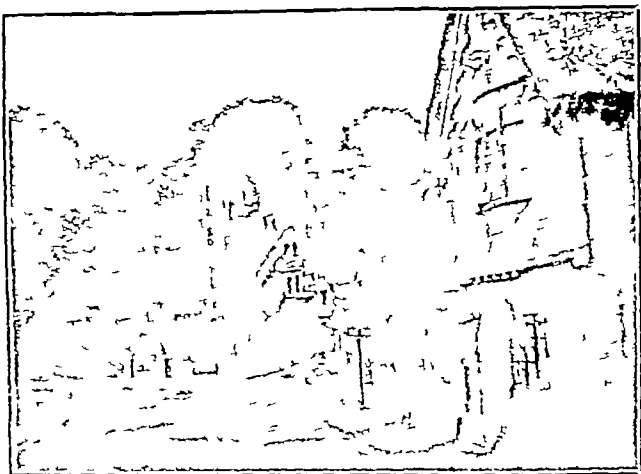
फ्रांसका ग्रामीण दृश्य [पे० १६०]

समुद्री किनारोंपर सोये हुए स्नानार्थी

[पे० १६०]

ऐतिहासिक द्यूत-गृह ही था। परंतु फ्रांस तो अभी इसके विपरीत उन्नति ही करता जा रहा है; देखें, आखिरको ऊंट किस करवट बैठता है। लेकिन ये लोग तो स्वयं जूवा खेलते नहीं, वरन् जूवे द्वारा दूसरोंकी अण्टी साफ करते हैं। तब क्यों खतरेमें पड़ें? जब चारों तरफसे आमद-ही-आमद है तब कभी थोड़ासा नुकसान हो जानेसे क्या बनता बिगड़ता है। गोजरकी एक टाँग टूट जानेसे वह लंगड़ा थोड़े ही हो जाता है! लोग तो समझते हैं कि हमने खूब कमा लिया, किन्तु यह जीतनेवालोंकी मृगतृष्णामात्र होती है, वास्तवमे तो बात वही होती है "जो धन जैसे आवई सो धन तैसेहिं जाय" जीतकी खुशीमें लोग फूलकर कुप्पा हो जाते हैं किन्तु उनका नशा तब उतर जाता है जब कुछ देरमें अपने पाकेटोंको खाली पाते है। यहाँ आमोद-प्रमोद और विलासिताके इतने साधन, आकर्षण और प्रलोभन हैं कि इन जालोंमें मक्खियाँ फॅस ही जाया करती हैं और फिर इन महीन और कोमल तारोंको तोड़कर निकलना एक प्रकारसे असम्भव-सा हो जाता है। कहनेका मतलब यह है कि ये कसीनों (जूवा-घर) इतने बड़े-बड़े होते हैं कि इनके भीतर ही नाटक, सिनेमा, सरकश, नाचघर मदिरा और विश्रान्ति-गृहोंमें जीतका पैसा जाता ही है और वह पैसा इन्हीं रास्तोंसे घूमता हुआ उसी स्थानपर रह जाता

है। आकर्षणके जितने साधन हैं वे सभी इसी लिमिटेड कम्पनी-के ही हैं, इससे सब पैसा अन्दरका अन्दर ही रह जाता है। बहुत कम बाहर जाता है, आनेके तो अनेक साधन हैं किन्तु जानेके रास्ते कम ही हैं।

इसी द्यूत-भूमिसे ४ माइल दूर समुद्र-तटपर नीस नामक रमणीक स्थान है। यहाँ किसी प्रकारका व्यापार नहीं होता। इस सुरम्य स्थानकी रमणीयतापर आकर्षित होकर लोग यहाँ अपना निवास-स्थान बनाकर रहते हैं। कुछ दूरपर ग्रामोंमें सुगन्धित द्रव्योंके प्रस्तुत करनेके कारखाने भी हैं। फ्रांसकी सुप्र-सिद्ध खाद्य-सामग्री मकरोनी भी यहींपर बनती है। यहाँ भी कितने ही छोटे-मोटे द्यूत-गृह हैं,जहाँ जनताके आमोद-प्रमोदके कितनेही साधनोंका आयोजन रहता है। एक तो प्रकृति देवीने स्वयं ही इसे अपने हाथोंसे संवारकर सुन्दर बना दिया है। दूसरे यहाँके जलकल विभागने भी इसे काफी सौन्दर्य प्रदान किया है। बस्तीमें जल पहुँचानेके लिये जिन पाइपोंका प्रबन्ध किया गया है वे सर्वत्र बन्द नहीं आते, कहीं-कहींपर उन्हें नीचे बड़ा कुण्ड बनाकर गिराते हैं और उस कुण्डसे फिर पानी नल द्वारा नीचे जाता है। इस प्रकार कई स्थानोंपर झरनोंका मुफ्ती दृश्य भी बन जाता है—एक तो यहाँके किनारे स्वयं इतने सुन्दर हैं कि "जहाँ जाय मन रहै लुभाई" की बात चरितार्थ होती है, दूसरे

इसके किनारेकी सड़कें और उनपर लगी हुई बिजलीकी बत्तियोंकी शोभा भी वर्णनातीत होती है। दूरसे देखनेपर ऐसा ज्ञात होता है जैसे किसी मालाकारने जगमगाती हुई माला रचकर प्रकृतिदेवीको प्रदान कर अपनेको गौरवान्वित किया है। संसारके जितने लक्ष्मीपति फ्रांस आते हैं वे माण्टे कारलो और नीस अवश्य जाते हैं और वहाँ रहकर लक्ष्मी देवी-की प्रभुताका अनुभव करते हैं।

अस्तु, यदि हम इन दो सुरम्य नगरोंको आमोद्-प्रमोद्का नगर कहें तो कुछ अत्युक्ति न होगी।

उपर्युक्त सारी सुविधाओंके साथ-साथ यहाँका Beach (समुद्री किनारा) भी बड़ा अच्छा है। गर्मीके मौसममें फ्रांस तथा उत्तरीय योरोपके लोग यहाँ जलवायु परिवर्तनके लिये आते हैं। उस समय समुद्री तटका दृश्य और भी मनोहर हो जाता है। हजारों स्त्री-पुरुष कस्टम (नहानेके समय पहनने की पोशाक) पहने अपनी छोटी छोटी टोलियां बनाकर आनन्द करते हैं। कोई किसीको गेंद मारता है तो कोई किसीपर पानी फेंकता है। कोई बालूके ही लड्डू बनाकर किसी नवयुवतीकी कोमल पीठ-पर मार रहा है। कितने ही जोड़े अर्द्ध नग्नावस्थामें घण्टों बालू-पर पड़े सूर्य-स्नान करते हैं। कहनेका मतलब यह है कि उस समयका नीस जाड़ेके नीसके स्थानपर दूसरा ही होता है।

सहसा नये व्यक्तिको ऐसा जान पड़ता है मानो इन्द्रका अखाड़ा ही हो। इन सारी सुविधाओंके कारण यहाँके फोटोग्राफरोंने अपने व्यापारकी उन्नतिके लिये एक नया तरीका निकाल रखा है। वे आमोद-प्रमोदके स्थानोंपर अपने अनुभवी कैमरा मैनको Movie camra (चलित चित्र लेनेवाला कैमरा) देकर भेज देते हैं। वहाँ वह आमोद-प्रमोदमें व्यस्त उन टोलियोके फोटो लेता है। जिनके चित्र अच्छे उतरते जान पड़ते हैं उन्हें वह अपनी कम्पनीका कार्ड दे देता है और कह देता है कि मैंने आप लोगोंका चित्र लिया है। आप कम्पनीमें आकर देख लें। यदि वह आपके पसन्द आ जाय तो हम आपकी आज्ञानुसार उसकी कापियां छाप देंगे। आप चाहेंगे तो उसको बड़ा भी बना देंगे। इसके लिये आपको बहुत कम कीमत देनी होगी। इससे फोटोग्राफरको तो आर्थिक लाभ होता ही है, साथ ही लोगोको भी अपनी स्वाभाविक अवस्थाके चित्र मिल जाते हैं। अस्तु, यदि हम इन दो सुरम्य नगरोको आमोद-प्रमोदके नगर कहें तो कोई अत्युक्ति न होगी।

बेलजियम

१—ब्रूसेल्स

(क) हीरोंके कारखाने

ब्रूसेलस—

ब्रूसेलस वेलजियमकी राजधानी है। योरोपके स्वतन्त्र राष्ट्रोंमे वेलजियमका वही स्थान है जो मनुष्य-समाजमे बौनों-का होता है। कहनेका तात्पर्य यह कि योरोप भरमें यह सबसे छोटा स्वतन्त्र राष्ट्र है। गत महासमरमें जिस प्रकार बच्चे-बच्चे जर्मनीसे परिचित हो गये उसी प्रकार लोग वेलजियमसे भी परिचित हो गये थे। क्योंकि महासमरके संघर्षमे यह वेचारा भी आ गया था। इस संघर्षके धक्केसे इसे काफी क्षतिग्रस्त होना पड़ा था। यहाँका अजेय दुर्ग अपनी मजबूतीके लिये संसार-प्रसिद्ध है लेकिन जर्मनीकी विकराल तोपोंसे उसके भी दांत खट्टे हो गये थे।

प्राकृतिक सुन्दरताकी दृष्टिसे यह देश दूसरे देशोंसे किसी हालतमें पिछड़ा हुआ नहीं है। यहांकी अद्भुत दृश्यावलियोंको देखकर ऐसा अनुमान होता था मानो प्रकृति देवीने अपनी क्रीड़ा-स्थलीके लिये इसी स्थानको चुना है। इस ऐतिहासिक देशकी राजधानी ब्रुसेल्स है। जिसकी जनसंख्या सात लाख है। जन-संख्याकी दृष्टिसे तो यह कलकत्तेसे बहुत छोटा है किन्तु वैज्ञा-निक दृष्टिसे तो जैसे अन्य योरोपीय नगर हैं वैसे ही यह भी है। इमारतोंकी स्वच्छता और बनावट देखने योग्य होती है। कल-कारखानों और उद्योग-धन्धोंमें भी यह काफी प्रख्यात है। चारों तरफ कल-कारखानोंकी भरमार है। हमें इसके अतिरिक्त यहाँ और कोई आकर्षक चीज नहीं दिखायी पड़ी जिसकी ओर हम पाठकोंका ध्यान आकर्षित करें। हां, ऊपरकी पंक्तियोंमें जो प्राकृतिक सुन्दरता दिखायी गयी है उसी सम्बन्धमें कुछ कहने-का लोभ संवरण नहीं कर सके। यहाँ छोटी-छोटी और अने-क पहाड़ियोंकी भरमार है। इन्हीं पहाड़ियोंकी छटाने इस देशको सुन्दरताका जामा पहना दिया है।

ब्रुसेल्सके पासही एक बहुत बड़ी और सुन्दर पहाड़ी है, जिसका नाम है "ग्रोटडेहान"। यह एक सुविशाल कन्दरा है, कंद-राएँ तो संसारमें बहुत स्थानोंपर हैं। भारतमें भी कितनी ही कन्दराएँ हैं जिनमें प्राचीन कालमें तो ऋषि-मुनियोंके रहनेकी

चर्चा मिलती हैं "गिरि कन्दरा तकहिं सुर जूहा" अपने शत्रुओं-से डरकर भगोड़े लोग भी अपने लिये कन्दराओंको सुरक्षित स्थान समझते थे किन्तु अब तो उन कन्दराओंमें भयानक तम-राशि या हिंसक जीव ही पाये जाते हैं। किन्तु योरोपवाले तो प्रकृति-प्रदत्त इन अमूल्य उपहारोंकी इस प्रकार अवहेलना नहीं कर सकते। यहाँवालोंने इस दीर्घकाय कन्दरामें विद्युत-प्रकाश-का काफी प्रबन्ध कर दिया है। यह इतनी लम्बी और सुन्दर कन्दरा है कि इसके भ्रमणमें पूरे दो घण्टे लग जाते हैं। यात्रियों के झुण्ड-के-झुण्ड इस कन्दराके देखनेके लिये आते रहते हैं। गुफामें पहाड़का पानी बराबर चूनेके कारण यत्र-तत्र नाले भी बहते पाये जाते हैं जिनपर यात्रियोंकी सुविधाके लिये पुल बनवा दिये गये हैं।

अनन्त कालसे पहाड़की छतसे पानीके अनवरत रूपसे बहते रहनेके कारण जिस प्रकार गण्डक नदीमे शालिग्राम और नर्मदामे नर्वदेश्वरजी महादेवकी अच्छी-से-अच्छी मूर्तियां बना करती हैं, उनके आकार-प्रकारमें विभिन्नता और सुन्दरतामे प्रतियोगिता-सी लगी रहती है, ठीक इसी प्रकार यहाँपर भी चट्टानों और उपत्यकाओमे ऐसी सुन्दर दृश्यावलियाँ बन जाती हैं जिसकी शोभा देखते ही बनती है। कहींपर पत्थरोके ऊपर पानीकी रगड़ उन्हे यह शिक्षा देती है कि देख

यदि तू कमजोरोंको पीसकर चटनी बना सकता है तो कमजोरोंके प्रहार भी तेरी मरम्मत कर सकते हैं। कहीं पत्थर कटछंटकर महादेव शंकरजीके नन्दी बैल बने बैठे हैं, कहींपर इन्द्रदेवके ऐरावतका रूपान्तर दिखाई पड़ता है, तो कहींपर एक बढ़े झाड़का-सा रूप दिखाई पड़ता है। इसी प्रकार पत्थरोंपर अनेक प्रकारके आकार और सुन्दर दृश्य बन गये हैं। ऐसे दुर्गम स्थानोंपर प्रकृति देवीकी ही शिल्पज्ञता काम कर सकती है।

इस कन्दरामें घुस जानेपर बाहर निकलनेकी इच्छा ही नहीं होती। जिधर दृष्टि जाती है उधर ही प्रकृति देवीके एक-न-एक करिश्मे नजर आते ही रहते हैं। पैर तो चलते-चलते थक जाते हैं किन्तु दिल नहीं थकता। इस वैज्ञानिक युगने इस दुर्गम कन्दराकी दुर्गमताको सुगम कर दिया है। प्रकाशका तो पूरा प्रबन्ध है ही, साथ ही इस सारे दस-बारह घण्टेके भ्रमणके प्रोग्राममें भूख-प्यासका लगना भी तो स्वाभाविक ही है। इस समस्याको भी यहांवालोंने सुलझा दिया है। कन्दराहीमें सुन्दर विश्रान्ति गृहका भी प्रबन्ध है जहाँ दर्शक थकावट मिटा सकते हैं और पेटदेवकी भी जलपान और फल-फूलसे आराधना कर सकते हैं। यह विश्रान्ति-गृह भी साधारण नहीं है, काफी लम्बा-चौड़ा है।

कभी इन स्थानोंमें शुष्कता और नीरसताका साम्राज्य था अब वहीं विनोद और सरसताका ऐश्वर्य दिखायी पड़ता है। यह

तो परिवर्तनका चक्र है, वह अपनी अनवरत गतिसे चलता ही रहता है। सरसको नीरस, नीरसको सरस, रंकको राजा और सम्राट्को दरदरका भिखारी बना देना इसके बाये हाथका खेल है। बेलजियम जानेवाले यात्रियोंको इस कन्दराका पर्यटन अवश्य करना चाहिये।

हीरोंके कारखाने—

बेलजियमकी राजधानी ब्रुसेल्स होते हुए भी व्यापारके लिये एण्टवर्पका स्थान प्रथम है। यहांके मुख्य व्यापारोंमें लोहे, काच आदिके सामानोंके साथ ही हीरोंके व्यापारका नाम भी उल्लेखनीय है। यहाँ अफ्रिकाकी खदानोंसे ही हीरोंके पत्थर आते हैं। जिन्हें यहाँ काटा-छांटा जाता है। जो उपयोगी भाग होता है उसपर हाथसे और मशीनसे पालिश करते हैं। यह यहांकी Home Industry है। छोटे-छोटे कारखानोंमें एक दो व्यक्ति बैठे हाथसे सानका पत्थर चलाते हैं और एक-एक हीरेको धीरे-धीरे पालिश करके दुरुस्त करते हैं। बड़े-बड़े कारखानोंमें हजारों व्यक्ति काम करते हैं जिसमें मशीनें बिजली द्वारा चलती हैं।
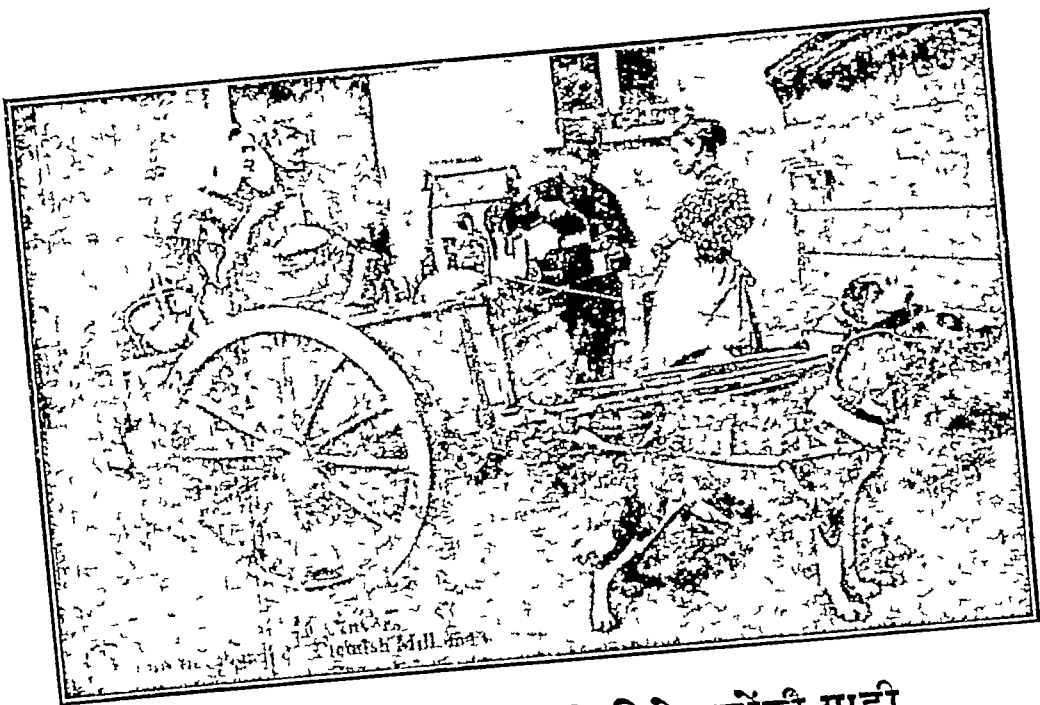
एन्टवर्पमें दूध सप्लाई करनेके लिये कुत्तोंकी गाड़ी

[पेज १७०]

मारकेन द्वीपके यात्रियोंका दल

[पे० १७०]
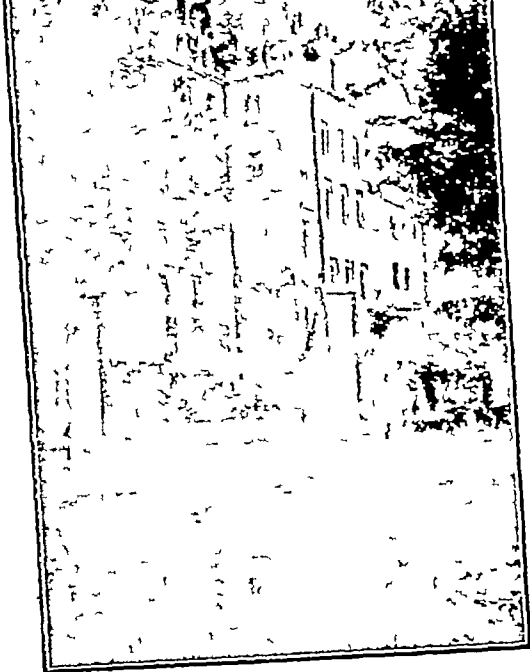
लीग आफ नेशन्सका भवन [पे० १७०]

हालेण्डका ग्रामीण दृश्य [पे० १७०]

हालैण्ड

१—अमस्टॅडम
२—मार्कॅन द्वीप

अमर्स्टडम—

यह हालैण्डकी राजधानी है। हालैण्ड योरोपका एक छोटासा प्रदेश है किन्तु अपनी विशेषताएं और विचित्रताओंके लिए संसारभरमें प्रसिद्ध है। यहाँ फूलोंकी इतनी सुन्दर और अधिक खेती होती है कि यहींके फूलोंपर योरोप अवलम्बित रहता है। लगभग चार करोड़ रुपयोंके फूलोंकी वार्षिक रफ्तनी यहींसे होती है। यहाँका जलवायु और भूमि फूलोंकी खेतीके लिये इतनी उपयुक्त है कि यहाँके लोग दूसरी खेती करते ही नहीं। उसपर भी वैज्ञानिक युगने इस खेतीमें सोनेमें सुगंधका काम किया है। जिधर ही दृष्टि डालिये उधर ही पृथ्वीपर रंग-विरंगे गलीचे बिछे हुए मालूम

पड़ते हैं । इस सौन्दर्यको देखते ही रहनेकी इच्छा होती है।

दूसरा गौरव जो इस राष्ट्रको प्राप्त है वह है हेगका संसार भरके राष्ट्रोंका न्यायालय। जिसे (Palace of Peace) संधि-महल कहते हैं। विश्वके प्रांगण भरमें जहाँ भी किसी प्रकारके राजनैतिक झगड़े होते हैं उनका फैसला इसी न्यायालयमें होता है। यहाँके लोग साहसी भी गजबके होते हैं। छोटा सा देश, समुद्रके किनारेका निवास; इतना होनेपर भी यह व्यापार, राजनीति और विज्ञान-ऐश्वर्यमे किसीसे पीछे नही है। इतिहास बतलाता है कि सबसे प्रथम भारतमें डच लोगोंने ही अपना सिक्का जमाया था और वह अब भी जावा आदिमें अक्षुण्ण बना हुआ है। इस देशके नाविक अपने साहसके लिये प्रख्यात हैं।

हालैण्ड समुद्रसे बराबर युद्ध कर रहा है और समुद्र पराजित होकर अपना भू-भाग हालैण्डको समर्पित करता जा रहा है। यहाँके लोग वैज्ञानिक साधनों द्वारा समुद्रको जबर्दस्ती उसकी इच्छाके विरुद्ध पाटते चले जा रहे हैं। इस प्रकार करोड़ोंकी जमीन अपनी आबादीके लिए महात्मा गांधीजीकी अहिंसात्मक प्रणालीसे निकालते जा रहे हैं। यहां दिये हुए हालैण्डके मानचित्रमें पाठक देखेंगे कि इसके बीचमें जो उप समुद्र है उसे कुछ ही दिनमें ये लोग सोख जायेंगे और

जितनी दूरमें नुकतेदार लकीर है उतनी दूरसे समुद्रको भगाकर सुरम्य स्थान बना देंगे। अगस्त मुनिने तो समुद्रको सोख लिया था यह हमें पढ़नेसे मालूम होता है किन्तु यहाँके लोग जो समुद्रका शोषण कर रहे हैं वह आँखोंसे देखा जा सकता है।

इनकी वैज्ञानिक पहुँचका सबसे अच्छा उदाहरण यही हो सकता है कि अब भी ब्रिटेन यहाँके वायुयानोंका उपयोग करता है। गत महासमरमें इसने सबसे अधिक वायुयान वेचे थे। कल कारखानोंकी यहाँ कमी नहीं है। विद्या और सभ्यतामें भी यह किसीसे कम नहीं है।

यहाँके नगरोंकी बस्तीमें योरोपके अन्य नगरोंसे कोई ऐसा अन्तर नहीं है जिसका उल्लेख किया जाय। जैसे सब शहर हैं वैसे यह भी है। विशेषता है तो यही है कि देशके अन्दर बहुत-सी लम्बी-चौड़ी नहरें हैं जिनमें जहाज सुगमतासे आते जाते हैं। ये नहरें समुद्रतलसे लगभग २ फीट नीची हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि समुद्रसे जहाज लाते समय समुद्रका जल क्यों नहीं भर जाता, क्योंकि नहरकी सतह समुद्रसे नीची है। यह साधारण बात है कि यदि कोई विशेष प्रबन्ध न किया जाय तो समुद्रका पानी अपनी एक ही हाहाकारसे चन्द मिनटों-में पूरे नहरको लबालब भर दे। किन्तु वैज्ञानिक करिश्मोंके आगे समुद्रकी कुछ चलती ही नहीं। जहाँ नहरों और समुद्रका

सम्मिलन होता है वहाँ बड़े-बड़े जल-स्तम्भक फाटक बनाये गये हैं। समुद्रसे जहाज नहरमें लानेके पूर्व समुद्रका फाटक खोलकर नहरके एक छोटेसे भागको जिसमें जहाज अट सके समुद्रकी सतहके बराबर करने भरका पानी भर लेते हैं। इसके आगे भी पानी रोका रहता है जिससे नहरभरमें जलप्लावन न हो जाय। सतह बराबर होनेपर जहाजको वहाँ ले आते हैं फिर समुद्रकी तरफके फाटक बन्द कर दिये जाते है। इसके पश्चात् नहरकी ओरका फाटक धीरे-धीरे खोलते हैं जिससे वहाँका पानी निकलकर नहरमें चला जाय, जब वहाँकी सतह नहरकी सतहके बराबर हो जाती है तो जहाज नहरमें चलने लगता है। फाटक यन्त्रों द्वारा सञ्चालित होते हैं। जहाजके नहरमें निकल जानेपर आवश्यकतासे अधिक जलको यंत्रों द्वारा समुद्रमें लौटा दिया जाता है। नहरोंका पानी भी अपनी ऊँची सतहपर यानी समुद्रमें जानेके लिये नियम विरुद्ध और अपने स्वभावके प्रतिकूल दिशामें बाध्य किया जाता है। यन्त्रोंसे जल समुद्रमें पहुंचाया जाता है। नहरें सड़कोंका काम देती हैं! मनुष्योंके चलनेके लिए तो और भी साधन हैं किन्तु माल लाने-लेजानेका काम जहाजों, स्टीमरों और नावों द्वारा ही होता है. जिसके लिये नहरें खूब उपयुक्त हैं। खेतोंके लिए भी नहरें बहुत उपयुक्त सिद्ध हुई हैं।

यहाँके सम्बन्धमें एक विशेष उल्लेखनीय जो बात है वह शायद ही संसारमें और कहीं हो। वह यह कि यहाँ दो-दो तीन-तीन डब्बोंकी खूब साफ-सुथरी ट्रामवे गाड़ियां होती हैं। जिनकी सबसे बड़ी विशेषता यही है कि इनपर सिवा ड्राइवरके न तो टिकटकी जांच करनेवाला इन्स्पेक्टर ही होता है और न टिकट वेचनेवाले कण्डक्टर ही रहते हैं और न किसी यन्त्र द्वारा ही टिकट वेचे जाते हैं। गाड़ियोंमें पैसे डालनेके साधारण बक्स लगे रहते हैं जिनमें लोग पैसा डालकर चढ़ जाया करते हैं। मनुष्य इतने ईमानदार हैं कि इस सुविधाका अनुचित और निन्दनीय दुरुपयोग कभी करते ही नही। यदि भारतमें यह सुविधा दी जाय तो बेचारी कंपनीका एक ही दिनमें दिवाला निकल जाय।

यहाँके अधिकारियोंका कथन है कि आदमी न रखकर जो बचत होती हैं उसकी अपेक्षा वह क्षति जो लोगोंकी भूलसे पैसा न डालनेसे होती है वह नहींके बराबर है। उनका यह कहना "कि पैसा डालना भूल जाते हैं" कितना सुन्दर और हृदयग्राही है। वे यह कभी नहीं कहते कि बेईमानीसे पैसा नहीं डाला गया और होता भी प्रायः यही है। जिस ईमानदारीकी कथाएं हम अपने भारतीय ग्रन्थोंमें भारतके सम्बन्धमें पढ़ा करते थे उनका प्रत्यक्ष अनुभव करके हृदय गद्गद हो जाता है। क्या और भी कोई

ऐसा सौभाग्यशाली देश होगा जो अपने यहाँ इस आदर्शको उपस्थित करनेका साहस करे और उसे ऐसी सफलता मिले। वहाँके लोग कभी पैसा डालनेकी भूल भी नहीं करते, क्योंकि वे इसके आदी हो गये हैं। ट्रामपर चढ़े नहीं कि पाकेटमें हाथ डाला और पैसा निकालकर वक्समें छोड़ दिया। धन्य है सत्य-देव ! आपकी महिमा अपार है।

मार्केन द्वीप—

एमस्टर्डमसे केवल १५ मील दूरीपर यह द्वीप है। लम्बाई-चौड़ाईमे यह बहुत छोटा है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ नयी सभ्यता और नये फैशनकी बू तक नही आने पायी है। यहाँ बहुतसे मछुए आबाद हैं, इस टापूको मछुवोंका टापू कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी। प्राचीन सभ्यता और वेष-विन्यासका अनुमान हम या तो इतिहासोंके पृष्ठोंपर पाते हैं या पुरातत्व सम्बन्धी संग्रहालयोंमे। परन्तु इस टापू और यहाँके निवासियोंको देखकर प्राचीन कालका जीवित इतिहास हमारे सामने खड़ा हो जाता है।

यहाँके निवासियोंमें विज्ञान और उसके उपासकोंकी गन्ध

तक भी नहीं पायी जाती। इनका काम एकमात्र मछली मारना और उसीसे अपनी जीविका चलाना है। ईश्वरकी कृपासे इनके इस रोजगारमें कभी कमी भी नहीं पड़ती। मछली मारनेके अतिरिक्त ये लोग और कोई काम नहीं करते। इस विचित्र टापूको देखनेके लिये दर्शकोंकी भीड़-सी लगी रहती है। दर्शकोंको लाने-पहुंचानेके लिये स्टीमरोंका अच्छा प्रबन्ध हैं। यद्यपि लोग मछली मारकर अमस्टर्डम नगरमें बेचनेके लिए आते ही रहते हैं तथापि इनके सात्विक और सरल मस्तिष्कमें नयी सभ्यताकी चमक दमकका प्रलोभन घुसने ही नहीं पाता।

इनका पहनावा लाल रंगका, ढीला, नीचा कुरता और मोटे काले रंगके कम्बलकी तरहके कपड़ेका ढीला-ढीला पाजामा होता है। जूते ये लोग लकड़ीके पहनते हैं। यदि ये लोग चाहते तो शहरसे अच्छे और नागरिक ढंगके कपड़े खरीद सकते हैं और सुधरे हुए साहब बन सकते हैं परन्तु प्रकृति अपनी प्राचीनताको सुरक्षित रखना चाहती है तो इन बेचारोंका क्या दोष है? नहीं तो बिजलीका पहुचना यहाँके लिये कितना आसान है। इसी प्रकार पढ़ाई-लिखाई भी हो सकती है। यहाँकी युवतियाँ एक ऐसी टोपी लगाती हैं जिनके दायें-बाये दो ऐसे लम्बे और स्प्रिगदार कांटे होते हैं जो दोनों तरफके गालोंको इस तरहसे दबाये रहते हैं जैसे क्लिप कागजको। इससे टोपी

तो नहीं गिरती परन्तु गाल चिपका रहता है, जिससे वास्तविक सूरतमें एक विचित्र परिवर्तन-सा हो जाता है; पर गालोंका चिपका रहना भी इनके लिये गौरव और गर्वकी बात होती है। इनकी समझमें यह सौभाग्यकी बात होती है कि गालोंपर इतना मांस है कि वह दाबसे पिचककर गड्ढे बना देता है। बुढ़ियाँ थोड़े ही ऐसा कर सकती हैं?

यहां अंग्रेजी भाषा-भाषी यात्रियोंका जमघट लगा ही रहता है। किसीकी मातृभाषा कोई भी क्यों न हो पर यहाँ अंग्रेजी भाषाको ही माध्यम बनाना पड़ता है। इसलिये रात-दिन अंग्रेजीकी गिटपिट इनके कानोंमें पड़ा करती है। लड़कियोंमें प्रायः चंचलता स्वाभाविक हुआ करती है। जवान लड़कियोंमें कुछ गम्भीरता आ जाती है पर योरोपीय छोकड़ियां तो तरुणावस्थामें और भी चंचला हो जाती है। यहाँकी युवतियां भी अंग्रेजीके कुछ शब्द सीख गयी हैं। या तो अंग्रेजीकी योग्यता बघारनेके लिये अथवा दर्शकोको चिढ़ानेके लिये अपने रटे हुए शब्दोंको ये काममें लाती हैं। वे प्रायः दर्शकोंको दिखाकर "I Love You" (मैं तुम्हें प्यार करती हूं) हँस-हँस कर कहा करती हैं। परन्तु इस शब्दका अर्थ इन्हें मालूम है या नहीं, इसमे भी सन्देह है। दर्शक भी इनके इस खेलवाड़को देखकर उपेक्षाके साथ हँस दिया करते हैं।

यहाँका जलवायु इन लोगोंके लिये काफी उपयुक्त है, जिससे इनका स्वास्थ्य भी बहुत अच्छा रहता है। स्त्री, पुरुष, बच्चे प्रायः सभी स्वस्थ और प्रसन्न दिखाई पड़ते हैं। मछली ही इनकी खेती और खुराक है। उसीसे अपने जीवन-निर्वाहमें काम आनेवाली वस्तुओंको खरीदनेके लिये धन-संचय करते हैं। गहनों और बहुमूल्य कपड़ोंकी आवश्यकता तो इन्हें पड़ती ही नहीं। साधारण लाल रंगके कपड़े एवं अन्यान्य सामग्री अमस्टर्डम जाकर मछलियोंको बेचकर खरीद लाया करते हैं।

इनके घर भी बहुत छोटे छोटे और प्राचीनताके द्योतक हैं। ये लोग चाहें तो अपनी तरक्की कर सकते हैं पर इस सादगी और प्राकृतिक जीवनको छोड़कर कृत्रिम जीवन बितानेकी लालसा इनमें होती ही नहीं। नहीं तो आज यह टापू भी हराभरा जगमगाता हुआ अमस्टर्डमका एक उपनगर होता। घरोंमें सोनेके लिये छोटे-छोटे कमरे होते हैं। उनमें ऐसे मचान बनाये रहते हैं कि पांच-छः आदमी उनपर क्रमशः ऊपर नीचे सो सकते हैं। रेलके डब्बोंमें भी यही हाल होता है सिर्फ फरक इतना ही है कि यहाँ दो आदमी ही ऊपर-नीचे सो सकते हैं तो उनके उन विचित्र मचानोंपर पाँच छः आदमी सो सकते हैं।

रूस

१—रूसका सिंहावलोकन

(क) पासपोर्टकी दुविधा

२—मास्को

(क) लेनिनकी कब्र

(ख) यहांकी जेलें

(ग) पागलखाना

(घ) राजा महेन्द्रप्रताप

(ङ) श्रमिकोंकी क्लब

३—लेनिन ग्राड

(क) शिशु-पालन

रूसका सिंहावलोकन—

क्षेत्रफलकी दृष्टिसे रूस संसारके सव देशोंसे वड़ा है। रूसकी आकस्मिक महाक्रान्तिने संसारको अपनी ओर आकर्षित कर लिया है। आज रूससे वच्चा-वच्चा परिचित है। सं० १६१८ के पूर्व यहाँ जो सम्राट् राज्य करता था उसे "रूसका जार" कहते थे। उसके शासनकालमें प्रजापर महा अत्याचार हो रहा था। वह स्वयं वड़ा क्रूर और अत्याचारी था। प्रजा सीधी-सादी थी, परन्तु गो० तुलसीदासजीके कथनानुसार "अति सै रगड़ करै जो कोई। अनल प्रगट चन्दनते होई । जव चन्दन जैसी शीतल वस्तुमें रगड़से आग उत्पन्न हो जाती है तो रूसमे क्रान्तिकी आग भड़क उठी तो क्या यह कोई आश्चर्यकी वात है?

इस क्रांतिने रूसके इतिहासको ही पलट दिया। कल क्या था, आज क्या हो गया। संसार यह देखकर चकित हो गया। यदि रूसके सम्बन्धमें विशेष रूपसे लिखा जाय तो उसके एक-एक विषयपर इससे भी बड़ी-बड़ी पुस्तकें लिखी जा सकती हैं, परन्तु यहाँपर हम केवल सार-रूप कुछ परिचय करा देना चाहते हैं।

रूसमें इस समय साम्यवादका झण्डा फहरा रहा है। संसार सतृष्ण नेत्रोंसे इसकी ओर देख रही है कि कहाँतक उसका यह प्रयास सफल होता है। साम्यवादका अर्थ है पूँजीपतियोंकी जड़ खोदकर अमीर-गरीब सबको बराबर बना देना। किसीके सामने रोटीकी समस्या ही न रह जाय। ऐसा राज्य उसे पसन्द नहीं कि एक तो अधिक खा लेनेसे अजीर्णकी दवा करा रहा हो और एक गलियोंमें जूठनके लिये भी तरस रहा हो। उसका सिद्धान्त है कि जनतामात्र राष्ट्रकी सन्तान हैं और उनके पालन-पोषणका दायित्व भी राष्ट्रपर ही है। यदि जनता भूखों मर रही हो, रोगसे कराह रही हो, वस्त्र बिना अर्द्धनग्न हो और राष्ट्र उसकी ओर अवहेलनाकी दृष्टिसे देखता हो तो यह राष्ट्रके लिये सबसे बड़ा और भयानक अभिशाप है। राष्ट्रका कर्त्तव्य है कि वह मनुष्यमात्रको-एक दृष्टिसे देखे। जब किसीके सामने पेटका प्रश्न ही न रहेगा और पूँजी संचयसे कोई लाभ ही न होगा तो पूँजीसे होनेवाले या पूँजीके लिए होनेवाले

जितने अत्याचार हैं वे अपने आप ही अन्तर्धान हो जायंगे। इसी सिद्धान्तको लेकर रूसने साम्यवादकी शासन-व्यवस्था चलायी है। इसका नेता था वीर "लेनिन" जिसके नामपर रूस-की राजधानी "पिट्रोग्रेड" अब बदलकर "लेनिन ग्राड" के नामसे पुकारी जाती है।

पहले रूसमें धर्मान्धता कूट-कूटकर भरी थी। धर्मके नामपर मनुष्योंके साथ नृशंस और अमानुषीय अत्याचार किये जाते थे। लेनिनने धर्मकी जड़ ही उखाड़कर फेंक दी। उसका धर्म है मानवताकी रक्षा। जब मानवताही नहीं तो धर्मका रखना ही अधर्म है। यही उसका सिद्धान्त था और इसी सिद्धान्तपर उसे आशातीत सफलता मिली है। उसने गिरजाघरोंको पुस्त-कालयों और स्कूल, औषधालय आदिके रूपमें परिणत कर दिया। जिनकी नसोंमें उसे पूंजीवादका विष दिखाई पड़ा उसे सीधे यम-धाम भेजना ही उसका कर्त्तव्य हो गया। सम्राट्के परिवारकी ऐसी निर्मम हत्या की गयी जिसे सुनकर हर-एक व्यक्तिके रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

यो तो रूसमें सबसे यथोचित परिश्रम लिया जाता हैं और उस परिश्रमसे प्राप्त होनेवाली सम्पत्ति राष्ट्रकी सम्पत्ति समझी जाती है। इसी प्रकार रूसमें पैदा होनेवाले बच्चे भी राष्ट्रके ही समझे जाते हैं। उनका पालन-पोषण आधुनिक और वैज्ञा-

निक ढंगसे सुचारुरूपसे किया जाता है, जैसा कि पहले किसी गरीबके लिये असम्भव ही था। जनताकी आवश्यकताओंकी पूर्तिका भी ध्यान रखना राष्ट्रका कर्तव्य है और साम्यवादी रूस ऐसा कर रहा है। किन्तु यहाँकी परिस्थितिका अच्छी तरह अनुसन्धान करनेपर हमें अभी किसी सिद्धान्तपर अटल रहनेकी धारणा नहीं उत्पन्न होती। भारतीय पत्र और लेखक रूसके सम्बन्धमें जो सोनेके महल दिखाते हैं और साम्यवाद-को जिस प्रकार दूधका धोया बतलाते हैं, हम तो दृढ़रूपसे ऐसा कहनेका साहस नहीं कर सकते और न हम यही कह सकते हैं कि रूसके इतिहासके शेष पृष्ठ साम्यवादकी विरदावली गायेंगे या उसकी निन्दा करेंगे।

पासपोर्टकी दुविधा—

रूस-परिभ्रमणकी आकांक्षा मेरे हृदयमें बहुत दिनोंसे थी। रूसके सम्बन्धमे जितने लेख मिलते मैं उन्हें ध्यानपूर्वक पढ़ता और उससे हृदयमें एक नयी तरंग उत्पन्न हो जाती। हिन्दी अङ्गरेजीमें मुझे रूसके सम्बन्धमें जितनी पुस्तकें प्राप्त हो सकीं उन्हे मैं सोत्साह पढ़ता रहा। लेखकोंकी मनचली लेखनियोंसे तो रूसमें राम-राज्यके हवाई किले बन ही चुके थे फिर क्यों न मेरी उत्कण्ठा बढ़ती जाती।

मैं रूसके सम्बन्धमें अपने मित्रोंसे वार्तालाप किया करता था। उस समय मैं लेखकोंका ही समर्थक था। रूसके विरोधमें यदि कोई आक्षेप किसी मित्रसे सुनता तो मैं तुरन्त उसका प्रति-

वाद करता। उन्हें लेखोंके उद्धरणके उद्धरण सुना जाता और उनकी बोलती बन्द करनेकी चेष्टा करता। जब मैंने योरोप-भ्रमणकी बात निश्चित कर ली और अपने शुभचिन्तकोंसे योरोप-यात्राकी अभिलाषा प्रकट की, साथ ही रूस देखनेकी उत्कट अभिलाषा भी। उस समय मेरे मित्रोंने मुझे राय दी कि रूस देखनेका तो नाम न लो। नहीं तो सम्भव है रूसकी तो कौन कहे, लण्डन भी न देख सको। कहीं ऐसा न हो कि वृटिश सरकार पासपोर्ट ही न दे। "रोजा छोड़ाने गये नमाज गले पड़ी" वाली कहावत चरितार्थ होने लगे। मित्रोंकी यह राय मुझे बावन तोला पाव रत्ती पक्की जँची। खैर, जब लण्डन पहुचा तो इसी दुविधासे कि वहाँ आवेदन करनेपर कहीं ऐसा न हो कि रूसका पासपोर्ट न मिले और उनकी आज्ञाके विरुद्ध जाऊँ और मुझे राजाज्ञावश भारत लौटना भी कठिन हो जाय। जन्मभूमिमें सकुशल लौटनेकी स्वाभाविक लालसाने मेरे हृदयमें ऐसे भयका संचार उत्पन्न कर दिया था। साथ ही रूस देखनेकी लालसा भी नहीं छोड़ सकता था। "भइ गति सांप छछूंदर केरी" की दशा थी। भ्रमण करते-करते जब जर्मनी पहुँचा तो उस समय मित्रोंसे मालूम हुआ कि रूसका पासपोर्ट यहाँसे लेना सहज है। पर कितनोकी यह धारणा थी कि शायद वृटिश सरकार भारत लौटने दे या नही। मैं कानूनन ऐसा सोच

रहा था सो बात नहीं, कानून क्या कहता है इसपर मैंने कभी नहीं विचार किया, केवल रूस सम्बन्धी कुछ पुस्तकोंके जब्त होनेसे, वहाँकी सभाओंके प्रतिनिधियोंके पकड़-धकड़के समाचारोंसे कुछ ऐसी ही धारणाएं उत्पन्न हो गयी थीं, कुछ वहाँके मित्रोंने यह धारणा बैठा दी थी। परन्तु साथ-ही-साथ मेरी आत्मा इसका उत्तर देती जाती थी कि किसी राजनैतिक कार्यसे तो मैं जा नहीं रहा हूँ। जानेका एकमात्र कारण है परिभ्रमणकी अभिलाषा!

पासपोर्ट लेनेके पूर्व मैंने बर्लिन-स्थित रूसके कौंसिलेट जेनरलसे साक्षात् किया। कई अन्य विषयोंपर बातचीत होनेपर जब इस सम्बन्धमें बातचीत की तब उसने कहा,—"आजतक तो मुझे कोई ऐसा उदाहरण नहीं मिला जिसके आधारपर ऐसा कहा जा सके, परन्तु ब्रिटिश गवर्नमेन्टको अधिकार है कि वह आपको भारत लौटने दे या न दे। मैं इसमें क्या कर सकता हूं? आप अपने दायित्वपर ही रूस जा सकते हैं, हम इस बातकी ग्रान्टी नहीं दे सकते कि ऐसा हो ही नहीं सकता। कुछ क्षण तक तो मैं किंकर्तव्य विमूढ़वत खड़ा रहा, फिर यही सोचकर कि योरोप आकर यदि रूस न देखा तो कुछ न किया, मैंने पासपोर्ट ले लिया और अपने भविष्यको भविष्यके ऊपर ही छोड़कर चल पड़ा कि चाहे जो हो रूस अवश्य देखूंगा। रूसको देखा और खूब देखा। रूसकी इस यात्राने मेरे पूर्व-विचारोंमें

अनेक संशोधन भी कर दिया है और अब मैं लेखकोंकी लकीर का फकीर नहीं रह गया।

मैं रूसका एकदम विरोधी भी नहीं हो गया हूँ, और मेरी पहिलेकी अनेक भावनाएं यथार्थ भी प्रमाणित हुई हैं, तिसपर भी मेरे हृद्‌जगत्‌का रँगीन रूस अब कोरा और कृत्रिम रूस रह गया है। हाँ! यह माननेमें हमें किञ्चित भी सकोच नहीं है कि कितने ही प्रबन्ध यहाँके आदर्श और प्रशंसनीय हैं। उनमेंसे जेल, पागलखाना और शिशु-पाठशालाओंकी चर्चा तो मास्कोके साथ दी गयी है। यहाँ एक और उल्लेखनीय बातका वर्णन कर देना आवश्यक प्रतीत होता है।

मास्को—

ज़ारके समयमें यह रूसकी राजधानी रह चुका है। उस समयके राजभवन आज भी उसकी प्राचीन कीर्तिकी याद दिलाते हैं। पर अब राजधानी न रहनेके कारण उसकी हालत एक त्यागी हुई पत्नीकी-सी हो गयी है। मैं जब स्टेशनपर पहुँचा तो होटल तक जानेके लिये टैक्सीकी सड़क इतनी खराब और टूटी-फूटी थी कि २-३ माइलकी सवारीमें ही खाया-पीया सब पच गया। फिर भी मध्य योरोपसे या जापानसे आने वाले यात्रीको यहां आना ही पड़ता है।

लेनिनकी कब्र—

यहाँके विख्यात पुराने (क्रेमलिन) राजमहलके भीतर एक छोटीसी गुमटी बनाकर उसमें उन्नतमना लेनिनका शव सुरक्षित रखा गया है। शीशेकी पेटीमें कोई तरल पदार्थ है जिसमें उक्त शव सुरक्षित है। यहाँ सदा दर्शनार्थियों और अभिवादकोंकी भीड लगी रहती है। शवके सिरहाने और पैतानेपर दो सन्तरी हर समय खड़े रहते हैं। गुमटीपर भी सन्तरियोंका प्रबन्ध है। शव अब भी अपनी पूर्वावस्थामें ज्यों-का-त्यों दिखाई पडता है। साम्यवादियोंका विश्वास है कि जब-तक शव विकृत अवस्थाको न प्राप्त होगा तबतक साम्यवादका अस्तित्व अक्षुण्ण बना रहेगा। शवके विकृत होते ही साम्य-

वाद भी नष्ट हो जायेगा। यदि उनका यह विश्वास जैसा कि सुना गया है ठीक है तो कोई भी बुद्धिमान इस अन्धविश्वास-पर अपनी हँसी न रोक सकेगा। जो साम्यवाद ईश्वर, धर्म और अन्धविश्वासोंकी मूल ही उखाड़ फेंकता हो वही अपने हृदयमें ऐसा अन्ध विश्वास रखे कि शवके विकृत होते ही साम्यवाद नष्ट हो जायेगा। क्या यह हँसीकी बात नहीं है? शव जमीनके भीतर रखा हुआ है, जहाँपर पहुँचनेके लिये सीढ़ियोंको पारकर नीचे उतरना पड़ता है। प्रकाशका साधारण प्रबन्ध है। लोगोंको घूमनेके लिये मार्ग बना दिया गया है।

आज रूसमें लेनिनका इतना प्रचार है कि देखकर दंग रह जाना पड़ता है। रूसका आज कोई भी ऐसा कमरा न दिखाई पड़ेगा जहाँ लेनिन किसी-न-किसी रूपमें मौजूद न हो। कहींपर उसके बाल्यकालका चित्र लगा हुआ है तो कहींपर जीवनकी अन्यान्य घटनाओंके द्योतकरूपमें चित्र और मूर्तियां विद्यमान हैं तो कहींपर उसके शब्द अंकित कर दिये गये हैं आदि। इस प्रकार रूसकी संस्कृति ही लेनिन और साम्यवादकी अनुयायी बनायी जा रही है। बच्चे-बच्चे-साम्यवादके रंगमें रंग उठे हैं।

सरकार द्वारा यहांके स्कूलों और नवयुवकोंकी संस्थाओंका

विशेष संरक्षण होता है। उनका कहना है कि राष्ट्रका निर्माण और पतन तो राष्ट्रकी भावी सन्तानोंपर ही निभर करता है, न कि बुड्ढों और अन्धसंस्कृतिमें पले हुओंपर। अस्तु, यहाँ बच्चोंकी प्रारम्भिक शालाएं विशेष व्यवस्थित और सुन्दर हैं। इनमें विशेषता यह है कि यहाँ किण्डर गार्टन प्रणाली द्वारा शिक्षा दी जाती है। इन स्कूलोंमें चार छः महीनेके नवजात शिशु भी विद्यार्थी हैं। मा-बाप अपने नवजात शिशुओंको भी इनमें भरती करके पालन-पोषणके झंझटसे बच जाते हैं। जबसे बच्चे अपने पैरोंपर खड़े होने लगते हैं उन्हें व्यावहारिक शिक्षा अपने आप मिलने लगती है। बच्चोंको यह स्वाभाविक आदत हो जाती है कि वे अपने बड़ोंका अनुकरण बड़ी आसानीसे करने लगते हैं। कपड़ा पहनने, जूता, चम्मच, ग्लास और पुस्तकोंके रखने आदिका ज्ञान उन्हें बहुत जल्द हो जाता है। अपने हाथों भोजन करना, हाथ मुंह धोना, अपने छोटे-छोटे बर्तनों और कुर्सी टेबलोंको स्वच्छ रखना यह उन्हें आसानीसे सिखला दिया जाता है। वहांके मोटे-ताजे सुगठित शरीरवाले बच्चोंको देखकर एक बार भारतीय शिशुओंका चित्र नेत्रोंके सामने आ जाता है, जो बेचारे प्रायः अस्थि-पञ्जरके जीवित पुतले हुआ करते हैं। किसे इन स्वस्थ बालकोंको देखकर हर्ष न होगा। उनका पढ़ना, खेलना, खाना-पीना सब नये ढंगका और सुव्यवस्थित होता है। जितनी

शिक्षा और सभ्यता इन बच्चोंमें सात आठ वर्षकी अवस्थामें प्राप्त हो जाती है उतनी भारतीय विद्यार्थियोंको ऊंची कक्षामें भी नहीं प्राप्त होती। यह विद्यार्थियों और उनके अभिभावकोंका दोष नहीं है दोष है यहाँकी शिक्षाप्रणालीका।

यहांकी जेलें—

रूसके बन्दीगृह भारतके स्वतन्त्र जीवनसे कहीं अच्छे हैं। यहांके बन्दियोंकी कोई पोशाक नहीं है, कोई भी पोशाक इच्छानुसार कैदी पहन सकता है। चाहे वह जेलसे लेकर पहने या घरसे मंगा ले। दूसरे, बन्दियोंके हाथों और पैरोंमें लोहेके सुन्दर आभुषण नही पहनाये जाते। बन्दियोंका कोई काम करना न करना उनकी इच्छापर निर्भर करता है। जो कैदी काम करता है उसे वेतन दिया जाता है और वेतनके पैसोंसे वह अपनी आवश्यकताओंकी पूर्ति स्वतन्त्रता पूर्वक कर सकता है। ताश, शतरञ्ज, साबुन, तेल, पुस्तक और रेडियो या अन्य आमोद-प्रमोदकी वस्तुएं मंगा सकता है। जो काम करते हैं

उनके दो दिन तीन दिनके बराबर समझे जाते हैं। इस प्रकार तीन महीनेकी सजा पानेवाला कैदी काम करते हुए वेतन पाते रहनेपर भी दो महीनेमे ही मुक्त हो जाता है। जो काम नहीं करते, उन्हें पूरी सजा भुगतनी पड़ती है। पुस्तकों और पत्रपत्रिकाओंका यहाँ अभाव नहीं रहता। इसके अतिरिक्त खेल, व्यायाम और मनोरञ्जनार्थ रेडियो और ग्रामोफोनका भी अच्छा प्रबन्ध रहता है। काम करनेके लिये कितने ही साधन हैं जैसे—काटन मिल्स, कार्पेण्टरी आदि। जिन्हें जिस कामकी अभिरुचि हो वे उस काममे लग सकते हैं।

जब मैं रूसी जेलका निरीक्षण कर रहा था मुझे एक नवयुवक कैदीसे वार्तालाप करनेका अवसर मिला। उसे खून करनेके अपराधमें १४ वर्षका कारावास-दण्ड मिला था। उस समय वह अपनी सजाके ११ वर्ष भुगत चुका था। उसने जेलमें ही रेडियो (बेतारका तार) का अध्ययन किया था और इस कलामे दक्ष हो गया था। बाहर निकलनेपर अपनी आमदनीके लिए उसके हाथमें एक अच्छा साधन हाथ लग गया था। मैंने उससे प्रश्न किया कि जब जेलोंमें इतनी सुविधायें हैं तो अधिक लोग यहाँका रहना पसन्द करते होंगे! भारतीय होनेके नाते मेरा ऐसा प्रश्न करना स्वाभाविक ही था। उसने कहा—महाशय! "स्वतंत्रता भी तो कोई वस्तु है?" उसके इस उत्तरने मुझे

निरुत्तर कर दिया। मैने फिर पूछा कि आपने खून क्यों किया ? तो उसने कहा—"क्रान्तिके समय तो मारकाट एक सधारण बात थी, मैंने खूब मारकाट की थी। इससे मेरा हृदय कठोर हो गया था और हत्या करनेका अभ्यास-सा पड गया था। एक दिन मैंने आवेशमें आकर अपने एक साथीको मार डाला था उसीके परिणामस्वरूप जेलजीवन व्यतीत करना पड़ रहा है।"

रूसी जेलोंके अधिकारियोंकी धारणा है कि अपराधीको कठोर दण्ड देनेसे कोई उसके स्वभावको बदल नहीं सकता। बल्कि उसकी आदत और भी बढ़ती ही है। कोई ऐसा चोर न मिलेगा जो सजा भुगत चुकनेपर चोरी करना छोड़ दे। हृदय-परिवर्तन करनेका साधन है सुशिक्षा और अच्छा व्यवहार, न कि कठोर दण्ड। सदियासे प्राणदण्डकी प्रथा चली आ रही है किन्तु खूनी अपराधी बने ही रहते हैं। यही इसका अकाट्य उत्तर और प्रमाण कहा जा सकता है।

पागलखाना—

मैं एक दिन मास्कोके एक पागलखानेका निरीक्षण कर रहा था। पागलोंके एक डाक्टरको किसी पागलने मार दिया था, जिससे उसे घाव हो गया था। मैंने डाक्टरसे पूछा,—"क्यो महाशयजी, पागलोंको मारपीट करनेपर आप उन्हे सजा देते है या नही"।

उसने कहा,—"हमारे यहाँ पागलोंको सजा देनेका नियम नहीं है। सजा देनेसे ऐसे रोगीपर बुरा प्रभाव पड़ता है।"

दूसरा प्रश्न मेरा यह था कि, "यहाँ रोगी कितने दिनोमे चंगे हो जाते हैं?"

इसके उत्तरमें उसने कहा—"मेरे यहाँके ६० प्रतिशत रोगी एक वर्षके अन्दर ही अच्छे हो जाते हैं।"

मुझे डाक्टरकी बात सुनकर आश्चर्य हुआ और राँचीके पागलखानेकी याद आ गयी।

मैंने कहा—"हमारे यहाँ राँचीमें भी पागलखाना है किन्तु वहाँ तो वर्षों तक रोगी पड़े रहते हैं।"

उसने कहा—"अफसोसकी बात है कि वहाँ कोई रूसी डाक्टर नहीं है, नहीं तो वहाँकी परिस्थिति भी सुधर जाती।

राजा महेन्द्र प्रताप—

रूसकी सैरमे सबसे उल्लेखनीय और सौभाग्यकी बात थी परम त्यागी और सात्विक जीवन व्यतीत करनेवाले राजा महेन्द्रप्रतापसे मिलना। पाठकोको राजासाहबके परिचय देनेकी आवश्यकता नही है। कोई भी ऐसा शिक्षित न होगा जो इस त्यागीवीरके नामसे अपरिचित हो। मास्कोमें मैं अपने निवासस्थानकी खोज में घूम रहा था। मेरे पास जो पता लिखा हुआ कार्ड था वह अंग्रेजीमे था इसलिये उसके पढ़ने ही वाले नही मिल रहे थे और न मेरी बात ही कोई समझ सकता था। उनमेंसे एकने मुझे अफगानी समझकर एक अफगान सोसाइटीमे ले गया। वहांका दरबान कुछ-कुछ अंग्रेजी जानता था।

जब उसने मेरा निवास-स्थान पूछा और मैंने इण्डिया बतलाया तो उसने कहा "क्या आप राजासे मिलना चाहते हैं?" राजा-का मतलब मैंने किसी भारतीय राजाको समझा जो प्रायः आमोद-प्रमोदके लिये आया करते हैं। मैंने कहा "मैं अपना निवास-स्थान ढूंढ़ रहा हूं।" उसने कहा—"यहाँ एक राजा साहब बहुत दिनोंसे रहते हैं।" जब मैं उनसे मिला तो मेरे हर्षका ठिकाना न रहा। यह राजा साहब तो वही "राजा महेन्द्रप्रताप हैं" जिन्होंने भारतपर अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया है। जिन-का प्रेम महाविद्यालय आज भी वृन्दावनमें उनका यश बढ़ा रहा हैं।

राजा साहबके दर्शनोंसे मेरा रूस-भ्रमण सार्थक हो गया। राजासाहबके लेख मैं भारतवर्षके पत्रोंमे पढा करता था। मुझे यह भी ज्ञात था कि राजा साहब इस समय योरोपमें ही हैं। सौभाग्यवश अकस्मात् दर्शन भी हो गये। राजा साहब बड़े उदार और मितभाषी हैं। राजसीपन उनमें छू तक नहीं गया है। साधारण वेश-भूषामें साधारण जीवन उनका अपना एक अलग आदर्श रखता है। राजा साहबके साथ मुझे दो दिन रहनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। यद्यपि वे भारतवर्षसे बहुत दूर हैं और उनका भारतसे चिर विछोह हो चुका है किन्तु भारतसे उन्हें उतना ही प्रेम है जितना किसी भी भारतीयको होना चाहिये।

मुझे पाकर उन्हें भी बड़ी प्रसन्नता हुई। क्यों न हो—अपनी मातृ-भूमिसे आया हुआ एक यात्री मिल जाय और फिर खुशी न हो ?

एक दिन मैं राजा साहबके साथ सरकस देखने गया। यह एशियाका सबसे प्रधान सरकस है और निस्सङ्कोच रूपसे कहा जा सकता है कि ऐसा बड़ा और सुव्यवस्थित सरकस एशियामें और कहीं नहीं है। इस सरकसमें रोमांचकारी खेलोंके अतिरिक्त ऐतिहासिक दृश्य भी बड़ी पटुतासे दिखाये जाते हैं। जैसे—रूसकी किसी लड़ाईका दृश्य दिखाना होगा तो रेलोंका चलना और गोलीसे घोड़ोंका घायल होना, आदमियोंका जख्मी होकर लंगड़ाना आदि खेल अपने ढंगके एक ही दिखाये जाते हैं घोड़े ऐसे सीखे हुए थे कि गोली दगते ही वे ऐसे गिरते थे जैसे पल्टनोंमें गोली लगनेसे घोड़े गिरते हैं। मरनेका दृश्य भी घोड़े बड़ी सफलतासे दिखाते थे। यहाँका एक दृश्य विशेष आकर्षक था। (Interval) अवकाशके समय उन लोगोंने कैनवासकी (Canvas) की बड़ी लम्बी-चौड़ी गहरी टंकी बना दी। वह एक नदीका रूपक था। उसके ऊपरसे पुल बनाया। पुलपरसे आमने-सामनेसे दो मोटरें पार कर रही थीं। दोनोंमें दनादन गोलियां चलने लगीं। इतनेमें एक क्रांतिकारी नदीमें कूद पड़ता है और तैरता हुआ पुलके नीचे आ जाता है। और ठीक दोनों मोटरोंके नीचे बम लगा देता है। बमके आघात-

से पुल चकनाचूर हो जाता है और आदमी किस तरह पानीमें गिरते हैं और अपनी जान बचानेके लिये प्राणोंकी बाजी लगाकर तैरते हैं यह देखने लायक घटना होती है। ऐसी भयानक दृश्यावलियां कौन सरकस दिखा सकता है ? सरकसकी ऐसी करामात मैंने अपने जीवनमें कभी नहीं देखी। इन घटनाओंके देखनेसे मनोरंजनके साथ ही जनतामें जागृति भी खूब होती है।

राजा साहबके संसर्गसे मैंने कई ऐसी शिक्षाएं ग्रहण कीं जिनसे मैं अब भी लाभ उठाता हूं और उनकी स्मृति मेरे हृदय-पटपर ज्यों-की-त्यों अङ्कित रहती है। एक बार मैंने राजा साहबके साथ जल-भ्रमण भी किया था। वहाँ मैंने नदी तटपर स्त्री-पुरुषोंको नग्न स्नान करते हुए देखा। मेरे लिये यह कौतूहल और घोर घृणाकी बात थी; परन्तु उन्होने मुझे बतलाया कि यहाँके लिये यह साधारण बात है। उन्होंने तो यहाँतक कहा कि समस्त योरोपमें यह प्रथा है। परन्तु मैं दिलसे इस बातको स्वीकार न कर सका; क्योंकि मैं अभी गरमागरम योरोप-भ्रमण करता चला आ रहा था। सम्भव है, जब राजा साहब घूमते रहे होंगे तो ऐसी प्रथा रही हो किन्तु इस समय अश्लील समझकर हटा दी गयी हो।
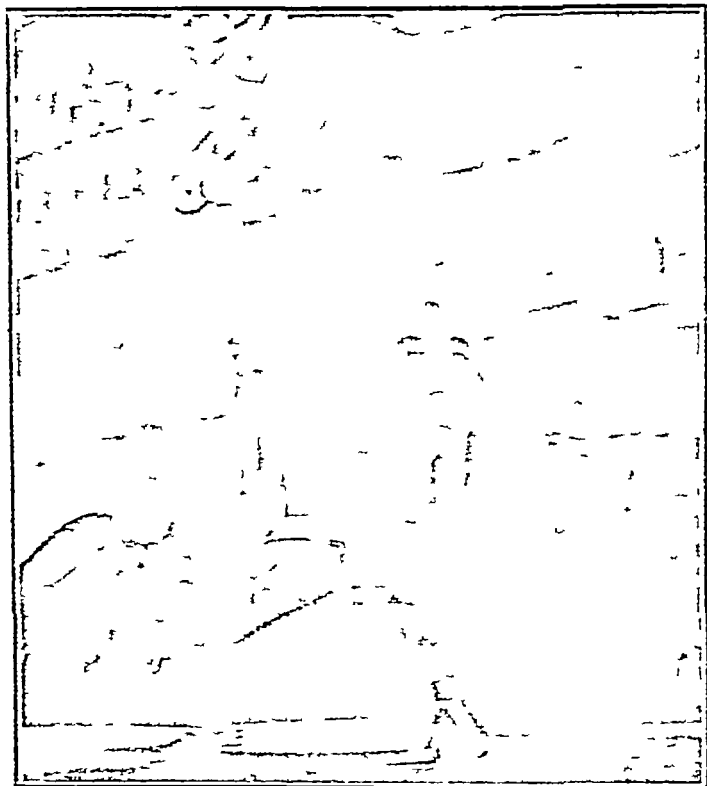
मास्कोका खाद्य पदार्थोंका एक स्टोर

[पे० २०२]

मास्कोमे सेन्टकी दूकान पर

[पे० २०२]

[illegible] परिवार सहित तमाशा देख रहे हैं।

[पे० २०२]
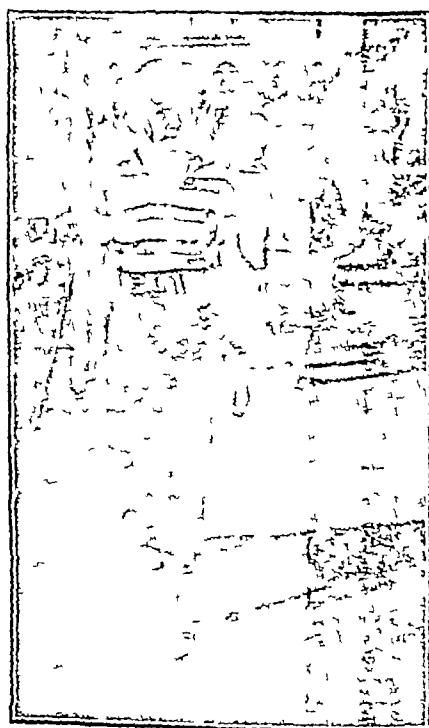
एक मजदूर स्त्री अपनी नयी पोशाकमें

श्रमिकोंकी क्लब—

रूस भरमे श्रमिकोंकी जितनी सोसाइटियां हैं, सबका प्रधान केन्द्र यहींपर है। मजदूरोंका संरक्षण और उन्हें हर प्रकारकी सुविधाओंका पहुँचाना ही इस संस्थाका काम है। श्रमिकोंकी सुविधाके सब साधन यहाँ प्रस्तुत किये गये हैं। एक अच्छा और सुव्यवस्थित पुस्तकालय भी इनका है। स्थान स्थानपर आदर्श वाक्य भी सुन्दरतासे लगाये गये है। किस प्रकार काम करना चाहिये, कैसा जीवन होना चाहिये, श्रमिकोका क्या कर्त्तव्य होना चाहिये, यही उन वाक्योंमे बतलाया गया है। किसी श्रमिकपर यदि किसी प्रकारका दुर्व्यवहार किया जाता है तो रूस (साम्यवादी-सरकार) के

शासन-विभागसे यहींसे लिखा-पढ़ी होती है और उसकी माँग पूरी करानेकी चेष्टा की जाती है। यहाँपर और भी कितनी ही क्लबों और सोसाइटियोंकी भरमार है।

यदि किसी यात्रीको मास्को-भ्रमणका वास्तविक आनन्द लेना हो तो उसको २१ जनवरी, १ मई और ७ नवम्बरको यहाँ पहुँचना चाहिये। क्योंकि इन्हीं तारीखोंको यहाँकी ऐतिहासिक क्रान्तियाँ हुई थीं। उन्हींका स्मृति-उत्सव इन तारीखोंको मनाया जाता है। इन दिनोंमे यहाँकी सजावट और उत्साहकी अपूर्व लहर देखने ही योग्य होती है।

लेनिनग्राड—

यह प्राचीन रूसकी राजधानी थी। पहले इसका नाम सेण्ट-पीटर्स बर्ग था। फिर पिट्रोग्राड हुआ और आजकल रूसके भाग्य-विधाता लेनिनके नामपर अपना गौरव बढ़ा रहा है। यह नेभा नदी-के तटपर बसा है। यहाँके जलवायुमें नमी अधिक रहती है, दलदल भी यहाँ अधिक है। यहाँकी आबादी १६००००० है। रूसका सबसे बड़ा बन्दरगाह भी यही है। दलदली जमीन होनेके कारण मकानों मे अधिकांश लकड़ीका ही प्रयोग किया जाता है। सड़कोंमें भी पत्थर और ईंटोंके स्थानपर लकड़ीकी ईंटें लगायी जाती हैं, नहीं तो सड़कोंके बैठ जानेका भय लगा रहता है। साइबेरियाका जंगल पासमें ही होनेके कारण लकड़ी यहाँ सस्ती मिलती है।

उत्तरीय योरोपके साथ यह सौभाग्य रूसको भी प्राप्त है कि यहाँ सूर्यका प्रकाश अधिक देरतक रहता है। जून जुलाईके महीनोंमें तो यहाँ २२ घण्टोंका दिन होता है। १२ बजे रातको इतना उजाला रहता है जितना यहाँ ५-६ बजे सन्ध्याको। रातमें सड़कोंपर बत्ती जलानेकी आवश्यकता नहीं होती।

एक दिन मैं बैठा हुआ कुछ लिख रहा था। घड़ीकी तरफ सिर उठाया तो एक बजा था पर मैं अपने कामको पूरा करके ही उठना चाहता था जब काम आधा भी न कर पाया था कि देखता हूं सूर्यदेव निकल आये। मैं उसी समय सारे दरवाजे और परदे बन्द करके निद्रादेवीकी गोदमें विश्राम करने लगा। फिर तो ८ बजे सवेरे ही आँखें खुलीं। इसी प्रकार जाड़ेके दिनोंमें २२ घण्टोंकी रातें भी होती हैं। उत्तरी ध्रुवमें तो ६ महीनेका दिन और उतनी ही बड़ी रात भी होती है। लोग उस स्थानका भी भ्रमण करते हैं पर यह मेरे सौभाग्यमें न था। फिर भी कितने ही पाठकोंके लिये तो २ घण्टेकी रात ही कम आश्चर्यकी बात नहीं है?

रूसमें बाहरी सिक्कोंका भाव भी मिट्टीके मूल्यका होता है। मुझे तो पहली दफा अपने होटलके खोजनेमें ३५) टेक्सीका किराया केवल डेढ़ घण्टेमें दे देना पड़ा। दुबारा कई आदमियोंने मिलकर टेक्सी की तो कुछ सुभीता पड़ा। एक दिन एक ककड़ी

ली तो उसका दाम भारतीय सिक्कोंके हिसाबसे १॥-) पड़ गया। एक ककड़ीका एक रु० नव आना दाम! क्या यह भारतीयोंको आश्चर्यमें डालनेकी बात नहीं है?

यहाँके लोग इतने गन्दे होते हैं कि उनके पास फटकनेकी इच्छा नहीं होती। एक मैला ढीला-ढाला पायजामा पहनते हैं। उसके ऊपर कुरतेकी तरह एक ढीला कोट पहनते हैं जिसे कमर-से बाँध लेते हैं। शायद यहाँके लोग स्नान करनेका महत्व ही नहीं जानते। हमारे भारतीय लेखक अपनी लच्छेदार भाषामें पाठकोंको रूसके सम्बन्धमें खूब हरे बाग दिखाते हैं पर यदि उन्हे एक वार वास्तविक रूसके परिभ्रमणका सौभाग्य प्राप्त हुआ होता तो शायद ऐसा न लिखते। यहाँके निवासी दो दलोमे विभक्त हैं। एक साम्यवादी, दूसरे पूंजीपति। पूंजीपति इस समयमें पूंजीपति तो नहीं हैं पर खून उनका वही है। इन दो दलोंमें घोड़े और भैंसोंकी-सी दुश्मनी रहती है। एक हिन्दू मुसलमानमें जो अन्तर व्यावहारिक रूपमें देखा जाता है वही यहाँके इन दो दलोंमें है।

नाम तो साम्यवादी रूस है, और साम्यवादमे मनुष्यमात्रको एक दृष्टिसे देखना और सबके भोजन-वस्त्रकी बराबर व्यवस्था करना राष्ट्रका मुख्य कर्त्तव्य है, परन्तु यह बात वहाँ सिद्धान्त रूपसे नहीं पायी जाती। भिखमँगोंकी वहाँ कमी नहीं है। वहाँके

भिखमँगो और भारतीय देव-मन्दिरोंके भिखमंगोंमें केवल इतना ही अन्तर है कि वे कपड़े नहीं पकड़ लेते, लेकिन बड़ी दूरतक दौड़ते चले जाते हैं। यदि ये भिखमँगे साम्यवादी नहीं हैं, तो इन्हें किसी समयमे जार(भूतपूर्व सम्राट्)से किसी न किसी प्रकार-का सम्बन्ध रहा होगा। और यदि ये साम्यवादी हैं तब यह साम्यवादी रूसके लिये कलंककी ही बात है कि उनके शासन-विभागमें इतने भिखमँगे भूखके कारण मारे-मारे फिरते रहें। लोग समझते हैं कि साम्यवादमें धनिकों और गरीबोंको एक दृष्टिसे देखा जाता है। यह भी "दूरकी ढोल सुहावन" वाली कहावत ही है। एक दिन मैं अपने एक मित्रके साथ चाय पीने गया। भीतर एक भिखमँगा घूस आया। मैंने दूकानदारसे कहा, "यह जो कुछ खाना चाहे इसे खिला दो, मैं इसका चार्ज दे दूंगा।" मैं दूकानदारको मनोवृत्तिका निरीक्षण कर रहा था। हमलोगों-की मांगी हुई वस्तुको जिस फुर्ती और उत्कंठासे वह देता था उस गरीबकी ओर वहाँके नौकरोंका वैसा व्यवहार नहीं था। यद्यपि उस आदमीसे भी उन्हें उतना ही मूल्य प्राप्त होता। क्या यह साम्यवादके लिये अपवाद नहीं है? ऐसी कितनी ही बातें यहाँ दिखायी पड़ती हैं जो साम्यवादी रूसके लिये कलंकपूर्ण हैं।

वहाँकी भाषामें और हिन्दीमें कहीं-कहीं विचित्र मेल है और साथ ही कहीं-कहींपर जमीन-आसमानका अन्तर भी है।

जैसे "चाय पी ली" रूसमें भी कहते हैं और इसी प्रकार शकरको भी रूसमे शाकर कहते हैं। किन्तु उच्चारणमें कुछ नाममात्रका अन्तर रहता है। यह भाषा-विज्ञान-विशारदोंके लिये अन्वेषण-की बात है। दही जैसे सीधे-सादे शब्दके लिये रूसमे 'प्रोस्तो-कास्स' जैसा क्लिष्ट और कर्ण-कट शब्दका व्यवहार होता है।

लेनिन-ग्राडमें—ऐतिहासिक नगर और रूसकी राजधानी होनेके कारण बहुतसे—दर्शनीय स्थान हैं। वहाँका अजायब-घर भी अपने ढंगका एक ही है। एक प्रदर्शनमे प्राचीन राजाओं-की व्यावहार्य वस्तुओंका प्रदर्शन किया गया है। उनके हीरे, जवाहर, पहननेकी पोशाकें, रहन-सहन, आमोद-प्रमोदकी वस्तुएं और कलाका प्रदर्शन देखकर आँखें चकाचौंध हो जाती हैं, और अनायास ही यह भावना पैदा होती है कि पूंजीवादी सम्राट् किस ठाट-बाटसे जीवन व्यतीत करते थे। उनके ऐश्वर्यकी एक धुन्धली प्रतिछाया इन प्रदर्शनोंको देखनेसे प्रतिभासित होती है। कालदेवकी महिमा भी बड़ी विचित्र होती है। "रंकको चाहे कुबेर करैं औ कुबेरको द्वार-हि-द्वार फिरावें" कविकी युक्ति कितनी अच्छी है।

शिशु-पालन—

जिस प्रकार भारतमें "तीन लोकसे मथुरा न्यारी" की लोकोक्ति प्रसिद्ध है उसी तरह योरोपमें रूस भी अपनी सब विशेषताओंके लिये अन्य देशोंसे न्यारा है। शिशु-पालनकी व्यवस्था भी यहाँकी अपने ढंगकी निराली है। अन्य देशोंमें स्त्रियोंको घरका काम-काज देखना और सन्तानोत्पत्ति कर उनका पालन करना ही रहता है। किन्तु रूसी महिलाओंको मर्दों की तरह काम भी करना पड़ता है। ऐसी हालतमें जब वे गर्भवती होती हैं तो उन्हें कामसे अवकाश मिल जाता है। जब बच्चा होनेका समय आता है तो वे नर्सिङ्ग होम (प्रसूतिगृह) में जाती हैं, वहाँ योग्य शिक्षित नर्सों (दाइयों) द्वारा जनन
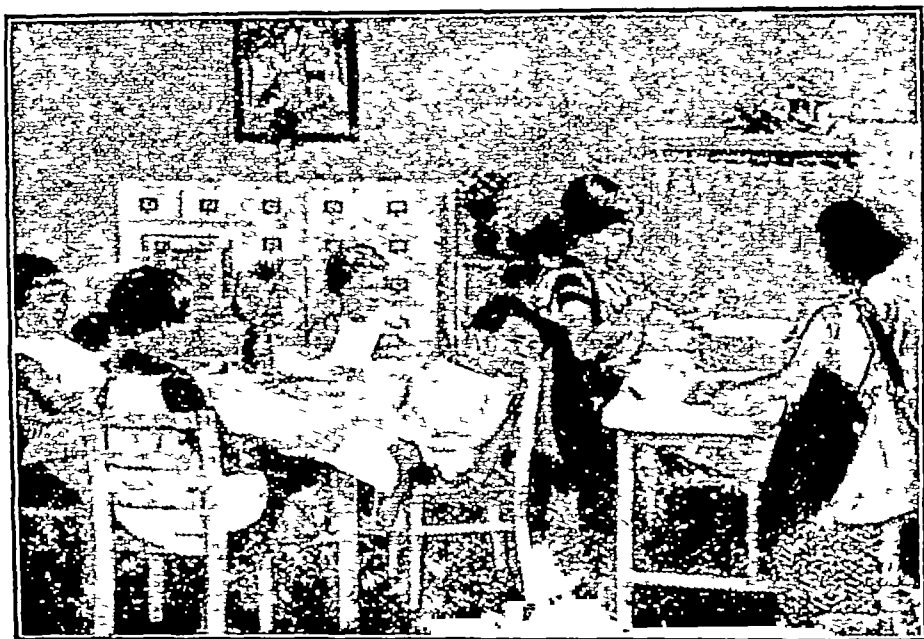
लेनिन ग्राडकी शिशु-शालामें बच्चे पढ़ रहे हैं [पे० २१०]

लेनिन-ग्राडकी शिशु-शालामें बच्चे खेल रहे है [पे० २१०]

गोटा नहर और उसमें चलनेवाला जहाज [पे० २१०
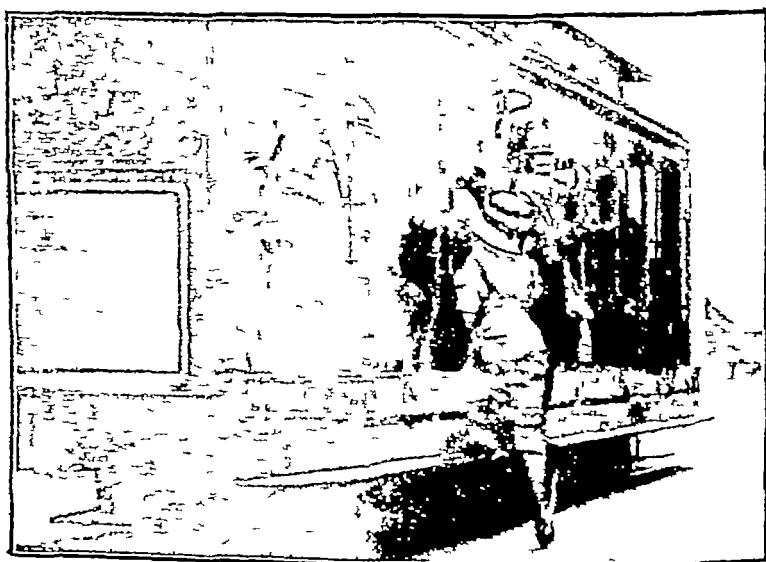
स्टाकहाल्म की खुली ट्राम [पे० २१०]

कराकर सात आठ दिनतक वहीं रहनेके बाद माताएँ अपने घर चली आती हैं। दिनमें कोई-कोई एकाध बार दूध पिला आती हैं और सन्ध्याको बच्चोंको अपने घर उठा लाती हैं। बहुतसी बच्चोंको वहीं रखती हैं। वहाँ बच्चोंकी सेवा-शुश्रूषा वैज्ञानिक ढंगसे होती है जो सर्वसाधारणके लिये सुलभ है। वहाँ अमीर-गरीबका प्रश्न नहीं है। सबके लिये समान व्यवस्था है।

यहाँकी एक बात देखकर मुझे बड़ा कौतूहल हुआ। बच्चोंके कपड़ों, बिछौनों और पलंगोंमें सबके अलग अलग नम्बर लिखे रहते हैं और उसी क्रमसे उनका नाम भी रजिस्टरमें विवरण सहित लिखा रहता है। तुरन्तके पैदा हुए कई बच्चे यदि एक साथ रख दिये जायँ और उनमें कोई खास चिह्न न कर दिया जाये तो माँ बाप ही अपने बच्चोंको न पहचान सकें। वहाँ तो प्रत्येक प्रसूति-गृहमें दो-दो तीन-तीन सौ की संख्यामें बच्चे पलते हैं। मैंने वहाँके व्यवस्थापकसे प्रश्न किया कि यदि किसी कारणसे लेबिल और कपड़े बदल जांय तो आप क्या कर सकते हैं? उसने कुछ संकुचित उत्तर दिया और केवल यही कहा कि यहाँ ऐसा होता नहीं और यदि ऐसा हो भी जाय तो उसी बदले हुए बच्चेको माता अपना बच्चा समझकर प्यार करेगी।

जैसे-जैसे बच्चे बढ़ने लगते हैं उनकी शिक्षा-दीक्षा आरम्भ हो जाती है। इसके लिये अलग व्यवस्था-गृह बने हैं, वहीं वे बच्चे भेज दिये जाते हैं। सबसे पहले उन्हें खिलौने दिये जाते हैं जिसे वे खेलकर अपने-अपने बक्सोंमें उन्हें सुव्यवस्थित ढंगसे रखना सीखें। इसके बाद उन्हें छोटी-छोटी कुर्सी, मेज और आलमारिया दी जाती हैं। आलमारियोमे कौन वस्तु किस स्थानपर रखनी चाहिये इसके चित्र भी बने रहते हैं। बच्चे उसीके अनुसार अपने उपयोगमें आनेवाली वस्तुएं—जैसे कोट, टोपी और कमीज उठाते और रखते हैं। उन्हें उठने-बैठने, खाने-पीने, सोने, कपड़ोंकी सफाई और बदनके साफ रखनेकी शिक्षा दी जाती है। इस प्रकार पांच वर्षके बच्चे इतना सीख जाते हैं कि हमारे यहाँके बारह वर्षके बच्चे भी उतना नहीं सीख पायेगे। यहाँके इतने छोटे बच्चे तो अपने हाथसे दूध-पानी भी नहीं पी सकते, कपड़े ठीकसे रखने पहननेकी तो बात दूर रही। बच्चोंकी शिक्षा माता-पिता द्वारा तभीसे आरम्भ हो जानी चाहिये जब बच्चा खड़ा होने लगे और कुछ बोलने लगे।

इस सुव्यवस्थित संस्थाको देखकर मैंने वहांके व्यवस्थापकसे प्रश्न किया—

"इतने बच्चोंके लालन-पालनका झंझट यहाँकी सरकार अपने सरपर क्यों लेती है? यह काम तो माँ-बापका है।"

उसने बड़ी सहृदयताके साथ उत्तर दिया—“महाशय ! आपका कहना तो ठीक है परन्तु एक तो सब बच्चोंके मां-बापमें पालने-की योग्यता नहीं होती और यदि होती भी है तो उनकी प्रति-कूल परिस्थितियोंके कारण उनका सम्यक् रूपसे वे पालन नही कर सकते।” यही कारण है कि अन्य देशोंकी संतानोंमें कितनी विभिन्नता है। जब यहाँ एक प्रणालीसे लालन-पालन किया जायगा तो सब बच्चोंके स्वभाव और विचार भी प्रायः एक प्रकारके हो सकेंगे। दूसरे यही बालक जो आज दूध पी रहे हैं या बाल क्रीड़ा कर रहे हैं एक दिन लेनिन और सुकरात बन सकते हैं। देशकी बागडोर इन्हींके हाथोंमें रहेगी। यही राष्ट्रके कर्णधार और नियामक हो सकते हैं। इन्हें यहां राष्ट्रके योग्य सैनिक होनेके योग्य बनाया जा सकता है। अभी ये बच्चे ठीक कच्ची मिट्टीकी तरह हैं। इन्हें चाहे जैसा बना लीजिये। बढ़ जाने पर फिर इनका सुधार करना असाधारण काम हो जाता है। यही बालक एक दिन साम्यवादकी पताका विश्वभरमें उड़ानेकी चेष्टा करेंगे।”

व्यवस्थापककी इन बातोंको सुनकर अपने भारतीय बच्चोंके लालन-पालनपर मुझे तरस आने लगी। कितने उच्च विचार थे। यहाँके कितने लेनिन लालन-पालनकी अव्यवस्थाके कारण अकाल ही काल-कवलित हो जाते हैं। माताएं प्रसूति-पीड़ासे स्वर्ग

सिधार जाती हैं। कहीं-कहीं दवाइयोंका प्रबन्ध देखा सुना जाता है किन्तु इन दवाइयोंसे कौन लाभ उठाता है? जिनकी अण्टी काफी गरम होती है। गरीबोंकी रक्षा और शुश्रूषा वो वही कर सकता है जिसने उन्हें गरीबी दी।

स्वीडन

१—स्टाकहालम

(क) अजायबघर

(ख) गोटा नहर

स्टाकहालम—

स्वीडनकी राजधानी स्टाकहालम है। यह भी अपनी सुन्दरताके लिये विश्वविख्यात हैं। समुद्रदेवकी छातीपर बना हुआ टाउनहाल यहाँकी सुन्दर इमारतोंमेंसे एक है। समुद्र और टाउनहालकी शोभा देखते ही बनती है। टाउनहालसे समुद्रकी और समुद्रसे टाउनहालकी शोभा बढ़ जाती है। अस्तु, दोनों एक दूसरेके आभारी हैं। यह हम अपनी दृष्टिसे कहते हैं। टाउनहाल समुद्रकी छातीपर अपने गर्वमें इतरा रहा है।

टाउनहालके तीनों पार्श्वों में समुद्रकी लहरें थपकियाँ लेती हैं और एक तरफ पृथ्वीसे मिला है। यहाँकी सुन्दरता

और जल प्रधानताको देखते हुए यदि हम इसे उत्तरका वेनिस कहें तो कोई अत्युक्ति न होगी।

यह तो सभी जानते हैं कि समस्त योरोप शीत-प्रधान देश है। यहाँ सूर्यदेवका खुलकर निकलना सौभाग्यकी वात समझी जाती है। जिस दिन साफ धूप होती है उस दिन लोगोंमें बड़ी चहल-पहल रहती है। प्रायः लोग आनन्दित होकर धूप सेवनके लिये बाहर निकल जाते हैं। अस्तु, वहाँकी ट्रामगाड़ियाँ भी ऐसी ही बनायी गयी हैं जिससे जनता अपनी यात्राके साथ धूपका भी पूर्णरूपेण उपयोग कर सके। ट्राम-गाड़ियोंके डब्बे खुली छतके होते हैं। उनपर बेञ्चें पड़ी रहती हैं। जनता आनन्दके साथ धूप सेवन करती हुई एक जगहसे दूसरी जगह जाती है।

स्वीडनकी जल-शक्ति किसीसे कम नहीं है। वहाँ जल द्वारा बिजली बहुत अधिक तैयार की जाती है। इससे वहाँ बिजली सस्ती भी हैं। यहाँतक कि गाँवोंमें भी बिजलीका पर्याप्त प्रचार है। किसान लोग बैलोंके खिलाने-पिलानेके झंझटसे बरी हो गये हैं। बिजली द्वारा हल चलाये जाते हैं। खेतीके अन्य कार्य भी विद्युत-शक्ति द्वारा ही सम्पादित किये जाते हैं।

अजायबघर—

यों तो योरोपमें कोई ऐसा शहर न होगा जिसमें सुन्दर अजायबघर न हों किन्तु यहाँका अजायबघर भी अपने किस्मका निराला है। यह किसी मकानमें नहीं है, बल्कि खुली जगहमें इसका प्रदर्शन है। प्राचीन कालकी रहन सहन और वर्तमान रहन-सहनमे कितना अन्तर पड़ गया है यह यहाँके अजायबघरके निरीक्षणसे ज्ञात हो सकता है। प्राचीन कालमें देहातोमे कैसे झोंपड़े बनाये जाते थे। यह यहाँ सुन्दर झोपड़ों-द्वारा बताया जाता है। उन झोपड़ोमे उन्हीं वस्तुओंका संग्रह है जिनका उपयोग उस समयके लोग किया करते थे। अजायबघरके दृश्योंको देखकर श्रान्त-पथिकोको बहुत कुछ विश्रान्ति मिलती है।

गोटा नहर—

इस गोटा नहर (Gota Canal) को समुद्र तलसे १०० मीटर (३०० फुट) ऊपर चलना पड़ता है। नहर द्वारा जहाज ऊपरको चले, यह यहाँके वीर वैज्ञानिकोंकी प्रज्ञाका प्रताप है। नहर इतने ऊंचे तक कैसे जाती है और जहाज इतनी ऊँचाईपर कैसे चढ़ जाते हैं, इसके बतलानेके पूर्व इस नहरके सम्बन्धमें यहाँ जो मनोरञ्जक दन्त कथा प्रसिद्ध है उसका उल्लेख कर देना अधिक उचित प्रतीत होता है।

इस नहरका निर्माण सन् १८३२ में हुआ था। जब वहाँके राजाको इस नहरकी आवश्यकताका अनुभव हुआ तो उसने इसके लिये प्रजासे जमीन माँगी। पहले तो लोगोंने जमीन देना

स्वीकार कर लिया किन्तु फिर यह सोचकर कि कितनी खेती-की जमीन नष्ट हो जायगी; जमीन देनेसे इन्कार कर दिया। राजाको इस बातकी बड़ी चिन्ता हुई। राजा भी न्याय-परायण था। जबर्दस्ती किसीकी सम्पत्ति अपहरण नहीं करना चाहता था। एक दिन उसके मंत्रीको एक उपाय सूझ पड़ा। उसने राजासे कहा "देखिये मैं अभी किसानोंसे उनकी इच्छाके अनुसार ही जमीन लिखा लेता हूं कोई चूं तक न करेगा। राजाको भी मंत्रीकी बातपर आश्चर्य हुआ। किन्तु मंत्री था बुद्धिमान,उसने किसानों-की एक सभा बुलायी और उन्हें समझाया कि तुम लोग क्यों मूर्खता करते हो जो जमीन नहीं देते ? यह तो राजा लोगोंकी सनक है, मुंहसे निकल गया कि ऊंचे स्थानोंपर भी नहर जानी चाहिए। बस पैसा फूंकने लगे। आखिर तुम लोग तो समझदार हो, क्यों राजाको साधारण बातके लिये अप्रसन्न करते हो। उसके रुपये खर्च होते हैं, कर लेगा और बादको हार मानकर बैठ रहेगा। तुम्हारी जमीन तुम्हारे पास रहेगी। और उसका दाम भी मुफ्तमें ही मिल जायगा। राजा भी तुमसे प्रसन्न हो जायेगा। क्या कहीं जहाज भी पहाड़ोंपर चढ़ सकते हैं ? किसानोंने मंत्रीके चकमेमें आकर जमीन राजाको दे दी। आज उसी जमीनपर गोटा नहर बनी हुई है और बड़े-बड़े जहाज आ-सानीसे आते-जाते हैं। इस नहरकी लम्बाई ३०० माइल है।

जब नहर समुद्रसे निकलकर ऊँची भूमिपर चढ़ती है तब बीच-बीचमे झीलों और नदियोंसे भी इस नहरको सहायता मिलती है। अब प्रश्न यह उठता है कि नहर ऊपरको कैसे जाती है और जहाज ऊपरसे नीचे और नीचेसे ऊपर कैसे आते जाते हैं? हम अपने पाठकोंको जहाजके ऊपर नीचे जानेवाले प्रबन्धको समझानेका प्रयत्न करते हैं। जहाज समुद्रसे चलकर जब नहरमें घुसता है तब थोडी दूर चलनेपर उसे एक फाटकपर रुकना पड़ेगा। फाटकके उस पार इस नहरका ऊपरी हिस्सा है। सामनेका फाटक खोलकर जहाजके पीछे भी फाटक बन्द कर दिया जायगा। इस प्रकार सामनेका फाटक खुला नहीं कि ऊपरका पानी आकर जहाजवाले हिस्सेमें भरकर दोनोंकी सतह बराबर कर देगा, क्योंकि जहाजकी दुमके पास भी फाटकके द्वारा पानी रोक रखा गया है। जब जलकी सतह बराबर हो जाती है तो जहाज पूर्णगतिसे आगे बढ़नेमें समर्थ हो जाता है। इसी क्रमसे तीन दिनमें जहाज नार्वेसे स्वीडन पहुँचता है और स्वीडनसे नार्वे आनेमें भी इसी प्रकार फाटकोंको खोलते और बन्द करते हुये तीन दिनोंमें वापस आता है। अपने इस आश्चर्य और आकर्षणमे यह नहर संसारमे प्रख्यात है।

डेनमार्क

डेनमार्क—

डेनमार्क यात्रियोंके लिये कुछ विशेष आकर्षण नहीं रखता। फिर भी यदि यात्री उधर निकले तो वहाँ भी कुछ-न-कुछ दर्शनीय स्थान मिल ही जायेंगे, योरोप ही ठहरा। यहाँकी भूमि समतल है, यहाँका सबसे ऊँचा पहाड़ २०० फीट है जिसे यहाँके लोग हिमालयका महत्व देते हैं। स्वदेशाभिमानी पथ-प्रदर्शक अपने यहाँकी इस प्रकृति-प्रदत्त विभूतिको गौरवान्वित दृष्टिसे देखते हैं। वे दर्शकोंसे बड़े गर्वके साथ कहते हैं "देखिये यह हमारे यहाँ २४००० सेण्टीमीटर (१ इंचका दसवां भाग) ऊंचा पहाड़ है। बेचारे ऊंचाई अधिक बतलानेके लिए फुट गजकी जगहपर सेण्टीमीटर बतलाते हैं तब भी

भारतके पर्वतोंके नीचे ही रह जाते हैं, यहाँ तो २०० फीट ऊंचे पहाड़ टीले कहे जाते हैं। पहाड़ोंमें उनकी गणना ही नहीं होती।

समतल भूमि होनेके कारण यहाँ साइकिलोंका बड़ा प्रचार है। योरोपमें क्या कहीं भी एक साथ इतनी साइकिलें देखने-में नहीं आती। पुलिसने हाथ दिखाया नहीं कि हजारों साइ-किलें खडी हो गयीं। साइकिलें भी विचित्र होती हैं। एक साइकिलपर दो-तीन आदमी तो यहाँ भी चढ़ते देखे जाते हैं, परन्तु वे डण्डेपर बैठते हैं या पीछे खड़े रहते हैं। सीटपर बैठनेवालेको ही सब परिश्रम करना पड़ता है। दूसरे यहाँ कई आदमियोंके चढ़नेका नियम नहीं है। जो ऐसा करते हैं वे नियमकी अवहेलना करके ही ऐसा करते हैं। डेनमार्कमें यह बात नहीं है। वहाँ आगे-पीछे कई सीटें बनी रहती हैं जिनपर लोग आसानीसे बैठ सकते हैं। बैठनेवाले मौज करें और चलानेवाला पिसे सो बात भी वहाँकी साइकिलोंमें नहीं है। साइकिलें आवश्यकतानुसार लम्बी बनाई जाती हैं। जितनी सीटें होती हैं उतने ही पैडल भी लगे होते हैं। यदि तीन आदमी बैठे हैं तो तीनों बराबर पैर चलाते रहते हैं। क्या पाठक इस किस्मकी साइकिल देखकर कौतूहल अनुभव नहीं करेंगे। कितना मजा आता है। एक नहीं हजारों आदमी इसी

प्रकार साइकिलपर चढ़े पैर चला रहे हैं। यह दृश्य देखते ही बनता है। इस देशको साइकिलोंका प्रदर्शन कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी। साइकिलोंके प्रचारके कारण यहाँके कारपोरेशनको भी साइकिलोंके आवागमनकी सुविधाके लिये अलग सड़कें बनानी पड़ी हैं। इस प्रबन्धसे साइकिलें एक साथ चलती हैं, इससे रोचकता और भी बढ़ जाती है।

यहाँ हमें पथ-प्रदर्शकसे सहायता नहीं लेनी पड़ी, क्योंकि एक पत्र-सम्पादक मिल गये थे जिनके सौजन्यपूर्ण व्यवहारसे बड़ी प्रसन्नता हुई। वे हमारे लिये मनोरंजनके विषय थे और हम उनके लिये। वे भारतवर्षके सम्बन्धमें अनेक प्रकारकी बातें पूछते थे और नोट करते जाते थे। विश्वकवि रविबाबू और महात्माजीके सम्बन्धमें भी सम्पादकजीने कई प्रश्न किये थे। उन्होंने इन प्रश्नोत्तरोंको अपने पत्रमें प्रकाशित करनेके लिये नोट किया था, पर वह प्रकाशित हुआ या नहीं इसका कुछ पता नहीं।

बातचीतके सिलसिलेमें कई युवतियाँ भी एकत्र हो जाया करती थीं। जब विवाहादि विषयोंपर चर्चा चली और मैंने बतलाया कि भारतमें तेरह चौदह वर्षसे अधिक उम्रकी लड़कियाँ क्वांरी नहीं रह जातीं चाहे वे अमीर हों या गरीब, सुन्दर हों या कुरूपा; कुबड़ी या लंगड़ी ही क्यों न हो! सब व्याह-बन्धनमें

जकड़ दी जाती हैं। शायद ही कोई इससे अधिक उम्रकी अविवाहित रह जाती हो। मेरी इन बातोंको सुनकर सम्पादकजी और अन्य स्त्रियाँ आश्चर्य-चकित हो जाती थीं। वे बड़ी प्रतिस्पर्धाकी दृष्टिसे देखती हुई कहती थी, तब तो भारतमें ही जन्म लेना अच्छा है जिसमें लड़कियाँ कांरी तो नहीं रह सकतीं। मैंने कहा, लड़के भले ही कांरे रह जायँ पर लड़कियाँ नही रह सकती। उन लोगोंने इस बातसे प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा—"दुर्भाग्यकी बात है कि हममेंसे कितनी ही ६०-६५ वर्ष तककी लड़कियाँ हैं जो अबतक विवाहके लिये तरसती हैं। कितनी ही तो अविवाहित ही मर भी जाती हैं।

मनोरञ्जनके लिये यह एकदम शुष्क स्थान नहीं है। कार्निवल (कौतूहलगृह) और थियेटरहाल भी बहुत अच्छे हैं, जिनमें काफी चहल-पहल रहती है। हाँ, यह कहा जा सकता है कि योरोपके अन्य देशोंके सामने वे अपनी अलग महत्ता और विशेषता नही रखते।

यात्राके मनोरञ्जक स्मरण

साफेकी प्रभुता—

लण्डन-स्थित आर्य-भवनके लिये एक रसोइयेकी आवश्यकता थी। अस्तु, उसके संचालकोंने हमलोगोंके साथ यहाँसे एक रसोइया भेज दिया था। जब हमलोग योरोप पहुँचे तो वहाँके लोगोंमें रसोइयेके प्रति बहुत सम्मान पाया, यानी उनकी दृष्टिमे हमलोग तो साधारण यात्री थे और मिश्रजी राजा-महाराजा थे। ऐसा वहाँके लोग अनुभव करते थे। सब लोग उनसे दबकर चलते थे। यहाँतक कि कितने ही योरोपियन तो आपको झुककर सलाम भी बजाते थे। कितने लोग उत्सुकताकी दृष्टिसे उन्हें देखा करते थे और आसपास चक्कर भी लगाया करते थे। किन्तु बात करनेका साहस न होता था। हमलोगोंसे बात करनेमें कोई भी

इस प्रकार अदब और तकल्लुफ़ नहीं दिखाता था। हमलोग आश्चर्यचकित थे कि यह कैसी अन्धेर नगरी है, जहाँ हम-लोगोंसे अधिक हमारा रसोइया सत्कारकी दृष्टिसे देखा जा रहा है। लोग उसके लिये डरते हुये रास्ता छोड़ देते हैं, सलाम करते हैं, बोलनेकी इच्छा रखते हैं, और जिससे वे बोल लेते हैं वह अपनेको गौरवान्वित समझता है। इसका क्या कारण है? कारण जाननेके लिये हमलोगोंको विशेष उलझन नहीं पड़ी। मालूम हुआ कि भारतके राजे-महाराजे प्रायः साफा लगाकर आते हैं, इसीसे वे पहचाने जाते हैं और प्रचुर धन व्यय करनेके कारण प्रसिद्ध भी खूब हो जाते हैं। इतना जाननेपर हम-लोगोंको ज्ञात हुआ कि यह सब साफा महोदयका चमत्कार है।

सरका अभ्यास—

भारतमें अंग्रेजोंको 'सर' कहकर सम्बोधित करनेका अच्छा अभ्यास पड़ गया है। इस अभ्यासकी नींव स्कूलोंसे पड़ने लगती है। लड़के मास्टरोंको 'सर' कहकर सम्बोधित करते हैं। जहाजमें जितने कर्मचारी होते हैं वे सब अंग्रेज हुआ करते हैं। यहाँतक कि झाड़ू देनेवाले और पाखानेकी सफाई करनेवाले भी अंग्रेज ही होते हैं। वे यात्रियोंको 'सर' कहते हैं और उनका कहना भी उचित है। भारतीय यात्री उन्हें साक्षात् अंग्रेज बहादुरके रूपमें देखकर अपने अभ्यासानुसार 'सर' कह देते हैं। वे इनकी भूलका अनुभव करते हैं और कोई-कोई तो इस भूलपर हँस भी देते हैं। हमारे साथ एक मिस्टर 'दे' थे, वे 'सर' कह दिया करते थे। पीछे हमलोगोंके हर बार टोकते रहनेपर उनकी आदत छूट गयी।

काले रंगपर आश्चर्य—

यूरोपमें काले रंगके मनुष्योंको देखकर लोग कौतूहलका अनुभव करते हैं। ठीक उसी तरह जैसे यहाँकी देहातोंमें अङ्गरेजोंको देखकर। एक दिन हमलोग पेरिसमे अपने एक मद्रासी मित्रके साथ भ्रमण कर रहे थे। वे जरूरतसे कुछ अधिक काले थे। एक कुंजड़िनसे हमलोगोंने कुछ फल आदि खरीदे। उसे मद्रासी महाशयके रंगपर आश्चर्य हो रहा था। वह कौतूहल पूर्वक दोनों हाथोंको उनके गालोंपर फेरकर फिर अपनी हथेलियोंको चकित दृष्टिसे देखने लगी। गोया उसका अनुमान था कि उनके गालोंपरकी काली उसकी हथेलियोंमें लग गयी होगी, परन्तु हाथ ज्यो का-त्यों था इससे उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वह समझती थी कि मद्रासीने काला पौडर लगा रखा है।

पूड़ियोंकी छीन-झपट—

भारतीय मित्रोंके खान-पानमें बड़े मजेकी वेतकल्लुफी देखनेमें आती है। एक दूसरेके हाथसे पूड़ी-मिठाई छीनकर खा लेनेमे यहाँ जो आनन्द और मित्र-प्रेम प्रकट होता है वह योरोप-वालोंकी दृष्टिमें असभ्यतापूर्ण समझा जाता है। आर्य-भवनमें हम कई मित्र एक साथ रहते और खाते-पीते थे। कभी-कभी पूड़ियोंकी कमीपर जब रसोई घरसे दो-दो चार-चार पूड़ियां आने लगतीं उस समय हमलोग अपनी पुरानी आदत वर्तने लगते। जब अंग्रेज महिला पूड़ियाँ लेकर परोसने आती वो जिसके पास जाती वह सब पूड़ियाँ उठाकर अपने सामने रख लेता। वाकी लोग दुबारा आने तकके लिये खानेवालेका

मुँह देखा करते और हमलोग इस प्रकार मनोरञ्जनके साथ भोजन करते। योरोपमे परोसनेका नियम नही है। परोसनेवाली आपके सामने तश्तरी कर देगी, आपका कर्त्तव्य है कि जितने आदमी वहाँ बैठे हों उसी हिसाबसे उसमेंसे निकालें जिससे सबको बराबर खानेकी चीजें मिलती रहें, किन्तु हमलोगोंमें ऐसा नही होता था। जिसके सामने भोजन आया वही उसका भोक्ता बन गया। एक दिन परोसनेवालीसे न रहा गया और उसे पूछना ही पड़ा कि यह क्या बात है? हमलोगोंने उसे समझा दिया कि हमारे इस व्यवहारसे एक दूसरेमें क्षोभ नहीं बल्कि प्रेम प्रदर्शित होता है।

कैमरेपर प्रतिबन्ध—

इटलीमें कोई हवाई जहाजसे इटलीके ऊपरी दृश्योंका चित्र कैमरे द्वारा नहीं ले सकता, ऐसा वहाँका कानून है। मेरा कैमरा ऐसा बना था कि वह ऊपरसे सीलमुहर लगा देने-पर भी काममें लाया जा सकता है। जब वहाँके आफिसरने कानूनके अनुसार मेरे कैमरेमें सीलमुहर कर दी तो मैंने उनसे अपने कैमरेकी विशेषता बतलाते हुए कहा कि हमारे कैमरेपर आपकी सील और कानूनका कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता क्योंकि इसका लेंस बाहर है और मैं इसका उपयोग भलीभाँति कर सकता हूँ। आफिसरने हँसते हुए कहा—मैंने तो कानून की लकीर पीट दी अब आपकी इच्छा चाहे इसे जिस तरह काममें ला सकते हैं। विज्ञान और बुद्धिको कानून कभी अपने वशमें नहीं कर सकता।

स्त्रियोंकी मूछें—

पाठकोंको यह जानकर आश्चर्य होगा कि इटलीमें मूछदार स्त्रियाँ भी दिखायी पड़ती हैं। उनकी मूछे बहुत बड़ी तो नहीं होती फिर भी २५ वर्षीय नवयुवकोंसे छोटी भी नहीं होती। जिन स्त्रियोंके मूछ निकल आती है वे अपने लिए उन्हें जहमत ही नहीं दुर्भाग्य भी समझती हैं। मूछोंसे चेहरेको सुरक्षित रखनेके लिए उन्हे वे मुड़ा देती हैं किन्तु मुड़ानेसे वे सुरसाकी तरह और भी विस्तारसे बढ़ने लगती हैं। बेचारी मूछदार स्त्रियाँ क्या करें, यह उनके लिए एक विकट समस्या उपस्थित हो जाती है। पाश्चात्यदेशीय वैज्ञानिकोंकाइस ओर अभी तक ध्यान नहीं गया, यह भी आश्चर्यकीही बात है। यदि कोई आविष्कारक मूछ-नाशक प्रयोग प्रस्तुत कर दे तो वह मूछदार स्त्रियोंके धन्यवादका पात्र होगा।

शाकाहारी हैं, केवल फलाहार कर लेंगे। उन्होंने अपने घरपर मेरे लिये दूध और फलोंका बड़ा अच्छा प्रबन्ध किया। उनके घरकी स्त्रियोंने बड़े प्रेमसे कहा—"यदि आप मांस नहीं खाते तो कोई हर्ज नहीं। यहाँकी मछलियाँ बहुत अच्छी होती हैं उन्हें ही खा लीजिये, नहीं तो अण्डोंके खानेमें तो कुछ हर्ज नहीं है। जब हमने प्रेमभावसे उन्हें बतलाया कि भारतमें शाकाहारी लोग मांस, मछली और अण्डेमें कोई अन्तर नहीं समझते, तो उन्हें बडा आश्चर्य हुआ। क्योंकि यहाँ तो मछलियाँ और अण्डे साफ फलाहार ही समझे जाते हैं। हमारे धार्मिक भावको देखकर उन्होंने यह भी कहा कि भोजन और धर्मसे क्या सम्बन्ध। धर्म दूसरी वस्तु है और भोजन दूसरी। हमने उन्हें समझाया कि भारतीय धर्मका भोजनके साथ बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध समझते हैं। और समझें क्यों न! "जैसा खाय अन्न, वैसा होय मन।"

फलाहारपर कौतूहल—

हमलोग फ्रान्सके दर्शनीय स्थानोंका मोटर द्वारा भ्रमण कर रहे थे। यात्रियोंमे कई योरोपियन महिलाएं भी थीं। मैं जहाँ खानेकी इच्छा होती दूध और फलकी खोज किया करता और महिलाएं चीज और वियर सेंडविच तथा मांसकी अनेक चीजोंसे पेट भरा करतीं। हमलोगोंकी भोजन-प्रणालीपर उन्हें बड़ा कौतूहल होता था। आखिरकार एक विनोदिनी महिलासे न रहा गया। उसने मुँह बनाते हुए कह ही तो दिया "You Saravgi Baby always milch milch milch" इस टूटी-फूटी अङ्गरेजीका भावार्थ था कि "मिस्टर सरावगी तुम बच्चोंकी तरह हमेशा दूध! दूध चिल्लाते रहते हो।"

टिप देनेकी प्रथा—

यूरोपमें टिप (Tip) देनेकी अनिवार्य प्रथा है। टिप पुरस्कारका द्योतक है। जिस स्थानपर जाइये विना टिप दिये पिण्ड नहीं छूटता। अंग्रेजोंको तो भारतमें भी टिप देनेकी आदत पड़ गयी है। १) का सिग्रेट लेंगे तो नौकरको १~) देही देंगे। वहाँ टेक्सीपर वैठिये, जहाँपर उतरना हो और जितना भाड़ा उठा हो कमसे-कम उससे १० प्रतिशत अधिक तो वहाँ देना ही चाहिये। धनाढ्योंको सवाया और राजे-महाराजाओंको डेढ़ा अधिक देना चाहिए। जो भारतीय यहाँसे जाते हैं और टिप प्रथाको नही जानते उन्हें कभी-कभी शर्मिन्दा भी होना पड़ता है। चार आनेकी चाय पीजियें तो होटलके नौकरको

पाँच आने दे दीजिये। टिप प्रथाका एकमात्र कारण यही है कि यहाँ वैतनिक नौकर नहीं रखे जाते। टेक्सी ड्राइवर केवल इनामपर काम करते हैं। जितना भाड़ा उठेगा वह मालिकके पास जायगा, टिप ड्राइवरको मिलेगा। इसी प्रकार होटलके नौकरोंको भी अवैतनिक ही क्या अपने पाससे रुपया जमा करनेपर कहीं काम करनेकी आज्ञा मिलती है। इस प्रकार अवैतनिक काम करनेपर भी उन्हें काफी आय हो जाती है। लण्डनमें एक दिन हमारे एक भारतीय मित्र-एक टेक्सी ड्राइवरसे अपनी बहादुरी दिखानेके लिये उलझ पड़े। उनका यह उलझना गोया यह प्रकट करता था कि मैं योरोपमें किसीसे डरता थोड़े ही हूं, जो उचितसे अधिक दे दूं। जब ड्राइवरने और लोगोंसे पूछनेको कहा तो सबने टिप प्रथाका समर्थन किया। अब तो हमारे मित्र महोदयको बहादुरीके बदलेमें शर्मिन्दगी वापस मिली।

मि० दत्तकी खोज—

बर्लिनमें एक दिन मैं एक फोटोवालेके यहाँ अपना फोटो उतरवाने गया। वहाँपर एक नववयस्का सुन्दरी बैठी थी। उसने मुझसे प्रश्न किया "आप कहाँके रहनेवाले हैं?' मैंने कहा "मैं भारतवर्षका निवासी हूं।" उसने बड़ी उत्सुकतासे प्रश्न किया "इण्डियामें आप कहाँ रहते हैं?" जब मैंने कलकत्ता बताया तो वह बहुत प्रसन्न हुई और विशेष उत्कण्ठा दिखलाते हुए कहा "तब तो आप मिस्टर दत्तको अवश्य जानते होंगे।"

उसकी उत्सुकतापर मुझे कुछ कौतूहल हुआ। मैंने उससे दत्तके सम्बन्धमे प्रश्न किया, तो उसने बतलाया "मि० दत्त मेरे सहपाठी रह चुके हैं और मेरे घनिष्ठ मित्र थे।" मैंने कहा

"कलकत्ता बर्लिन तो है नहीं कि वहाँ भी एक ही मि० 'दत्त' हों। कलकत्तेमें तो हजारों मिस्टर 'दत्त' हैं।" तब यह निश्चयात्मक रूपसे हम कैसे बतला सकते हैं कि 'दत्त' के इतने बड़े समूहमें आपके मिस्टर दत्त कौन हैं? जबतक कि उनका विशेष परिचय न मिले। उस नवयुवतीने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा क्या कलकत्तेमें हजारों मिस्टर 'दत्त' हैं?" मैंने कहा "हजारों क्या इससे भी अधिक।" तब तो उसके आश्चर्यका ठिकाना न रहा। उसने कहा "तब पता कैसे चलता है?" मैंने जब उसे समझाया कि 'दत्त' नाम नहीं बल्कि जातिकी उपाधि है तब यह गोरख धन्धा उसकी समझमें आया।

तीन रुपयेका दही—

यूरोपियन भाषाओंसे अपरिचित होनेसे कई स्थानोंमें बेवकूफ बनना पड़ता है। एक दिन मैंने पोलैण्डके प्रसिद्ध नगर पोज़नकी एक दूकानपर दही लिया। जब दाम पूछा तो उसकी भाषाका अर्थ ठीक न समझ सका। तीन उंगलीके इशारेपर मैंने ३) समझकर दे दिया। उस बेचारीने मेरी भूलका दुरुपयोग न करके ३ पैसे जो उचित दाम थे ले लिये और शेष मुस्कराते हुए वापस कर दिया। उसकी मुस्कराहटने उल्लू बननेमें जो कसर थी उसे पूरी कर दी।

कोल्ड माने गरम—

दूसरी भाषा सम्बन्धी भूल थी। कोल्ड (Cold) माने गरम । जबसे भारतवर्षमें बच्चे ए० बी० सी० पढ़ने लगते हैं उन्हें 'कोल्ड माने ठण्डा' बतलाया जाता है। जर्मनीमे मैंने एक दूकानपर (Cold Milk) ठण्डा दूध माँगा। उसने खूब गर्म दे दिया। जब मैंने झुंझलाकर कहा "भाई मैंने तो 'कोल्ड मिल्क' (ठण्डा दूध) माँगा था, आपने उबलता हुआ गर्म दूध क्यों दे दिया ? यहाँ भी उसने मुस्कराते हुए उत्तर दिया "महाशय ! जर्मन-भाषामें कोल्ड गर्मको कहते हैं ।" उसकी मुस्कुराहटसे मुझे झेंप और झुंझलाहट दोनों हुई। यह भाषा है या भानमती-का पिटारा।

फलोंका उपयोग—

योरोपमे फलखानेका खूब रिवाज है। फलोंमें सेवको सबसे अधिक महत्ता दी जाती है। योरोपियनोंका ख्याल है कि एक सेव रोज खानेसे डाक्टरोंकी आवश्यकता नहीं रहती। स्वास्थ्य-रक्षाके विचारसे हमलोग भी सेवका सेवन नियमित रूपसे किया करते थे। एक दिन मैं गाड़ीमें बैठा सेव छील रहा था। पासमें एक अंग्रेज महाशय भी बैठे थे। मैंने एक सेव उन्हें भी दिया। जितनी देरमें मैं सेव छीलकर एक टुकड़ा मुंहमें डाला उतनी देरमें ही वे महाशय सारी सेव छिल्के सहित साफ कर गये। वे मेरे खानेके ढंगको कौतुकपूर्ण दृष्टिसे देख रहे थे और मैं उन्हे देख रहा था। मुझे उन्हें बन्दरोंकी तरह फल खाते देख कौतूहल हो रहा था और उन्हें मेरे सेवसे छिलके हटाकर खानेमें।

योरोपकी संस्थाएं

१—रेलवे

२—यहांके पण्डे (Travellers Agencies)

३—पुलिस-विभाग

४—होटल

(क) खाद्य-पदार्थ

(ख) भोजन करनेका नियम

५—आमोद-प्रमोदके साधन

(क) सिनेमाघर

(ख) तमाशोंको टिकट बेचनेवाली कम्पनियाँ

६—शिक्षा-संस्थाएं

(क) विदेश जानेवाले शिक्षार्थियोंसे

७—चिकित्सालय

८—स्टोर्स

रेलवे—

सबसे सुन्दर और स्वच्छ रेलवे इङ्गलैण्डकी है। इसका प्रबन्ध भी बहुत सुन्दर है। इङ्गलैण्डका थर्ड क्लास भारतके फर्स्ट-क्लासके डिब्बोंसे कहीं अच्छा होता है। फिर तो सेकेण्ड और फर्स्टक्लासके सम्बन्धमें कहना ही क्या। वहाँके डिब्बे काफी लम्बे होते हैं। उन डिब्बोंमें दो दरवाजे होते हैं। एक आगे और एक पीछे। डिब्बेके एक तरफ तो छोटा रास्ता गली-नुमा डिब्बेके एक छोरसे दूसरे छोरतक लगभग २॥ फुट चौड़ा होता है। बाकी जगहमे छोटी-छोटी ६-७ कोठरियां होती हैं। हर एक कोठरीमें दोनों तरफ दो बेञ्चें होती हैं। प्रत्येक बेञ्चपर ५-५ आदमी बैठ सकते हैं। इस प्रकार कोठरीमे १० व्यक्ति और

हर डिब्बेमें लगभग ६० व्यक्ति बड़े आरामसे यात्रा कर सकते हैं परन्तु कोठरियाँ और वेञ्चोंका नाम सुनकर आप घबड़ा न जायं। वे कोठरियां और वेञ्चें यहांकी तरह गन्दी नहीं होतीं। वे सुन्दर मखमलोंसे मढ़ी होती हैं । सरदीसे बचनेके लिए सीटके नीचे अँगीठियां लगी होती हैं। इन अँगीठियोंमें गरम पानी सदा दौड़ता रहता है, जिससे सीटें गर्म रहती हैं और इससे यात्रियोंको सरदीका अनुभव ही नहीं होता। सीटोंके ऊपर टोपियोंके टाँगनेके लिए खूंटियां लगी होती हैं। उनके ऊपर अन्य प्रकारके सामान रखनेके लिए छोटी-छोटी ट्रेकें भी होती हैं। इस प्रकार यात्रियोंकी सुविधाके लगभग सभी सामान (Rack) प्रस्तुत रहते हैं। उक्त विवरण केवल सजावट-का है, परन्तु अन्यान्य सुविधायें जैसी कि भारतमें हैं वहां भी अनिवार्य हैं। जैसे गाड़ीकी बढ़ियां स्प्रिंग, खतरेकी जञ्जीर और कांच तथा लकड़ीकी खिड़कियोंका सुव्यवस्थित रूपसे होना। डिब्बेकी दोनों तरफ एक-एक ट्वायलेट रूम (Toilet Room) रहता है जिसमें रेलवे कम्पनी द्वारा रखे हुए गमछे साबुन पड़े रहते हैं। इसी कोठरीमें शौच-स्नानादिका पूरा प्रबन्ध रहता है। ठण्डे और गर्म पानीकी कल, शीशे एवं अन्य इस सम्बन्धकी उपयोगी वस्तुएं भी रहती हैं। डिब्बेकी यह छोटी गली यात्रियोंके चलने-फिरनेके काममें आती है। इसमें चारों तरफ सुन्दर स्थानों-

के दृश्योंके चित्र लगे रहते हैं। इससे कई लाभ होते हैं। एक तो रेलवे कम्पनीका विज्ञापन होता है दूसरे वह स्थान भी सुसज्जित हो जाता है। तीसरे खड़े या चलते हुए यात्रियोंको उनके देखनेमें दिल बहल जाता है। यहाँकी प्रत्येक ट्रेनमें लगभग ८ से १४ तक डिब्बे लगे रहते हैं। इन ट्रेनोंमें यात्रियोंके एक किनारेसे दूसरे किनारे तक घूमनेमें कोई असुविधा नहीं होती, गोया ट्रेनभरमे एक ही डिब्बा है। साथ ही गाड़ीके दूसरे यात्रियोंको किसी प्रकारकी असुविधा भी नहीं होती। थर्ड-क्लास और सेकेण्ड एवं फर्स्ट क्लासमें केवल अन्तर इतना ही रहता है कि उनमें अधिक सजावट रहती है और मखमल भी अच्छा लगा रहता है।

फर्स्ट क्लासकी बेंचपर ३ और सेकेण्ड क्लासकी बेचपर ४ आदमी बैठ सकते हैं। उपर्युक्त डिब्बोके अतिरिक्त मेल ट्रेनोंमें दो सोनेके डिब्बे भी होते हैं, जिसमें यात्रियोके सोनेका पूरा प्रबन्ध रहता है। एक कमरेमें किसीमें दो आदमियोंके और किसीमें एक ही आदमीके सोनेका प्रबन्ध रहता है। सोनेके वक्त सीट बिस्तर (पलंग) के रूपमे परिणत की जा सकती है और दिनमें वे ही दो सीटें बन जाती है। तकिया, कम्बल, और बिछौनेका पूरा प्रबन्ध रहता है। इसके अतिरिक्त रेलवे कम्पनीकी तरफसे नौकर रहता है जो कमरेमें लगी घण्टीको बजाते ही

सब काम करनेके लिये प्रस्तुत रहता है। हर सोनेके कमरेके साथ एक-एक ट्वायलेट रूम (Toilet Room) भी रहता है जिसमें मुँह-हाथ धोनेका प्रबन्ध रहता है। गाड़ियाँ बहुतायतसे छूटती रहती हैं इसलिये वहाँकी जनता भी आराम पसन्द और समझदार बन गयी है। गाड़ीके समयपर उन्हें न तो भगदड़ करनी पड़ती है और न गेट-इन्सपेक्टर, बुकिंगक्लर्क, और टिकट-चेकर आदिकी ही खुशामद या जेब ही गरम करनी पड़ती है। योरोपमे रेलवे कम्पनियोंकी टिकटें शहरोंमे कई स्थानोंपर मिलती हैं। यहाँके टिकट इन्सपेक्टर आदिका व्यवहार नौकरोंका सा होता है। ये अपनेको जनताका नौकर समझते है और बात भी यही है। वहाँके कुलियोंको रेलवे कम्पनी वेतन देती है। अस्तु, काम करनेके बाद उन्हें जो पुरस्कार-स्वरूप दे दिया जाता है उसे वे धन्यवाद (Thank-you) के साथ स्वीकार करते हैं।

यात्री लोग अपनी-अपनी सीटोंपर जाकर चुपचाप बैठ जाते हैं। वे एक सीटसे ज्यादा स्थान नहीं रोकते। अगर किसी समय रोक भी लेते हैं तो जैसे ही दूसरा यात्री आता है वे झट स्थान खाली कर देते हैं। उन्हें ऐसा कहनेकी आदत नहीं कि मेरा साथी अमुक कामके लिये बाहर गया है। अभी आता ही है। उसी प्रकार आनेवाला यात्री भी जब देख लेता है कि सब

सीटें भरी हुई हैं तो वह बाहरवाली गलीमें खड़ा हो जाता है परन्तु बैठे हुए यात्रियोंको कष्ट देकर उनके बीचमें बैठना नहीं चाहता।

खाने-पीनेका सामान, फल आदि कांचसे ढकी हुई गाड़ियोंमें यात्रियोंको एक मूल्यमे ही बेंचा जाता है। यात्रियोंको खाने-पीने, रहने और सोने-बैठने इत्यादि के आरामका पूर्ण प्रबन्ध होनेके कारण उन्हें अपने साथ ज्यादा सामान भी नहीं ले जाना पड़ता।

अधिक आरामपसन्द यात्रियोंको भाड़ेपर तकिये भी मिलते हैं। यात्रियोकी सीटका नम्बर लिखकर भाड़ेपर तकिये दे दिये जाते हैं। भाड़ा पहले ही ले लिया जाता है। यात्री तकिया उसी सीटपर छोड़कर चला जाता है। कम्पनीके नौकर उठा ले आते हैं। यदि भारतमें कोई तकिया-सप्लाई कम्पनी इस प्रकार खोले तो बुद्धू मियां भी तकियेवाले बन जायँ और कम्पनीका दूसरे ही दिन रामनाम सत्त हो जाय। वहाँ तो ईमानपर ऐसे रोजगार चलते हैं। यहाँतक कि पाठक पढ़ चुके है कि ट्रामपर बक्समें यात्री पैसा डालकर बैठ जाते हैं, कोई देखने और जाँच करनेवाला नहीं कि अमुक आदमीने पैसा दिया या नहीं। भारतीय इस ईमानदारीपर आश्चर्य करेंगे किन्तु पूर्वकालमें भारतमें इससे भी अधिक ईमानदारीके उदाहरण मिलते हैं। हमने योरोपभरमें जूता, छाता और टोपी चोरी होते न तो कहीं देखा ही है न ऐसी घटना होती हो सुनी है।

यहाँके पण्डे—

भारतवर्षमें तीर्थ-यात्रियोंको पंडों द्वारा सब प्रकारकी सुविधाएँ प्राप्त होती हैं। उनके यहाँ सब सामान रखकर आप बाहर घूमने जा सकते हैं। रहने आदिकी अच्छी व्यवस्था कर सकते हैं। दर्शनीय स्थानोंको दिखाना, ठगों आदिसे सावधान करना और भोजनादिका उचित प्रबन्ध कर देना उनका काम होता है। ठीक इसी प्रकार पाश्चात्य देशोंमें भी यात्रियोंको सुविधा पहुँचानेवाली बहुतसी कम्पनियां हैं। यदि इन्हें हम यात्रियोंके पंडे कहें तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। अन्तर केवल इतना ही है कि पंडोंके यहाँ देने-लेनेका कोई क्रम निश्चित नहीं रहता, जो जैसी परिस्थितिका यजमान हुआ, जिसने जो कुछ स्वेच्छा-

नुसार दक्षिणास्वरूप दे दिया, उसे आशीर्वाद देते हुए पंडे सन्तोषके साथ ग्रहण कर लेते हैं। इनके इस सन्तोषमें घाटा भी नहीं रहता। कभी-कभी धनाढ्योंसे इतना अधिक धन प्राप्त हो जाता है जो सब घाटोंकी पूर्ति कर देता है।

उपर्युक्त कम्पनियोंका ऐसा नियम नहीं है। वे यात्रियोंसे बाकायदा परिश्रम स्वरूप शुल्क लेती हैं और उसके बदलेमें यात्रियोंको यात्रा सम्बन्धी सब प्रकारकी सुविधाएँ देती हैं। यात्रियोंके रुपये सुरक्षित रखकर उन्हें अपने चेक दे देती हैं, जिससे यात्रियोंको किसी प्रकारका खतरा नहीं रहता और वे उस चेकसे सर्वत्र अपना काम चला सकते हैं।

ऐङ्गलो कण्टीनेन्टल ऐण्ड इण्टर नेशनल आफिसेज (Anglo Continental & Inter national offices) नामक संस्था योरोपकी आदर्श संस्थाओंमें एक ही है। इसका सञ्चालन व्यापारिक मनोवृत्तिसे नहीं बल्कि सेवा-भावसे किया जाता है। यात्रा-सम्बन्धी सब प्रकारका स्पष्टीकरण इस संस्था द्वारा किया जाता है। यह संस्था किसी भी कामके लिये यात्रियोंसे किसी प्रकारका शुल्क नहीं लेती। होटलोंका प्रबन्ध कर देनेपर होटलवालोंसे भी कमीशन नहीं लेती। इससे वहाँ इस संस्थाके प्रति लोगोंकी अच्छी सहानुभूति रहती है। इस संस्था-द्वारा यात्रा सम्बन्धी कई पुस्तकें

भी प्रकाशित होती हैं जिनमें यात्रा सम्बन्धी समस्त ज्ञातव्य बातोंका उल्लेख किया जाता है। यात्रियोंको सब प्रकारसे सुविधा देना ही इस संस्थाका मुख्य ध्येय है और यात्री भी इसके ध्येयमें न्यूनता नहीं पाते। नये यात्रियोंको इस संस्थासे पत्र-व्यवहार कर लेना चाहिए और यात्रा-सम्बन्धी पुस्तकें भी मगा लेनी चाहिये जो कि लागतमात्र मूल्यपर मिलती हैं।

The Travellere's pocket reference नामक पुस्तकको अवश्य पास रखनी चाहिये। इस संस्थासे पत्रव्यवहार निम्न-लिखित पतेसे किया जा सकता है। Anglo Continental and International Offices, Kennens House Crown Court, Cheapside, London. E. C. 2

इसके पश्चात् थामसकुक एण्ड को० (Thomas cook & Co) और अमेरिकन एक्सप्रेस कम्पनीका नाम विशेष उल्लेखनीय है। यात्रियोंको चाहिये कि यात्रा करनेके पूर्व इनसे पत्र-व्यवहार कर सम्बन्ध स्थापित कर लें। इन कम्पनियों द्वारा जितनी सुविधाएँ मिलती हैं उनको देखते हुए उनका चार्ज एक प्रकारसे नहींके बराबर होता है; क्योंकि अधिकाँशमें उनका यात्रियों द्वारा नहीं बल्कि रेलवे, जहाज और होटलोंके कमीशन-से काम चलता है। अलग यात्रा करनेवालोंको भी रेलवे, जहाज और होटलोंका चार्ज देना ही पड़ता है। इसमें किसी प्रकारकी

कमी नहीं होती और उसी चार्जमें कम्पनियाँ कमीशन लेती हैं जिससे हमारा तो कुछ नुकसान नहीं होता और लाभ बहुत होता है। जहाँ घूमना होता है कम्पनियोंके गाइड (प्रदर्शक) साथ जाते हैं, इनका पारिश्रमिक अपने पाससे अलग देना पड़ता है।

अमेरिकन एक्सप्रेस अमेरिकाकी होनेके कारण अधिक खर्चीली है और थामसकुक इससे सस्ती पड़ती है। इन कम्पनियोंके आफिस योरोपके सभी शहरोंमें हैं। जिन छोटे-मोटे स्थानोंमें इनके आफिस नहीं हैं वहाँ स्थानीय कम्पनियोंसे इनका सम्बन्ध रहता है और वे ही इनके यजमानोंकी पण्डागिरी कर देती हैं। इन कम्पनियोंके अतिरिक्त प्रत्येक शहरमें स्थानीय कम्पनियाँ भी होती हैं जिनका विस्तार और कार्य-क्षेत्र उनका वह शहर ही होता है। शहरके दर्शनीय स्थानोंके दिखानेमें स्थानीय कम्पनियाँ विशेष उपयोगी और सस्ती पड़ती हैं।

कुछ गाइड (प्रदर्शक) ऐसे चण्डूल होते हैं जो आपको ऐसे स्थानोंके दिखानेमे आनाकानी कर जायँगे, जिनमे उन्हें केवल शुल्कपर ही निर्भर रहना पड़े। वे आपसे विलासिताकी सामग्री एवं अनेक ऐसी वस्तुओंका निरीक्षण करायेंगे जिनमेसे आप कुछ-न-कुछ खरीद ही लें। इस प्रकार उन्हें प्रदर्शन-शुल्कके अतिरिक्त दूकानदारोंसे भी कमीशन मिल जाती है। यात्रियों-को ऐसे चण्डूलोंसे सावधान रहना चाहिये।

पुलिस-विभाग—

यों तो योरोप भरमें भारतसे कहीं अच्छी पुलिसकी व्यवस्था है परन्तु लण्डनकी पुलिस जितनी नम्र, सुशिक्षित और कार्यपरायण है वैसी और कहीं देखनेमें नहीं आयी। लण्डनकी पुलिसमें ६ फीटसे छोटे आदमी देखनेमें नहीं आते। किसी भी आदमीको कुछ पूछना हो तो जनतासे न पूछकर सीधे पुलिस-से पूछना चाहिये। यहाँकी पुलिसको ऐसी शिक्षा दी जाती है जिससे वह जिज्ञासुके उत्तर प्रश्नके साथ ही दे सकती है। आप उनसे कोई बात पूछे नहीं कि उत्तर मुँहसे निकला हुआ पायेंगे। ऐसा मालूम होता है गोया वे पहलेहीसे जाने बैठे रहते हैं कि आपको क्या पूछना है। भाषा इनकी इतनी नम्र होती है कि

प्लीज (मेहरबान) सर (महाशय) शब्दका प्रयोग किये बिना बोलते ही नहीं। लण्डनकी पुलिसका व्यवहार देखकर हृदय प्रसन्न हो जाता है। वहाँके पुलिसमैन काटने नहीं दौड़ते बल्कि जो कुछ पूछा जाय बड़ी सभ्यता और नम्रताके साथ उत्तर देते हैं।

बच्चों, बुड्ढों और स्त्रियोंके सड़क पार करते समय वे बड़ी सावधानी रखते हैं। यहाँतक कि सब गाड़ियोंको रोककर उन्हें सड़क पार कराकर ही गाड़ियोंको छोड़ते हैं। पुलिसकी सुविधाके लिये योरोपमें अनेक प्रकारके वैज्ञानिक साधनोंका उपयोग किया जाता है। इन वैज्ञानिक साधनोंसे पुलिसकी-अनेक कठिनाइयाँ सरल हो जाती हैं। जैसे चौरस्तोंपर पुलिस-को हाथसे संकेत करनेके स्थानपर विभिन्न रंगोंकी बिजलीकी बत्तियोंसे काम लेना। खास-खास स्थानोंकी पुलिसकी जेबमें रेडियोकी मशीन रहती है। इस मशीनसे वे अपने आफिसके सन्देशोंको सब काम करते हुए भी प्राप्त कर लेते हैं। उनकी जेबमें रखी हुई मशीन बोलने लगती है जिससे वे संदेश पा जाते हैं। पासमें ही टेलीफोनका भी प्रबन्ध रहता है जिससे उसका भी वे आवश्यकतानुसार उपयोग कर सकते है।

पुलिसकी शिष्टता और नम्रताकी एक घटना मेरे मस्तिष्कमें सदा बनी रहेगी। एक दिन मुझे कपड़ेपर रफू करनेवाली

दूकानकी आवश्यकता पड़ी। मैंने पुलिससे उसका पता पूछा, उसने बड़ी सभ्यतासे मुझे दूकानका पता बता दिया। दूकान इतनी छोटी थी कि मैं बार-बार उसके पाससे चक्कर लगाकर वापस जाता पर दूकान न मिलती थी। मैंने तीनों दफे लौटकर पुलिसमैनसे पूछा, तीनों बार उसी भावसे उसने ठीक ठीक पता बता दिया। झुंझलाहटका नाम नहीं। उसे इस बातका अनुभव था कि विदेशी यात्रियोंको ऐसे स्थानोंका पता आसानीसे नहीं लग सकता। जब मैंने चौथी बार उससे फिर पूछा कि मैं दूकान ढूंढ़कर थक गया और वह न मिली, अस्तु; आप उस दूकानके पानेका कोई और उपाय बता सकें तो बहुत अच्छा हो। उस भले आदमीने मुस्कराते हुए पासमें खड़े हुए एक आदमीसे कह दिया कि इन्हें अमुक दूकान बता दो। उस आदमीने साथ जाकर दूकान दिखा दी। पुलिसका सद्व्यवहार देखकर चित्त प्रसन्न हो गया। भारतके कोई भाई यदि इस स्थान-की शोभा बढ़ाते होते तो अवश्य मुझे दूसरी ही बार उनकी फटकारोंका शिकार बनना पड़ता और पहली दफामें ही बता देना एक नयी बात होती।

भारतीय पुलिसमें यदि भरती करनेका ध्येय और आदर्श योरोपकी पुलिसका-सा रखा जाय तो अवश्य यहाँ भी काया-पलट हो जाती। यहाँ प्रायः अशिक्षित लोग ही इस पदपर भरती

किए जाते हैं। "एक तो करैला दूसरे नीम चढ़ा"। अशिक्षितोंमें सभ्यता योंही कम होती है, फिर कुछ अधिकार और प्रभुता पा जानेपर क्यों न दिमाग बढ़ जाय? वेतन भी भरपूर नहीं मिलता, उनकी परिस्थिति और आवश्यकताएं उन्हें अपने पथसे विचलित करनेके लिये विवश कर देती हैं। उन्हें कवायद-परेडकी शिक्षा तो दी जाती है किन्तु किसीसे बातचीत करनेका ढंग, मृदु संभाषण और कर्त्तव्य-परायण होनेकी शिक्षा बिल्कुल ही नहीं दी जाती। ईश्वर करे हमारे रक्षक भी आदर्श रक्षाव्रतका माहात्म्य समझें और वे जनता जनार्दनकी सेवाको अपने जीवनका लक्ष्य बना लें।

होटल—

यूरोपमे होटलोका बड़ा प्रचार है। गाँव-गाँवमें होटल बने हैं। यहांके लोग यदि एक स्थानसे दूसरे स्थानपर जाते हैं तो वे अपने रिश्तेदार या मित्रके भार नहीं बनते। सब अपनी यात्राके साथ ही होटलमे टिकनेका प्रबन्ध कर लेते हैं। जहाँ जाना होगा वहाँ पहुँचनेपर अपना सामान होटलके किसी कमरेमें रखकर तब कहीं रिश्तेदार या मित्रके यहाँ मिलने जायँगे। यहाँके मित्रों और नातेदारोंकी तरह लोग इस बातके लिये बुरा नही मानते। होटलका प्रबन्ध करनेके पश्चात् वे अपने परिचितके यहाँ पहुचेंगे। यदि उसने भोजनका निमन्त्रण दे दिया तो प्रसन्नतासे स्वीकार कर लिया, अन्यथा अपना खाना

और मौज करना ही इनका ध्येय रहता है।

योरोपके होटल बहुत सुन्दर और साफ-सुथरे होते हैं। वहाँके साधारण होटल भी यहाँके अच्छे होटलोंसे बाजी मारते हैं। हर कमरेमें आलमारी पलॅंग और बिछौनेका होना तो अनिवार्य है। अच्छे दरजेके होटलोंमें लिफ्ट (बिजलीकी सीढ़ी) टेलीफोन, गर्म और ठण्ढे पानीका प्रबन्ध बहुत अच्छे ढंगसे रहता है। नाश्ता भी आप इच्छानुसार कर सकते हैं। नाश्ता आदिका आपको अलग चार्ज नहीं देना पड़ता। सब दैनिक भाड़ेमें ही शामिल समझा जाता है।

होटलवालोंकी सभ्यता भी सराहनीय होती है। यहाँके लोग इस प्रकारकी सभ्यताके आगे अपना मस्तक झुकाते हैं। भारतमें जो जिससे परिचित है वह उसके घरमें धड़धड़ाता हुआ जा पहुॅचता है। भले ही उसके इस आकस्मिक आ धमकनेसे स्त्रियोंको कष्ट हो। जो आदमी जिस कमरेमें टिका हुआ है उसके बाहर चले जानेके बाद उसका दरवाजा बन्द रहता है और बिना उसकी आज्ञाके कोई कमरेमें प्रवेश नही कर सकता।

खाद्य-पदार्थ—

जिनके सामने खाद्याखाद्यका कोई प्रश्न नहीं है वे योरोप मजेमे भ्रमण कर सकते हैं और जिन्होंने अपने नामके साथ निरामिष भोजी होनेका पुछल्ला लगा रखा है उनके लिये योरोप भ्रमण एक जटिल समस्याके रूपमें दिखाई पड़ता है। यद्यपि अब यहाँ शाक-भोजी बढ़ते जा रहे हैं और ऐसे होटलों-की संख्या भी बढ़ती जा रही है जिनमे शाकाहार ही बनता है। तिसपर भी यह सुनकर पाठक हँसेगे कि मछली और अण्डे वहाँ शाकाहारहीमें सम्मिलित हैं। योरोपके शाकाहारी खुशीसे अण्डे और मछलियोंका कलेवा करते हैं। ऐसी स्थितिमें भारतीय शाकाहारियोंको विशेष सतर्क रहनेकी आवश्यकता है। यहाँकी

मलाईबरफ और खीरमें भी अण्डोंक उपयोग होता है। जिन्हें इसका पता खानेके बाद लगता होगा वे शाकाहारी बेचारे तो बिना मौत मरते होंगे। यदि सावधानीसे काम लिया जाय तो सर्वत्र दूध, दही, मक्खन और फल आदि विशुद्ध चीजें मिल सकती हैं।

जिस होटलमें आप पहुँचेंगे, मेजपर आपको स्वच्छ चद्दर बिछी हुई मिलेगी। मेजपर खाद्य-पदार्थोंकी सूची छपी हुई रखी रहती है। आपकी जिस चीजके खानेकी इच्छा हो, लिस्ट देखकर वहाँकी प्रचारिका या नौकरसे कह दें जो आपके पहुँचनेके साथ ही आपके सामने अदबके साथ आकर खड़ा हो जायगा। आप उसे इशारा कर दीजिये, तुरन्त आपकी आज्ञाका पालन किया जायगा।

भोजन करनेका नियम—

भारतवर्षमें प्रायः सर्वत्र ऐसा नियम देखा जाता है कि भोजन करनेवालेके सामने जो थाली लायी जाती है उसमें कटोरियोंमें सब चीजें एक साथ सजाकर रख दी जाती हैं और खानेवाला उनका उपयोग इच्छानुसार करता है। योरोपमें भोजन करनेका नियम इसके विपरीत पाया जाता है। यहाँ खाद्य-वस्तुएं अलग-अलग लायी जाती हैं। खाते समय नमक और मिर्च इच्छानुसार मिला सकते हैं। नमक मसाला भोजनके साथ डालनेका यहाँ नियम ही नहीं। पहले लोग किसी भोरदार वस्तुसे खाना आरम्भकर फिर चाय या काफीपर भोजनकी पूर्णाहुति करते हैं। भोजन करते समय जांघोंपर रूमाल—जो प्रायः

कपड़ेके होते हैं और कहीं-कहींपर कागजके भी होते हैं—रख लेना चाहिये जिससे खानेकी कोई वस्तु गिरकर कपड़ोंको खराब न कर दे। इसी प्रकारकी तश्तरियां और गिलास भी कागजके देखे जाते हैं। कागजी बर्तन एक बार प्रयोगमें लाकर फेंक दिये जाते हैं।

भोजन कर लेनेपर आपके सामने होटलका कर्मचारी सभ्यतानुसार बिल पेश करेगा। बिलके अनुसार दाम चुका देनेपर आपको कुछ इनामके रूपमें वेयराको और दे देना चाहिये। वह पैसा लेकर "थैंक्यू" (धन्यवाद) कहकर चला जायगा। थैंक्यू तो यहाँवालोंका तकियाकलाम-सा बना रहता है। यहाँ पानी पानेकी बहुत कम चाल है। पानीकी कमीको यहाँवाले चाय, काफी और शराब आदिसे अथवा प्राकृतिक झरनोंके पानीसे करते हैं। और वस्तुएं तो दाम देकर मिलती ही हैं, यहाँ पानी भी कहीं मुफ्त नहीं मिलता। सब होटलोंमें दवाकी तरह लेबल लगी पानीसे भरी बोतलें रखी रहती हैं, आपको जितनी बोतलें चाहिये दाम देनेसे मिल सकती हैं। झरनोंका पानी विशेष लाभकारी समझा जाता है।

आमोद-प्रमोदके साधन—

लोग यह समझते होंगे कि योरोप जैसे उद्योगशील देश-में लोगोंको आमोद-प्रमोदका अवकाश ही कहाँ रहता होगा। लोगोंकी ऐसी धारणा बिलकुल निर्मूल है। योरोपके लोगोंने ही समयका सदुपयोग करना सीखा है। यहाँके व्यापारियोंकी तरह वे बारह बजे राततक खाता ही लिखते नही रह जाते। उनके सब कामोंके लिये समय-तालिका बनी रहती है और उसीके अनुसार काम किया जाता है। जैसे समयपर भोजन, समयपर दूकान खोलना और ठीक समयपर बन्द होना आदि। पठन-पाठन और आमोद-प्रमोदके लिये भी समय निश्चित रहता है। आमोद-प्रमोदसे ही दिनभरकी थकावट दूर होती है और स्वास्थ्यका

सुधार होता है। आमोद-प्रमोद सम्बन्धी जितने साधन योरोपमें देखे जाते हैं उतने बेचारे दरिद्र भारतको कहाँ मुयस्सर हो सकते हैं!

नाटक, सिनेमा, सर्कस, कार्निवल और प्रदर्शनियोमें यहाँ सदैव भीड़ लगी रहती है। कार्निवल कहीं तो सदा खुले रहते हैं और कहीं हफ्तेमें दो-तीन बार हो खुला करते हैं। यहाँके नाटक-घरोंमें एक विशेषता यह भो रहती है कि जिस रङ्ग-मञ्चपर जिस विषयका अभिनय होता है वही विषय स्थायीरूप-से उसमे चला करता है। जैसे किसी नाटकघरमे यदि ऐतिहासिक नाटक खेले जाते हैं तो सदा उस स्थानपर ऐतिहासिक नाटक ही हुआ करते हैं। जिस रंगमञ्चपर हास्य-रसके फुहारे छूटते हैं वहाँ सदा हास्य-रसके ही नाटक हुआ करते हैं। इससे जनताको भी लाभ होता है और प्रबन्धकोंको भी। जो जिस विषयका नाटक देखना चाहता है वह उसी विपयके रङ्गमञ्चपर दिखायी पड़ेगा। इस सुन्दर प्रबन्धसे सब अपनी इच्छाके अनुसार उसी विषयके नाटकघरोंमे पहुँच जाते हैं। यहाँके नाट्य-भवनोंकी भांति वहाँ भी एक ही स्थानपर आज नादिरशाह तो कल लैला-मजनूं नहीं चलता। इस सुन्दर प्रबन्धसे सबको व्यापारिक लाभ तो होता ही है, साथ ही सब प्रकारकी रुचिवाले लोगोंकी रुचियोंके अनुसार उपयुक्त खेल भी मिल जाते हैं।

सिनेमा-घर—

सिनेमा-घरोंकी भी यहाँ कमी नहीं है। यदि यहाँके सिनेमा घरोंकी विशेषताओंपर पूर्ण रूपसे प्रकाश डाला जाय तो लेख बढ़ जायगा। यहाँ तो हम केवल उन्हीं बातोंकी चर्चा करने जा रहे हैं जो विशेषतायें आवश्यक और भारतके लिये आदर्शस्वरूप हैं। जिस समय मैं योरोप-भ्रमण कर रहा था, वह समय सवाक् चित्रपटका प्रारम्भिक युग था; फिर भी इस कलाने उन्नति कर ली थी।

यहाँके सिनेमाघरोंमे सबसे अच्छी विशेषता तो यही है कि वे दिनमें बारह बजे खुलते हैं और तबसे चार खेल दिखाये जाते हैं। दर्शकोंको समयकी पाबन्दी नहीं रखनी पड़ती। आप जितने

बजे चाहे सिनेमा देखने जा सकते हैं। आपको दरवाजपर अच्छी पोशाकोंसे सुसज्जित दो दरवान मिलेंगे जो आपकी मोटरके दरवाजे खोल देंगे और टिकट-घरकी तरफ संकेत कर देंगे। जितने दामकी टिकटें बिक चुकी हैं उन खिड़कियोंपर जहाँ वे बिकती हैं (Full) का साइनबोर्ड लगा दिया जाता है। जिस खिड़कीपर जितनी टिकटें बिकनेको बाकी रहती हैं उनकी सूचना भी दरवान देता जाता है। इससे दर्शकोंको किसी प्रकारकी असुविधा नहीं होती। हालकी सजावटके सम्बन्धमें तो कहना ही क्या है। कवियोंने इन्द्र-दरबारकी बड़ी विरदावलियाँ गायी हैं किन्तु इन्द्र दरबार कितना सुन्दर है और कितना सजा हुआ है इसे किसीने ख्वाबमें भी न देखा होगा।

यदि आप लिफ्ट (बिजलीकी सीढ़ी) द्वारा ऊपरवाले हालमें जाना चाहते हों तो लिफ्टके सामने खड़े होते ही एक बिजलीका ब्रश फरफरकी आवाज करता हुआ चल पड़ेगा और आपके जूतोंकी सफाई हो जायगी। फिर ऊपर जाकर आरामसे सिनेमा देखिये।

यह क्या शायद आनेमें देरी हो गयी, क्या इस खेलका बहुत अंश दिखाया जा चुका है। ठहरिये घबराते क्यों हैं? अभी खेल खतम होते ही यही खेल १५ मिनटके अवकाशके बाद फिर आरम्भ होगा। तब शेष पहलेका भी देख लीजियेगा।

यही तो यहाँकी विशेषता है। जब इच्छा हो जाइये और पूरा खेल देखकर लौटिये। कोई रोकटोक नहीं। दर्शकों की सुविधा-केलिये सिनेमा-घरोंमे ही पेशाब आदि करनेका भी प्रबन्ध है।

यहाँके दर्शकोंके सम्बन्धमें भी हम एक विशेष बात बता देना उचित समझते हैं और भारतीय दर्शक इसे अपना आदर्श बना लें तो कितना अच्छा हो। वह यह कि यहाँ भीड़में धक्कमधक्का करके टिकट पहले खरीदनेकी लालसा बचखोंतकमें नहीं रहती। उन्हें इस बातका विश्वास तो रहता है कि चाहे जब टिकट मिले, खेल तो देखनेको मिलेगा, दूसरे औरोंको कष्ट भी न होगा। सब टिकट खरीदनेवाले पंक्तिबद्ध खड़े रहते हैं। आगे-वालेको खरीदकर हटते ही उसके स्थानपर दूसरा आ जाता है इसी तरह लोग धीरे-धीरे खिड़कीकी ओर खिसकते जाते हैं। इन लोगोंकी शान्ति और सहनशीलता देखकर आश्चर्य होता है। चूं तकको आवाज नहीं आती, इन पंक्तिबद्ध खड़े लोगोंका समय काटनेके लिये कुछ पेशेवाले हैं जो हास्यरसपूर्ण गाने गाकर सुनाते हैं और मनोरञ्जक कहानियाँ सुनाते हैं। वे कभी-कभी, दर्शकोंके इच्छानुसार भी मनोरञ्जक गाने गाकर उन्हें खुश करते हैं। टिकट खरीदते समय लोग उन्हें भी कुछ दे ही देते हैं। इस कार्यसे जनताका मनोरञ्जनके साथ समय तो कट ही जाता है दूसरे उन गरीबोंका भी भरण-पोषण हो जाता है।

तमाशोंकी टिकट बेचनेवाली कम्पनियाँ—

यहाँ शहरोंके विभिन्न स्थानोंमें टिकट बेचनेवाली कम्पनियाँ भी होती हैं। इनका काम होता है, नाटक, सिनेमा, कार्निवल और प्रदर्शिनियोंकी टिकटें बेचना। जिन कम्पनियोंकी टिकटें बिकती हैं उन्हींसे इन्हें कमीशन मिलता है, जिससे टिकट बेचनेवाली कम्पनियाँ भी ठाट-बाटसे चलती है और जनताको भी लाभ होता है। भारतके भी प्रख्यात नगरोंमें ऐसी कम्पनियाँ चलायी जा सकती हैं। यदि यहाँकी सिनेमा-कम्पनियाँ भी पाश्चात्यादर्शपर अपना कार्यक्रम निश्चित कर लें तो उनकी आमदनी भी बढ़ जाये और दर्शकोंको भी समयकी पाबन्दी न रखनी पड़े।

शिक्षा-संस्थाएँ—

प्रारम्भिक शिक्षा तो योरोपभरमें अनिवार्य है, इसलिए यहाँ किसीको अँगूठेका निशान देना ही नहीं पड़ता। यहाँकी प्रारम्भिक शिक्षाको देखकर भारतीय शिक्षा-प्रणालीपर तरस आती है, जहाँके महाजनी पाठशालाओंमें तो लड़के ठूंस-ठूंसकर कोठरियोंमें भरे रहते हैं। गुरुजी बेतोंके बलपर पाठशालापर शासन करते हैं। कान उमेठना और थप्पड़बाजी तो गुरुजीके लिए मामूली बातें हैं। ऐसा करनेसे लड़के भी मारके आदी हो जाते हैं। फिर तो बिना पीटे कुछ काम ही नहीं करते। स्कूल क्या है, एक चिड़ियाखाना है, जहाँ बाँध देना, नील डाउन करा देना आदि सजाओंका सदा बोलबाला रहता है। यही हाल प्रायमरी स्कूलोंका

भी है। कहना न होगा कि सभ्यताके दम भरनेवाले अंग्रेजी मास्टर भी वेतदेवके बलपर ही शिक्षाकार्य सम्पादन करते हैं। लड़के जैसे जेलमें ठूंसे हों, इसलिये छुट्टी पाते ही उन्हें मुक्ति प्राप्त करनेकी खुशी होती है। चातककी तरह छुट्टियोंकी सूचीपर उनकी दृष्टि सदा जमी रहती है। योरोपमें ६ वर्षसे लेकर १४ वर्षकी उम्रतक मनुष्यमात्रको पढ़ना ही पड़ता है, परन्तु वहाँ ऐसे स्कूल शायद ही देख पड़ें, जिसमें दण्डविधान रखा गया हो। वहाँके लड़के माता-पिता और गुरुके भयसे ही शिक्षा प्राप्त करते हैं। उनके हृदयमें यह धारणा पैदा ही नहीं करायी जाती कि वे जो शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं उनके लिये है इसलिये उसे दिल लगाकर पढ़ना उनका कर्त्तव्य है।

भारतीय छात्र जब आगे बढ़कर कालेजों और यूनिवर्सिटियोंमें पहुँचते हैं तो उनमें आरामतलबी और विलासिताकी बू आने लगती है, जैसे—अच्छे कमरोंमें बिजलीके पंखेके नीचे पढ़ना और ठाट-बाटसे रहना आदि। भले ही घरवाले बेचारे खेतका गल्ला बेचकर बाबूजीको पढ़नेके लिए भेजते हों। कितने गरीब पिता तो कर्ज लेकर बाबूजीसे भविष्यमे ऊँची-ऊँची आशाएं कर पढ़ानेमे ऋणी भी बन बैठते हैं, परन्तु जब बाबूजी बी० ए० की पूँछ लेकर निकलेंगे तो घरके कूड़ाखानेमें वे कैसे रह सकेंगे? झोपड़ोंमे रहना उनकी शानके

खिलाफ है। खेती कर न सकेंगे, क्योंकि उसमें परिश्रम होता है। व्यापार करनेमें रुपयोंकी आवश्यकता पड़ती है, दूसरे वह बाबूजीका काम थोड़े ही है। बाबूजीको तो कुर्सी तोड़नेवाली नौकरी यानी किसी आफिसमें क्लर्की चाहिए, भले ही उसमें अपने खर्चके लिए भी पूरा न पड़ता हो। किसी तरहसे एक कमरेमें गुजर कर लेंगे और खा-पीकर मौज करेंगे, भाँड़में जाय गाँवका वह झोपड़ा और भाँड़में जायँ वे जिन्होंने मुनुवांको बाबूजी बनानेमें कर्जका बोझ लाद लिया है।

बाबूजीको तो इतने होसे काम है, कि उन्हें दोनों वक्त चाय-पानी, बीड़ी-सिगरेट और अच्छा भोजन मिल जाय। साफ-सुथरे कपड़े हों। कभी-कभी नाटक-सिनेमाकी ओर भी मन चला जाय तो पाकेटमें टिकट खरीदनेके लिए पैसे जरूर हों। यह है भारतीय छात्रोंका वर्त्तमान चित्र।

योरोपकी शिक्षाप्रणाली भारतसे बिलकुल भिन्न है। वहाँ बच्चोंकी छोटी टुकड़ीपर एक-एक अध्यापक या अध्यापिका नियुक्त रहती है। बच्चोंको यह अनुभव ही नहीं होता कि हम स्कूलमें पढ़ने आये हैं। उन्हें मनोविनोदका इतना अवसर दिया जाता है जितना उन्हें घरपर भी नहीं मिलता। बालक्रीड़ाके जितने साधन स्कूलोंमें होते हैं उतने उन्हें घरोंमें भी नहीं मिलते। इसलिए यदि उन्हें दो दिनकी भी छुट्टी मिलती है तो वे

सोचने लगते हैं कि यह फालतू समय घरपर किस प्रकार बिताया जाय ? भारतीय छात्रोंका ध्यान तो छुट्टियोंकी ओर ही लगा रहता है। बच्चोंको किण्डर गार्टन प्रणालीसे शिक्षा दी जाती है जिससे वे आमोद-प्रमोदके साथ शिक्षा प्राप्त करते हैं। वे स्कूलोंको मारपीट और शासनका स्थान नहीं, बल्कि विनोद और सुधारका स्थान समझते हैं। ६ वर्षके लड़केको भी पढ़ाई-के अलावा उठने-बैठनेका तरीका, बात-व्यवहार आदि सभ्यताकी बातें सिखायी जाती हैं जिससे इस प्रकारकी शिक्षामे छात्र कभी नही चूकते। वे किसीसे न तो असभ्यतापूर्ण व्यवहार ही करते हैं और न असभ्य भाषाका ही उपयोग करते हैं।

कालेजों और यूनिवर्सिटियोंसे निकनेवाले छात्र क्लर्कोंकी चिन्तामें दरख्वास्ते लिए हुए जीवन बर्बाद नहीं करते। उन्हें केवल पढ़ाई हीकी शिक्षा नहीं दी जाती, बल्कि व्यापार, खेती और विज्ञान सम्बन्धी शिक्षाएं भी दी जाती हैं। किसी भी ग्रेजुएटको खेतोंमे हल चलानेमें लज्जा न होगी। बी० ए० और एम० ए० पास बाबू मोचीका काम खुशीसे कर लेंगे और उन्हें अपने गौरवमें कमीका अनुभव न होगा। इसी प्रकार कोई-न-कोई काम वहाँके छात्र अपने लिए चुन ही लेते हैं। न तो वे माँ-बापके लिये भार-स्वरूप होते हैं और न क्लर्कोंके लिए मारे-मारे ही फिरते हैं।

विदेश जानेवाले शिक्षार्थियोंसे—

प्रायः देखा जाता है कि भारतीय छात्र विद्याध्ययनार्थ लंडन आदि योरोपीय नगरोंमें जाना चाहते हैं तो सर्वप्रथम लण्डनके लिए पासपोर्ट लेनेके पूर्व उनके सामने यह समस्या उपस्थित होती है कि कहाँ पढ़ा जाय, किस यूनिवर्सिटीमें अपने अनुकूल शिक्षा मिल सकती है। यही समस्या अन्य देशवासियोंके सामने आ खड़ी होती है, जो योरोपमे जाकर विद्याध्ययन करना चाहते हैं। इसलिये यहाँ यह बतला देना आवश्यक प्रतीत होता है कि वहाँ शिक्षा-सम्बन्धी सब बातोंका संतोषपूर्ण उत्तर देनेके लिए दो संस्थाएं विख्यात हैं। एक तो इण्डिया आफिस (India Office) दूसरी स्टूडेण्ट यूनियन

(गावर स्ट्रीट लण्डनमें) हैं। इन संस्थाओंका काम ही है कि वे शिक्षा-सम्बन्धी सब प्रकारकी सहायता प्रदान करें। किस कालेजमें कितने छात्र हैं, कितनी सीटें खाली हैं, किसमें क्या पढ़ाई होती है, किस होस्टलका कैसा प्रबन्ध है, कहाँ कैसी सुविधाएं हैं, आदि सब बातोंका ध्यान इन दो संस्थाओंको रहता है, इसलिये छात्रोंको चाहिए कि पहले इन संस्थाओंसे पत्र-व्यवहार कर लें, ताकि उन्हें अपने मार्गमें किसी प्रकारकी असुविधा न हो।

चिकित्सालय—

किसी समय भारतवर्षमे आयुर्वेदका बोलबाला था, यहाँकी चिकित्सा-प्रणालीके आगे संसार सिर झुकाता था। यहाँके वैद्यों और उनकी आश्चर्यमयी चिकित्सा-प्रणालीकी बाते अतीतके गर्भमे छिपी हुई हैं। कहना न होगा कि इस समय भी आयुर्वेदका सम्मान कुछ कम नही है। औषधियोंका महत्व कुछ कम नही हो गया, सिर्फ आवश्यकता है लगनसे काम करनेवालोंकी। चिकित्सा सम्बन्धी जो उन्नति और आविष्कार योरोपने किया है उसे देख और सुनकर आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है। महामति हैनिमैनने होमियोपैथिक चिकित्सा प्रणालीका जो आविष्कार किया है वह संसारके लिए गौरवकी बात है। आज

इस प्रणालीका प्रचार संसारभरमें बढ़ता जा रहा है। ऐसी निरापद चिकित्सा-प्रणाली बहुत कम देखी गयी है।

योरोपमें रोगी घरोंमें बहुत कम रखे जाते हैं। भारतमे तो धनिकोंकी चिकित्सा प्रायः घरमें ही हुआ करती है। अस्पताल जाना शानके खिलाफ समझा जाता है। योरोपमे यह बात नही है। यहाँ दो प्रकारके चिकित्साके साधन हैं, एक सार्वजनिक अस्पताल और दूसरा नरसिंग होम (सुश्रूषागृह)। अस्पतालमें सर्व-साधारणकी चिकित्सा निःशुल्क की जाती है। किसी प्रकारका मूल्य नहीं चुकाना पड़ता। नरसिंग होममें पूरा खर्च देकर रहना पड़ता है। धनी लोग अपने घरोंमें इसलिए चिकित्सा नही कराते कि वे समझते हैं कि घरोंमे न तो चिकित्साके अनुकूल स्थान ही रहता है और न समयाभावसे अथवा अनुभवके अभावसे सुश्रूषा ही पूर्णरूपसे हो सकती हैं। नरसिंग होमकी तो बात ही क्या पूछनी है? सुशिक्षित नर्सें सुश्रूषा करनेके लिए रहती है। इनका व्यवहार रोगियोंके प्रति बड़ाही मृदु होता है। इतनी मधुर-भाषिणी और सहृदया उपचारिकाओंको पाकर रोगियोंका आधा रोग तो उनके मधुर व्यवहारसे ही दूर हो जाता है।

वहाँ रोगियोंके आमोद-प्रमोदका भी पूरा प्रबन्ध रहता है। रेडियो द्वारा गान-वाद्यकी भी पूरी व्यवस्था रहती है। सुन्दर

सुसज्जित कमरोंमें फूलोंके गमले अपनी शोभा बढ़ाते रहते हैं। हमारा तो ध्यान है कि यदि कोई असाध्य रोग न हो तो वहांके उपचार और व्यवहारसे ही रोग रफूचक्कर हो जाय। यहां रोगियोंको चार्ज देकर रहना पड़ता है। सार्वजनिक निःशुल्क चिकित्सालयोंमें भी यहाँसे अच्छा प्रबन्ध रहता है, तिसपर भी नरसिंग होम और अस्पतालमें जो अन्तर होना चाहिए वह है ही।

भारतीयोंको बीमार हो जानेपर अधिक असुविधाओंका सामना करना पड़ता है क्यों कि जिन्हें अपने पाकेटको देख-देख-कर चलना पड़ता है उनके लिये यहाँ बीमार होना मौतका सामना करना है। जो निरामिष भोजी हैं, उनकी तो कुछ पूछिये ही नहीं। भारतमें तो कहा भी जा सकता है कि मर भले ही जायँ पर अण्डा न खायेंगे; किन्तु योरोपमें बीमार होनेपर कोई चारा नहीं रह जाता। होटलवाले अपने यहाँ रखेंगे ही नहीं, कियायेपर भी मकान लेकर रहना साधारण बात नहीं, इसलिये अस्पताल जानेके लिये विवश होना पड़ेगा और वहाँ डाक्टर-के मतके अनुसार ही चलना पड़ेगा। ऐसी हालतमें तो यही उचित है कि योरोप-यात्रा करनेके पूर्व अपने स्वास्थ्यके सम्बन्धमें पूर्ण विचार कर लेना चाहिए। योरोपमें भी अपनी दिनचर्या और खान-पानकी इतनी अच्छी व्यवस्था रखनी

चाहिये जिससे किसी प्रकारके रोगाक्रमणका अवसर ही न उपस्थित हो। यह निश्चय है कि बिना कारण पाये रोग अपने आप टपक नही पड़ते। मनुष्य उन्हें जानकर अथवा अनजानमें ही आमन्त्रित करते हैं।

स्टोर्स—

यूँ तो इटलीको छोड़कर योरोपके किसी भी नगरमें छोटी-से-छोटी दूकानोंपर भी एक दर और एक दामका ही कारवार होता है, जिससे न तो खरीदने वालेको असुविधा होती है और न वेचनेवालेको ही। सौदा पसन्द किया, विल वना, दाम दिया और चलते वने। न दस दूकानोंपर दौड़ना पड़ा और न ठगे जानेका भय।

योरोपके प्रायः सभी वड़े नगरोंमें वड़े-वड़े स्टोर्स हैं। ये स्टोर्स साधारण नहीं होते। कितने ही तो वड़े लम्वे-चौड़े मकानों-में जो सात-आठ तल्लेतक होते हैं, चल रहे हैं। ऐसे स्टोरोंमें तीन-चार हजार कर्मचारी काम करते हैं, इसीसे इनकी महत्ता

और विशेषताका पता चल सकता है। हिसाव-किताव इतना पक्का होता है कि इतने वड़े कारवारमे भी कभी एक पैसेका हेर-फेर नहीं होता। इन स्टोरोंमे एक सुईसे लेकर मोटर, दवा, कपड़े लत्ते, दूध और खाने-पीनेकी चीजें आदि कहाँतक कहें साग-भाजी भी अच्छीसे अच्छी खरीद सकते हैं। मानव आवश्यकताओंकी पूर्ति करना ही इन स्टोरोंकी विशेषता होती है। यहाँपर आप वस्तुएँ खरीद सकते हैं, पासमे दाम न होनेपर सौदा पसन्द करके पता लिखा दीजिये आपके घर सौदा पहुँच जायगा, वहाँ दाम दे दीजिये। आप कहीं दूसरी जगह जा रहे हों और घरपर सामान भेजना चाहते हों तो इसमें भी कोई हर्ज नहीं है। दाम जमा कर दीजिये, पता लिखा दीजिये; आपकी इच्छित वस्तु आपके घर पहुँची रहेगी। इन्हीं सुविधाओंके कारण इनके पास ग्राहकोंकी कमी नहीं रहती। काफी लाभ होता है और ग्राहकोंको भी पूरा संतोष होता है।

योरोपमे आपको ऐसी एक दूकान भी न मिलेगी जिसमें यहाँकी दूकानोंकी तरह ग्राहकोंमें छीना-झपटी होती हो। जिसकी जहाँ इच्छा हो सौदा खरीदे। सभ्यतापूर्ण शब्दोंमें ग्राहकोंसे उनकी आवश्यकताओंके सम्बन्धमें पूछकर उन्हें सन्तोषप्रद उत्तर देना यहाँके दूकानदारोंकी विशेषता है। भारतमें तो आप किसी दूकानपर कोई चीज खरीदने जायँ और वहाँ

आपकी इच्छित वस्तु न मिले तो पूछनेपर भी आपको उस वस्तुके मिलनेका वे ठीक पता न बतायेंगे। यद्यपि यह यहाँके व्यापारियोंकी घृणित मनोवृत्तिका परिचायक है, तिसपर भी यहाँके बड़े-से-बड़े दूकानदारोंमे यह रोग पाया जाता है।

योरोपके सेल्समैनों (विक्रेता) का सौजन्य देखकर दंग रह जाना पड़ता है। एक दिन मैं पेरिसके एक स्टोरमें कालर खरीदने गया। मुझे साइज याद न थी। मैंने कालर निकालकर दिखायी पर उस साइजकी कालर दूकानमे नहीं थी। मैंने और भी अनेक वस्तुएं देखीं, किन्तु कोई पसन्द न आयी। इस प्रकार मैंने उसे लगभग आध घण्टेतक हैरान किया। जब मैं चलनेके लिए कालर लगाकर टाई बाँधने लगा तो अभ्यासकी कमीसे जल्दी न बाँध सका। दूकानदार मेरी इस परिस्थितिका अनुभव कर रहा था, उसने हँसते हुए मेरी टाई ठीकसे बाँध दी। मैं इस बातपर शर्मिन्दा हो रहा था कि काफी हैरान करनेपर भी इससे कोई वस्तु खरीदी नहीं, अस्तु; यह झुँझला रहा होगा। किन्तु झुँझलानेकी कौन कहे वह उल्टी मेरी मदद करता है। मैं उसके इस सौजन्यको देखकर मुग्ध हो गया और आवश्यकता न होनेपर भी एक जोड़ी मोजे खरीद ही लिये। खरीदनेका आग्रह उसने नहीं बल्कि मेरे दिलने किया था।

फलाहारियोंके योग्य सजी हुई टेबुल

[पे० २८०]
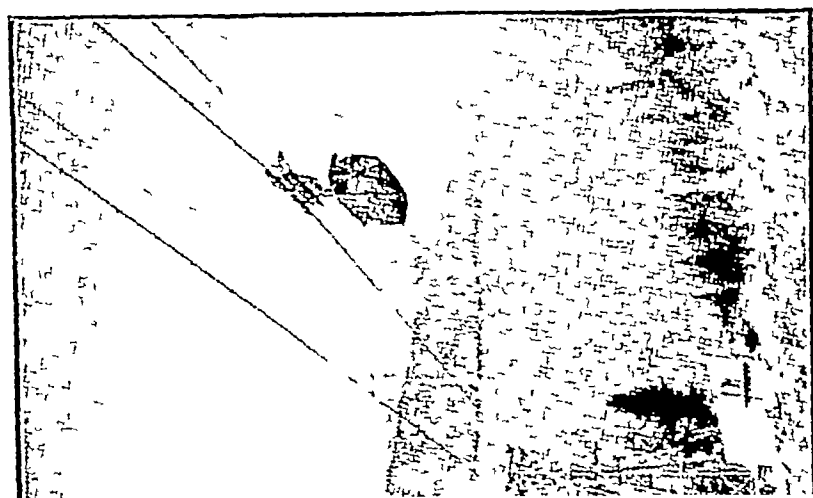
लटकती हुई बेल [पे० २८०]

डेनमार्कके बच्चोंकी विनोद-प्रियता [पे० २८०]

क्राइडनमें हमारी हवाई यात्राको एक
बालिका आश्चर्यभरी दृष्टिसे देख रही है
[पे० २८०]

वैज्ञानिक चमत्कार

भारतका प्राचीन विज्ञान—

हमारा भारतवर्ष धर्म प्रधान देश है, धर्म प्रधानताके कारण धर्माचार्योंकी आज्ञाओंकी अवहेलना यहाँ नहीं की जाती थी। यहाँके धर्माचार्योंने महायंत्रोंका निर्माण पापमय बतलाया है और बहुत अंशोंमें पाप है भी। एक मिलसे जितना कपड़ा तैयार हो सकता है उतनेकी तैयारी यदि हाथसे की जाय तो कितने आदमियोंको काम करना पड़े। धुनिये, कातनेवाले और बुनने-वाले कितने आदमी कामपर लगे रहें और उन्हें भूखों न मरना पड़े। यही कारण है कि प्राचीन कालमें मिलें नहीं थीं और हस्त-कला अपनी चरमसीमा तक पहुँच चुकी थी। उस समय इतने बारीक कपड़े बनते थे कि घासपर बिछा देनेसे यह ज्ञात ही

नहीं हो सकता था कि घासपर कपड़ा बिछा है। औरंगजेबकी लड़की एक बार तंजेबकी साड़ी नौ परत करके पहने थी तब भी उसके पतलेपनके कारण पिताके सामने जानेमें उसे लज्जा आती थी क्योंकि औरंगजेब खद्दर पहनता था। अत्यन्त उपयोगी और आवश्यक काम वैज्ञानिक चमत्कारके बलपर किये जाते थे। जैसे वायुयान (हवाई जहाज) और अनेक प्रकारके अस्त्र शस्त्र। वैज्ञानिक शस्त्रास्त्रोंकी चर्चा भारतीय इतिहासों, पुराणों और महाभारत आदि अनेक ग्रन्थोंमें आती है। आग्नेय वाणका मतलब यही है, अग्निकी वर्षा करनेवाला बाण, जैसे आजकल बम आदि हैं। इनके चलाने और बनानेकी तरकीबें वेदोंमें अच्छी तरहसे लिखी गयी हैं जिन्हे मंत्र कहते हैं। ये बातें आचार्य लोग अपने शिष्योंको बतलाते थे।

रावणके वैभव, विज्ञान, विद्वत्ता और राजनीतिज्ञतासे कौन ऐसा व्यक्ति होगा जो परिचित न हो। उसके सम्बन्धमें कहा जाता है कि जल, वायु और अग्नि आदि उसके यहाँ कैद थे और उसके इच्छानुसार काम करते थे। इसका मतलब भी यही है कि उसने राक्षस होनेके कारण धर्माचार्योंके आदेशोंकी अवहेलना कर वैज्ञानिक महामन्त्रोंका साधन किया था और उन्हींका उपयोग करता था। अब भी वायु, जल और अग्नि वशमें हैं जिसके बलसे बटन दबाते ही पंखा चलने लगता है। रावण भी इसी प्रकार यान्त्रिक

प्रयोगों द्वारा काम लेता था। उसे अपने लाभ और आरामसे काम था। प्रजाके सुख-दुःखकी उसको परवाह न थी, इसीसे उसने महामन्त्रोंका साधन किया था। सब प्रकारके बलोंके साथ पशु-बल भी उसमें अधिक था और यही उसके नाशका कारण हुआ।

जिन वैज्ञानिक चमत्कारोंको देख-सुनकर आज हम दाँतो-तले उँगली दबाते हैं, वे पाश्चात्य देशोंके लिये बायें हाथके खेल हो रहे हैं। जब हम मूक चलचित्रोंको परदेपर अभिनय करते देखते थे तो यही हमारे लिये आश्चर्यकी वस्तु थी, किन्तु योरोपने उनमें वाक्शक्ति भी पैदा कर दी। जब यह चर्चा पहले भारतमें फैली कि चल-चित्रोंसे संगीतकी मधुर ध्वनि भी निकलेगी तो यहाँके साधारण दिमागवाले तो इसे हवाई किले-का ही महत्व देते थे, किन्तु कर्तव्यनिष्ठ योरोपने जो सोचा वही कर दिखाया। यही वहाँके कर्मवीरोंकी विशेषता है।

योरोप जैसे शीतप्रधान देशोंमे जहाँ गर्मीमे भी बर्फ, कुहासा और पानीकी रिमझिम लगी रहती है, इन विज्ञानके विधाताओंने वायुको इतना अपने वशमे कर रखा है कि कुछ पूछिये नहीं। कमरों और रेलके डब्बोंमे गर्म वायुका इतना संचार रहता है कि लोग ठण्डेका अनुभव ही नहीं कर सकते। किसी कमरे-में बिजली वा गैसकी अँगीठी रहेगी तो किसीमे (खासकर रेलोंमें) गर्म पानीकी नले लगी रहती हैं।

यन्त्रों द्वारा वस्तु-विक्रय—

ऐसी मशीनें तो अब भारतवर्षमें भी आ गयी हैं जो इकन्नी डाल देनेसे मनुष्यका वजन बता दें। स्टेशनोंपर ऐसे यन्त्र लगाये गये हैं जिनमें इकन्नी डालनेसे प्लेटफार्मकी टिकट निकल आती है किन्तु प्लेटफार्मपरसे ऐसी मशीनें अब यहाँ उठा दी गयी हैं क्योंकि चण्ट लोग नकली इकन्नी या उसी वजनकी कोई दूसरी चीज भी डालने लग गये थे। मशीन बेचारी असली नकलीको क्या पहचान सकती है। योरोपमें इतनी बेईमानी तो है नहीं, इसीलिये सुविधानुसार यत्र-तत्र ऐसी मशीनें लगी हुई हैं जिनमें जितना पैसा लिखा रहता है डाल देनेसे इच्छित वस्तु बाहर निकल आती है। रूमाल बेचने-

वाली मशीनमें पैसा डालिये रूमाल हाजिर है। एक मशीन कई चीजें भी बेचती है। जिस खानेमें आप पैसा डालेंगे वही चीज बाहर निकलेगी। मेवा मिठाईसे लेकर अखबार आदि नित्योपयोगी वस्तुओंकी खरीद-फरोख्त इन यन्त्रोंके द्वारा धूमधामसे होती है। न मोलतोलकी जरूरत न दूकानदारकी प्रतीक्षा करनेका काम। पैसा डाला चीज ली और चलते बने। ऐसे यन्त्र वहाँके लिए क्यों न उपयोगी सिद्ध हों, जब एक-एक सेकेण्डका मूल्य वहाँके लोग लगाते हैं। भारतीयोंका मुफ्ती और किसी प्रकार जीवन-नौका खेनेवाला समय थोड़े ही है कि चार पैसेका साग लेनेमें पूरा साग-बाजार घूम-घूमकर मोल-तोल करते फिरें।

कई मशीनोंमें तो एक विचित्र करामात यह भी पायी जाती है कि यदि आपके पास रुपया है और चार आनेकी वस्तु लेनी है तो बेधड़क उसमें अपने रुपयेको छोड़ दीजिये, बारह आनेका चेंज आपके सामने आ जायगा। पैसा लेकर सौदा देना और वापसी पैसे भी ठीक देना, उसमें एक पाईकी भूल न होगी। इससे अधिक और आदमी कर ही क्या सकता है? आदमी तो सौदा बेचते-बेचते थक भी जा सकता है पर मशीनें क्यों थकने लगी? जितनी उनमें कार्यशक्ति और जितना उनके पेटमें माल भरा पड़ा है उन्हें तो वे अविश्राम रूपसे बेच देंगी ही।

बिजलीके जल-यन्त्र—

शहरोंमें जो नलें प्रायः सड़कोंपर लगी रहती हैं उन्हें लोग कभी-कभी खुली छोड देते हैं। जो अपने आप बन्द होनेवाली नलें हैं उन्हें भी रस्सी आदिसे बाँधकर खुली छोड़ सकते हैं। इस परेशानीसे बचनेके लिये योरोपमें बिजलीकी नलोंका उपयोग किया जाने लगा है। इनका पानी ऊपरकी ओर निकलता है। पीनेवाला जैसे ही अपना मुँह टोटीके सामने ले जाता है, टोटी-से जलधारा निकल पड़ती है। पानी पीकर हटते ही पानी आना अपने आप ही बन्द हो जाता है। किन्तु पानी ऊपरको निकल रहा हो और उसे बिना हाथकी सहायताके मुँह लगाकर पीना अभ्यासका काम है। भारतीयोंके लिये जल्दीमें इस तरह पानी

पीना टेढ़ी खीर है और वे लोगोंकी हँसीके पात्र बन जाते हैं। लेकिन योरोपमें इस प्रकार पानी पीना आसान काम है क्योंकि हाथ मुँहसे लगाकर अंजलिसे पीनेमें एक तो दस्ताने उतारने पड़े, दूसरे कपड़ोंके खासकर बाँह भीग जानेकी सम्भावना तो बनी ही रहती है।

थियेटरोंकी सुविधा—

भारतमें नाटक-सिनेमा देखनेवालोंको दो बातकी बडी असुविधा होती है। एक तो बीड़ी-सिगरेट पीकर राख जमीन हीमे फेकनी पडती है। बची हुई बीड़ी सिगरेट भी इधर-उधर फक देनी पडती है; जिससे कभी-कभी बड़े भयानक काण्ड भी हो जाते हैं। दूसरे प्रोग्राम और दृश्यका संक्षिप्त परिचय पढ़नेके लिए कोई माचिस जलाता है तो कोई टार्चलैम्पसे काम निकालता है और कुछ मनमसोसकर देखे बिना ही रह जाते हैं।

बीसवीं सदीके पाश्चात्य वैज्ञानिक असुविधा और असम्भव शब्दका बहिष्कार कर रहे हैं। एक दिन वह आनेवाला है कि उक्त दोनों शब्द वहाँके कोषसे ही निकाल दिये जायँगे।

यहाँके अच्छे थियेटरहालोंमे प्रत्येक सीटमें एक राखदानी लगी हुई है जिसमे दर्शक सिगरेट पीकर राख झाड़ते हैं, बगलमे एक-एक बहुत हलकी बत्ती भी लगी रहती है जिसका प्रकाश ऊपर नही फैलता और दर्शक पुस्तक और प्रोग्राम आसानीसे पढ़ सकता है और इन बत्तियोंका कोई प्रभाव हालमे नहीं पड़ता। बहुत सम्भव है, शीघ्रही यहाँ भी ऐसा प्रबन्ध हो जाय।

एक्स-रेका उपयोग—

अब तो एक्स-रे का प्रयोग भारतमें भी हो चला है। इससे लोग इसके गुणसे तो परिचित हो गये हैं लेकिन यह सर्वसाधारणके लिये सुलभ नहीं है। जब किसी धनीके शरीरके भीतरी भागमें कोई रोग हो जाता है तो उसका चित्र एक्स रे द्वारा लिया जाता है। यह एक ऐसी पारदर्शक किरण होती है कि ऊपरी हिस्सेपर इसका प्रभाव नहीं पडता। छातीपर लगा देनेसे मनुष्यकी पसली-पसली देख पड़ेगी, उसमें कहीं तिल भर भी खराबी होगी तो वह इससे बच नही सकती। पर जो भारतके लिए बहुमूल्य है वही योरोपके जूतोंकी दूकानोंपर काममें आती है। आप जूते पहनकर इस मशीनमें पैर डाल

दीजिये, जूता तो आपको न दिखायी पड़ेगा किन्तु जूता पहनने-से आपके पैरकी क्या स्थिति है यह स्पष्ट दिखायी पड़ेगी। कहींपर आपका पैर दब तो नहीं रहा है,कहीं उँगलियाँ तो नहीं दबी हैं आदि बातें साफ मालूम हो जायेंगी। इस प्रकार अपने पैरके उपयुक्त जूता मिलनेमे सहायता मिलती है। यहाँ तो पैरोंको जूतोंके अनुकूल रहना पड़ता है न कि जूतोंको पैरोंके अनुकूल।

उठनेवाले रङ्ग-मञ्च—

रङ्ग-मञ्च (स्टेज) के साथ वाद्य-मण्डलीका सम्पर्क तो संसार भरमें रहता है। अपने यहाँ बजानेवाले दर्शकोंके ठीक सामने बैठते हैं और वे भी दर्शकोंमें ही मिले मालूम पड़ते हैं। योरोपमें स्टेजपर बैण्ड पार्टी भी इसी तरह रहती है, जिसमें बजाने-वालोंकी संख्या बीस-चालीस तक होती है। बैण्डवाले—जबतक अभिनय होता रहता है अपने अलग स्टेजपर रहते हैं जो दर्श-कोंकी सीटकी ऊंचाईके बराबर होता है। इण्टरवल (अव-काश) के समय जिस प्रकार यहाँ दर्शकोंके विनोदार्थ रेडियो आदिका उपयोग किया जाता है, उसी प्रकार वहाँके रङ्गमञ्चोंपर अवकाश पर बैण्ड बजता है। जब कोई बड़ा दृश्य तैयार करना

होता है तब भी बैण्ड बजाकर दर्शकोंको आकर्षित किया जाता है। वाद्य-मञ्चमें एक बड़ी विचित्रता यह है कि जहाँ अभिनय रुका और बैण्डकी जरूरत पड़ी वहाँ पूरा स्टेज ही ऊपर उठने लगता है और यहाँतक ऊपरको उठता है कि वह अभिनय-मञ्चके बराबर पहुँच जाता है और जो बैण्डवाले पहले दर्शकोंकी बराबरीमे थे वे अब अभिनेताओंकी बराबर ऊंचाईपर पहुँच जाते हैं जिससे जनता बैण्ड सुननेके लिए आकर्षित हो जाती है। योरोपवाले जो न करें सो थोड़ा है।

आकाशी रेल—

रेलोंकी सड़कोंके बनते समय कभी-कभी ऐसे दुर्गम स्थान आ पड़ते हैं जहाँ रेलकी पटरियाँ बैठाना असाधारण कार्य हो जाता है। और कभी-कभी तो असम्भव भी हो जाता है। लेकिन पाश्चात्य-विज्ञान और उनके स्रष्टाओंके लिए असाध्यको साध्य और अगम्यको गम्य बना देना कोई बड़ी बात नहीं है। योरोपमें कई स्थानोंपर रेलकी पटरियाँ नहीं बैठाई जा सकतीं। ऐसे स्थानोंपर विद्युत-शक्तिकी सहायतासे रेलोंके डब्बे मोटे तारोंपर लटकते हुए दौड़ते हैं। एक स्थानसे चलकर दूसरे निर्दिष्ट स्थानपर डब्बे आ जाते हैं। यात्री लटकती हुई ट्रेनमें मौजसे बैठे हुए एक स्थानसे दूसरे स्थानपर पहुँच जाते हैं। उन्हे स्थल मार्ग और आकाश मार्गमे कोई अन्तर नहीं प्रतीत होता है।

पोस्ट और तार आफिसोंमें विज्ञान—

यूरोप जैसे व्यापार-प्रधान देशोंमें तारों और पत्रोंका कितना आदान-प्रदान होता होगा, यह अनुमान करने हीसे जाना जा सकता है। बड़े-बड़े पोस्ट और तार आफिसोमे पत्रों और तारोको एक विभागसे दूसरे विभागमे पहुँचाना पड़ता ही है। यदि यह काम आदमियोंसे लिया जाय तो मँहगा भी पड़े और समय भी अधिक लगे। एक तल्लेसे पाँचवें तल्लेमे आदमीको पहुँचनेमें अधिक समय लगेगा ही। इसी असुविधाको दूर करनेके लिए, यहाँ भी यांत्रिक-प्रयोगोंसे ही काम लिया जाता है। पम्प और फीतोंके संचालनसे यह काम सुगम हो जाता है।

यहाँपर तारोंको कट-कट सुनकर तार नही नोट किये

जाते। इनका काम भी मशीनोंसे ही होता है। एक विशेष प्रकारकी टाइपराइटर मशीन बनी होती है जिसमें कागज लगा देनेसे उन्ही गट गटकी आवाजको वह छापती चली जाती है और तार पूरा हो जानेसे मशीन रुक जाती है। कहिये यह आविष्कार वहाँके लिए कितना उपयोगी सिद्ध हो रहा है।

इसके अतिरिक्त जिधर जाइये उधर ही विज्ञान देवकी प्रभुता दिखायी पड़ती है। बिजलीके करिश्मे देखकर दाँतोंतले उँगली दबानी पड़ती है। विज्ञानका साम्राज्य यहाँके अणु-अणु में है, यदि ऐसा कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी।

यात्रियोंके लिये ज्ञातव्य बातें—

भारतीय, यात्रा-प्रेमियोंमे कितने ही लोग योरोपके रहन-सहनसे अपरिचित होनेके कारण अनेक झंझटोंमें फँस जाते हैं। अस्तु; हम यहाँ एक तालिका प्रस्तुत करते हैं जिससे यात्रियोंको अधिकसे अधिक सुविधा हो सके और अपनेको सब प्रकारकी बाधाओंसे वे सुरक्षित रख सकें। इस तालिकामें अपने अनुभवोंके अतिरिक्त अन्य सुप्रसिद्ध यात्रियोंके अनुभव और अनेक यात्रा सम्बन्धी पुस्तकोंकी हिदायतें भी दी जाती हैं। यात्रा-प्रेमियोंको चाहिए कि वे निम्नलिखित हिदायतोंको उपेक्षाकी दृष्टिसे न देखें। यात्रा करनेके पूर्व इन बातोंपर ध्यान रखनेसे अन्तमे इनकी उपयोगिता चरितार्थ होगी।

मत ले जाइये—योरोपमें विस्तर सवत्र मिलता है, रेलमें रेलवे कम्पनी देती है, होटलमे होटलवाले, मकानोंमें मकान वाले। अस्तु, विस्तर ले जानेकी आवश्यकता नहीं रहती।

* * *

मत ले जाइये—हल्के और ठण्डे कपड़े, क्योंकि योरोपमें शीतका साम्राज्य रहता है। अस्तु; अधिक मोटे और गर्म कपड़े हर समय आवश्यक हैं।

* * *

मत ले जाइये—अपने सामानको विना अपने नाम और पतेके लेविल लगाये हुए।

* * *

मत ले जाइये—छोटे-मोटे इतने अधिक सामान, जिन्हें आप स्वयं उठाकर न ले जा सकते हों; क्योंकि इससे कुलियों-का खर्च अधिक वढ़ जाता है और रजिस्ट्री आफिसमें भी अधिक खर्च लग जाता है।

* * *

मत स्थगित कीजिये यात्राके प्रोग्रामको जवतक आप पूर्ण युवक हैं; क्योकि वुड्ढोंकी अपेक्षा आप अधिक यात्राका आनन्द ले सकेंगे। आपको इस वातका ध्यान सदा रखना चाहिए कि संसार उसीका है जो संसारकी यात्रा करता है।

मत बनाइये—अपनी यात्राके कार्य-क्रम अपने पाकेट (आर्थिक स्थिति) से अधिक खर्चीला; क्योंकि योरोपमें ऐसे भी स्थान हैं जहाँ होटलोंका खर्च, खान-पान, रहन-सहन सबका अधिक खर्च पड़ जाता है। यात्रा तभी आनन्द दायक हो सकती है जब रुपयोंका अभाव न हो। किसीने ठीक कहा है "पासमें जमा रहे तो खातिर जमा रहे।"

* * *

मत भूलिये—अपने उद्देश्यके अनुसार ही यात्राका स्थान चुननेमें; क्योंकि योरोपमें शिक्षा, व्यापार और आमोद प्रमोद आदिके लिए अपने-अपने विषयके अनुसार प्रधानता रखते हुए अलग-अलग स्थान हैं। यदि आप अपने उद्देश्यके विरुद्ध ऐसे स्थानमें जा पहुँचे, जहाँ आपके उद्देश्य पूर्तिमे वाधा पड़े तो यात्रा व्यर्थ ही हुई।

* * *

मत चूकिये—अपने साथ उस राज्यके सिक्कों और रेज-गारी लेनेके लिये; जिस राज्यमें आप जाना चाहते हैं, नहीं तो कभी-कभी बड़ी असुविधाओंका सामना करना पड़ जाता है। सिक्के यात्रा-कम्पनियोंसे और स्थानीय बैंकोंसे प्राप्त हो सकते हैं।

* * *

मत समझिये—हमारा सामान अच्छी तरह सुरक्षित रहेगा। अस्तु: अपने बण्डलोंको हिफाजतके साथ बाँधिये और उसपर लेबिल लगाकर अच्छे तालोंका उपयोग कीजिये।

*　　　*　　　*

मत घबड़ाइये—अपनी विदेशी भाषाकी कमजोरीपर, क्योंकि प्राय: प्रत्येक स्थानोंपर अंग्रेजी बोलनेवाले मिल ही जाते हैं।

*　　　*　　　*

मत बाँधिये-घरमें बैठे-बैठे विचारोंके पुल, बल्कि अपने उद्देश्यको चरितार्थ कीजिये। यह न समझिये कि योरोपमें सर्वत्र खर्चा ही खर्चा है। अधिक व्ययसे घबड़ानेकी कोई बात नहीं ? क्योंकि वहाँ सस्ते होटल और रहनेके स्थान भी मिल सकते हैं।

*　　　*　　　*

मत खरीदिये—अनावश्यक वस्तुओंको केवल प्रदर्शकों (गाइडों) के आग्रहवश; क्योंकि उन्हें तो दूकानदारोंसे कमीशन मिला करता है जिससे इसके लिए वे आग्रह करेंगे ही।

*　　　*　　　*

मत दीजिये—स्टेशनपर खोंचेवालोंको अधिक पैसे जब गाड़ीके छूटनेका समय हो गया हो; क्योंकि ऐसे मौकोंका वे प्राय: दुरुपयोग कर बैठते हैं और बिना चेञ्ज वापस दिये ही

चम्पत हो जाते हैं। आपके पास जितने खुदरे पैसे हों उतने ही का सौदा लीजिये। ऐसा न करनेपर धोखा खानेका भय बना ही रहता है।

*　　*　　*

मत फँसिये—पेरिसमें उन चित्र बेचनेवालोंके जालमें, जो यात्रा-प्रबंधक कम्पनियोंके पासकी गलियोंमें चक्कर लगाते रहते हैं और गन्दे चित्रोंके प्रलोभनमें ठगनेकी चेष्टा करते रहते हैं।

*　　*　　*

मत समझिये—फ्रांसमें पानी मुफ्त मिलता है। वहाँ पीनेका पानी भी मुफ्त नहीं मिलता। वहाँ पीनेके लिए झरनोंका स्वास्थ्यकारक पानी बोतलोंमें भरकर सुन्दर लेबिलों-से सुसज्जित मिलता है और उसका मूल्य देना पड़ता है।

*　　*　　*

मत भूलिये–स्वावलम्बनके अभ्यासको। बन्दरगाहोंपर आपको ऐसे भी भारतीय मिलेगें जिन्हें देखकर विदेशमें आपका भ्रातृ-प्रेम स्वभावतः उमड़ पड़ेगा। आप अपने ध्येय और उद्देश्यको उनपर प्रकट कर देगें, किन्तु वे इसका दुरुपयोग करेगें। आपको ठगनेकी चेष्टा करेंगे और मौका लगनेपर आपके पाकेटकी भी सफाई करनेकी चेष्टा करेंगे। अस्तु; अपरिचितोंसे सदा सावधान रहिये।

मत बोलिये—जिस भाषासे आप भली भांति परिचित न हों, क्योंकि उच्चारणकी भूलसे अर्थका अनर्थ भी हो सकता हैं। अंग्रेजी बोलकर काम चलाना ही अच्छा है, भले ही वह टूटी-फूटी हो

* * *

मत रिजर्व कीजिये—होटलोंको पहले हीसे, यदि आप पूरा पैसा देनेको तैयार नही हैं; कारण विशेषसे यदि आप वहाँ न पहुच सकें, तो २४ घंटे पहले ही उन्हें सूचित कर देना चाहिये, अन्यथा होटलका पूरा चार्ज देना ही पड़ेगा।

* * *

मत दीजिये—अधिक पैसा। यदि जरूरतसे ज्यादा पैसा देना पड़ रहा हो तो यात्राप्रबन्धक कम्पनियोंसे सलाह लीजिये। इससे आप तो ठगनेसे बचेंगे ही साथही भावी यात्रियोंको भी अधिक लाभ होगा।

* * *

मत कीजिये—खाने-पीनेमें कभी कंजूसी, पेटकी तरफसे पेन्शन लेनेकी चेष्टा न कर स्वास्थ्यप्रद चाहे अधिक व्यय प्रद भोजन हो, करनेमें कभी न चूकिये, नहीं तो डाक्टरोंके बिलमें वह कंजूसी निकलेगी। अस्तु; पेट और रुपयोंकी

थैलीमें पक्का संघर्ष होने दीजिये और आप देखते चलिये कि कौन जीतता है।

* * *

मत रखिये—बड़े बक्सोंमें बार-बार उपयोगमें आने वाली वस्तुओंको; क्योंकि उन्हें बार-बार खोलनेमें असुविधा होगी। अस्तु; ऐसी वस्तुओंके लिए अलग ही एक छोटी बक्स रखिये।

* * *

मत पूछिये—उस स्थानका पता, जहाँ आप पहले नहीं जाना चाहते। योरोपकी जनतामें प्रायः यही भावना रहती है कि विदेशी यात्रियोंके हृदयमें योरोपके प्रति कोई बुरी भावना न उत्पन्न हो,इसलिए वहाँके लोग यात्रियोंको अधिक-से-अधिक सुविधा पहुँचानेका प्रयत्न करते हैं। जिस स्थानका आप पता पूछेंगे, लोगोंकी भीड़ चारों तरफ लग जायगी और आपको वहाँतक वे पहुँचा देंगे। इसलिये पहले वहींका पता पूछिये जहाँ जानेका निश्चय कर लिया हो।

* * *

मत कहिये—उस देशके निवासियोंको विदेशी, जिस देशमे आप भ्रमण कर रहे हों; क्योंकि आप स्वयं उस देशवाशियोंके विदेशी हैं न कि वे। वे तो तब विदेशी है, जब आप स्वदेशमें हैं।

मत हटिये—किसीके साधारणसे उपकारपर भी थैंक्यू (Thankyou) कहे। इस प्रकार अभ्यास रखिये। अन्यथा लोग आपको असभ्य समझेंगे।

*   *   *

मत रहिये—मकान किराया लेकर एक गृहस्थकी तरह तबतक, जबतक आप वहांकी भाषासे भली भाँति परिचित न हो जायँ। अन्यथा आपको अनेक झंझटोंका सामना करना पड़ेगा। होटलोंमें रहनेसे वहांके नौकर आपको सब प्रकारकी सुविधायें देंगे।

*   *   *

मत जाइये—संध्याके समय भव्यस्थानोंमें, जबतक कि आप सांध्य-परिधानों (इवनिंग ड्रेस काली पोशाक) से सुसज्जित न हो, नहीं तो आप वहां प्रवेश न कर सकेंगे।

*   *   *

मत टहलिये—पार्वत्यस्थानोंमें बिना मजबूत तल्लोंके बूटके, कोमल तल्लोंके शो (जूते) वहीं आपसे विदाई लेनेके लिए आपको न बाध्य करने लगे, जिससे यात्राका मजाही किरकिरा हो जाय।

*   *   *

मत करें—पार्वत्यस्थानोंमें बर्फकी नदियोंके निरीक्षणमें

जरा भी असावधानी; क्योंकि वहाँकी साधारणसी दुर्घटना प्राणघातक हो सकती है।

*　　　　*　　　　*

मत फँसिये—पेरिस ऐसे नगरोंके उन लोगोंके भुलावेमें, जो वहाँके रात्रिजीवन दिखानेका कटु प्रलोभन दें। यदि आप ऐसे स्थानोंके निरीक्षणकी आवश्यकता समझते ही हों तो वहाँके होटलोंके प्रबन्धकों अथवा यात्रा-प्रबन्धक कम्पनियोंकी रायसे देख सकते हैं।

*　　　　*　　　　*

मत करिये—अपने साथियोंसे व्यर्थकी लम्बी-चौड़ी बातें, इससे कुछ लाभ तो हीं होगा त पर हानिकी अधिक सम्भावना है।

*　　　　*　　　　*

मत घबड़ाइये—होटलोमें अपनी असुविधाओंपर, बल्कि होटलके प्रबन्धकोंसे उनके सोनेके पहले अपनी असुविधाओंको स्पष्ट कह सकते हैं। वे अपनी त्रुटियोंको सुनकर बहुत प्रसन्न होते हैं और आपकी सारी असुविधाओंको दूर कर देंगे।

*　　　　*　　　　*

मत सोचिये—होटलके नौकरोंको बिलके अतिरिक्त इनाम देना पड़ रहा है, यह तो वहाँका नियम ही है। यदि

होटलके बिलमें नौकरका इनाम भी शामिल कर लिया गया है तो ऊपरसे अलग इनाम मत दीजिये, इससे आपकी ही केवल हानि नहीं है, पर भविष्यमे आनेवाले यात्रियोंको अधिक असुविधा होगी।

* * *

मत समझिये—योरोपमें नहानेके लिये मुफ्तमें पानी मिल जायगा, वहाँ नहानेके पानीके लिये अतिरिक्त मूल्य चुकाना पड़ता है।

* * *

मत चलिये—बिना उस स्थानके नक्शेके, जहाँका आप भ्रमण कर रहे हों, इससे आपको असुविधा होगी।

* * *

मत छोड़िये—उपर्युक्त सूचनाओंको यह कहकर कि उन्हें तो हम जानते ही हैं। सम्भव है, आप जानते हैं और दूसरे मित्र न जानते हों।

भारतकी ओर—

'दिवस जात नहिं लागहिं बारा' के अनुसार मुझे योरोप-भ्रमण करते ६ महीने हो गये। यह तो मैं बता ही चुका हूँ कि एक तो मुझे बचपनसे इधर-उधर घूमने और यात्रा करनेमें विशेष आनन्द आता था, दूसरे स्वामी सत्यदेवजीकी यात्रा सम्बन्धी पुस्तकोंको पढ़कर मैं इस ओर अधिक उत्साहित हो गया था। अब मेरा दिल योरोपसे ऊबने लगा, क्योंकि प्रख्यात दर्शनीय स्थानोंको भली भाँति देख चुका था। एक ओर तो स्वदेश-प्रेम हृदयमें उमड़ रहा था कि किस दिन भारतकी पवित्र रजसे अपनेको पवित्र करूँगा। कब स्वबन्धु-बान्धवोंके दर्शन-का सौभाग्य प्राप्त होगा; दूसरी ओर संसारके सबसे श्रीसम्पन्न

राष्ट्र अमेरिका परिभ्रमणकी उत्कट अभिलाषा हृदयको विडोलित करती थी। इसी बीचमें एक तीसरा संघर्ष हृदयको आन्दोलित करने लगा।

एक दिन मैंने किसी पत्रमे पढ़ा कि लण्डनसे एक वायुयान जूनके अन्तमें खुलेगा जो करांचीतक यात्रियोंके साथ डाक ले जायेगा और वहांकी डाक यहाँ लायेगा। मैंने उस पत्रकी कटिंग काटकर पाकेटमे रख ली। मुझे वे दिन भी याद हैं जब स्वदेशमे वायुयानोंको उड़ता हुआ कौतुककी दृष्टिसे देखा करता था और उस समय सोचा करता था कि क्या 'मैं भी कभी इनपर बैठकर पक्षिराज गरुड़को प्रतियोगितामे आनेके लिये ललकारूँगा।" मशीनरीके कामोंमें मेरी दिलचस्पी बचपनसे ही थी। मैं अपनेको इस समय एक अच्छे मोटर-सञ्चालकोंमे समझता था। धीरे-धीरे वायुयान सञ्चालनकी कल्पना भी किया करता था। यदि मैं अपनी उस कल्पनाको अपने किसी भारतीय मित्रसे प्रकट करता तो वह अवश्य मुझे शेखचिल्लीकी उपाधिसे विभूषित करता। खैर, अब मेरे सामने दो प्रलोभन आ उठे। एक तो अमेरिका भ्रमणकी लालसा और दूसरा सर्वप्रथम वायुयान द्वारा इतनी बड़ी यात्रा करना। मेरी दशा ठीक वही हो रही थी जो अभिमन्युको रणयात्राके समय उत्तरासे विदाई लेते समय हुई थी।

इसी बीचमें घरवालोंके पत्रों और तारोंका ताता बंध गया। सबमें शीघ्र वापस आ जानेकी हिदायतें रहती थीं। मैंने घरवालों-के सामने वायुयान द्वारा भारत वापस आनेका प्रस्ताव रखा। वायुयान द्वारा पहले-पहल जब कि इतनी बड़ी यात्रा अभीतक किसी भारतीयने नहीं की थी, खतरेका काम समझ कर पिताजी और घरवाले वात्सल्य प्रेमसे कातरता दिखाने लगे, किन्तु मेरी दृढ़ताने उनकी कातरतापर विजय पायी और मुझे हवाई जहाज द्वारा भारत आनेकी पिताजी द्वारा आज्ञा मिल गयी और अमेरिका यात्राका प्रलोभन अपनासा मुँह लेकर रह गया। यद्यपि तत्सम्बन्धी पुस्तकों और पत्रोंने उसकी तरफसे पर्याप्त सिफारिश (कन्वेसिंग) भी की थी।

जिस समयकी बात मैं लिख रहा हूँ उस समय मैं अपने मित्रोंके साथ आर्य-भवन (लण्डन) में ठहरा था। मेरी वायुयान यात्राके सम्बन्धमें मेरे मित्र-मण्डलमें काफी चहल-पहल थी। कुछ लोग तो मेरे पक्षमें थे और कुछ विपक्षमें। कुछ राय देते थे कि नवयुवकोंको ऐसा साहसपूर्ण कार्य अवश्य करना चाहिए और कुछ इसके विरुद्ध थे। कुछका कहना था कि कोई ऐसी आवश्यकता नहीं है कि ऐसा खतरा अपने सिरपर लिया जाय।

उसी समय आर्यभवनका वार्षिक उत्सव भी हुआ।

बाहरके बहुतसे भारतीय भी उसमें सम्मिलित होनेके लिए निमन्त्रित किये गये थे। जिनके नाम हैं सर्व श्री आर० एस० शर्मा, स्व० ताराप्रसादजी खेतान, रामेश्वरलालजी बजाज, कस्तूरचन्दजी बाँठिया, बासदेवजी सराफ और मि० जगतभानूजी तथा और भी बहुतसे परिचित भारतीय थे।

मैंने 'इम्पीरियल एयर वे' से यात्राके सम्बन्धमे पूछताछ की। उससे ज्ञात हुआ कि कराँची तक पहुँचानेका भाड़ा ११५ पौंड (१ पौ०=१३ रु०) पड़ेगा, जिसमें यात्राके साथ-साथ यह भी तै था कि जिस शहरमें हवाई जहाज रातको ठहरेगा उस शहरके सर्वोत्तम होटलमें यात्रियोंके सोनेका प्रबन्ध रहेगा। इसके लिए अलग खर्च न करना पड़ेगा। रास्तेमें भोजनका भी प्रबन्ध कम्पनी अपनी तरफसे करेगी। हवाई जहाज स्टेशनसे शहरमें जाने और शहरसे हवाई जहाजतक वापस लानेके लिए लारियों और मोटरका प्रबन्ध कम्पनीकी तरफसे ही रहेगा। केवल शराब, सिगरेट, शहरमे घूमने और बायसकोप तथा अन्य आमोद-प्रमोदका खर्च कम्पनी न देगी।

मैंने लिखा-पढ़ी कर उनसे बिना भोजनकी टिकट ली। जिसके लिए उन्होंने मुझसे ६ पौण्ड कम लिए। पूछनेपर यह भी मालम हुआ कि हवाई जहाजके यात्रीको २२१ पौण्ड वजन शरीर और सामान सहित जानेका हुक्म है।

मैं ता० २० जुलाईको आर्य भवनसे अपने मित्र मिस्टर दे० के साथ इम्पीरियल एयरवे के आफिसमें आया। वहाँपर अपना सामान आदि अपने साथ वजन कराया। पहले मेरा अनुमान था कि शायद सामान सहित मेरा वजन कुछ अधिक हो और मुझे इसके लिए कुछ अधिक चार्ज देना पड़े, किन्तु तौलानेपर मैं सामान सहित आवश्यकता और नियमसे १६ पौण्ड कम था। आज मुझे इस बातका भी अनुभव हुआ कि दुबला-पतला होना भी कभी-कभी लाभदायक होता है। मैं पहले स्थूलकाय होनेकी चेष्टा किया करता था, अतः आज यदि स्थूलकाय हो गया होता तो सम्भवतः नंगे बदन हवाई जहाजपर बैठनेकी स्वीकृति लेनेमें भी कुछ अधिक देना पड़ता। कितने भीमके अवतार ऐसे भी हैं जिनका वजन नियमसे भी अधिक होता है और उन्हें अधिक पैसे देने पड़ते है।

जब मैं आर्यभवनसे भारत वापसीके लिए चल पड़ा तो मनमे अनेक प्रकारकी तरंगें उठने लगीं। जिस स्थानपर कुछ दिन रहा जाता है, स्वभावतः उस स्थानसे ममता उत्पन्न हो जाती है। दूसरे अमेरिका भ्रमणकी विचार-धारा भी कभी-कभी मुझे अधीर करने लगती; लेकिन 'होता वही है जो मंजूर खुदा होता है।' हवाई यात्राके आगे किसीकी दाल न गली। जिस हवाई जहाजसे भारत वापस आनेके लिए मैं प्रस्तुत था

उसकी हवाई यात्राके इतिहासमें यह तीसरी यात्रा थी। इसके पहले किसी भी भारतीयने इतनी बड़ी यात्रा नहीं की थी, यह मुझे जहाजके अधिकारियों द्वारा ज्ञात हुआ। खैर, यह भी मेरे लिए एक गौरवकी बात हुई कि मैं इतिहासमें पहला व्यक्ति हूँ जो इतनी बडी यात्राके लिये प्रस्तुत हूँ।

हमलोग एक विशालकाय लारी द्वारा लण्डनसे क्राइडन-को रवाना हुए। यह संसारका सबसे बड़ा हवाई जहाजका अड्डा है। यहाँ यात्रियोंकी सुविधाका बहुत अच्छा प्रबन्ध है। यहाँसे विविध स्थानोंके लिए लगभग ५० हवाई जहाज प्रति-दिन छूटते हैं। लारीसे उतरकर मुझे अपना पासपोर्ट दिखाना पड़ा। डाक्टरने स्वास्थ्यकी परीक्षा करके मुझे जानेकी अनुमति दे दी।

अब जहाजपर चढ़नेकी बारी आयी। मै अपने मित्र मि० दे० से एक बार फिर मिला। उन्होंने गद्गद होकर मेरे निरापद भारत पहुँचनेकी कामना प्रकट की और प्रेमपूर्वक हम एक दूसरेका आलिङ्गन कर अलग हो गये। इस समय विशालकाय जहाज अलूमुनियमके पहाड़की तरह चमक रहा था। यह तीन इंजनों द्वारा सञ्चालित होता था। हरएक इंजनमे पाँच-पाँच सौ घोडोंकी शक्ति थी। इसका भीतरी भाग काफी बड़ा और सुन्दर था। इसमे २० यात्रियोके बैठनेके लिए बेंतकी बनी हुई २०

आराम कुर्सियां लगी हुई थीं। कुर्सियोंके पास ही इंजनकी आवाजसे बचनेके लिये कानमें लगानेकी रुईका प्रबन्ध था। अब तो विज्ञानने इतनी उन्नति कर ली है कि यात्रियोंको इंजनकी आवाजका अनुभव ही नहीं होता। तबके जहाजोंमें इंजिन ठीक सामने लगते थे और अब पंखेके ऊपर लगने लगे हैं। कमरेमें ऐसी घड़ी लगी थी जो यह बताती है कि जहाज कितनी ऊंचाईपर उड़ रहा है। समय देखनेके लिए भी घड़ी लगी थी।

पुस्तक, टोपी और बेंत आदि रखनेके लिए ऊपर जालीदार सुन्दर ब्रेकेटका भी प्रबन्ध था। एक कोनेमें शौच-गृह भी था, जिसमें शौच जाने और मुँह-हाथ धोनेके लिए जल, साबुन और तौलिये, शीशे आदिका भी प्रबन्ध था।

कहनेका तात्पर्य यह कि जहाज भली भाँति सजाया गया था। भीतरी हिस्सा आजकलकी सैलून मोटरकारकी तरह समझ पड़ता था। भीतरी भागकी रँगाई भी कलाकी दृष्टिसे हुई थी। दो चालकों और एक बेतारके मिस्त्रीके लिए एक अलग कमरा सामनेकी ओर बना हुआ था। सब यात्रियोंके चढ़ जानेपर कमरा बन्द कर दिया गया और तीनों इंजन चलने लगे। मैं खिड़कीके भीतरसे मिस्टर दे० के हिलते हुए रूमालका उत्तर कुछ समयतक देता रहा। लेकिन यह लोहेका

पक्षी हमारी बाट क्यों देखने लगा ? वह जमीनपर दौड़ने लगा। लगभग ५-६ सौ गज दौड़नेके पश्चात् अपनी भीषण आवाजके साथ शून्याकाशमे हवाकी लहरोंपर नाचने लगा। उस समय मेरे हृदयमें जो गुदगुदी होती थी उसे वर्णन करनेकी चेष्टा मेरे वशकी बात नहीं। जहाज उठता-उठता ३००० फीटतक ऊपर उठा। उस समय संसारका वाणिज्य केन्द्र, जनसंख्याके विचारसे सबसे प्रथम और वृटिश राज्यका सबसे बड़ा नगर लण्डन एक चतुर कारीगरके बनाये खिलौने (माडल) के समान जान पड़ता था। आज कुछ धुवा होनेके कारण उसका मनोहर दृश्य साफ नहीं मालूम पड़ता था। मैं बंगालका समुद्रतटसे २०-२५ फीट ऊंचा रहनेवाला प्राणी आज अपनेको समुद्रतटसे ३००० फीट ऊँचा पाकर फूला न समाता था। मुझे क्या मालूम था कि मुझे और भी ऊंचाईपर जाना होगा। हाइट (ऊँचाई) मीटरका काँटा धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा। जब हमारा जहाज इंगलिश-चेनलके ऊपर आया तब वह ६००० फीटकी ऊंचाईपर था। लगभग २ घंटे ४५ मिनटकी यात्राके बाद हमलोग पेरिस आ पहुंचे। यही यात्रा रेल और जहाज द्वारा लगभग १०-१२ घण्टोमे होती है।

पेरिस पहुंचनेपर हवाइ जहाजके चालक कैप्टेन आई स्टाफोर्ड (Captan of stafford) से इतनी ऊँचाईपर उड़नेका कारण

पूछा तो उन्होंने बताया कि कुछ सप्ताह पूर्व एक वायुयान बहुत कम ऊँचाईपर जाकर, चेनल पार कर रहा था, अचानक इंजनके दोषके कारण उसकी गति रुक गयी। वह इतना कम ऊँचाईपर था कि न तो वह चेनलके इस पार उतर सकता था और न उस पार। लाचार उसे यात्रियों और चालक सहित गिरकर नष्ट होना पड़ा। अधिक ऊँचाईसे उड़नेपर यदि दुर्भाग्यवश इंजन खराब भी हो जाय तो हम चेनलके इसपार या उस पार उतर सकते हैं।

पेरिसका एरोड्रम (हवाई जहाजका अड्डा) भी योरोपके प्रख्यात अड्डोंमेंसे एक है। यहाँ भी यात्रियोंके उतरने-चढ़नेका पूर्ण प्रबन्ध है। यहाँ हमलोग डेढ़ घण्टेतक भोजनके लिये रुके। यहाँसे जर्मनी जानेवाले हवाई जहाजसे हमलोग स्वीटजरलैण्डके प्रख्यात नगर बाल (Basle) के लिए रवाना हुए। किन्तु आज सामनेकी हवा बहुत तेज थी, अस्तु; जहाजके कुछ समय चलनेके पश्चात् निकटवर्ती रोम्मिल नामक एरोड्रममें और पिट्रोल लेनेके लिए उतरना पड़ा। पहले तो आकस्मिक उतरनेके कारण सब यात्री घबरा उठे, पर जब सञ्चालकसे पूछा गया तो उसने सान्त्वना दी। आगेकी यात्राको निरापद बनानेके लिये पिट्रोल लेनेके लिये रोम्मि-लकी तरफ आगे बढ़े। अबतक तो यात्रा बड़ी शान्तिसे हो रही थी; किन्तु प्रतिकूल मौसिमने सारा मजा किरकिरा कर दिया।

हमलोग किसी प्रकार निश्चित समयसे डेढ़ घंटा देरकर वाल पहुँचे। यहाँसे केवल वे ही यात्री जो पूर्वकी ओर जाना चाहते थे उतरे। वालमें संध्याका भोजन कर आगेकी यात्राके लिये वाल स्टेशनपर आये। यहाँपर 'इम्पीरियल एयर'वे द्वारा (Wagon Lit) वैगनलिटकी सर्वोत्तम सोनेकी गाड़ियाँ यात्रियोंके लिये सुरक्षित थीं। अब यात्रियोंसे परिचय करनेका मौका मिला और पता लगा कि इस दलमें कराँची तककी यात्रा करनेवाले हमलोग केवल तीन आदमी हैं। वाकी यात्रियोंमेंसे कोई इटली कोई पर्सिया और कोई ईराकतक ही जानेवाले हैं। इस लम्बी हवाई यात्रामें केवल इसी स्थानपर रेलवेका उपयोग किया जाता है और इसका चार्ज भी इम्पीरियल एयरवे कम्पनी देती है। आज रात्रिका मौसिम बहुत अच्छा था। इससे दरवाजे खुले ही रहे। सड़कके किनारेकी दृश्यावली देखते हुए हमलोग सो गये, प्रातः इटलीमें आँख खुली और लगभग साढ़े नौ बजे हमलोग जेनेवा स्टेशन पहुँचे। यहाँसे हमलोग जेटी (समुद्री अड्डा) पर पहुँचाये गये। मुझे अनुमान था कि जेटीपर फल खानेको मिल जायेगा, परन्तु वहाँ कुछ नहीं था। अस्तु; मैंने इसके लिये वहाँके अधिकारीसे फल लेनेकी इच्छा प्रकट की। उसका सौजन्य आज भी मेरे हृदयमें ज्यों-का-त्यों बना है। उसने बड़ी नम्रतासे एक टैक्सी मेरे साथ कर दी। मैं टैक्सीपर शहर जाकर फल खरीद लाया।

इटलीके मस्त नाविक [पें० ३१६]
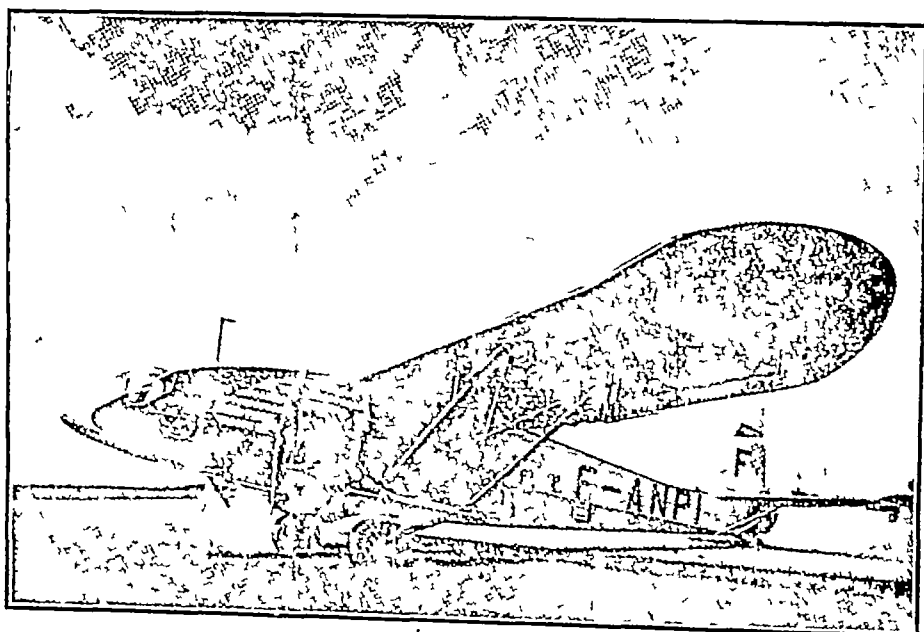
आधुनिक उड़नखटोला [पें० ३१६]

यहाँ एक विचित्र बात यह ज्ञात हुई कि कोई भी वायुयान द्वारा इटलीके आकाशी दृश्यका चित्र नहीं ले सकता। अस्तु; यहाँपर जिनके पास कैमरे रहते हैं उनपर सील (मुहर) लगा दी जाती है। जब मेरे कैमरेपर उसने सील लगाई तो मैंने उससे हँसते हुये कहा,—"मेरा कैमरा तो ऐसा बना हुआ है कि सील-की रक्षा करते हुए भी इसका उपयोग किया जा सकता है।" तब उसने हँसते हुए कहा—"मैंने तो कानूनका पालन कर दिया अब आपका कैमरा जाने और आप जानें।" सील लगा देनेके साथ हमारा दायित्व पूर्ण हो जाता है।

लगभग ११ बजे हमलोगोंको इटलीमें वायुयानपर सवार होना पड़ा। यह वायुयान अपने समयका सबसे नये ढंगका और बड़ा था। इसे (Flying Boat) उड़नेवाली नाव कहते हैं, क्योंकि इस प्रकारके वायुयान पृथ्वीपर नहीं उतारे जा सकते। वे पानीके ऊपर ही ऊपर उड़ा करते हैं और पानी परही उतारे जा सकते है। पानीमें किनारेपर उतरते हैं और स्टीमरकी तरह जेटीमें लगा दिये जाते हैं। इनका अड्डा भी पानीमें ही रहता है। इसी प्रकार बरफपर उतरनेवाले वायुयान फिसलने-वाले बनाये जाते हैं। जो जिसके उपयुक्त बने हुए होते है उनका उपयोग भी उसी प्रकार किया जा सकता है। जिस प्रकार आगे कहा जा चुका है कि इंगलिश चेनल पार करते हुए

हमलोगोंका वायुयान बहुत ऊंचाईपर इसलिए उड़ रहा था कि यदि दुर्भाग्यवश गिरे भी तो भूमिपर ही; क्योंकि वह पृथ्वीपर ही उतारा जा सकता था। पानीमें तो उसकी उसी क्षण नानी मर जाती। इसी प्रकार (फ्लाइंग बोट) समुद्री वायुयान भी जहाँ पर पृथ्वीके ऊपर उड़ते हैं तो इसी विचारसे बहुत ऊंचाई पर उड़ते हैं कि यदि दुर्भाग्यवश गिरना भी पड़े तो जलतक पहुँचकर। क्योंकि वे जलमें ही निरापद रह सकते हैं। पृथ्वी-पर गिरें तो हड्डी-पसलीका कही पता न लगे। इस वायु-यानका नाम 'कलकत्ता' था।

आजका मौसिम भी बहुत अच्छा था। हमारा जहाज ५-६ सौ फीटकी ऊंचाईपर उड़ रहा था, तो भी समुद्री दृश्यको देखते ही बनता था। अगला स्टेशन नेपल्स पड़नेवाला था, जहाँपर रात बिताकर सबेरे आगे बढ़ना था। यहाँपर ही संसार-का प्रसिद्ध ज्वालामुखी पहाड़ वीसूवियस है। इस अवसरसे लाभ उठानेके लिए मै उक्त ज्वालामुखीके देखनेका लोभ संवरण न कर सका। वहाँके अधिकारियोको पहले से ही तार दिला दिया था कि एक टैक्सी मेरे लिए तैयार रखें, जिससे मैं वीसू-वियस सुभीतेसे देख सकूँ।

नेपल्स पहुँचनेके पहले हमलोगोंको रोमके हवाई अड्डेपर उतरना था, किन्तु वे तारके तारसे पता लगा कि वहाँ कोई

चढ़नेवाला यात्री नहीं है और कोई उतरनेवाला भी नहीं था। यह भी पता लग गया कि समुद्रमें जहाँ जहाज उतरना था भाटा होनेके कारण पानी कम था इससे जहाजका उतारना खतरेसे खाली नहीं है। ऐसी परिस्थितिमें जहाजका उतारना अनावश्यक समझा गया। अस्तु, हमलोग रोमका स्टेशन पार-कर सीधे नेपल्स पहुँच गये।

हमलोग अब धीरे-धीरे उत्तरीय योरोपसे दक्षिणीय योरोपकी ओर बढ़ रहे थे, इसलिए तापमान बढ़ने लगा। दो दिनसे नहानेका अवसर नहीं मिला था। आज हमलोगोंने दिल भरकर नहानेका विचार किया। हम सब मिलकर ६ आदमी रह गये थे। स्नान करनेके बाद होटलवालेने स्नान करनेका अधिक बिल जो एक-एक आदमीके लिये २५-२५ लीरा (लगभग ६।) का) था लगाया। सिर्फ नहानेका चार्ज ६।) देना अवश्य खटकनेकी बात थी। दूसरे इम्पीरियल एयरवे का प्रबन्ध था। होटल आदिका चार्ज कम्पनीको ही देना पड़ता था। यह हम पहले ही कह चुके हैं। नहाना होटल-कृत्यसे बाहरका काम नहीं था कि हमलोग उसके लिए अलग चार्ज देते। इस-लिये हमलोगोंने होटलके अधिकारीसे कहा "तुम हमलोगोंका दस्तखत ले सकते हो, किन्तु नहानेका चार्ज कम्पनी ही देगी, हमलोग नहीं दे सकते।" बहुमतके आगे उसकी एक न चली।

आखिर हमलोगोंने दस्तखत कर दिये, अब वह जाने और यात्रा कम्पनी जाने। हाँ, हमें वहाँ यह शिक्षा मिली कि यदि हमलोग आपसमें मिलकर एक न हो जाते तो अवश्य वह हम लोगोंसे अनुचित लाभ उठाता।

मैं पहले लिख चुका हूँ कि दर्शनीय स्थानोंको देखनेकी उत्कट अभिलाषाको मै कभी रोक नही सकता था। नेपल्स पहुँचनेपर वीसूवियस (ज्वालामुखी) देखने चला गया जिसका वर्णन पहले आ चुका है।

हवाई यात्रासे मुझे सबसे अधिक सुविधा यही मिली कि दिनभरमें केवल ५-६ घण्टे उड़ लेनेके पश्चात् किसी बड़े शहरमें रातभरके लिये रुकना पड़ता था और इस प्रकार मुफ्तमें परिभ्रमणका आनन्द मिल जाता। यदि हवाई यात्रा न करके जलयात्रा करते तो घूमनेका इतना समय कैसे मिलता? फिर तो विकराल वीसूवियसके देखनेकी लालसा बनी ही रह जाती।

अभीतक हमलोग निर्विघ्न सानन्द आकाश मार्गसे उड़ते हुए चले आ रहे थे। फिर नेपल्ससे २२ जुलाईके प्रातः उड़े। अब हमलोगोंको इटली पार करना था। जिस जहाजपर इस समय हमलोग बैठे थे यह भी (Flying Boat) उड़नेवाली नौका थी। केवल अन्तर इतना ही था कि इसमें दस ही आदमियोंके बैठनेकी जगह थी। इस जहाजमें बेतारके तारकी मशीनरी सञ्चालक-

के पास नहीं थी, बल्कि हमलोगोंकी सीटोंके पास थी। जब जहाज ऊपरको उड़ा तो बेतारके तारवाले मिस्त्रीने एक वजन बँधे हुए तारको जहाजके नीचे लटका दिया। जब हमलोगोंने इसका रहस्य जानना चाहा तो उसने बताया कि इसके द्वारा शब्द हवामें फेंके जाते हैं और स्टेशनोंके शब्द ग्रहण किये जाते है। अक्सर लोगोंने रेडियोके तारोंको छतोंपर खम्भोंमें लगे हुए देखा होगा, मगर इस प्रकार जहाजमें ऊपर लगानेमें असुविधा और नीचे लटका देनेमें सुविधा होती है। जहाँ जहाज उतरने लगता है तार ऊपर उठा लिये जाते हैं।

जिन लोगोंने इटलीका मानचित्र (नकशा) देखा होगा वे जानते होंगे कि इटलीका एक बड़ा भूभाग ठीक मोजेकी तरह समुद्रमें अन्तरीपकी तरह दूरतक चला गया है। हमारे हवाई जहाजको इसी मोजेको पार करना था और जहाज जलमें ही उतर सकता था। इसलिये यह जहाज भी जब उक्त मोजाकार बड़े भूभागपर आया तो उसे भी खतरेसे बचनेके लिये ६००० फीट ऊँचा उड़ना पड़ा था। इतनी ऊँचाईसे गिरते-गिरते भी वह इतनी दूर चला जायगा कि वह भूभाग पार हो जाय फिर तो ऐसे जहाजोंके लिए कोई खतरा ही नहीं रहता।

अबकी उड़ानमें हमलोग 'कारफू' नामक स्थानपर पहुँच

गये। यह समुद्रके किनारे एक छोटासा गाँव है। इम्पीरियल एयर वे कम्पनीने केवल पिट्रोल लेने और यात्रियोंको भोजन करानेके लिए यहाँ अपना स्टेशन बनाया है। जितनी देरमें जहाज पिट्रोल लेता है, यात्री लोग उतनी देरमें भोजन कर लेते हैं। यहांसे खा-पीकर हमलोगोंने फिर पर फड़फड़ाये और अबकी उड़ानमें ग्रीसकी राजधानी 'एथेंस' में पहुँच गये। यहाँके वेष,भूषा और भाषासे योरोपियनपन दूर होने लगा। यहाँके लोगोंकी पोशाकें आगा मुसलमानोंकी-सी हैं और यहाँ मुसलमानोंका ही साम्राज्य है। दूसरी जातिके लोग ढूंढनेसे भी शायद ही मिले। यह एक सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर है और बुढ़िया दिल्लीकी तरह अपने पूर्व गौरवकी स्मृति-स्वरूप अब भी डटा है। यद्यपि अब भी यहाँ काफी चहल-पहल रहती है, फिर भी अपने उस गौरवके लिए एथेंसको चार आँसू बहाने ही पड़ते हैं। यहाँ अनेक राज-प्रासादोंके भग्नावशेष संसारकी असारताका उत्तम पाठ पढ़ाते हैं। वृद्ध भारतके अनेक दृश्य यहाँ देखनेको मिलते हैं, जिनसे आत्मापर एक अकथनीय प्रभाव पड़ता है।

यहाँ एक कौतुकालय (दर्शक-गेलरी) है जो ५०००० मनुष्योंके बैठनेके लिए संगमरमरका बना हुआ है। बीचमें मैदान है, जिसमें जानवरोंकी लड़ाई, मनुष्योंकी लड़ाई या अन्य दर्शनीय उदार अथवा क्रूर दृश्योंके दिखानेकी व्यवस्था की

गयी है, चारों ओरकी संगमरमरकी सीढ़ियोंपर लोग बैठते हैं। इस स्थानकी लागतपर ध्यान देनेसे आश्चर्यका ठिकाना नहीं रहता। इसके बनानेमें पानीकी तरह रुपया बहाया गया होगा। इसका क्षेत्रफल ७३०३० वर्गफीटका है। यहाँका स्थान रेतीला और गर्म है। यहाँकी गर्मी और लण्डन-की सरदीमें उतना ही अन्तर है जितना काले और गोरेमे। गरमीसे बचनेके लिए यहाँ आमोद-प्रमोदके स्थान भी खुली हवामें बने होते हैं और सिनेमा घर भी खुली हवामें ही होते हैं। चारों तरफ दिवालें घिरी होती हैं जिससे बाहरके लोग न देख सकें। स्टेज भी बिना छतका ही होता है। यहाँ गरीबोंकी छोटी-छोटी दूकानें और वैसे ही खरीदार एवं छोटी मोटी गंदी गलियाँ भारतके छोटे छोटे शहरोंकी याद दिलाती हैं। योरोपकी अप-टू-डेट पोशाक यहाँ कहाँ, यहाँ तो वही लम्बा चोगा और वही मुसलमानी पोशाक।

एथेंससे उड़नेपर हमलोग सुदाबे (Sudabay) पहुँचे, यहाँ कोई नगर या बस्ती है इसका पता नहीं लगा और अगर है भी तो बहुत छोटी। यह इम्पीरियल एयर वेका एक स्टेशन है। स्टेशन पृथ्वीपर न बनाकर समुद्रके किनारे एक पुराने जहाजपर बनाया गया है। इसीमें स्टेशन मास्टर और नोकरोंका निवास स्थान, बेतारके तारकी मेशीनरी और यात्रियोंके लिए

आरामका कमरा, कुर्सियाँ और होटल भी है। जहाज पानीमें उतरा और किनारे आकर उसी जहाजी स्टेशनपर आ लगा। हमलोग ऊपर आये। यहाँके स्टेशन मास्टरका सौजन्य हम अब भी नहीं भूल सकते। वह इतना सज्जन था कि इच्छा न होनेपर भी मैं कुछ फल खा लेनेके उसके आग्रहकी उपेक्षा न कर सका। उसका कहना था कि हमारे यहाँ यात्री उतरे और मैं उनकी कुछ भी सेवा न कर सकूं यह कैसे हो सकता है। धन्य है वह और धन्य हैं उसके विचार। यहाँ घण्टेभर रुककर आगेके लिए उड़ना पड़ा। यहींपर मुझे यह बात भी मालूम हुई कि १५-१५ मिनटपर हवाई जहाजवाले अपने आगे पीछेके स्टेशनोंसे बातें किया करते हैं जिससे उन्हे वायुमण्डल एवं जहाजकी गतिविधिका पता लगा करता है और वे वायुमें निरापद उड़ा करते हैं।

यहाँसे उड़नेपर हमलोगोंको तवरुक आना था। हमलोगों-मेंसे बगदादका रहनेवाला एक अङ्गरेज मि० वाट्सन भी था। वह पहले तो हमलोगोंके साथ ठीक व्यवहार करता रहा, पर जैसे-जैसे हमलोग भारतके निकट पहुँचने लगे उसका रंग बदलने लगा। वह अपनेको शाही वंशज समझने लगा और अनुचित रोब जमानेकी चेष्टा करने लगा। गरमीके दिन थे ही, मैंने हवा आनेके लिए एक खिड़की खोल दी, जिससे हवाके साथ ही साथ

आवाज भी आने लगी। वाट्सन जिस स्थानपर बैठा था, खिड़की उसके और मेरे बीचमें पड़ती थी। वह हठ करने लगा कि खिड़की बन्द कर दो। मैंने कहा, मुझे खिड़की खुली रखनेकी आवश्यकता प्रतीत होती है, अस्तु; मैं खोलूंगा ही, यदि आपको न बरदास्त हो तो कृपा करके दूसरी सीटपर तशरीफ ले जाइये। और लोग भी उसे समझाने लगे, पर वहाँ तो दिमाग़ शरीफमें शाही सनककी बारूद भरी थी। एक अंगरेजसे एक भारतीय हठ करे वह भी उसकी इच्छाके विरुद्ध, इसे वाट्सन साहब कैसे सहन कर सकते थे ? पर वे यह नहीं समझते थे कि भारतके पानीमें भी उबाल आ सकता है। अन्तमें जहाजके कैप्टनने उसे समझाया कि जहाजपर जितने यात्री हैं सबका बराबर अधिकार है। यदि आपको खिड़कीका खोलना पसन्द नहीं है तो आप दूसरी सीटपर बैठ सकते हैं। लोगोंके समझानेसे उसका टेम्परेचर कुछ नीचे गया और उसे अपनासा मुँह लेकर दूसरी सीटपर बैठना पड़ा।

लीजिये, तबरुक भी आ पहुँचा। यहाँ कोई बड़ी बस्ती नहीं है। समुद्रके किनारे एक छोटासा गाँव है। आवश्यकताके लिए यहाँ अड्डा बनाया गया है। रहनेके लिए कोई होटल या स्थान न था, जहां हमलोग सानन्द रात बिता सकते। एक छोटासा म्युनिस्पल स्कूल था, उसीमें हमलोगोंको डेरा डालना पड़ा। यहाँ

मच्छरोंकी संख्या भारतीय बेकारोंसे भी अधिक थी जिसके कारण नींदका आना हराम हो गया। गरमीके कारण कपड़ा-ओढ़ना भी टेढ़ी खीर था। मेरे एक अङ्गरेज साथी जो पहले भी बंगलामें रह चुके थे, मेरी उद्विग्नता देखकर कहने लगे "महाशय! आप बंगालके रहनेवाले होकर भी इतना क्यों घबरा रहे हैं? वहाँ तो मच्छर लालटेन लेकर शिकारकी तलाश किया करते हैं" उनकी लालटेनवाली बात सुनकर मैं अपनी हँसी न रोक सका।

मैंने उनसे पूछा कि लालटेन लेकर मच्छर कैसे घूमते हैं तो उनकी अनोखी उक्ति सुनकर कवि न होनेपर भी मैं मस्त हो गया और यदि कवि होता तो न जाने क्या हो जाता।

बात यह थी कि साहब बहादुर पहले पहल भारत आये और बंगालमें उन्हें रहना पड़ा, एक दिन मच्छरोंने उन्हें बहुत हैरान किया। वे मच्छरोंसे बचनेके लिए चारपाईके नीचे छिपकर सोने लगे। इधर-उधर जुगनू उड़ रहे थे, जिनकी बंगालमें अधिकता रहती है। साहब बहादुरने अपने साथीसे झट कहा "वह देखो मच्छर लालटेन लिए हमलोगोंको खोज रहे हैं" उन्होंने इसे व्यंगमे कहा या परिहासमे, यह तो वे ही जाने, परन्तु जुगनुओंको मच्छरोकी लालटेन बनानेकी उक्तिपर कोई भी कवि लट्टू हो सकता है। मुझे साहबकी यह बात कभी न भूलेगी।

इस रूखे स्थानपर स्नानका कोई प्रबन्ध नहीं था। लाचार समुद्रमे स्नान करना पड़ा। यह जीवनका पहला ही मौका था। स्नान करनेवाला कपड़ा पहन कर स्नान करने लगे। मेरे कई साथी भी सानन्द स्नान कर रहे थे। स्टीमरमे रस्सीसे लकड़ीका एक तख्ता बँधा था, जब स्टीमर चलते हैं तो वह दुमकी तरह पीछे-पीछे तैरता हुआ चलता है। लोग उसपर खड़े होकर बैलेस सँभालनेका अभ्यास करते हैं और अनेक प्रकारके खेल करते है। जरा भी इधर-उधर होनेसे खैर नहीं, फिर भी इस भयानक खेलका मैं भी बड़ी देरतक आनन्द लेता रहा। इस बारकी उड़ान इजिप्टके प्रधान नगर अलकज़ेण्ड्रियाके लिए थी। दोपहरको यहाँके अबूकी नामक हवाई अड्डेपर आना पड़ा, जो शहरसे ५-६ मील दूर था। हमारा जहाज पानीमे उतरनेवाला था। इसलिये समुद्री अड्डेपर उतरना पड़ा था। वहाँसे इस शहरको देखते-भालते भोजनकर हवाई अड्डेपर आये। इस शहरका जलवायु और वेष-भूषा देखकर यह कहना पड़ता है कि यह भारत और योरोपका मध्यस्थ है और गर्मी-सर्दीका दरवाजा है। यहाँके जल-वायु, वेष-भूषा और दिमागी परिवर्तनोको देखकर भारतकी याद आती थी।

यहाँसे हमे फ्लाइंग बोटसे विदाई लेनी थी और "अबूकी" हवाई अड्डेपर उस वायुयानकी शरणमे आना था, जो पृथ्वीपर-

उतरता है। यहाँ भी पहलेकी तरह मुझे पासपोर्टका झंझट उठाना पड़ा। क्योंकि पहलेवाला पासपोर्ट अस्थायी था। मुझे इस बातकी झुँझलाहट जरूर हुई कि यदि मैं इस यात्रासे अन-भिज्ञ था तो इम्पीरियल एयरवेने मुझे क्यों न इसके लिए सतर्क कर दिया, किन्तु जब मैं यह सोचता कि इसमें इनका क्या अपराध है। इतनी बड़ी यात्राके लिए तो ये बेचारे भी रंगरूट ही हैं। यह उनकी सिर्फ तीसरी ही यात्रा तो थी। खैर, यहाँ भी जुर्माना देकर पासपोर्ट बनवाना पड़ा।

अब यहाँसे हमें पृथ्वीके ऊपर उड़नेवाले जहाजपर आरूढ़ होना था। यह जहाज इतना मैला-कुचैला था जिसे देखकर योरोपकी उपेक्षा दृष्टिपर आश्चर्य होता था। जबतक योरोपमें उड़नेवाले जहाज मिले, सब सुन्दर-रंगे-पुते और उसी कम्पनी-का यह जहाज इतना मैला! कारण इसका यही है कि अब यह उस देशमें उड़ेगा जिस देशमें गुलामोंकी बस्ती है। धन्य है राजमद! तू अपूर्व शक्ति रखता है।

मैंने अपने पहलेवाले जहाजके कैप्टनके प्रति उनके अबतकके सौजन्यके लिए कृतज्ञताज्ञापन की और सादर विदाई ले अपने दूसरे जहाजपर जा पहुँचा। मेरे जहाजने पृथ्वीको छोड़ा या पृथ्वी माताने जहाजको छोड़ा, यह वे दोनों जानें, मैं तो यही कहूँगा कि जब उसने एक लम्बी साँस लेकर अपनी नकेल

ऊपरको उठाई तो एक ही सर्राटेमें हमलोग व्योम-विहार करने लग गये। जो स्वेज-नहर अपने उदरपर अनेक विशालकाय जलयानोंको कई दिनोंकी यात्राकी बचत करा सकती है वही आकाशसे एक पतली नालीके रूपमें दिखाई पड़ रही थी।

अभीतक तो हम ऐसे जहाजपर उड़ा करते थे जो जलके ऊपर उड़ते थे, इससे जल या तटका ही विचित्र दृश्य देखनेको मिलता था, किन्तु अब हम स्थलपर उड़ रहे थे और भूभागके नाना प्रकारके अपूर्व दृश्य देखनेको मिलते थे। कहीं नदियाँ ठीक उसी प्रकार दिखाई पड़ रही थीं जैसे नकशोंमें बनी होती है। कहीं पर्वत-मालाएँ अपूर्व छटासे मनमुग्ध कर रही थीं। कहीं पृथ्वीका एक नुकीला भाग समुद्रमें घुस गया था, तो कहीं पानीका भाग पृथ्वीको फाड़ता चला गया था। कहीं तेरी तो कहीं मेरीकी कहावत चरितार्थ होती थी।

रातको बसेरा लेनेके लिए गाज़ा नामक अड्डेपर उतरना पड़ा। यह मरुभूमिपर हवाई जहाजका एक छोटासा घोंसला है। गरमीके सम्बन्धमें तो कुछ कहना ही व्यर्थ होगा। हमलोगोंके लिए जो टीनके घोंसले बने हुए थे वे भी बड़े गन्दे थे। तख्तोंके ऊपर एक-एक पतली चद्दर बिछी हुई थी, हमलोगोंके लिए वही सब कुछ था, क्योंकि "भूख न जाने बासी भात, नींद न जाने टूटी खाट।"

यहाँ भी मेरे लिए पासपोर्टका वही झंझट उपस्थित हुआ, जो अबतक होता आया था। रात हो जानेके कारण पर्सियाके आफिस बन्द थे, इसलिये कोई एतराज करनेवाला नहीं था। तिसपर भी स्टेशन-मास्टर ही क्यों हमे आगे जानेकी स्वीकृति देता। यदि वह ऐसे ही विना पासपोर्टके यात्रियोंको जानेकी आज्ञा दे दिया करे तो स्वयं अपनेको खतरेमें फँसा समझे। पर्सियाकी सरकार उसपर ही मुकद्दमा चला सकती है। अस्तुः उसने मुझे राय दी कि मैं यहाँसे आपको जाने देता हूँ, परन्तु आप बगदाद पहुँचते ही वहाँके अधिकारियोंकी पूजा कर देना, नहीं तो ठीक न होगा। खैर, किसी तरह रात बिताकर हमलोग फिर उड़ान भरनेका उपक्रम करने लगे।

उड़े तो सही पर शंकित हृदयसे। एक ओर तो घर पहुँचनेकी उत्सुकता और दूसरी ओर पासपोर्टका अड़ंगा। अबकी उड़ानमें हमलोगोंको नहीं, हवाई जहाजको चारा-पानी (पिट्रोल) लेनेके लिए जिजामें उतरना पड़ा। यह स्थान एकदम मरुभूमिमें है। यहाँ हवाई अड्डा भी नहीं है। सिर्फ पिट्रोलकी टंकी ज़मीनके अन्दर लगी हुई है। जहाजवालोंको ही इस स्थानका पता रहता है। वे उतरे पिट्रोल लिये और चलते बने।

जब हमलोगोंका जहाज पिट्रोल लेनेके लिए उतरा हुआ था तब संयोगसे एक महाशय ऊँटपर चढ़े हुए आ निकले। जहाज-

के वायरलेसका मिस्त्री पस्तो भाषा अच्छी तरह जानता था इसलिये उसने माध्यम बनकर एक दूसरेके विचारोंका आदान-प्रदान कराया। पूछनेपर ज्ञात हुआ कि मियां साहब बगदादकी यात्रा अपने चार पैरके खुदाई जहाजपर कर रहे हैं और एक महीनेमें पहुँचेगे। उसी यात्राको हमलोग ६ घण्टेमें तय करनेके लिए तैयार हो रहे थे। उस समय ऊष्ट्रराज सिर नीचा किए हुए थे और ऐसा जान पड़ता था, गोया वे हमलोगोंकी बात समझ रहे हों और हमारा हवाई जहाज भी गर्वसे आकाशकी ओर देख रहा था। ऊष्ट्रदेव अपने प्रबल प्रतियोगीके सामने नतमस्तक थे और हमारा हवाई जहाज यह समझता था कि मुझ-सा शक्तिशाली और कोई संसारमें है ही नहीं।

हमारा हवाई घोड़ा भी गर्वके साथ गुड़गुड़ाता हुआ बगदादकी भावी यात्राको पूर्ण करनेके लिए आकाशको उड़ा। किन्तु आज इनके गर्वको चूर्ण करनेके लिए पवन देवने भी प्रतिज्ञा कर ली थी। इन दोनोंके संघर्षको बेचारे यात्रियोंके अतिरिक्त और कौन जान सकता है। जिस प्रकार स्टीमर समुद्रकी भयानक लहरोंमें पड़कर पत्तेकी तरह नाचने लगता है, और उसके यात्रियोंको वमनपर वमन होकर जो असह्य वेदना होती है, ठीक वही दशा आज हमलोगोंकी थी। पवन-वेगमें पड़कर हवाई जहाज अपनी निराली अदा दिखा रहे थे। हमारा जहाज भी

हवाके-समुद्रमें पत्तेकी तरह हिल रहा था। चालक भरपूर चेष्टा कर रहा था कि जहाज न हिले पर उसकी एक न चलती थी हवाके प्रबल थपेड़ेसे टकराकर जहाज कभी ऊँचा जाता और कभी एकदम सैकड़ों फीट नीचे चला आता था। उसपर रखी हुई चीजें तितर-बितर हो रही थीं।

अबतक जो यात्री बड़े आनन्दसे समय काट रहे थे और हवाई जहाजकी भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे; वे ही अब अपने प्राणोंकी चिन्तामे थे। सबको उल्टीपर उल्टी हो रही थी। चेहरा सूख गया था। यदि उस समय उनसे कोई हवाई यात्राके सम्बन्धमें राय पूछता तो अपने शत्रुको भी उसके पक्षमें राय न देते। यह हालत लगभग दो ढाई घंटेतक रही। अन्तमें इंजन बन्द करनेकी आवाज सुन लोगोंके जीमें जी आया। नीचे उतरनेपर मालूम हुआ कि हमलोग रुतबा स्टेशनपर जहाज और यात्रियोंके चारा-पानीके लिए उतरे हैं।

इस समय केवल चालक और वायरलेसके मिस्त्रीने ही भोजन किया। शेष यात्री तो योंही अधमरेसे हो रहे थे। उस समय भोजनकी बात तो दूर रही, यात्री आगेके लिए हवाई यात्राका भी साहस छोड़ बैठे थे। परन्तु जिस जहाजसे हमलोग यात्रा कर रहे थे वह इम्पीरियल एयरवेका मेल जहाज था, अस्तु; उसका रुकना असम्भव था।

अभीतक हमलोग जब मरुभूमिपर सूर्यदेवकी किरणोंको पड़ती हुई देखते थे तो उस सुनहले दृश्यको देखनेमें अलौकिक आनन्द आता था। यदि मैं कवि होता तो इस दृश्यका अच्छा चित्र खींचता, तिसपर भी इतना तो अब भी याद है कि मालूम होता था मानों सोनेकी चद्दरोंसे पृथ्वी मढ़ दी गयी है। परन्तु इस समय किसीको इस दृश्यके देखनेकी सुध न थी। सब अर्द्धमृतकसे होकर अपने-अपने इष्टदेवका स्मरण कर रहे थे। हवाई जहाजका भी अच्छी तरह मानमर्दन हुआ और साथ ही सञ्चालक महाशयका भी। आप अभीतक गर्व करते थे कि मैं ऐसा हूँ, वैसा हूँ, किन्तु वायुके प्रबल थपेड़ोंने उनके भी होश ठिकाने कर दिये। जब हमलोग बगदाद पहुँचे तो सञ्चालक महोदयके हाथ बहुत बुरी तरह सूज गये थे, पर नौकरी ठहरी, करते ही क्या। उन्होंने स्टेशन-मास्टरसे बड़ी उत्सुकतासे आगेकी यात्राके सम्बन्धमें राय माँगी। दिलमें ईश्वरसे प्रार्थना करते होंगे कि यहाँ कुछ देरके लिए यात्रा स्थगित करनेके लिए रुकना पड़े तो अच्छा हो।

स्टेशन-मास्टर बेचारा भी भला आदमी था। उसने कहा—"आगे भी वायुमण्डलका यही रुख है,अस्तु; हम इस समय यात्रा करनेकी राय न देंगे। फिर क्या था, डेरा डाल दिया गया। जान बची, लाखों पाये।

बगदादकी स्वच्छताके सम्बन्धमें अधिक लिखना व्यर्थ होगा। जिन्हें यहाँके रहन-सहन और स्वच्छता आदिके सम्बन्धमें कुछ जानकारी प्राप्त करनी हो वे किसी भी मुसलमानी मुहल्लोंका निरीक्षण कर अनुमान कर सकते हैं। नाम तो इसका बहुत सुन्दर है, परन्तु देखनेसे वही लोकोक्ति चरितार्थ होती है कि "गन्ध तो निमकौरसी और नाम गुलाब सिंह"। कलकत्तेका गन्दे-से-गंदा होटल भी प्रतियोगितामें यहाँके स्वच्छातिस्वच्छ होटलपर विजय प्राप्त कर सकता है। यहाँपर गन्दी-गन्दी गलियाँ, छोटे-छोटे मिट्टीके घर, औरतें गंदे बुरकोंमें ढंकी हुई आदि चीजें दिखायी दी। मुझे तो यहाँ आनेसे यही प्रसन्नता थी कि अपने जीवन भरके अपराधोंका प्रायश्चित्त एक बार ही कर लेना पड़ रहा है। यदि स्वर्गकी बीमा कम्पनीका कोई एजेंट यहाँ मौजूद होता तो अवश्य ही बिना प्रीमियमके ही मुझे स्वर्गकी गारण्टी दे देता, क्योंकि कुम्भीपाकका चाचा तो यहाँ मौजूद ही था, फिर दुबारा कोई क्यों सजा भोगने लगा! बिजली होनेपर भी इस युगमें यहाँ घोड़े ट्राम चलाते हैं।

ज्यों-ज्यों मैं भारतभूमिके सन्निकट आता जाता था, त्यों-त्यों घर पहुँचनेकी उत्कण्ठा और भी बढ़ती जाती थी। कदम-कदम-पर पासपोर्टका सन्देह लगा ही रहता था। आज मुझे पर्सिया और ईराक सरकारका पासपोर्ट ठीक करा लेना था। अभीतक

तो अनजानेकी भूल थी, अब जानकर भी भूल करना ठीक नहीं था। इसी दौड़-धूपमें मेरा दिन चला गया। जब पासपोर्ट जाँच करनेवाले महोदय मिले तो उनका और ही रुख था। जब उन्होंने मेरा पासपोर्ट देखा तो एक बार तो उनके आकार-प्रकार-से यही ज्ञात होता था कि आप इसी समय दुर्वासाजीका अभि-नय करना चाहते हैं। शायद आपने किसी नाटक या सिनेमा कम्पनीमें ऐक्टर (अभिनेता) का काम भी किया है। कुछ ऊलूल-जलूल बक लेनेके पश्चात् (जिसका अर्थ मैं उसी प्रकार समझनेमें असमर्थ था जैसे बालक वेदमन्त्रोंके समझनेमें) उन्होंने मेरे पासपोर्टपर मुहर लगा दी और इस अनुष्ठानकी समाप्तिपर मैंने भी सन्तोषकी साँस ली। सन्ध्याको ऊपर वर्णित मनोमोहक और घ्राण-प्रिय स्थानोंको देखनेमें लगाया। आँखें और नाक तो इन स्थानोंसे घोर असहयोग करनेके लिए आमादा थे पर परिस्थितिने इसपर लाट दूरबीनकी तरह भरसक नियंत्रण किया। प्रातः आगेके लिए उड़ान भरनी थी इसलिये निवास स्थानपर आकर सो गये।

दूसरे दिनके लिए हमलोगोंने यही निश्चय किया था कि शायद तूफानके कारण हमलोगोको जितनी देरतक रुकना पड़ा है उतनी देर यात्रा पहले आरम्भ करके वह कमी पूरी कर ली जायगी। यही सोचकर सबके सब प्रातः ३ बजे ही हवाई

अड्डेपर जा पहुँचे। वहाँ स्टेशन-मास्टरने बताया कि तूफान अब भी प्रतिकूल अवस्थामें है. अस्तु, जबतक इसका प्रकोप कम न हो जाय उड़ना ठीक न होगा। जिस प्रकार कुहासेमें धुवाँसे चारों तरफ अन्धेरासा रहता है ठीक उसी तरह गर्द-चारों ओर अन्धेरा ही अन्धेरा हो रहा था। दस गजके दूरकी वस्तु स्पष्ट नहीं देख पड़ती थी। हमलोग फिर खाने-पीनेकी इच्छा और किसी प्रकार समय वितानेकी गरजसे बस्ती की ओर चले आये। जलपानके पश्चात् जब टेलीफोनसे स्टेशन मास्टरसे पूछा गया तो उसने उत्तर दिया कि अब भी तूफानका प्रकोप ६००० फीट ऊँचाईतक है, इसलिये उड़ना खतरेसे खाली न होगा। सब लोग निश्चितसे हो रहे थे। मैं भी यहाँकी सबसे बड़ी मस्जिद देखने चला गया था। दर्शनीय स्थानोंके देखनेका लोभ संवरण करना मेरे लिए कठिन हो जाता था।

इसी रोगमे फँसे रहनेके कारण मुझे आज जिस झंझटका सामना करना पड़ा, वह जीवनभर भी नहीं भूल सकता। जब मैं मस्जिद देख चुका तो होटलमे आकर साथियोंको ढूंढ़ने लगा पर वहाँ कोई हो तब तो मिले। मैंने स्टेशनमास्टरको टेलीफोन किया। स्टेशन मास्टरने बताया कि वातावरण अनुकूल होनेके कारण आपकी काफी खोज कर लेने और आध घण्टेतक

प्रतीक्षा कर लेनेपर अभी १५ मिनट हुए हवाई जहाज उड़ गया।

इस दुःखद समाचारको सुनकर मेरे पैरके नीचेकी जमीन खिसकने लगी। मुझे पल-पल कल्प और युगकी भाँति बीतने लगा। अब मैं देश पहुँचनेके लिए जिन साधनोंका उपयोग करता था उनमेसे कोई भी ऐसा नहीं दिखायी पड़ता जिसमें एक सप्ताहसे कममें पहुँचा देनेकी शक्ति हो। मैं इस घबड़ाहट और यात्रा-सम्बन्धी उधेड़-बुनमें था। उस समय मुझपर जो बीत रही थी वह भुक्तभोगी ही समझ सकते हैं।

बहुत कुछ संकल्प-विकल्प करनेके बाद मैंने स्टेशन-मास्टरसे अनुरोध किया कि "यदि आप मेरे लिए किसी स्पेशल हवाई जहाजका प्रबन्ध कर दें तो जो कुछ अधिक भाड़ा लग जायगा वह मैं दे दूँगा। वह मुझे उस स्टेशनतक पहुँचा देगा, जहाँ हमारा जहाज रातको बसेरा लेगा। वहाँसे मैं अपने जहाजसे चला जाऊँगा। यह तो निश्चित ही था कि संध्याको उसे किसी स्टेशनपर उतरना ही पड़ेगा।

स्टेशन-मास्टर भी हमारी परिस्थितिका अच्छी तरह अनुभव कर रहा था, पर उसके पास उपाय ही क्या था; क्योंकि वहाँ कोई हवाई जहाज न था। उसने मुझपर अनुग्रहका भाव प्रकट करते हुए कहा—"मैं आपके लिए केवल इतना ही प्रबन्ध

कर सकता हूं कि आगामी सप्ताहमें आनेवाले जहाजपर आप-को बैठा दूँगा जिसका कोई अधिक चार्ज न देना पड़ेगा। हाँ, यह बात जरूर है कि इतने दिनोंतकके रहनेका खर्च आपको अपने ऊपर लेना पड़ेगा। मेरे पास मौन धारण करने और सन्तोषसे काम लेनेके अतिरिक्त और साधन ही क्या था ?

लाचार होकर मैं वहाँ अपने भारतीय परिचितोंसे, जिनसे इस यात्रामें परिचय हो गया था, पूछताछ करने लगा। मैं अपनी यात्रा-सम्बन्धी उधेड़-बुनमें लगा ही था कि इतनेमें स्टेशन-मास्टरका टेलीफोन आया, उसने कहा—"७० मील जानेपर हवाई जहाजको प्रचण्ड तूफानका सामना करना पड़ा। उस समय वह अपनेको पराजित अवस्थामें पड़नेका अनुभव कर अनुकूल वातावरणकी प्रतीक्षाके लिए फिर वापस आ रहा है।"

इतना सुनना था कि प्रसन्नतासे मेरी बाछें खिल गयीं। 'मनहु रंक निधि लूटन लागे" वाली बात आ पड़ी। मेरे लिए अब विदेशमें एक-एक मिनट युग-समान बीत रहा था, फिर इस समाचारको पाकर क्यों न इतनी प्रसन्नता होती ?

मैं फिर हवाई अड्डे पर आया। हमारा जहाज भी वापस आ गया। लोगोंसे हँसी-दिल्लगी भी खूब हुई। मैंने मित्रोंसे कहा—"आप तो मुझे छोड़कर ही चले जा रहे थे, पर मैं तो आपको

नहीं छोड़ सकता था। आखिर मेरे प्रेमाकर्षणने आपको वापस बुला ही लिया। सुननेवाले खूब हँसे। दूसरे दिन सवेरे आकाश निर्मल था और हमलोगोंको अपने वक्षस्थलपर वायुयान उड़ानेके लिए आमन्त्रित कर रहा था। हमलोग भी प्रातः सानन्द भारतकी ओर उड़नेके लिए प्रस्तुत हो गये। प्रातः साढ़े पांच बजे हमलोगोने बसराके लिये प्रस्थान किया। उस समय स्टेशन-मास्टर सबका अभिवादन कर रहा था। जब उसकी दृष्टि मुझपर पड़ी तो उसने मुझसे हाथ मिलाते हुए कहा "Mr. Saravagi you are more lucky than you deserve" इसका उत्तर दिये बिना मुझसे भी न रहा गया। मैंने भी हँसते हुए कहा—"आपको ऐसा न सोचना चाहिये। मैं लगभग ७ माससे योरोप-भ्रमण कर रहा हूँ पर अभीतक कहींपर कठिनाईका सामना न करना पडा। यद्यपि अनेक असुविधाएँ आयीं और वे ईश्वरानुग्रहसे रफूचक्कर हो गयीं। आजकी घटनाको देखिये। पासपोर्टके झंझटोंको देखिये कि मैं अबतक आप लोगोंकी सहायताके कारण विना किसी कष्टके आनन्दसे यात्रा कर रहा हूँ। इस प्रकार स्टेशन-मास्टरसे कुछ विनोदपूर्ण बातोंके साथ मैं आकाशमार्गका यात्री बन गया और ८॥ बजे प्रातः बसरा पहुँच गया।

हवाई जहाजकी यात्राको निरापद बनानेके लिए मुख्य

स्टेशनोंपर वायुयानके कल-पुर्जोंकी खूब जांच-पड़ताल होती है। एक विशेषज्ञ आकर अच्छी तरह अनुसन्धान करता है। यदि किसी पुर्जेमें कुछ गड़बड़ी समझ पड़ती है तो वह उसे बदलने या ठीक करनेकी व्यवस्था करता है। यहाँ हमारे लोहपक्षीका दिशायंत्र खराब हो गया था। उसके बदलनेमें ११ बज गये। तब कहीं उड़नेकी नौबत आयी। यहाँसे हमलोग बुशायरके लिए रवाना हुए। अबतक जहाज निरापद रूपसे उड़ रहा था। मैं भी यही समझता था कि जो कुछ बाधाएं अबतक आ चुकी थी वही उनको इति है, किन्तु 'देरीमें देरी होती है' कहावतके अनुसार बुशायर पहुँचनेपर मालूम हुआ कि हमलोगोंको यहीं ठहरना पड़ेगा, क्योंकि बुशायरसे लिंगाकी उड़ान इतनी लम्बी है कि संध्या होनेके पहले हमलोग वहाँ न पहुँच सकेंगे। रात्रिमे उड़ना खतरनाक है, क्योंकि अबतक वहाँके एरोड्रम पर फ्लडलाइट (विद्युत-प्रकाश) का कोई प्रबन्ध नही हुआ था। यहाँ कड़ाकेकी गरमी पड़ रही थी। अभीतक में योरोपियन ड्रेसमें था। किन्तु इस प्रचण्ड गरमीने मुझे भारतीय पोशाक पहननेके लिए बाध्य किया और अब यहाँसे पतलून साहबको सलाम कर धोती देवीकी शरणमें आया। आज इतनी अधिक गर्मी पड़ रही थी कि मैंने अपने जीवनमें इतनी गर्मीका प्रथम वार अनुभव किया था और शायद यह अन्तिम भी हो।

पलंग, मशीन सबके सब मालूम होते थे जैसे लोहारखानेसे अभी-अभी निकले चले आ रहे हों।

हमलोग बूशायरसे दूसरे दिन प्रातःकाल रवाना हुए और यह आशा करते थे कि आज ही करांची पहुँच जायेंगे, किन्तु जास्कमें यह खबर मालूम हुई कि करांचीमें जोरोंका पानी बरसा है, इसलिये वहाँका हवाई अड्डा उतरनेके योग्य नहीं है, अस्तु; यहींपर यात्रा स्थगित करनी पड़ेगी।

मैं बचपनमें हवाई जहाजपर उड़कर व्योम-विहार करनेका जो स्वर्गीय स्वप्न देखा करता था, और शेखचिल्लीके हवाई किले बाँधा करता था, यहाँतक कि हवाई जहाजपर चढ़ते समय जिस आनन्दका अनुभव कर रहा था, अब वह सब किरकिरा हो गया था। मैं ईश्वरसे यही प्रार्थना कर रहा था कि वह कौन-सी आनन्दकी घड़ी होगी जब इस हवाई जंजालसे मुक्त हूँगा।

यहाँका टेलीग्राफ सुपरिण्टेण्डेण्ट बड़ा ही नम्र विचारोंका सज्जन था। उसने हमलोगोंके रहनेका पूर्ण प्रबन्ध कर दिया। यह तो निश्चित ही था कि जबतक करांचीसे समाचार नहीं आ जाता कि हवाई जहाज उतारने योग्य वहाँका मैदान हो गया है तबतक यहांसे जहाज रवाना हो ही नहीं सकता था। अब मैं भारतीय वेषभूषामें था। मेरे गौरांग साथी जो अबतक मुझसे एक मित्रकी भाँति व्यवहार करते चले आ रहे थे अबसे उनकी

दृष्टि बहुत कुछ बदलने लग गयी थी। यहाँतक कि इलाहाबादके किसी कालेजके एक प्रोफेसर साहबने मेरे साथ एक कमरेमें सोनेसे इनकार कर दिया और सबके लिए अलग-अलग कमरोंका प्रबन्ध करना पड़ा। मैं यह न समझ सका कि उनकी उदासीनताका कारण क्या था? मैं भारतीय था, यह या मैं धोती पहने हुए था यह, अथवा यह कि वे अपने शासित देशके निकट आ रहे थे, जहाँ उनके प्रभुत्वका बोलबाला है।

दस बजे दिनको कराँचीसे समाचार आया कि जहाज आ सकता है, वातावरण बहुत ठीक है, हवाई अड्डा भी उतरने लायक हो गया है, यह सुन हमलोग आनन्द-विभोर हो गये। जहाज भी निर्दिष्ट स्थानकी ओर उड़ चला। मार्गमें बादर नामका एक हवाई अड्डा मिला, यही इस यात्राका आखिरी अड्डा था। यहाँपर जहाजने पिट्रोल रूपी पानी पिया। यहींपर कराँचीसे लण्डन जानेवाला जहाज भी आकर रुका था। वह भी प्रतिकूल वातावरणके कारण २ दिन देरसे लण्डनके लिए रवाना हुआ था। एक दूसरेने आपसमें कुशल-समाचारका आदान-प्रदान किया। वे लोग अभी ताजे भारतसे चले आ रहे थे। उन्हें देखकर प्रसन्न होना स्वाभाविक था। एक घण्टे बाद यहाँसे जहाज उड़ा। ज्यों-ज्यों हमलोग भारतके निकट आते जाते थे हृदयमे एक अजीब किस्मकी तरङ्ग उठती

थी, कब अपने देशके दर्शन हों। नेत्र, भारतीय दृश्योंके देखनेके लिए आकुल हो रहे थे।

करांँची भी आ पहुँचा। आकाश निर्मल था, जहाज धरा-तलके निकट उड़ रहा था, इससे पृथ्वीका दृश्य बहुत सुन्दर दिखायी पड़ रहा था। करांँची तो ऐसा मालूम पड़ रहा था कि मानों पृथ्वीपर खिलौने बखेर दिये गये है। हमलोग करांँची स्टेशनपर सकुशल उतरे। हमारा जहाज निश्चित समयसे दो दिन देरसे पहुँच रहा था, इसलिये वहांँके लोगोंमें अधिक उत्सुकता थी। पिताजीने एक आदमी भी करांँची भेज दिया था और अपने परिचितोंको पत्र भी लिख दिये थे।

जहाजके उतरते ही यह समाचार प्रेसके संवाददाताओंमें बिजलीकी भांँति फैल गया। प्रेस-प्रतिनिधि अपने-अपने अस्त्र-शस्त्र लेकर पहुँच गये। सबके पास कैमरे और फाउण्टेनपेन रूपी तेज हथियार मौजूद थे। जिसने जो समझा, पूछा और मुझे जो समझ पड़ा मैंने उत्तर दिया। सबके कैमरे खुल गये और उन केमरोंका शिकार हमलोगोंको होना ही पड़ा। परि-चितों और मित्रोंने हमलोगोंका खूब स्वागत किया। यहांँके मारवाड़ी नवयुवक मण्डलने पहलेहीसे एक विशाल स्थानपर सभाका आयोजन किया था, वहांँपर मुझे जाना पड़ा। नवयुवकोंने मेरा जैसा प्रेमपूर्ण स्वागत किया उसे मैं जीवनभर

नहीं भूल सकता। मैंने अपना यात्रा सम्बन्धी अनुभव बतलाया। कई स्थानोंपर प्रीतिभोज किया गया। यहाँसे महावीरजी वाढ़वानीजी आदि तीर्थस्थानोंका परिभ्रमण करते हुए मैं कलकत्ता आ पहुँचा। माता-पिताके चरण छूते समय मेरे हृदय में जो प्रेमावेग था उसे शब्दोंमें अंकित नहीं किया जा सकता और उनके वात्सल्य प्रेमका तो कोई कवि भी नहीं वर्णन कर सकता। इस प्रकार कलकत्तेके कुटुम्बियों और मित्रोंका तांता लग गया और लोगोंकी दृष्टिमें आज मेरा नया जन्म हुआ।

* बस *